आदिपर्वचित्र. १
वेदव्यास.
राजाजनमेजय
जनमेजय अश्व लेता है.
जनमेजय

आदिपर्व चित्र २
राजा जनमेजय
अश्वमेध करते हैं.
यज्ञ
ब्राह्मण.
शिवपार्वती.
गो.
पंचवृषभ

अथ
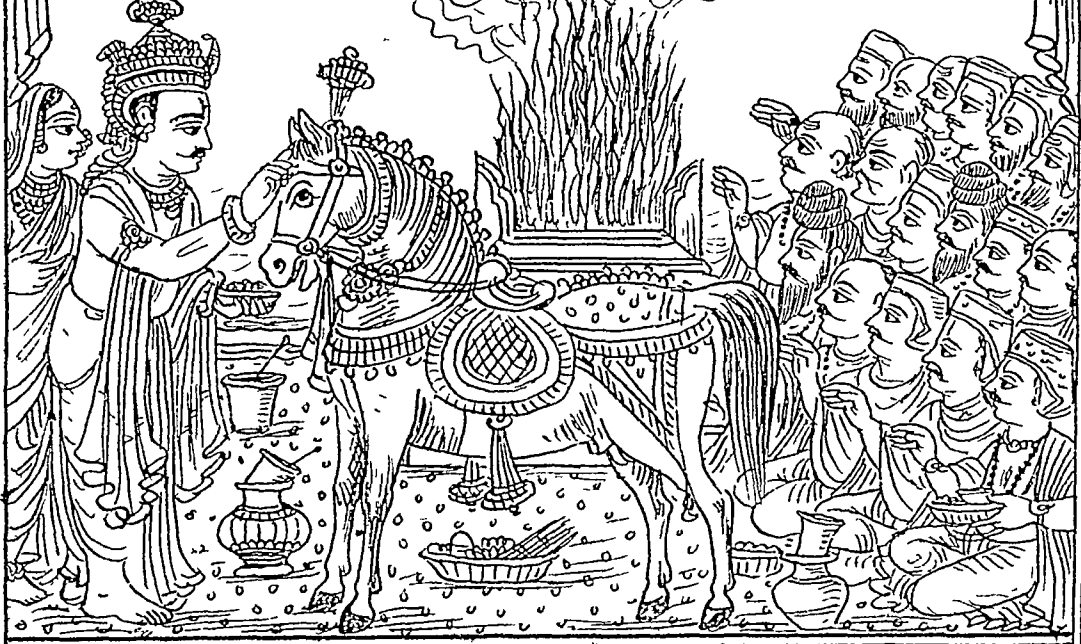
भाषा भारतसार.

आदिपर्व प्रारम्भः

श्रीगणेशायनमः ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् देवींसरस्वतींव्या-
संततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ कथाप्रारंभः ॥ कोईक समेकेविषे कृष्ण-
द्वैपायनमुनि कौरवनको राजा जनमेजय ताके देषिवेको हस्तनापुर आ-
वतभये. जहां जन्मेजय हूं. गंगातीर विराजमान हो तहां बेदव्यासमु-
निकों आये देषि राजा सन्मुख जाय चरणारबिंदनमें सिर धरि. प्रणा-
मकरि पाद्य अर्घ्य आसन देय पूजनकरि बिनती करतभयो. आज
मेरो जनम सफल भयो. मै कृतकृत्य भयो. मेरो राज्यभी धन्यभयो.
अब आपके पधारिवेको कारण जाणिवेकी बांछाहै. सो आग्या करि-
ये. तब बेदव्यास राजाकी राजसमृद्धि देषी तीनयोजनलों विशाल
सभा है. तामें तीन कोटि क्षत्रिय सर्वही तरुण, शूर शस्त्र अस्त्रविद्या-
में निपुण. वस्त्र शस्त्र अलंकारनकरि मंडित तिनके बीच रत्नसिंघास-
नपरि राजा ऐसो दीप्यो ज्यों देवसभामध्य इंद्रसोहै. ताकी विभूति
देषिके बेदब्यास बोले, हेराजा जन्मेजय! तेरो प्रभाव देषि हमारो
मन बहुत प्रसन्न भयो. यासमयमें तेरे तुल्य और राजा धर्मात्मा
धीर वीर दाता हैही नहीं. तातें प्रजान्कों पालन करो. नीतमार्गमें
चलो. ज्यों तेरो प्रताप बधैगो. ऐसे सुणि राजा जनमेय यूं बो-
ल्यो, हे विष्णुरूपमुने, तुम त्रिकालग्य हो. तुमसरीसे जिनकों उ-
पदेश करनेवालेहैं ते कौरव पांडव कैसे युद्धकरि नाश पाये? उ-
नकों युद्धतें तुम निवारण क्यों नकरे. द्यूतक्रीडामें द्रौपदीको
अनादर करवेवाले कौरव तिनकों ऐसे अपराध करतेनकों तुम
क्यों रोके नहीं? तब बेदव्यास बोले. कौरव पांडव मदोन्मत्तहोगये.

अरु होएहारकरि उनकी बुद्धि भ्रष्ट होइगई सो हमारो कह्यो मा-
न्यो नहीं अरु सुएयोहू नहीं. तब जनमेय बोल्यो हे महाराज!
पहिले जाएिकरभी नमान्यो याको कारण कहा. जब वेदव्या-
स बोले हेराजा जनमेय! होएहार ऐसोही बलिष्ठ है. सोनमा-
निवेदहै. तातें तोहूकों होएहार कहेंगे. सो तूंहूंनमानेगो. ताकों
एक दुष होयगो. जोतूं भलो चाहै तो हमारो बचन मानियो. तो-
कों दुषी देषैंगे तब हमकूंहूं दुष होयगो. ताके पहिलेही कहि-
वेकों आयेहैं. एक उतपात होइगो. तब राजा जनमेय बोल्यो,
आपकी आज्ञा होइंगी सोई करोंगो. परंतु कहां उत्पात होइगो.
अरु कैसी वाकी शांति होइगी ? सो आप कहिये. जब वेदव्यास
बोले. हेपुत्र जनमेय! भवितव्यकर तेरो शरीर बिगडिजाइगो.
छह महिनोकेभीतर यह वृत्तांत होइगो. तातें मैं सावधान क-
रोहों. परंतु तूं नमानेगो. उत्तरदिशातें एक अश्व आवेगो. ताकों
तूं षरीद मतिकरियो. अरु जो षरीदभी करै तो वाके ऊपर
सवारि मतिकरियो. जो सवारिहू करै तो बनमें सिकारको मति
जातियो. अरुशिकारकों जाये तो वा वनमें एक सुंदर नारि
नजर आवे. ताको अंगिकार मतिकरियो. कदाचित् अंगिकार
हूं करै तो वाको कह्यो मति करियो. अरु जो कह्योहू करै तो
वाके बचनतें अश्वमेध जग्यतो मति करियो. जो अश्वमेध हू
करै तो बालकनिकी बरणी तो मति करियो. अरु बालकनिकी
बरणीहूं करै तो क्रोधतो कदाचितही मति करियो. परंतु हे
राजन्! ये इतनी बात मे कहीहै. सो सबही होइगी. अरु तूं
करैगो. तापीछे तोकूं घोर दुष्ष होइगो. यह ऐसेही भवितव्य है.
तातें तूं मेरो बचन मानैगो पीछे तूं क्यूं यादि करेगो, तब मैं
तेरो संकट मिटाऊंगो. ऐसे कहिकरि वेदव्यास आपके आश्रम-
कों गये. तब राजा जनमेयहू वेदव्यासकों बचन मानि मनमें वि-
चारि ऐसे न करणो. यह कितनेक दिनलों बाद राजा यादि राषी.

ताపीछे. विस्मरण होइगयो. ऐसे रहते कोइएक समैमें घोडान-
कों व्योपारी आयो. सो सुणि राजा घोडानके देषीवेकों गयो.
तिनमें दोषरहित सर्वगुणसहित एक अश्व देष्यो. ताको राजा ष-
रीद्यो. अरु अश्वशालामें आयके सन्मुष बंधायो. ताको देषि
देषी बहोत प्रसन्न होइ. ऐसे रहिते कितेक दिन पीछे वाकी ग-
ति वेग देषिवेकों धनुषबाण धारि सवारि होइ. वनकों चल्यो.
तहां एक बराहकों देषि वाके ऊपरि बाणप्रहार कर्‍यो. ताके ल-
गतेही वाके उदरतें एक सुंदरी निकसी. ताकों राजा पूंछतभयो.
हे सुंदरि! तूं कोणहै? देवांगनाहै, के अपछराहै, अथवा किन्न-
रीहै, के ऋषिकन्याहै? तेरो सो रूप मैंने औरको देष्यो नहीं.
तब कन्या बोली- हे राजेंद्र! मैं राजऋषीकी पुत्रीहों. पिताकी
आज्ञातें पतिकी वांछा करी मैं तेरै देसमें आईहूं. तब राजा
बोले, तिहारे पिताकी कहा आग्या है कहो. जब कुमारी बोली.
जंबूद्वीपके मध्य हास्तिनापुरको राजा जनमेजय तेरो पति होय
गो. तातें तोसूं पूछोहूं. वह जनमेय तूंहीहै कहा. तब राजा बोल्यो,
जनमेजय मैंहीहूं. तूं तेरे पिताकी आग्यातें मेरी भार्या हो. क-
न्या बोली. हे राजन्, दोई बरदान दिये. मै तुम्हें बरूं. जब राजा
बोल्यो. कौनसे दोई बरहै? सो कहो. मैं निश्चै द्योंगो. तब कुमा-
री बोली, मोकों पटराणी करिये. अरु मोसहित अश्वमेधजग्य
करी. जब राजा अंगीकार करि गांधर्वविवाह करि अश्वपै चढा-
य पुरको आय महलनमें प्रवेश कर्‍यो. फेरि और राणीनकों
त्यागकरि वाहीकों पटराणी थापि वाके संग विहार करतभयो.
तब कितनेक दिन पीछे वह महाराणी बोली, मैं पटराणी तो
भई. पै अब अश्वमेधभी करो. तब राजा वाके वचनतें अश्व-
मेधकों आरंभ करतभयो. सबही वेदपाठी ब्राह्मणनकों देशांत-
रतें बुलाई बरणी करी आचार्यादिक सबही अपने कर्म कर-
त भये. ऐसे कर्म होतें राणी अश्वको उपस्थ हाथमें ले स्पर्श

करत भई. जब उपस्थकों फूलतो बधतो देषि बरणीके बालक ब्राह्मण हँसे तब उनके दांत निकसे.देषि राजा क्रोधकरि षड्गले. अठारह ब्राह्मणके मूंड काटि अग्निकुंडमें डारि दिये. जब अग्नि क्रोधसूं प्रज्वलित होई मंडप जारि हस्तिनापुरकों दग्ध कस्यौ. तब राजा पछितायो. मैजाणतेंहूं भूलिकरि कहा कुकर्म कस्यौ. पुन्य तौ गयो. पर ब्रह्महत्या लगी. याकों नजाणिये कहा फल होइगो. ऐसे चिंता करतेही राजाके गजचर्म होइ गलित कोढ भयो. होठ, नासा, कान, भौंह, हाथ, पांव, नष, केश सर्बही अंग गलिवे लगे. शरीरमें दुर्गन्ध होइगई. तब राजा अतिव्याकुल होइ बेदव्यासकों सुमरण कियो जब बेदव्यास आये. राजाकी दसा देषि बोले. इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायां आदिपर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वेदव्यासउवाच हे जनमेजय तूं पापिष्ठहै. दुराचारी है. तेरो मुष देषणो योग्य नहीं. मै तोसों पहलेही कह्योहो. सोतैं मेरो बचन मान्यो नहीं. तब राजा बोल्यो हे व्यास देव मैं दुर्बुद्धि पापिष्ठहौं. गुरूनकों बचन मान्यो नहीं. और क्रोधकरि ब्राह्मणहू मारे. मेरे अपराधनकों तौ कहांताई कहौं. परंतु आप मेरो उद्धार करो. जब व्यास बोले नीलके रंगे अठारह बस्त्रनकों अंतरपट करि महाभारत सुणो अठारहपर्वनके सुणेसों अठारह हत्या जायगी. जो सत्य मानेगो तौ जो मेरी कही सत्य न मानैगो तौ नजाइगी. एक एक पर्व सुणेसों एक एक बस्त्र निर्मल होइगो. यहही प्रमाण जाणियो. ऐसे मानि बेदब्यासके मुषसों राजा भारत सुणत भयो. तब कथाको प्रारंभ करि बेदव्यासने यहहू कही. हे जनमेजय महाराज कुरुक्षेत्रके जुद्धमें भीमसेननें हाथी जो फेंके सो आकाशमें अद्याप भ्रमतेहैं. यह सुणि राजा जनमेजय सीस धून्यो. मनसें आई नहीं. जब बेदव्यास आकाशमें पौनको रोकी तब वे कितनेक हाथि गिरे. तिनसों हस्तनापुर

चूर्ण हुवो. सो देषि राजा बेदब्यासके पांवनमें गिस्यो अरु कही मैं अपराधी हों सो मेरो अपराध क्षमा करो. जब ब्यास कही. जो तेरी और हत्या तो नाश होगई. अर एक हत्या नाश जब होइगी तब मेरीसंग बद्रिकाश्रम चलेगो. सो राजा भारत सुणें पीछे बेदब्यासके संग बाद्रिकाश्रमकों गयो. वहां ब्राह्मणनके आगे ब्यास राजासहित बैठी निबेदन कस्यो. हे ब्राह्मणहो मेरी बिनती सुणो. ये सोमवंशी परीक्षितको पुत्र राजा जनमेजय है. सो याकी यह हत्या बाकी रहीहै. ताही तुम निवारण करो. ऐसे ब्यासके बचन सुणि उनब्राह्मणननैं यह हत्या तिल तिलभर अंगीकार करी. तब बलसों ताहि आपस्मेंसों नास करी. तोहूं एक बस्त्रमेंकों कछूक नील चिन्ह मिट्यो नहीं. तब बेदब्यास फेरि राजाकों हस्तिनापुर ल्याय सिंघासन बैठाय राज्याभिषेक कस्यो. अरु कही. तेरा हाथी, घोडा, रत्न, द्रव्य, धनधान्य पूर्व संचित है. जो है सो दान करि और भारतको पाठ करि भोजन करेगो. जब यह अवशेष हत्या मिटैगी. ऐसे कही बेदब्यास तो गये. सो सुणि राजा जनमेजय दसदिनमें पाठ होई तब भोजन करत भयो. या प्रकार राजाको कष्ट जाणि करि बेदब्यासमुनि भारतको सार काढि समुच्चयकरि वैशंपायनमुनि शिष्य है तिनकों देके राजापास भेजे. तब वैशंपायनकों राजा आवत देषि. हाथ जोडि अर्घ्यपाद्यनसों सत्कारकरि आसनपे बैठाय फेरि पूंछत भए. मैं आज धन्य भयो. कृतकृत्य भयो. आपके आगमनको कारण कहिये. तब वैशंपायन बोले तेरे नित्यपाठ करिवेके निमित्त भारतसारसंग्रह वेदब्यासने पठायोहै. सो याकों सुणि नित्यपाठ करो. तुम्हारे सर्व पाप मिटैगो यह निश्चै जानो. तब राजा बोल्यो मैं एकाग्र चित्त होइ सुणोंगो. आदि मध्य अंत्य पर्यंत भारतसारके अठारह पर्व हैं सो कहो. जब वैशंपायन बोल्यो भारतके श्लोकके एक चरण श्रवणतें. नरबदाके दरसनतें विष्णुके सुमरणतें सर्व

पातक नष्ट होतहै. तब राजा बोल्यो हमारे पूर्व पुरुष पांडव कैसे उतपन भए. अरु पांचनके द्रौपदी एकही भार्या भई याको कारण कहिये ॥ इति श्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायां आदिपर्वणि द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ कोईएक समेमें श्रीमहादेव पार्वती, कैलासशिखरमें रत्नसिंघासनपैं बैठि बिनोद करत भये. तासमें पांच वृषभनसहित कामधेनु आई तब वाकों देषि पार्वती हंसिके शिवसों बोली. अहो देव याकों देषो. सब देव जाकों दंडवत करे. ऐसी यह कामधेनू पांचवृषभनकों संग लिये. फिरती. लजावे नहीं है. ऐसे हास्य सुणिके कामधेनुने पार्वतीकों सराप दियो. हे पार्वति तूं मेरो हास्य करेहै सो मनुष्य देहधारी तूंहूं पांचभरतानके संग विचरेगी. यह मेरो वचन सत्यही होइगो. तब पार्वती स्रापसूं दुःखित होई महादेव सों बोली. हे नाथ या स्रापसों शुद्ध होइबेको उपाय करो. जब महादेव मनमें विचार करि नंदीगणसहित ब्रह्मा पास गए. ब्रह्मा महादेवकूं आये देषि सतकार करि चारों मुषकरिके स्तुति करी. और एक मुषमेंसों षरकैसी अवाज निकसी. जब महादेव ब्रह्माकों दुष्ट जाणिवाकों पंचम शिर काट्यो. सो वह शिर हस्तमें लग्यो गिर्‍यो नहिं. तब महादेव ब्रम्हहत्याके भयकरिके कैलासकों आये. पार्वती दूरहीतें पतिके हस्तमें ब्रह्माके शिरकों रुधिर चुचावतो देषि कहै इहां मति आवे. तब पार्वतीहू अनादर कर्‍यो जाणि महादेव तीर्थयात्रा करत भए. ऐसे फिरते एक ब्राह्मणीघरमें गाय दूहवेकों आईही. तहां ब्राह्मण वत्साकों चूषत बीचहीमें पैंची बांधि दियो. जब वा बछडानें शींग कीदे वांको पटक दियो. तब वत्साकों ब्रह्महत्या लगी. जब बच्छा ब्राह्मणीसों बोल्यो. ब्रह्महत्याको दोष कहिवेमें आवे नहीं. बालहत्या एक जुगदहे. स्त्रीहत्या तीनजुग दहे. गायहत्या पांचजुगतांई दहे. ब्रह्महत्या कल्पांतपर्यन्त दहे.

पीछे रौरवनर्ककों पहुंचावै. सो यह दारुण ब्रह्महत्या मोकों लगी. तातें सुंदरक्षेत्रमें जाय याके धोवेको जत्न करोंगो. ऐसे उनकों संवाद महादेव सुणत्त भए. जब ब्रह्महत्या ब्राह्मणसों निकसी. वछ्राके सन्मुख दौडी ताकों देषि वछ्रा भग्यो. वाके पीछे हत्या भगी. सो वछ्रा दौडि वाराणसिकों गयो. वहां मनिकर्णिकामें पडि प्राण छोडि रुद्रलोककूं गयो. महादेवभी वा वछ्राके पीछे पीछे गये. तहां शिर हाथसों छूटि गंगामें गिस्यो. तब महादेवहू काशीमें प्रवेश कस्यो. हत्या बाहर रही. फेरि महादेव जब काशीसों बाहर निकसे जबही हत्या साथ आवत देषे. तासों फेरि नेम करि काशीहीमें वास करत भए. ऐसें रहते कितेकदिन पीछे तिपुरनासा दैत्य प्रगट होई तीन्यो लोक पिडत किये. जब सब देवता मिल ब्रह्मापास गये. जब ब्रह्मा कही. यह असुर महादेवहीसों मरैगो. सो सुणि देवता महादेवजीको तलास करिवेकों पार्वतीपास जाय पूछ्यो. महादेव कहां गये? पार्वती बोली. मनुष्य लोकमें तीर्थजात्रा करिवेकों गयेहै. सो तुमहू तलास करो. जब विष्णुसहित्त सब देव काशीमें आई शिवकों देषि प्रणाम करि चारो तरफ ठाढे रहे. तब शिव बोले. हे देवताहो तुम कोण कार्यको आये? सो सुणि देवता बोले. त्रिपुरासुर तीनूं लोक जीते तातें तुम कैलास चलो; अरु वाको मारो. ऐसे सुणि शिव सब समाचार विष्णूसों कहि कहि मेरी ब्रह्महत्या मिटै तौं चलों. वैशंपायन बोले शिवको सुध करिवेको विष्णु हत्याके पास जाय बोले हे हत्या तूं शिवके शरीरकों छोडि. और जो वर मांगे सोही धोंगो. तब हत्या बोली. अठारह अक्षौहिनी सेनाको रुधिर पान करावो तो त्रिपुर मारवे. तांई महादेवके सरीरकों पीडा करों नहीं. विष्णु बोले. द्वापरजुगके अंतमें चंद्रवंशमें अवतार ले तेरो मनवांछित रुधिरपान कराऊंगो. ९...

हत्यानतें हत्या शिवकों छोडि तब शिवदेव मंडलीसहित कैलासमें आई. सामग्री बणाई. त्रिपुरकों विध्वंस कस्यो ॥ इतिश्री भाषा भारतसारचंद्रिकाया आदिपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥

॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे देवता आपआपके स्थानगये. विष्णुहू वैकुंठ गये. ब्रह्मा महादेवसों बोले हे रुद्र तुम हत्यानाशकी उपाय करो. तब कल्याण होइगो. तब ब्रह्मा, महादेव विष्णुकेपास गये. महादेव बोले. हेनारायणदेव मैं मूढतातें दारुण कर्म कस्यो. अब यापापतें सुध होयवेकों प्रायश्चित्त बतावो. तब भगवान् बोले. हे महादेव तुम सन्यासीको रूपधारी बारहवर्षपर्यन्त पृथ्वीमें तीर्थजात्रा करो. ब्रह्माके शिरकूं हाथमें राषो. भिक्षा भोजन करो. ऐसे करते गौतमी गंगा पहुंचोगे तब शुद्ध होवोगे. जहां सीतेश विराजे है, वह तुम पवित्र होंगे. वा हत्याकूं वांछित रुधिरपान द्वापरमें मै कराऊंगो. विष्णुकी आज्ञातें रुद्र तैसेही करत भये. गोदावरीमें स्नान करतेही ब्रह्माको शिर हस्ततें छूटिपड्यो. शिव शुद्ध होई कपालेशनामक शिवलिंग स्थापन करत भये. कुंभराशीमें शनैश्वर, सिंहराशिमें बृहस्पति ऐसे योगमें ज्यो गोदावरीस्नान करे सो सर्वपापतें मुक्त होई. ऐसे गोदावरीस्नानतें शिवकूं शुद्ध देषि विष्णु बोले हे महादेव तुम पांचदेह धरिके पृथ्वीमें क्षत्रियवंशमें अवतार लो. हय वास करो. पार्वतीभी द्रुपदराजाकी कन्या होवो. ऐसो विष्णूको बचन अंगीकार करि महादेवहू निजस्थान आये. जितनै महादेव कैलास आवे. तापहले ब्रह्मा गंगाकूं गौरीकूंभी यह कथा कहि कहि महादेव गोदावरीको सेवन करै है. तुमारो अनादर करि दियो. तो हू तूम क्षमा करो हो. परंतु ऐसे पतिसूं क्षमा करणो योग्य नहीं. ऐसे उपदेस करि उन दोऊनके हृदयमें रोष करवाय दियो. महादेव मन्दिरमें आवतेही गंगा गौरी शिवसूं कलह करत भई. तब महादेवहू रोषकर पूर्णहोत्त भये. घृतकी आहुतिसे करि जैसे

अग्नि प्रज्वलित होय तैसे प्रचंड होइ करि गंगासूंतो यह बोले तुम तो पृथ्वीमे शंतनुराजाकी भार्या होवोगी. पार्वतीसूं कही. तुम द्रुपदकी कन्या होवोगी. ऐसे सुणि क्रोध छोडि पार्वती महादेवतें विनती करत भई. जहां तुम वसो तहांही मैं वसूं. ताइमें मोकूं सुष होई. तातें मनुष्यलोकमें तुमही अवतार धरो. यह भी योग्य है. तब महादेव बोले हमहूं पंचमूर्ति धरिके तुम्हारे भर्ता होय. मनुष्य लोकमें विहार करेंगे. गंगासूं कही तुमहू मेरो अंश शंतनुराजा है. जहां मानुषीरूप धारि हस्तिनापुरमें जाय वाकी सेवा करो. शिवके वचनतें गंगा दिव्य मानुषीरूप धारि गंगातीर आई तासमयमें चंद्रवंशी शंतनुराजाहु विहारके निमित्त आये. तहां सुंदरि नारीकूं देषि ताके रूपकरि मोहित शंतनूराजा पूंछत भये. तुम कोणहो ? कोणकारणतें यहां आई हो ? सो कहो. गंगा बोली मैं गंगा हूं. शिवके शापतें पृथ्वीमें आईहूं उत्तमवरकी वांछाहै. शंतनु बोले, मैं सकल राजानसे पूजित शंतनुनाम राजा हूं. मोहिकूं तुम वरो. गंगा बोली महाराज, तुमकूं वरूंगी; परंतु मैं मेरी इच्छातें जो करूं सोही करूं. ता कार्यकरतें जब रोकोगे तबही नहीं रहूंगी. शंतनुराजा कहेमाफक करार करि निजमंदिरमें लेगयो. और विवाह करत भयो. ताके संग विहार करते करते सात पुत्र भये. परंतु जो पुत्रभयो ताहीकों गंगाप्रवाहमें वहाय दियो. ऐसे सात पुत्र वहाये. तहां तांई संतनु क्षमा राषी. अष्टमपुत्रकूं वहाते मने करी. तबही गंगा अंतर्धान होई कैलास गई. पुत्रकों संतनु पालन कस्यो. गांगेय नाम धस्यो. वहही भीष्मनामकरि विख्यात भयो. संतनु बहोत वर्षपर्यंत भार्याविनु रहे. पीछे हरिदास कैवर्तकी कन्या मत्स्योदरीसों मै ब्याह नकरूं ऐसे भीष्म करार करिवाकूं प्रसन्न करि पिताकों विवाह करायो. ऐसे सुणि जनमेजय पूंछत भये. हरिदासकैवर्तकी पुत्री शंतनु राजा होय कैसे .

यह मेरो संदेह निवारण करौ. वैशंपायन बोले सुधन्वानाम रा-
जा देशांतरगयो. वाकी भार्या सुशीला घरमें रजस्वला भई तब
निज दासीकों स्वामीकेपास पठाई. सो सिकरीकों रूपधारि रा-
जाके पास गई. जब राजा दूनामें वीर्य घाल वाकों दियो.सो
लेके वह आयेहि. तहां मार्गमें एक और सिकारी आई. ज-
हां दोउनको जुध भयो. तब दोना यमुनामें छूटि पस्यो ताही
मांसके भ्रमसों मछी निगलगई. सो वह अंडकानाम अपछ
राही. परंतु ब्रह्माके शापतें मच्छी भई सो वीर्य निकलगई.
ताके प्रसूत भई सो अतिरूपवती कन्या भई. तापीछे वह
मच्छी तो अपने लोक गई. वा कन्याकों धीवर पालत भयो.
दोई वाके नाम धरे. मत्स्यगंधा १ सत्यवती २. तापीछे वह
हरिदास धीवर कन्याकों पाल बडी करि. एक नवका बणा
ई दिई. सो धर्मके अर्थ आयेगयेकों पार उतारत रहे. ऐसे
कोइक समैमें शिष्यनसहित पराशर मुनि आये. वा कन्यासो
कही हमकों पार उतार. तब वह मुनिकों नांवमें बैठाय पार
उतार भई. तहां मध्याह्न समै जमुनाके बीच वा तरुणीकों नां-
वमें इकली देषि मुनि बोले तो मैं संतान उपजावैंगे. जब वह
बोलीसब जन चारों तर्फसों देषेहै. अरु मैं कन्याहों. तब मु-
नि बोले. कोउहू न देषेगो. अरु तू प्रसूति भयेहू कन्याही रहेगी.
ऐसे कही चारों तर्फ अंधकार करि अंगसंगसों मच्छगंधाही
ताकों योजनगंधा करि गर्भधारण कराय मुनि गये. तब वहूहू
जमुनाके द्वीपमें वेदवेदांगपारंगत ऐसो पुत्र जनती भई. द्वीपि-
में जन्मे तातें द्वैपायन कहाये. सो द्वैपायन बोले जब विपदामें
तूं मोकूं याद करेगी तबहीमें आऊंगो. ऐसे कही वनमें तप
करिवेकों गये. मुनिके प्रतापतें. वह पुत्र जनमे पीछेहूं पहिलेही
तैसीही कन्या होइगई ॥ ॥ इतिश्रीभाषा भारतसारचंद्रिका-
यां आदिपर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ पुत्र प्रसूत भये पीछूं कन्याही रही. ऐसी जोजनगंधा ताहि राजा शंतनु देषि करि हरिदास कैवर्त- सें जाचना करी. तब हरिदास बोले यामें पुत्रहोई सोही रा- ज्य करै. यह करार करो तो कन्या द्यों. जब संतनु भीष्मकों ज्येष्ठ पुत्र जानि वाकों वचन सुणि पुरकूं आए. पें सत्यवती के रूपकूं सुमरण करत रातकों नीद न आई. प्रातही मंत्रीन- सों सबव्रतांत जाणि भीष्म हरिदासपास जाय पिताके नि- मित्त कन्या जाचत भए. तब हरिदास बोल्यो कन्या तोकों तो द्यों. तुमारे पिताकों नद्यों. तुम ज्येष्ठपुत्र हो सो तुमारो पुत्र तो राज्य पावै. अरु राजाके अब पुत्र होय सो राज्य पावै नहीं. याकारणतै तब भीष्म कहै मै राज्य हूं करों नहीं. अरु व्याह हूं करो नहीं. ऐसी प्रतग्या करि पिताको विवाह करायो. जब पिताहू प्रसन्न होई भीष्मकों स्वेच्छामृत्युकों बरदान दियो. ता पीछै वा जोजनगंधामें दोई पुत्र भए. एक को नाम चित्र, दूसरो विचित्र नाम ऐसे पुत्र भये. पीछू शंतनु परलोक गए. त- ब भीष्म सत्यवतीकों मातभक्ति करि सेवत भये. चित्रविचित्र- कूं तरुण देषि काशीके राजाकी तीन कन्या अंबा१ अंबिका२ अंबालिका३ ऐसी तीन कन्याही तिनकों स्वयंवरतें बलकरि लै आये. सो उन दोउ भ्रातानसों व्याह करत भये. तब अंबा बोली, मेरो मन शाल्वराजामें आसक्त है. जब वाकूं साल्व पास भेजी. अंबिका अंबालिकाकों व्याह चित्रविचित्र सो कियो. अंबा शाल्वकेपास गई ताहि देषि शाल्व कही भीष्म तोहि जीति लेगयो सो तूं वाहीकी भार्या है. मै तो व्याह करों न- हीं. तब वह भीष्मपास आई. कही. मेरो चित्रविचित्रसों व्या ह करो. जब भीष्म कही. तेरो चित्त औरमें आसक्त है सो हमारे कामकी नहीं. तब वह कन्या दोऊ तर्फसों भ्रष्ट भई जाणि मुनिनके पास जाय सन्यास धारणकी जाचना करि.

तहां मुनिमंडलीमें होत्र वाहन नाम राजऋषी याको नानो होसो याकों दुषी देषि बोल्यो हे पुत्री महेंद्र पर्वतमें परसरुाम हे. सो वे भीष्मके गुरुहे. तिनके पास जा उनको बचन भीष्म मानितो हि अंगिकार करेंगे. ऐसे वार्ता होते परसरुामके शिष्य अकृत ब्रण बोले प्रभात परसरुाम ह्यांही आवेंगे सो उनसों सबही मिलि वृत्तांत कहेंगे. ऐसे कहे वाकों वांही राषी. जब प्रभातही परसरुाम आये तब उनसों सब मिलि वृत्तांत कह्यो सो सुणि परसरुाम कही भीष्म मेरो शिष्यहे सो मेरो वचन मानेगो. तेरो मनोरथ सिद्ध करिवे कों कुरु क्षेत्र चलेंगे. ऐसे कहि अंबाकों संगले कुरुक्षेत्र गये. उहां भीष्म गुरुकूं आये देषि विधिवत पूजन कियो. तब परसराम कही. या अंबासों विवाह करो. जब भीष्म नट गये तब परसरुाम क्रोध करि जुद्धकों तयार भये. जब आत ताई गुरुसों जुद्ध करिवो धर्म हे जाणि भीष्महू सनमुष आये तहां दोउनकों अति घोर युद्ध भयो परसरुामके अस्त्र प्रहार करि भीष्म जबजब मूर्छित होय तबही गंगा गुपत आय आपके जलसों अभिसेख करि सचेत करे तब भीष्म फेरि जुद्धकों सन्नद्ध होइ होइ जुद्ध करत भये. ऐसे तेईस दिनलों जुद्ध भयो ताहि पीछे दोऊ ब्रह्मास्त्र जुद्ध करिकों तयार भये. सो देषि देवता आई दोउनकी स्तुति करी जुद्ध निवारण करायो. ऐसेहू आपको मनोरथ सिद्ध न भयो जाणि अंबा भीष्मके मारिवेकों तप करत भई. सो यमुना तीर वाको उग्रतप देषि महादेव आइ बोले वर मागि जब अंबा बोली मै भीष्मकों मारों. तब महादेव कही तेरी इच्छा जन्मांतरमें सफल होइगी. ऐसे कहि अंतर ध्यान भये. सो सुणि अंबाहू अगनिमें प्रवेस कियो. द्रुपद राजाहु पुत्रके निमित्य तप करे तहो ताहूकों महादेव वरदान दियो जो तेरे प्रथम पुत्री होय कछुक दिनमें वहही पुत्र व्हैजाइगो. ता वरदान तें अंबा द्रुपद

राजाके पुत्री भई. सो द्रुपदहू पुत्र पुत्र भयो कहि पुत्रकोसो सब उत्सव करयौ ताको दसार्न्य देसके राजा हिरण्यवर्माकी पुत्रीसों ब्याह करायौ तब या छलकों राजा जाणिसेनाले द्रुपदको नगर घेरयौ. तब वह कन्या भागिवनमें जाइ रुदन करत भई सो वहां स्थूलाकर्ण नाम जक्ष सब व्रत्तांत जाणि जुधनिवारणप र्यंत आपको पुरुषार्थ देत भयो तब वह कन्या पुरष होय मात पितासौं मिलि हिरन्य वर्माकों पुरसार्थ जिताय उपद्रव सांत क. रयो तापीछै वह जक्ष स्त्री होइ आपके भवनमें रहै हो. वहांकु बेर आये सो समीपहु आये जाणिवाने सत्तकार न करयौ तब कुबेरहू वृत्तांत जाणि वाकों श्राप दियो जब ताई वह जीवैगो तब ताई वह पुरसही रहैगो. तूं स्त्री रहैगो. ऐसे कहि कुबेर आ पके धामगए. वह जक्ष फेरी आपको पुरुषार्थ ले सक्यो नहीं वह कन्या भीष्मके मारिवे निमित्त सिषंडी भयो. तापीछै चि त्र विचित्र तरुण भये सो स्त्रीनके भोग विलासमें रहै. भीष्म पितामह माता की सेवामें रहै सो उनकों सेवामें रहते देषि चित्र विचित्र मनमें विचारत भये. जो यह भीष्म रात्रकूं सत्यवतीके पास रहै है सो या पापीको वध करणो. ऐसे मनमें धारि षडगले उनकी चेष्टा देषिवेकों रात्रकों गुप्त रहै. तहां उनकी सब चेष्टा देषी सो भीष्मकों तो पुत्रवत्त सेवा करत देष्यो. सत्यवतीकों मा तावत्त रहतै देषी. प्रभात भये लज्जित होय आपकों धिकार त भये. भीष्मकों बोले. जो माताकों वा ज्येष्ट भ्राताकों निरा पराधबध विचारै ताको कहा प्रायश्चित्त. तब भीष्म बोले जो माताकौं वा ज्येष्ट भ्राताकों बध विचारै ताको हजार ब्रह्म हत्या को पाप लगै. सो वह समीव्रक्ष वा पीपल पोलेमें प्रवेस करि दा ह करै जब स्वध होइ. ऐसै स्वणि वनमें जाइ दोउ वाही विधि सौं मरे. तब भीष्म स्रणि बहुत दुष्ष करत भये. जब सत्यवती वामात्रिन नें भीष्मसों बहुत कह्यै. प्रतज्ञा भंगके भयसों वि

वाह वा राज्य न करत भये. तब सत्यवती पूछ्यौ बंस कैसे रहै. जब भीष्म बोले बांध वनके वा ब्राह्मणनके वीर्य करि कुल रहै. ऐसे वेदमें कह्योहै. ऐसे स्कणि सत्यवती वेद व्यासको स्मरण करत भई. तब तहां वेदव्यास आये. तिनसों सत्यवती वा भीष्म दीन होइ विनती करीजो चित्र विचित्रकी भार्यानमें तुम संतान प्रगट करो. तब वेदव्यास अंगिकार करि अंबिकाकों एकांतमें बुलाई तहां वासों उनको तेज सह्यो नगयोजब आंषे मूंदि लीनी. तब रितुदानदे कै कही याको पुत्र अंधो होइगो. फेरि दूसरी अंबालिका कों बुलाई सो वाहूसों तेज सह्यो नगयोजब पांडुवर्ण होइ गई तब वाहूकूं ऋतु दानदे बोले याके पांडुवर्ण पुत्र होइगो. ता पीछे एक दासी कों ऋतु दान दियो अरु कही याके नैरोग्य बलवान धर्मराजको अवतार हरिभक्त. बिदूर. नामा पुत्र होइगो. ऐसे कहिके बेद व्यासतो गये. पीछु उनतीन्यौनके पुत्र भये. अंबिकाके प्रथम बडो पुत्र भयो ताको नाम धृतराष्ट्र दूजो अंबालिकाके भयो ताको नाम पांडु. दासीके भयो ताको नाम बिदुर इन तीन्यौनको भीष्म बहुत सनेह करि पाले. फेर बडे भये जब उनको व्याह करिवेको विचार्यो ताही समै स्कणी गांधार देसको राजा स्कबल ताकी पुत्री गांधारी सो महादेवको पूजन करि सो पुत्र होवेको वरदान पायो है. तब भीष्म जाय वा को देस धन रत्नदे गांधारीकों ल्याय धृतराष्ट्रको व्याह कर्यो. श्रीकृष्णको पितामह सूरसेन वाकी पुत्री प्रथा ताकों कुंति भोज राजाको धर्म पुत्री करवेको दीनी. वानेहू वाको कुंतीनाम करि पालन कर्यो अरु दुर्वासा मुनिकी सेवा मे राषी तासों दुरवासा प्रसन्न होइ एक मंत्रदेके कही या मंत्र को पढिजा देवताको स्कमरण करेगी सोही आवेगो. अरु तो में संतान पैदा करैगो. ऐसे कहि दुरवासा तो गये. कुंती महल में आय मंत्र पढी सूर्य देवको स्कमिरण कर्यो तहां सूर्य आये ति

न्है देषि कुंती भयभीत होइ कही हे महाराज, आप पधारो मोक-
न्याको अपराध क्षमा करो. मैंतो मंत्रकी परिक्षा लेवेकों यह प-
ढ्योहो. तब सूर्य बोले हमारो आइबो ब्रथा होय नहीं. तोमै एक
पुत्र प्रगट करैंगे. अरु तेरो कन्यापणहू न मिटैगो. ऐसे करिवा
के गर्भ राषिगये. ता पीछे कवच कुंडल सहित सूर्य समजाको
तेज ऐसो एक पुत्र भयो ताकों कुंती अपवाद भयतें सिंदूषमे
धरि गंगामे बहाइ दियो. आप कन्याही रही. सो राधा सहित-
अधिरथ सूत अपुत्र गंगासें स्नान करतहो तहां वाने सिंदूषदे
षी जब लैके वाको षोली तामें पुत्र देष्यो तब वाको कर्ण नाम करि
पुत्र करि राष्यो. वाकों तीसों राजा पांडुको विवाह भयो. दूसरी म
द्रदेन राजाकी कन्या माद्री ताकों व्याही. देवक राजाकी दासी
की पुत्री पारसवी कन्या विदुरकों व्याही. तामे सत पुत्र भये. ॥
॥ इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायां आदिपर्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥
॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे धृतराष्ट्रतो अंध विदुर
दासी पुत्र ऐसे विचार भीष्म पितामह पांडुको राज्य देत भये त-
ब पांडु धनुष विद्यामें निपुण भए सो यो धान्न सहित बनमे सि-
कारकों गये. राजा उहां जाइ अनेक जीवनकों मारि बडो हर्ष पा-
वत भयो. ऐसे सिकार करते वह दिन एक हून भयो तामें पाप
संचय नहोय सो एक दिन किंमद नामा मुनि दिनमे विहार क
र्यो चाह्यो सो स्त्रीसहित मृगरूप धारि वनमें विहार करत रहे
वाके पांडुने बान मार्यो तब वाने श्राप दियो जब तू हूं स्त्री संग
करैगो तबही मरैगो. या रीतिके श्रापसों पांडुहू बहुत संताप
पायो तापीछे राज्य भीष्मकों सोंपि पांडु दोउ स्त्री सहित गंध
मादन पर्वत कों गयो. उहां ऋषिनकी संगतितें संतोष पाय
शतशृंग पर्वत मे तप करत भये. तकों कुंतीसों कही तुम देव
तासों वा रिषिसों संतान पैदा करो तब कुंती दुर्वासाके दिये मं
त्रसों धर्मकों बुलाय पुत्र उतपात्ति कर्यो तास मैमें आकास-

वाणी भई जो यह युधिष्ठिर नामा मूर्तिवान धर्मही है. यह वृत्तां
त सुणिके गर्भवती गांधारी पेटकों कूटिके तूंबा एक जनत भई.
सो वेद व्यासकी आग्या सौं वा तुंबेमें ते सूक्ष्म रूप सत्त पुत्र औ
र एक कन्या प्रगट भये तिनकूं जुदे जुदे घृत्त कुंडनमें राषि पाल
न करे. सो दुर्योधन आदि सत्त पुत्र भये. दुःसला नाम कन्या
भई जासमें दुर्योधन भयौ वाही समय फेर कुंती पवन तें भीम
कों उतपन्न कर्यो ताके जन्म समय देववाणी भई यह भ्राता
को भन्त दस हजार हाथीनकौ बल धारैगो. वा भीम पुत्र कों
गोदमें लीये कुंती व्याघ्र भयतें उठी तब गोदमैंते गिर्यो सोकि
तनेक पर्वत चूर्ण भये तातें सत्यही भीम नाम भयो तापीछै
कुंती इंद्रकों बुलाई अर्जुन नामा पुत्रकौं प्रगट कर्यो वाकेज
न्मसमैं इंद्रादि देवता आइ पुष्पनकी वृष्टी करी. अरु देववा
णी भई जो यह बालक वैरीनके नास करिबे वालो इंद्र सम हो
इगो. ऐसे तीन पुत्र देषि पांडु कूंतीसों बोले तेरे अनुग्रहतें
माद्रीहू पुत्रवती होई. तब कुंती वह मंत्र जपि माद्रीसों कह्यो
कोई देवकों स्मरण करो जब माद्री आश्विनी कुमारकों स्म
रण कर्यो ता करि दोय पुत्र उतपन्न भये. ता समें देववाणी
भई ये नकुल सहदेव नामा अति सुंदर वैरीनकों नास करत्तो
होहिंगे. ऐसे पांच पुत्रकी बाल लीला देषि पांडु कों बडो आ
नंद भयो. तब कोईक समेमें वसंत ऋतु करि वनकी शोभा दे
षि पांडु कामातुर होई माद्री सौं संग करिवे लगे. वाही समें आ
पको फल पायौ. पतिकी पंचत्वकौं प्रापति देषि माद्री कूंतीसों
बोली इन पुत्रनकौ तौ पालन तुम करो. मोमें स्वामी को प्रेम
अधिक हो सो मो विना परलोक हूमें सुष न पावेंगे. तातें सह
गमन करौंगी. ऐसे कहि पतिके संग अगनि प्रवेश कियो. ता
पीछै स्नत शृंगवासी मुनि पांचो पुत्रन सहित्त तेरमे दिन कुं-
तीकों भीष्मके पास ल्याय पांडुकौ सब वृत्तांत कह्यो सो सुणि

अंतर पुर सहित भीष्म रुदन कर्‍यो पीछै उनकौ प्रेत कार्य सर्व क रायौ. तापीछै भीष्म धृतराष्ट्रके तौ सतपुत्र पांडुके पांच ऐसेए कसौं पांच पुत्रनकौं समानजाणि पालन करत भये. ॥ ॥
इतिश्री भाषा भारतसारचंद्रिकायां आदिपर्वाणिषष्ठोऽध्यायः ॥६॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछै तहां पूर्वतपक रतैं सरधान मुनिकौ वीर्य उरबसीकौ देषि सरनके गुच्छमें गि- र्‍यौ. ताके दोइ विभाग भये. सो एकतौ कन्या. दूसरो कुमार सो संतनु राजा शिकारकौं वनमें गयोहै. तहां उनकौं देषि कृ पाकरिकै ले आये तातै कन्याको नामतौ कृपी अरु पुत्रको नाम कृप धर्‍यौ वे कृप सरधान मुनितैं बाण बिद्या मैं पारंगत भये जाणि भीष्म कौरव पांडवनकौं उनपैं बाण विद्या पढायवेकौं अर्पण करे. तिनपास सब प्रकारकी धनुषविद्या सीषे अरु बा लक्रीडाहीकरे तामे सबहीमें समान प्रीति रहै. भक्ष भोज्य सा मिलही करै चौपडहू षेलै. मल्लविद्याहू शीषे वन क्रीडा करै तामें भीम वृक्षनपै चढे बालक तिनकौं वृक्ष हलाय पटके. तहां कित नेकनके मुंड फूटि जाय काहूको हाथ पाउटूटि जाय ताको बडो को लाहल होत भयो ऐसै देषि दुर्योधन दुषपाय भीमके मारिवेकोउ पाइ कर्‍यो. गंगातट तामें प्रमाणकोटी नाम क्रीडा ऐक स्थान बणायो तहां सब क्रीडा करै भोजन करै ऐसै करतें एक दिन. भीमकौ विषकै मोदक षवाये तहां भीमकौ घोर निद्रा जाणि दु र्योधन आपके सारथि पास लतानसौं बंधाइ गंगामे पटकाय दियो वाके पडतेही पृथ्वी विदीर्ण भई सो वह नागलोककौं गयो तहां अनेक नाग रुधिर पान करिवेकौं वाकूं डसत भये. तिनके डसवेतें याको सरीर निरविस होय चैतन्य भयो तहां आर्यक ना म नागराज याके नानाको मित्रहो सो दौहित्र जाणि अमृत पान कराय वहां राष्यो इहां कौरव भीमकौं मर्‍यो जाणि हर्षित भये. भीष्म कुंती युधिष्ठिर दुषी भये. तहां कितनेक दिन भोग भोगा

ईनागराज जा मार्गतैं आयो हो ता मार्गतामार्ग होई गंगातीर प-
हुंचायो सो पुरमें आयो भीम ताकों देषि जो पहलें रूषपायो हो
सो तो दुषी भये. दुषीहै सो रूषी भये. ऐसें आपुसमें ईर्षा करत
परसपर सस्त्रनकों आधिक आधिक अभ्यास करत भये. ॥
॥ इतिश्रीभाषा भारतसार चंद्रिकायां आदिपर्वणि सप्तमो ऽध्या
यः ७ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ भरद्वाजमुनिकोवी
र्य घृताची अपसराके दरसनतें चालित भयो ताही द्रूनामें राष्यो
तहां पुत्र उत्पन्न भयो जातें द्रोण कह्यो वे भरद्वाज मुनितें वे-
द वेदांग सस्त्र अस्त्रविद्या सीषत भये भरद्वाज मुनिकों शिव
ब्रह्मास्त्र दियो हो सोहू इनकों दियो. कृपकी भागिनी कृपी तासों
ब्याह भयो. ता कृपी में उच्चैश्रवा कैसी तरें गर्जना पुत्र पेदा भयो.
तातें वाको नाम अश्वत्थामा धर्यो ता पीछे द्रोण द्रव्यकी वांछा
करि परसराम पासगये. तासमें परसराम सर्वस्व दान किये
चुके है तब इनकों रहस्य सहित धनुर्वेद दियो अरु बाल्या अ
वस्थामें राजा प्रसकों बेटा द्रुपद भरद्वाज पास धनुर्वेद पढत भ
यो. तहांही द्रोण द्रुपद मित्र भये. जब द्रुपद यह प्रतग्या करि
कि मैं राजा होहुगो तब तुमकों आधो राज्य द्योंगो. सो द्रोणाचा
र्य कितनेक दिन पीछें द्रुपदकों राजा भयो सुणि हूं तप करत रहे
विचार्योके राजा सत्य प्रतग्या वान है जासों जाइंगे जब हमारो
आधोराज्य लै लेंगे. तहां अश्वत्थामा बालक हो सो एक दिन ऋ
षिनके जग्यमें जाइ दूध पीयो तापीछे मातासों आइ अतिहठ
करि दूध माग्यो तब माता जव भिजोई मसालि दूध ऐसो जल क
रि पायो जब इनकही यहतो दूध नही अरु बहुत रुदन कर्यो
सो सुणि द्रोणाचार्य विचार कर्यो जो आज ताई कपोतव्रत्य
करि निर्वाह करत है पै अब बालक ऐसे दूध वास्ते रुदन क-
र्यो सो दूध गायविनाहोय नहीं तातें द्रुपद पास जाय आधो
राज्य लेणो ऐसें विचार करि द्रुपद आये. द्वारपाल सों कही

राजासों कह्यो तुम्हारो प्राचीन मित्र आयो है. जब द्वारपाल जाय सभामें राजासों निवेदन करी तब राजा पूंछत भयो कहातरे है द्वारपाल कही चीर पहरे मृगछाला धारे दंडलीये भीक्षुक सो है. ऐसे सुणि राजाको क्रोध तो आयो परंतु ब्राह्मण जाणि क्रोध कों रोकिके बुलाइ अर्घ्य पाद्य करि आसनपें बैठाय पूजन करि भोजनकी प्रार्थना करी. सो सुणि द्रोणाचार्य कही में तेरो प्राचीन मित्र हों सो आधो राज्य देणो कह्यो हो सो देगो. जब भोजन करोंगो. तब राजा क्रोध करि भृकुटी चढाई कह्यो ऐसी बालक पणेकी बातनमें कहा है. तासों भोजन करि कछुक दिन काटणे होइ तो रहो. नहीं तो नमस्कार है पधारो जब द्रोणाचार्य बोले राजा तूं तो भूलि गयो परंतु जो में साचो द्रोण हूं तो तो कों मित्रताको फल दिखाऊंगो. ऐसे कहि वहां तें चले सो हस्तनापुरके वनमें आये. उहां कौरव पांडव बालक्रीडा करत है. सो उनकी गेंद कूपमें परी ताहि निकास न सके तब द्रोणाचार्य इसीकास्त्रके इसीकनसों बेधि वाकों निकासि बालकनकों दीनी. तब बालक प्रसंन होइ यह वृतांत भीष्मसों जाय निवेदन कर्यो सो सुणि भीष्म उनकों सर्व सरूप जाणि उनके पास आइ कही आप पधारो महाराज्य आपही को है इन बालकनकों अस्त्रसस्त्र बिद्या पढावो. ऐसे कही सत्कार करि पुरमें लेजाय सर्व सामग्री करि सहित सुंदर भवनमें राषे. तापीछे सुभ मुहूर्तमें बालकनके पढाइबेको प्रारंभ कर्यो. द्रोणाचार्य धनुर्विद्या पढावत सुणि सर्व देस देसके राजपुत्र हू पढिवेकों आये. तिनमें कर्ण हू आयो. और धृतराष्ट्रके वैश्यकी विवाहत कन्यामें भयो युयुत्सु नामा पुत्र सो हू अभ्यास करत भयो. उन सर्व बालकनमें कर्ण ऐसे सोभित भयो जैसे नक्षत्रनमें चंद्रमा और अर्जुन उनमें तेज करि सूर्जवत सोभित भयो. तहां और तो सब दिनमें अभ्यास करें. अर्जुन रात्रसमें अं

धकारहूमैं अभ्यास करै. जाकों सबद वेधी भयो तासों गुरुअ
ति प्रसन्न भये. अरु आपकी सर्व विद्याको भार धरवेलायकहै
अर्जुनके अश्वत्थामाहीके मानत भये. भीम दुर्योधन येदोऊ
गदा युद्धमे निपुन भये. षडग जुधमें नकुल. अश्वजुद्धमें युधि
ष्ठिर सहदेव औरहू नाना प्रकारके जुद्धन मे निपुन भये. तापी
एकलव्य नामा भिल्ल द्रोणाचार्यके पास बाण विद्या सीषवेकोंआ
यो ताहि भिल जाणि द्रोण नटगये. तब वह बनमें जाय मृत्य-
का मय द्रोणाचार्यकी प्रतिमा बणाय बाणविद्या सीषवे ल
ग्यो सो अभ्यास करत करत बाण विद्यामें पारंगत भयो एक
समै द्रोणाचार्यके शिष्य वनमें गये तिनके देषिश्वान भुस्यो तब
भीलने वाको मुष बाणनसों तरकस कैसी तरै भरि दियो जब
यह सफाई लाघवता देषिवेसब आश्चर्य मानिवासो पूंछ्योय
ह बाण विद्या कोण पास सीष्यो. तूं कौन है जब वह बोल्यो भी
लनको राजा हिरण्य धन्वा मेरो पिताहै. एकलव्य मेरो नाम है.
द्रोणाचार्य पास यह धनुष विद्या सीष्योंहों. यह सब स्रणिद्रो
णाचार्य पास आय वृत्तांत निवेदन कियो. तब द्रोणाचार्य अ
र्जुनको उदास देषिवा भील पास जाय गुरु दक्षिणामें दाक्षिण
अंगुठा लियो जब अर्जुन द्रोणाचार्यकी सेवामें बहुत रहत भ
यो एक दिन वृक्षपै कृत्यम भास पंछी बणाय सर्वही वाके ग-
लेको निसाण बणाय बाण मारैसो कोई सों विंध्योनही तब
वाकों अर्जुन वेधि सबसों अधिकता पाई तापीछे कोई दिन
द्रोणाचार्य गंगास्नान करेहै. तहां ग्राह चरण पकडी षैंचेजब
अर्जुन बाणन करि ग्राहके सरीरकों तिल तिल प्रमाण छिन्न
भिन्न करि छुडाये. सोदेषि गुरु प्रसन्न होइ बोले हे अर्जुन ते-
री बरोबर और धनुर्धर नहीं ऐसे कहि ब्रह्मास्त्रहू दियो या
प्रकारसों अर्जुन सर्व शिष्यनमें कृपापात्र अधिक भयो.॥ ॥
इतिश्री भाषा भा॰ सा॰ चंद्रिकायांआ॰ प॰ अष्टमोऽध्यायः ८ ॥.

॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ ऐसैं सर्व बालकनकों सर्व विद्यानमें पारंगत जाणि उनकी परिछया लेवेकों विदुर पुरके बाहर रंग भूमि रचना करत भये. तहां चारों तरफ ऊंचे ऊंचे मंच धरे तिनपे धृतराष्ट्र भीष्म पितामह विदुरकों आदि सर्व राजा जथा योग्य बैठे ब्राम्हण वैश्यहू अपने योग्य स्थानमें बैठे तापीछे पुत्रसहित द्रोणाचार्य उज्जल वेष धारें आय देव भूमि पूजन सहित बलि विधान करत भये. तहां वीणा मृदंगादिक पटहादिक सर्व वाजा वजत भये. ऐसें. सोभित रंग भूमिमें सर्वही राज कुमार सस्त्र अस्त्र कवच धारण करि आय धरती सों हाथ लगाय द्रोणाचार्य कों प्रणाम करि सब युधिष्ठिरादिक आप आपकी विद्या दिषावत भये. भीम दुर्योधन दोउ गदा युद्ध दिषावत अंतः कर्णकों बैर स्मरण करि महा घोर जुद्ध करत भये. तब द्रोणाचार्य उनकों वैर जुद्ध जाणि अश्वत्थामाकों भेज्यों. सो पिताकी आग्यातें पर्वतवत जाय दोउनके वीच ठाढो भयो. उनको युद्ध निवारण कर्‍यों ता पीछें द्रोणाचार्यकी आग्यातें अर्जुन आपकी अस्त्रविद्या दिषावत भयो सो कभूंतो पर्वताकार दीषै. कभूक तेजमई. कभूक आकासमई कभूक पातालमें ऐसे करत भयो. ताहि देषि सर्व राजा अति अद्भुतता मानि चित्र लिषेसे होइ रहे. ऐसें अर्जुनकी विद्या देषि सर्व ही सराहि स्तुति करत है ताही समैं रंग भूमिके वाहर एक शब्द भयो वाकों स्रणि सर्वही राजादिक चकित होइ विचार करत भये. वह बज्रपातही है. वा भूकंप है वा अंतरिक्षही गर्जना करै है. अथवा प्रलै करणकूं समुद्रही गर्जना करै है. ऐसे विचार करतही पर्वत समान जाकों देह सरीर मइ कवच कुंडल धारें षंभ ठोकत कर्ण आयो वाको सूर्य समान तेज देषि सर्वही मारग दीयो. तब वह कर्न रंग भूमिमें आइ द्रोणाचार्य कृपाचार्यकों प्रणाम करि जैसैं अर्जुन विद्या दिषाईही तैसें ही वहहू दिषावत भयो अब वाको अर्जुन

के तुल्य जाणि दुर्योधन मित्रताकरि चंपापुरीको राज्य दियो तब अर्जुन बोले अरे या सूत पुत्रको चंपापुरीको राज्य क्यों दियो ऐसे कहि भीम अर्जुन धनुषबाण धारत भये. तब दुर्योधन हू धनुषबाण धारे इतने हीमें सूर्य अस्त भयो जब सबही राजा कौरव पांडव उठिउठि अपने स्थानकों गये. कौरवनमें दुर्योधन मुष्य भयो. पांडवनमें युधिष्ठिर मुष्य भयो तब द्रोणाचार्य सब हीको सामिल करि कही तुम हमकों गुरुदक्षिणा द्यो जब सबही बोले आप कहो सोही दें तब द्रोणाचार्य बोले पांचालराजा द्रुपदको पकडि गलेमे धनुष घाली इहां ले आवो. जब सबही जाय पुर घेर्यो तहां कौरव पहा तें गये हे तिनकों तो मारि चलाय दिये. तापीछे अर्जुन बाणनसों मारि बाकी सब सेना भगाइ गलेमें धनुष डारि पकडिल्याइ द्रोणाचार्यके हवाले कियो. तब द्रोणाचार्य हू बालकनको साहस देषि हांसिके द्रुपदसों विरोध छोडि वचन बोले हे द्रुपद तूं हमारो बालपणको मित्र है. सो आधे राज्य देवेकों कहि राज्यमद करि उनमत्त होइ वचन न मान्यों ताको यह फल पायो. सो अब तूं मेरो मित्र है अरु मेरे पिताके मित्रको पुत्र है तातें पहले वचन कहे तिनको पालन करि आधो राज्य मेरो है आधो तो कों द्यो हो सो तूं पालन करि ऐसे कहि द्रुपदराजाकों सिषदीनी तापीछे द्रोणाचार्यके तो फेर वैरकी वासना रही नहीं. अरु द्रुपद गुप्त वैरकों यादि राषि अर्धराज्य करत भयो. द्रुपदके जुधमें भीम अर्जुनकों अधिक देषे अरु प्रजाको हितहू इनपें जाणि दुर्योधन धृतराष्ट्रसों बोल्यो हे महाराज्य तुमारे कुलकी तो कथाहू नहीं रहत दीसे है. एक तो पांडव प्रबल दूसरे प्रजाहू इनको चाहे ताकों बाणावितपुरको राज्य दे इनको छलतें दूरि निकासों ऐसे पुत्र कह्यो सो धृतराष्ट्र अंगिकार करत भयो तब दुर्योधन पुरोचनसों बोले तुम जाइ बाणावतमें महल बणावो सो मुंजराल लाष बांस कांस सण घृत इन

सामग्रीको बणावो ऊपर शुस करिवेको सुंदर चित्र विचित्रकरि
सोकों जरूरि षबर करो तब पुरोचन वाही माफिक तयार करि
षवरी करी जब दुर्योधन धृत्तराष्ट्र सों कहाई पांडवनकों वारणा-
वत्त पुरको राज्य करिबेकों पठाओ. सोपांडवहू धृत्तराष्ट्र द्रोणाचा
र्य भीष्म पितामह कृपाचार्य इनको प्रणाम करि प्रस्थान करत
भये. तहां मार्गमें विदुर मिले सो मलेंछ भाषा करि पुरोचनको कप
ट युधिष्ठिरसों सबजताय दियो सुरंग षोदिवेकों एक बेलदार
संग दियो. तापीछे पांडवहू कुंती सहित दसवे दिन वारणावत पु
र पहुंचे. तहां पुरोचन सनमुष आय सनमान करि लाषा ग्रहमें.
प्रवेस करायो. तब पांडवहू पुरोचन कौतो अजाणता दिषाई अ
रु आप सावधानहोइ वहां बसे वेलदार पास सुरंग षुदावतरहे.
तब पुरोचनहू अगनि लगाईवेकों उनके पासही बास करत भयो.
तहां पांडव अनेक भिक्षुनकों अन्नदान करतरहे. ऐसे एक वर
स वितीत भयो पुरोचन को आग्नि लगा वे को अवकास पायो न
ही. एक दिना पांच पुत्र सहित निसादि भिक्षुकी आई वाकोंपां
डव अन्नदान दियो सोमन बंछित भोजन करि पुत्रन सहित अ
स होइ वहां सोइ रही तारात्रमें भीमसेन पुरोचनके चारो तर्फला
क्षा ग्रहके आग्नि लगाई आपकुंती भाईन सहित सुरंग होइ नि
कसिगये. अगनि लाष्या ग्रहको दग्ध करत मनमें बडो आनंद मा
न्यो जोधर्मात्मा पांडवतो बचे अरु अधर्मी पुरोचनको जलाउहूं
औसे विचार चट चटात सब्द करत संपूर्ण लाक्षा ग्रहको भस्म
करत भयो तासमें पुरवासी आय पंच पुत्र भीलनीको जलीदे
षि कुंती पांडव जलिजानि हाहाकार करत भये. दुर्योधनको
मित्र पुरोचन ताको पांडवनको दग्ध करताजानि जलेहू के म-
स्तक कों लातन करि कूटत भये. पांडवनके निकसि गये पी
छें वाष निकनें सुरंगके द्वारकों रज भस्म करिकै दाबि दियो
पांडव जलि गये सुणि धृत्तराष्ट्र दुर्योधनकों उपालंभ दे करि

रुदन करत भयो हे दुर्योधन तोकों निसकंटक राज करणोहोसो
अब हुवो. औरतो सबहीके दुष्ष भयो एक दुर्योधन विदुर ये
अग्यान करिके हर्षित भये. तापीछे धृतराष्ट्र उनको मृत्यु कार्य
सर्वही करावत भयो वे पांडवहू लाष्यागृहतें निकासि दक्षिणादि
साकों रात्रदिन सावधान होइ के गवन करत भये. ऐसे चलतच
लत गंगाजीकों उतरि गहन वनमें रात्रिको वटके नीचू वास कियो
तहां रात्रमे सर्व कौत्रिषालगी. तब भीमसों कही जल विना तोहमा
रे प्राण जातहैं जब भीम सरासनको सब्द स्राणि उहांजाय सरोव
रमै स्नान करि जल पान करि अंजुली भरिजलकों ल्यावत भयो.
सोउन सबकों निद्राकेवस सोवत देषि रुदन कियो जोये स्रुषस
थ्यानपें सोवत है सो प्रथवीमें ऐसें सोवेसें तासों दैवकोंहू धिकार
है. अरुमेरे पराक्रमहूकों धिक्कार है. इतनेहीमें हिडंब राक्षस भू
षोहो सोइनको मांस ल्यायवेकों हिडंबा बहन को भेजी. सो वह
आय भीमको सरूप देषि मोहित होइ गांधर्व विवाहकरि वासों
आयवेको सब वृत्तांत कहि भीमहीके पास रही उहां हिडंबा
कोन आई जाणि हिडंबहू क्रोध करि आयो तब भीम वासों जु
द्ध करि मार्यो तापीछु माता भ्राताकी आग्या पाई वा हिडंबा
कों भार्या करि नदी पर्वत बन वादिव्य स्थाननमें दिन दिनमे विहा
र करि रात्रकों भाइनके पास आवे ऐसे विहार करि रात्रकों भा
इनके पास आवे ऐसे विहार करतें भीमके वा भार्यामें दोयपुत्र
प्रगट भये. घटोत्कच, बर्बरीक नामा भये तापीछे हिडंबा राक्ष
सी वनकों गई. वे पुत्रहू भीमसों बोले काम पडैयादिक रोगे त-
बही आवेंगे. ऐसें कहि माताके संग वनकों गये. ॥ ॥ इ-
तिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां आदि पर्वणि नवमोऽध्यायः
॥९॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे वे पांडव जटा ब-
लकल धार ब्रह्मचारीको सरूप करि माता सहित वनमें विचर
तभये. ऐसे फिरतें कोइक समें वनमे रात्रकों सबथकि गये. जब

भीमसेन माताकों पीठिपर धरि दोइ भाइनकों दोइ कंधानपैं धरे नकुल सहदेवकों गोदीनमें लेके चलत भयो. तब मार्गमें वेद व्यास याकों पर्वत समान आवत देषि बोले तुम सर्वही एकचक्रपुरीमें जाय वास करो. तब व्यासजीकी आग्यातें चक्रापुरी में एक ब्राह्मणके घरजाय सबही वसे. ऐसें बलवान हू वहां दिन दिनमें भिक्षा करि अन्न ल्यावें तामें सों अतिथ अभ्यागतकों दिये. पीछू बचे तामें सों आधोतो भीमकों दे आधोरहे सो सब षाइ वा नगरीके बाहर एक बक दैत्य वनमें रहे ताके भयतें पुरवासी एक आदमी और भक्ष भोज्य सामग्री नित्य घर घरतें पहुंचावें ऐसें होतें होतें ये रहे हे जा ब्राह्मणके घरकों वो सरा आयौ सो वह ब्राह्मण स्त्री पुत्र येती नही हे सो आपुसमें महा रुदन करत भये. उनकों रुदन करंतें कुंती गई उनकों सब वृत्तांत स्रुणि करुणा करि कही तुह्मारे एकही पुत्रहे हमारे पांच पुत्र हे सोमें एककों भेजोंगी. तुम भक्ष भोज्य तयार करो. जब वा ब्राह्मणने भक्ष भोज्य सामग्री ल्याय धरी तब भीम वह सामग्रीलेके बकासुरके संकेत पर्वतकी सिलापैं जाय भक्ष भोज्य सामग्री धरि वाकों बुलाय आपवा सामग्रीको भोजन करत भयौ. जब बकासुर आय वाकों भोजन करत देषि पहली तो मूकीनसों मार्यो पीछू ब्रक्षन शिलान करि मार्यो तोहू भीम कीतेक दिनको भूषो होसो भोजनही करवो कर्यो अरु वाके प्रहारनकों गिणे नहीं जब आप भोजनकर चुक्यो ता पीछू उठि षंभ ठोकि मल्ल जुद्ध करि वाकों पटकि मारी. नगरीमें आय ब्राह्मणसों बोले मेरे इष्ट देवनें बकासुरकों मार्यो ऐसें पुरवासिनसों कह्यो तापीछू आप आय भाईनसों कही. एकस्थान रहवो जोग्य नहीं इहां रहेसो प्रगट हो जाइगे. ऐसें कहि पांचाल देसकों गये. तहां मार्गमे फेरि वेदव्यास मिले. उनकों दर्सण करि पांडव आनंद पाय प्रणाम करत भये. तब व्यास हू आशीर्वा

द देकर बोले अबतुम द्रुपद राजाके पुरमैं जावो. वाकेहू यहप
एहै. जो मछ भेदे ताकों कन्याद्यौं. सो तुमजाय वाकौ पण पूर्ण
करि वाकी कन्या व्याहो. ऐसैं व्यास वाक्य सुणि आनंदित हो
इ द्रुपदके पुरकों चले. सो चलते चलते अर्धरात्र समैं गंगातीर
पहुचे. तहां अंधकार करि मार्ग दीस्यो नहीं तब अर्जुन जलतो
उल्मुकले मार्ग दिषावत चल्यो तहां गंगामैं अंगारपर्ण नामा
गंधर्वराज रात्रि विहार करै हो सो क्रोधकर रथपैं सवार होइ
अर्जुनसों जुद्ध करिवेकों मार्ग रोकि ठाढो भयो. जब अर्जुन
आग्नेय अस्त्र करि वाके रथको भस्म करी दियो तब वाकी स्त्री
कुंभीनसी कुंती युधिष्ठिरके सरण आई जब युधिष्ठिरके कहे
सौं अर्जुन वाकों अभय दान दे गंधर्वराज सों मित्रता करि अरु
वाकों आग्नेय अस्त्र दियो तब वाहूनें अर्जुनको विश्वदर्शनी
विद्या और पांचसें संग्राममैं अभेद्य असवार सहित अश्वदि
ये सो यादि करे जबही आणि हाजिर होइ उहांतैं चले. सो उत
कों चक्रतीर्थमैं आइ स्नान करी तप करते हुवे धौम्य मुनि
कों प्रोहित करे. जाके होम आहुति बलकरि सत्रुनकों त्रणवत
ही मानत भये. ऐसैं मार्ग चलतैं सोलवें दिन द्रुपदके पुरमैं पहुं
चे वहां जाय सामान सहित माताकों कुलालके घरमैं धरि स्व
यंवरकों गये. तहांजाय मंत्रमय मच्छ देष्यो रंग भूमिके मध्य
मंडप देष्यो और चारों तर्फ राजा मंचन पैं हैं तिनकों देषि युधि
ष्ठिर भाईनसों बोल्यो द्रुपद राजा पुरुसार्थ करि स्वर्गही भूमि
मैं उतारयो है कहा और देषैतो धुजा पताका सोभित है. स
र्व बाजा बजै है. देसदेसनके राजा ब्राह्मण आवे है. तासमैं
एहू ब्रह्मचारीको सरूप धारि ब्रह्म मंडलीमैं मंच पर जाय बैठे.
सो मंच अतिहि सोभित भयो जैसे पंच सिंघ न करि स्रुमेरु
को शिषर सोहै. अरु द्रुपद राजाहू अर्जुनकौं ही कन्या देवे.
विचारि मच्छ भेदीवेको पण लियो हो सो यंत्रमयी आकासमैं

मच्छ बणायो अरु तैसैही द्रढ धनुष बाणहूं रंग भूमिकी वेदी पर धरे. तहां द्रौपदीकू वस्त्र अलंकार धारण करि वरमाला हाथमैले वेदीपर आई सर्व राजा वाको देषि देषितो हर्षित होइ अरु धनुषकों देषि निस्वास भरे अरु द्रौपदी धनुषकों देषि वारंवार अर्जुनके भुज दंडनकों चिंतवन करै. तासमैमे धृष्टद्युम्न धनुषको पूजन करि भुज दंड उठाय सभाके मध्य वचन बोल्यो जो राजा द्रौपदीकी वांछा करै है सोया धनुषमै बाणधरि मच्छकों भेदो. ऐसे वचन स्रुणि कितनेक राजातो मौन गही. कितनेक धनुषउठाइ चढाइ नसके कितनेक चढाइके षैचिन सके कितनेक षैंचिके बाण सांधि नसके कितनेक बाण साधि लक्षिको निश्चैन करिसके कितनेक पूर्व जसके नासको भय मानि उठेही नहीं. ऐसी दसा देषि ब्रह्मचारी भेषतें भीमसहित अर्जुन मंचतें उठि धनुष पासचले इनको स्ररूप तेज लीला गत देषि कितनेक राजानकों म्हदोद बिगयो. श्रीकृष्ण भीष्म द्रोण इनकों देषिके विचार कियो ए भीम अर्जुनही हैं और राजाहू विचार करत भये. ए सूर्य चंद्रमाही है. सो पृथ्वीमें विचरे है. अथवा और अवतार धारि कृष्ण बलदेवहैं. गणेश स्वामिकार्तिक है. अथवा रघुवंशी राम लक्ष्मणही हैं. ऐसेरा जानको विचार करतही अर्जुन द्रोणाचार्यकों प्रणाम करिं धनुष सांध्यो तब हर्ष सो उनमत्त होय भीमसेन राजान सोंवचन बोल्यो अरे राजाहो तुह्मारे भुज दंडनमें बलहीन नही है तो द्रुपद राजाकी पुत्रीकी वांछा क्यों करोहो. अरु जो तुम वांछा करोहोतो तुह्मारे मंत्रीननें तुह्मारो पराक्रम जाणि तुमको इह्यां आवत मने क्यों न किये. भीष्म द्रोणतो वृद्ध हैं. दूसरे स्त्रीके निमित्त उठावतें लज्या होइ जासों धनुष सपरस न कियो अरु श्रीकृष्णके सोलह

आठ महाराणी हैं सो एक स्त्रीके लिये का हेकों

करै अरुहे कौरव मदांधहो तुमकों धनुष देषतें ही मद जात रह्यो कहां. अरु हे कर्ण तूं कुंडलनकों ब्रथा हलावै है यह धनुष कुंडीलत क्यों न कियो यह ब्राह्मण धनुष षेंचि मच्छ भेदि सबनकी कीर्ति लूटैहै सो तुम देषोहो ऐसे भीमके वचन सुणि संपूर्ण राजानके सिरनीचे भये. तब वाही समै अर्जुन लीलाहि करि मच्छकों भेदि पृथवीमें पटक्यो जब सर्वजन आनंदित होइ ताली बजाई देव दुंदुभी बजाई अरु द्रौपदी महाराज द्रुपदके कहे सों अर्जुनकों आइ वरमाल पहराई तब ऐसे देषी और राजा क्रोध करि सब्भले कही द्रुपद राजा कन्या तो ब्रह्मचारीकों दई. अरहमै बुलाइ अनादर करयो तातें याकूं मारेगे. तब भीम अर्जुन द्रुपदकी रक्षाकों तयार भये. सो अर्जुन तो धनुषकों चला चढायो भीम वृक्षनकों उपाडि राजानको मारत भये. तब कितनेनके शिरहाथ पाउ छिन्न भिन्न होइ गये सो रुधिर चुचावत भागिगये. ऐसें राजानकों भजाइ मल्लजुद्ध करि सल्यकों जीत्यो अर्जुन धनुषके टंकार करि कर्णकों मुष मलीन करयो और कितनेक कितनेक राजा जुद्ध करिवेकों तयार भये तब उनकों श्री कृष्ण कही यहां युद्ध करिवो न्याय नहीं ऐसे श्री कृष्णको वचन सुणि राजा अपने अपने स्थानकों गये पांडवहू द्रौपदी सहित कुलालके भवनमें आये तब उनको आये जाणि माताबोली जो तुह्मे प्राप्त भई सो पांचो समभागतें भोगो. जब एहू माताको वचन मानि वैसें ही विवाह करि वो विचारत भये. तापीछें कुंती राज पुत्रीकों देषि विचार कियो जो मै यह कहा कह्यो जब पांडव मातासों सब समाचार कहेहे. जबही श्री कृष्ण बलदेव आई कुंतीको समाधान करि गये. पीछे पांडव गांवमे जाय भिक्षा करि आये सो भीक्षा सबही मातापास धरी यह रचना देषि द्रौपदी मनमें संताप न पायो. सो सत्तीनके मनकी वात विचित्र ही है. ता पीछे

कूंतीके वचनसों द्रौपदी वह भीक्षाल्याये हे तामें सो पुरोहितभाग निकासि पीछे भिक्षुकनको भाग निकास्यो. बाकी रह्यो तामें सो आधो भीमको दियो आधेके छह भागकरे भोजन करि दर्भ सय्यामें दक्षिण दिसाको सिर करि सोये उनके शिरकीतरफ कूंती सोई पावनकी तरफ द्रौपदी सोई अरुये पांचो भ्राता सोवतहू सस्त्र अस्त्र युद्धहीकी वातें करत रहे सो धृष्टद्युम्न रात्रके समे कुलालके भवनके पीछे छीपिके सब चरित्र इनको देषि स्रुणि प्रभातही जाइ राजा द्रुपदसों सब वृत्तांत कहिकह्यो ये क्षत्री राजपुत्रही हें. सो स्रुणाइ राजाकी चिंता दूरि करी. जब द्रुपद इनकों रथ पठाइ बुलाइ भोजन कराय पूंछ्योजो तुम कोण हे. जब युधिष्ठिर सबकथा आदिसों कही. सो स्रुणि द्रुपद बोल्यो यह कन्यामें अर्जुनको द्योंगो युधिष्ठिर कही हम पांचनहीकी भार्या होइगी. यह स्रुणि द्रुपद संदेह समुद्रमें बूडयो. तबयाको संदेह दूरि करिवाको त्रिकालग्यदरसी वेदव्यास आये. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां आदि पर्वणि दशमोऽध्यायः १० ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तहां वेदव्यास आय द्रुपदसों पूजा सत्कार पाय वाकी मूढता दूर करवे कों पूर्व कथा कहत भये. हे राजन् स्रुणो एकसमे पार्वती शिव सहित कामधेनुके संग पांच वृषदेषी हसी तब कामधेनु श्राप दियो तूंहू पांचकी भार्या होइगी. तब तब पार्वती कही या श्रापको निवारण कैसो होइ जब शिव ब्रह्मलोक गये ब्रह्मा स्तुती करी तामें पांचवें मुषसों षरकीसी धुनि भई तब वा शिरकों काट्यो जब ब्रह्म हत्यालगी. वह शिर शिवके हाथमें आयो तब शिव हत्यासों कही कैसे छुटै वाने कही अठारह अक्षोहिणीको रुधिर पान करावो सो स्रुणि विष्णु अंगिकार करि कही तुमतो पांचू पांडव वणो. पार्वती द्रौपदी होहु. सोये शिवहें. यह पार्वती हे ऐसें कही दि

न्य द्रष्टिदेके साक्षीसरूप इनकौं दिषाय संदेह दूरि कियो और सुणि द्रोणाचार्य तेरो अपमान कर्यो जब तै याज उपयाज दोउ ब्राह्मण कोंले गंगातीर यग्य कर्यो द्रोणाचार्यको बधकरै ऐसी संतान होहु तब वावेदीमें सों कन्यातो यह द्रौपदी भई कुंडमें सों पुत्र धृष्टद्युम्न भयो. अग्निको अवतार तातै एकेक दिनके क्रमसों इनको विवाह करिवो जोग्य है. ऐसे कहि वेदव्यास गये. पीछु राजा पांडवनकौं यथा क्रमसों पांचनकौं पांच दिनमें द्रौपदी व्याह दई. दुर्योधन धृतराष्ट्रसों आय द्रौपदी विवाह कौ वृत्तांत निवेदन करि कही सेना सहितजाय पांडवन कौं मारों ऐसो मेरो मनोरथ है. यह पुत्रको वचन सुणि धृतराष्ट्र भीष्म द्रोणसों मंत्र करत भये. जब भीष्म बोले द्रुपद कृष्ण तो सहाइ अरु आपहूं पांडव पराक्रमी सो कौनके वसके हैं. तातें उनकों इहां बुलाइ आधो राज्यदे अपजस दूर करो. ऐसे उनको वचन मानि धृतराष्ट्र पांडवनके बुलायवेकों विदुर कौं भेजे. जब विदुर उहां जाइ द्रुपदको समाधान करि कुंती द्रौपदीसहित पांडवनकौं ल्याइ धृतराष्ट्रके चरणारविंदनमें प्रणाम करायो तब धृतराष्ट्रहू युधिष्ठिरसों आशीर्वाद दे कही पुत्र आपुसमें विरोध होई तातै तुम पांडव वनमें वास करो ऐसे धृतराष्ट्रकी आग्या मानि युधिष्ठिरहू पांडव वनमें जाइ इंद्रप्रस्थनामो नगर वसाय वास करत भये. वहां श्रीकृष्णहू आइ पांडवनकौ तेज प्रताप सहित देषि प्रसन्न होई कछुक दिन वास करि द्वारिकाकौं गये. जब द्वारिकामें नारद मुनि कृष्ण सों आय मिले तब कृष्ण सतकार करि नारद मुनिसों बोले पांडवतो पांच अरु द्रौपदी एक है सो इनके स्त्री निमित्य कलेस नहोइ तातें तुमजाय आपुसमें पण करावो. सो सुनि नारद मुनि आय पांडवनसों मिली कथा कही. आगे सुंद उपसुंद नामा दोइ राक्षस वनमें महातप कर्यो जब ब्रह्मा आय कही

वर मांगो तब उननै वर मांग्यो जो हम दोउ भ्राता आपुसहीमें मरे औरके मारे मरे नहीं ऐसो वर पाइ देवतानकों पीडा बहोत करीज ब देवताब्रह्मा पास जाइ उनको वृत्तांत कह्यो. तब ब्रह्मा उरव सीकों उनके पास भेजी. सोवाको रूप देषि बडो भ्राताती क है यह मेरी भार्या है तेरी माता है. छोटो भाइ कहै मेरी भार्या तेरी पुत्रवधू है. ऐसे कहते क्रोधवस होइ दोउ युद्ध करि मरे. ता तै तुम पांच भ्रातानमें द्रौपदी एक भार्या है सो पण करो. जोए कके पास यह होइ तब दूसरो जाय नहीं अरु जाय तो बारह वर्ष तीर्थ यात्रा करे. ऐसै कहि नारद मुनि गये. तब पांडव वाही माफ क एक एक दिन रात्रकी प्रतंग्या करि द्रौपदीसों विहार करत भ ये ऐसे रहते कोई समैमें ब्राह्मणकी गाई चोरी जब वह ब्राह्मण फुकार करत आयो. हे कुंती पुत्रहो मेरी गाइ छुडावो वा समे यु धिष्ठिर सहित द्रौपदीजा महलमेंरही ताहीमे अर्जुनके शस्त्र अ स्त्र है. वातरफतो ब्राह्मणकी पुकार वातरफ पण करी सोजाइ नहीं यातें कैसे करो तब विचार करत करत अर्जुन जाय शस्त्र ले युद्ध करि गाइ छुडाय वा ब्राह्मणनकों संगले तीर्थयात्रा करत भयो. सो प्रथमही तो गंगाद्वार जाइ स्नान करि वेकों प्रवेस कर्यो वहां कोरव्य नागकी पुत्री उलूपी याकों देषि कामातुर होइ ना ग लोकमें लेगई उहां जाय कही मै तुह्मारी भार्या होउंगी. तब अर्जुन विचार कीयो अति अनुरागवती नारीकों सेवन कीये ब्रह्मचर्य भंग होय नहीं. अरु जो मैं अंगिकार न करूं तो यह प्राणन राषेगी. यह विचार वासों विहार करत भयो सो एक रात्र ही वासमें वाकों गर्भवती जाणि मुनिनसों मिलि सब वृत्तांत क हत भयो उहांतें पूर्वदिसाके तीर्थयात्रा करत करत समुद्रके किना रे किनारे होइ मणिपूरकों गयो वा पुरको राजा चित्र ताकी क न्या चित्रांगदा वाको रूप देषि अर्जुन काम मोहित भयो तब चि त्र नृपसों मिलि कन्या मांगी जब राजा बोल्यो हमारो आदि रा

जा प्रभंकर हो सो महादेवकी आराधना करी. जब महादेव प्रसन्न होइ वर दियो तिहारे वंसमें एकेक संतान होइगी. तातें मेरी कन्या वंस करिवेवारीहै. सो याको संतान होइगो सो मेरो है ऐसें कही राजा अर्जुनकों दई. तब अर्जुन तीनवर्षलों उहांरह्यो जब वामें बभ्रुवाहन नामा पुत्र भयो उहांतें दक्षिण दिशाकी तीर्थयात्राकों गयो. तहां सोभद्रतीर्थमें मुनिनें मनें कियो तोहू स्नानको प्रवेस कियो. तब ग्राहीनें पांव पकड्यो तब वाकों पकड आकासमें फेंकी. सो दिव्यनारी होइ बोली हम पांच अपसराहीसों एकतो धर्मा१ सौरभेई २ सामीरका ३ बुदिबुदिका ४ लता ५. ऐसें नामनकरि पांच सषीहीसों एक ऋषिके तप भंग करिवेकों पांचुंजाय आलिंगन कियो तब वानें श्राप दियो तुम ग्राही हो. जब हम वासों पूंछ्यो आपसों मुक्ति कब होइगी. तब उननें कही एक नर आय तुमकों आकासमें फेकेगो जब छूटोगी. तासों जैसें मोकों फेंकि आपसों मुक्ति करी तैसें हीउन चारिनकों करो ऐसें स्रुणि अर्जुनपंचतीर्थनमें पंच ग्राहीनकों उद्धार कर्‍यो तादिनसों अद्यापि वे पंचनारी तीर्थहीक कहावैहै. उहांतें गोकर्ण आदितीर्थ करत करत पश्चिम दिसा प्रभास तीर्थमें आयो. जब श्रीकृष्ण स्रुणि जादवन सहित मिलिवेकों आये. सत्कार कर द्वारकामें लेगये. उहां चातुर्मास वास करियो जब कोई समेमें कृष्णकी भगिनी सुभद्रा याकोमन मोहित कर्‍यो तब अर्जुन एकांतमें श्रीकृष्णसों विनती करी. ऐसें स्रुणि कृष्ण कही स्वयंबरमें वा बलात्कारसों विवाह होइ सोजसकों कर्ताहै. तातें तूं करि ऐसें कृष्ण कही जब सुभद्रा द्वारिकातें बाहर निकसी तब अर्जुनही तीर्थयात्रा करत्तोही वाकों रथमें चढाय इंद्रप्रस्थकों चल्यो सो स्रुणि बलदेवनें क्रोध कर्‍यो तब श्रीकृष्ण कही आप क्यों क्रोध करो. तुह्मारो मनोर्थ भीष्म पौत्र दुर्योधनकों देवेकोहो सो यह हू.

भीष्म पौत्रही है. तातें काहेकों क्रोध कर्यो दाइज देणो होइ सोदीजे. ऐसे कहि बलदेवकों प्रसंन्न करि दाइजलै श्रीकृ-ष्ण आइ अर्जुनके सामिल भये. तब अर्जुन श्रीसुभद्रा सहित इंद्रप्रस्तमें आयो. भाइनसों जथा जोग्य मिलि प्रीति सहित कुंतीसों दंडोत करी. ता पीछु विधिवत् सुभद्रासों विवाह कर्यो सुभद्राहू प्रथम कुंतीकों दंडोत करी. पीछूं द्रौपदीकों कही मैं तेरी दासी हों तब द्रौपदी कही तूं श्रीकृष्णकी भगिनी है सो मेरीहू भगिनीहै वा सुभद्रासें अर्जुनके अभिमन्यु नामा पुत्र भयो. ताकों अर्जुन श्रीकृष्ण दोउ मिलि आपमें-विद्याहीसो सर्व पढाई तब अभिमन्यु दोऊनकी समान इकलो. भयो. द्रौपदीमें पांचन तें पांच पुत्र भये. युधिष्ठिरतें प्रतिविंध्य १ भीमतें श्रुतसोम. २ अर्जुनतें श्रुतिकीर्ति ३ सहदेवतें श्रुतिकर्मा ४ नकुलतें सत्तानीक ५ इन पांचनकों संस्कार धौम्य पुरोहित कर्यो. अर्जुन विद्या पढाई युधिष्ठिर सब देसकी राजा गोवाहन ताकी कन्या स्वयंवरमें व्याही. वाके योधेय नामां पुत्र भयो भीम काशीराजकी कन्याकाली व्याह्यो वामें संर्वाग नामा पुत्र भयो. नकुल चेदि राजकी कन्या करेणुवती व्याह्यो तामें निरमित्र नामा पुत्र भयो सहदेव मायिपति द्युमंत राजाकी कविजया नाम पुत्री सुंयंवरमें ल्यायो तामें सुहोत्र नामा पुत्र भयो सोच्यारोंके पुत्र चारोंही अपने अपने नानाको राज्य करत भयो. ऐसे पांडव इंद्रप्रस्थकी प्रजानकों पालन करत श्रीकृष्ण सहित बहुत आनंद सहित वसते भये. ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां आदि पर्वणि एकादशोऽध्यायः समाप्तः ११ ॥

॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ ऐसें रहतें वसंत ऋतु आयो तब श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिरसों आग्या पाइ षांडववनमें विहार करवेकों गये जहां यमुना प्रवाहके तीर वनकी

शोभा देषि बहुत प्रसन्न भये. सो कोईक समें सिकारहू करत
भये. ऐसे रहतें शत्रकी सोभा देषि वहांही निद्रा करी पीछु ब्राह्म
मुहूर्तमें उठि दंत धावन स्नानादिक करि प्रातसंध्या करि ब्राह्मण
नके दान देत भये. ऐसे अनेक ब्राह्मण आवैहै दान पावैहै ऐसे
ऐसे समैमें दूरतें आवत एकब्राह्मणकों देष्यो. सूर्यसमान
कांतिहै जाकि अति विसाल सरीर है स्याम चीर धारेहै नेत्र
विसाल है दाढी मूछ पीतहै जटा अगनि वर्णहै ऐसो वाको रू
प देषि श्रीकृष्ण अर्जुन संदेह करत भये. कृष्णवस्त्र पीतकां
ति धारे यह मेघकी घटा सहित सुमेरही आवैहै. कहा अथ-
वा निजकंन्याको धारे सूर्यही आवैहै कहा. अथवा धूमपट
ल सहित अगनि आवै है कहा ऐसे विचार उठि सनमुष आ
य चरणनमें प्रणाम करि हाथ जोडि ठाढे रहे. तब वह ब्राह्म
ण बोल्यो आगे रुद्र समान तेज जाको ऐसो स्वेतकी नाम रा
जा भयो जाके यग्यनमें ब्राह्मणननें दक्षिणा इतनी पाई सोलै
तैलै तैलै वेकी वांछा रही नहीं. ताके तपतें प्रसन्नहोइ शिवआ
ग्या करी अगनिकों बारह वर्षलों अषंड घृत धारा करि पूजो.
ऐसे शिवकी आग्या प्रमाण राजा करत भयो. ता पीछे शिव
कों प्रणाम करि बोल्यो अब कहा आग्या है. तब शिवकही दु
रवासा ऋषिको प्रोहित करि सत वर्ष और यग्यही करो. तब
राजा वैसेही करत भयो. सो वाके सतवर्ष हव्य भोजन तें बा
रह वर्षकी घृतधारातें अजीर्णतें तेज रहित होइ ब्रह्मा सों
प्रार्थना करि मेरो अजीर्ण कैसो मिटै तब ब्रह्मा कही षांडव
वन भक्षन किये मिटैं सोवह अगनि सातवेर वा वनमें लग्यो
जबही वाके रक्षकननें बुझाइ दियो सो अब वह अगनिया
बनको संपूर्ण जंतुन सहित भक्षण करै तब तेज पावै. औ
रइंद्रको मित्र तक्षकहू याकी रक्षा करैहै. दानव मानवराक्षस
हू याकी रक्षा करैहै. और इंद्रहू यापै नित्य वर्षा करैहै. तासों

वह अग्निमैं तुह्मारे पास आयोहौं तुह्मारी सहायत्ता पाऊंतो एक क्षणमें याकों भस्म करिद्यों. मेरो मित्रहू महा बलवान है. पैं या सहायतामें तोवह निर्बलहीहै. ऐसें सुणि अर्जुन बोल्यो मेरो भुज बल सहिवे लाइक धनुष नहीं. या कामलाय वेगवंत रथ नहीं तैसैंही बाणहू नहीं. श्रीकृष्णके बाहुबल लायक अस्त्रहू नहीं तातें इतनी वस्तु होइ तब तुह्मारो कार्य सिद्ध होई ऐसें सुणि अग्नि चारिश्वेत घोडा. कपिध्वज सहित दिव्य रथ अक्षय बाणनको दियोतर्कस अभेद्य कवच गांडीव धनुष येतो अर्जुनकों दिये. श्रीकृष्णकों सुदर्शन चक्र आग्नेय अस्त्रको मोदकी गदादई. तब अर्जुन अग्निकों प्रणाम करिक वच पहरि धनुष बाण धार रथी भयो चक्र गदा धारि श्रीकृष्ण सारथी भये इनकी सहायत्ता पाय अग्निहू प्रचंड ज्वाल मालान करि बिकराल होय तांडव नृत्य करतहीं षांडव वन भक्षणकों क्रीडाहीमानत मानत भयो.॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां आदिपर्वणि द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥

॥ ॥ वैशंपायनउवाच॥ ॥ ताउपरांत अग्निवाकों भक्षण करिवेकों धूमभष सिषापोलि ज्वालामय प्रवेस करत भयो जब वाकी ज्वाला प्रलयानल समान होइ फैली. तब बावन के वासी रक्षक पसुपक्षी दानव मानव राक्षस सर्पादिक सबही हाहाकार करत भये. तहां कितनेकतो दग्ध भये कितनेक निकस भजतहैं. तिनकों अर्जुन कोरथ चक्राकार फिरतहो तातें अर्जुन बाणनसों मारि वाहीमें पटकि दिये तैसैंही कृष्णहू गदा चक्रन करि मारि वाहीमें गिरावत भये. वह चक्राकार तो फिरतो हुवो रथ वामैंके निकसतहुवे जीवनकों कोटवत दीसत भयो. कितनेक जक्ष राक्षस पात्र भरि भरि अगनीमें बुजावेकों जल डारतहैं सो जैसें मध्यमें भोजन करिवे वालेकों जलपान करावे तैसें वह मानत भयो. वा अग्निकी २.

के मारे स्यंघहाथीनकी छायानकौं आसरो लेत भये. सोवे हाथी जलि जलि गिरे. जबवे स्यंघहू जलिगये ऐसे हाथी स्यंघजक्ष रा क्षस दानव सर्प मनुष्य इनकौं हाहाकार दाहकरि देवता प्र लयको भय मानत भये. तब इंद्र षांडव वनकी रक्षा करिवेकौं घटान सहित आय वर्षाकरी. जब अर्जुन सर पंजर कर घ- टानको निवारण करी तब बनको दाह देषित क्षकनामा सर्प- भजि उत्तर दिसाकौं रषंडकौं गयो. वाको पुत्र अश्वसेन नामा सर्प माताके गर्भमैं मुषहोइ धुसि गयो वा पुत्रके बचायवेकौं माता आकासकौं उडी तब अर्जुन वा पुत्रकी पुच्छ सहित बा- णसौं वाको शिर काट्यो पूंछ कटे सों अश्वसेन उदरमैं सों नि कस्यौ जब पवन उडाइले गई फेरि अर्जुन बाणनसौं तीन टूकक रि वाकी माताकौं अगनिमैं गिराइ दई इंद्रकौं आयो देषि यम वरुण कुबेरहू सहाइ करिवेकौं आये. जब अर्जुनके उनकेयु द्ध भायोसो अर्जुन उनके अस्त्र षंडन करि विजै पायो तब सब देवता इंद्रके सरण आये. इंद्रहू अर्जुनपें सिलानकी वृष्टीक री सो अर्जुन बाणनसौं षंडन करी. तब देववाणी भई ये कृष्ण अर्जुन अजयहैं सो करि इंद्र अपने धामकौं गये. तब अग्नि निरभय तासौं षांडव वनकौं भस्म करत भयो तहां मय नामा दानव अगनि सौं पीडत होइ मैं सरणागत हौं ऐसे कहत निक स्यो जब श्रीकृष्णके कहेसौं अर्जुन वाकौं बचायो. एक मंदपा ल ब्राह्मण बालब्रह्मचारी स्वर्ग गयोहोसो देवतावोसें बोले संतान विना स्वर्गको अधिकार नहीं तासौं संतान करि स्वर्ग आवौ तब वह षांडव वनमें आय सार्ङ्गिका पक्षिणीमें च्यारि पुत्र पैदा करे सोउन पुत्रनको हुवा दाहमें आये देषि ब्राह्मण स्तुति करी. जब अगनि वाके पुत्रकौं छोडे ऐसे अगनि सा ई. पुत्रच्यार मयदानव अश्वसेन सर्प इन विना और सर्वषां डव वनकौं छह दिनमें भस्मकरि कार्तिकेय समान रूपधारि

श्रीकृष्ण अर्जुनकों आशीर्वाद दे करि प्रसन्न होई निजलोककों गयो ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावबहादुर चांदसिंघ हुकमकियौ रूपदाय ॥ भाषाभारत सारकी करीन्चैनाचितन्चाय ॥१॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायांआदिपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ इति आदिपर्व समाप्तः ॥ ॥ ॥

सभापर्वचित्र.१.

सभापर्व चित्र २.
सहदेवयोगिनीयुद्ध
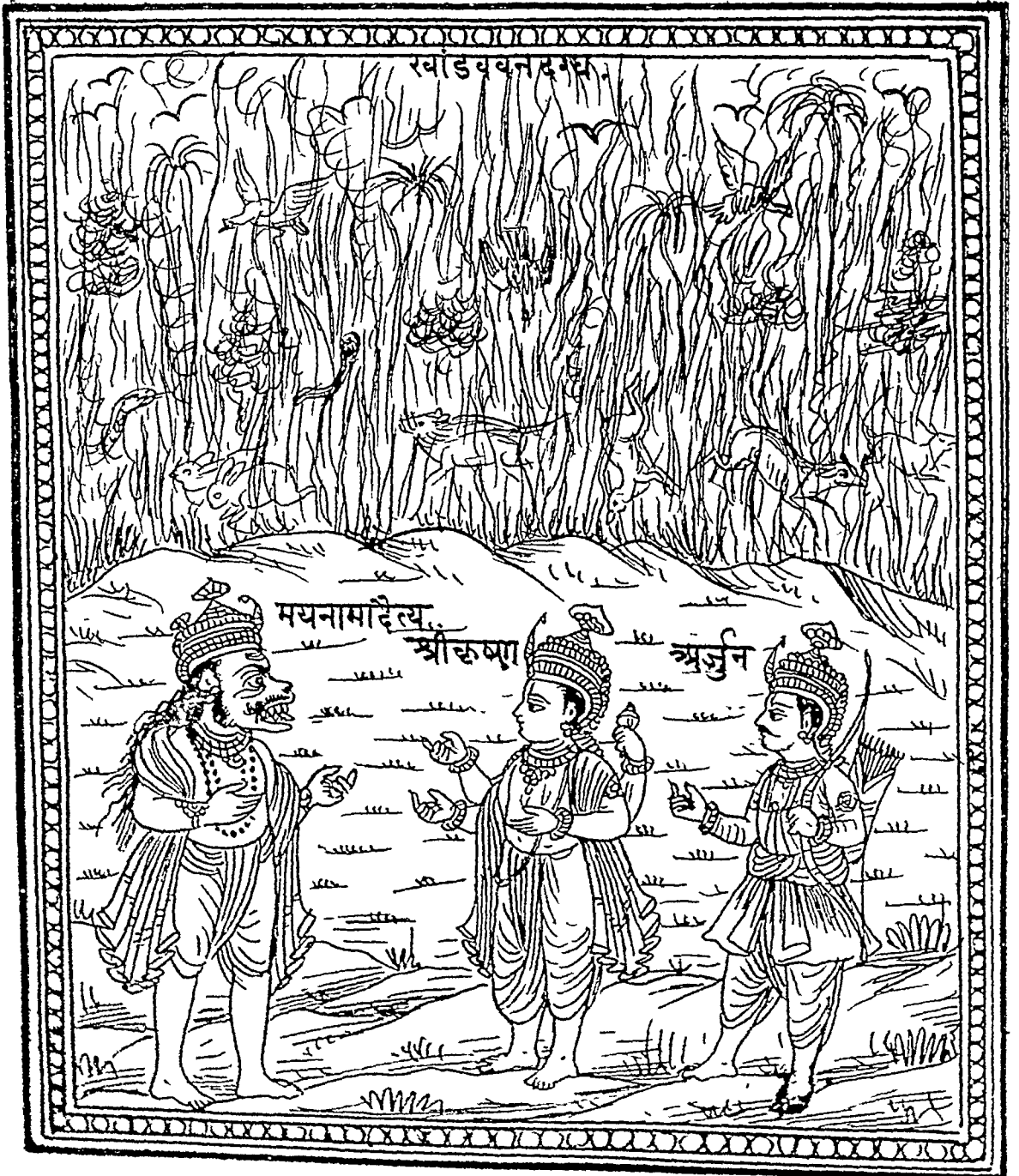
अथ भाषाभारतसार

सभापर्व प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ ॥

श्रीकृष्ण अर्जुन मयदानव तीन्यौ आपुसमें प्रिय बचन बोलिकरि यमुना तीर आये. षांडव दाहकौ षेद मिटावेके निमित्य यथायोग्य विश्राम करत भये. तहां मय दानव श्रीकृष्ण अर्जुननें उपकार कर्यो अगनितें प्राण बचाये. तातें पुनर्जनम भयो ऐसो मानि प्रसन्न चित्त होइ श्रीकृष्णके प्रतक्ष अर्जुन सों वचन बोल्योद्रव्य दानतें परोपकारीतो बहुत प्रसिद्ध हैं. परंतु भय भीतकों अभय दान देवे वाले विरले हैं. पिताविद्यादाता. अभयदाता माता. इनकों प्रत्युपकार हैहीनहीं. तातें विवेकी इनके चरणार विंदनकी भक्ति ही करि पापनकों दूरि करे है. तुमनें मेरे प्राण बचाये. तातें तुह्मारी कछु पूजा कर्यो चाहत हों सोतुम अंगिकार करोगे. तबश्रीकृष्ण कहीतोकों जोग्यहै ऐसे स्मरण करि मयदानव अंतर ध्यान भयो. तब श्रीकृष्ण अर्जुन इंद्रप्रस्थ पुरमें आये राजा युधिष्ठिर सों सब वृत्तांत कहि सीष मांगि श्रीकृष्ण द्वारिकाकों गये. और कैलास पर्वतके उत्तर भागमें मैनाक पर्वत ताके ईसान दिसामें स्वर्ण रत्नमय बिंदुसर नामा सरोवर है वहां आगें तीन चीज धरीही तिनकेलेवेकों मयदानव गयो. वहांतें एकतो संष. एक गदा. एक सभारचनेकी सामग्री एक सभारचनेकीसामग्री एतीनूं लेकरि मयदानव इंद्रप्रस्थमें आयो जाकी अवाजसो देवगंधर्वहू मूर्छित होइ सोदेवदत्त नामा संष अर्जुनकों दियो वह संष आगें वरुणकोहो. अरुजाके भ्रमावे सों देवदानव प्रलयकों भ्रम पावे. सो गदा भीमसेन

कौं दीनी. युधिष्ठिर महाराज्यके निमित्य सभारचना करी. सो एक वर्ष दोई महिनामें तयार करी. वह सभा आगे वृषपरवा दानवके वेटिवेकीही वह सभा फटिक रत्नमयी करी. ताकी रषवालीके निमित्य मय दानवकी आग्यासें आठहजार राक्षस रहे. जासभामें देवलोक पाताललोक. मनुष्यलोक सबही रचना दीसै. जाके स्पटिक माणिनको कोटहै. जिनके रत्न मई पाज ऐसे वावडी सरोवरहै तिनमें अनेक जातिके स्ववर्ण मई आदिदे कमल प्रफुल्लित रहेहैं. स्ववर्ण वर्णमई कछ मछ विचरत रहेहै. छहु रितुनके फल पुष्पन करिके शोभाय मान ऐसे अनेक कल्पवृक्षनके बाग समान वाग है. रत्नमई फरस बंधीहै. फटिक मई षंभन करि मंडित दिव्य सभा मंडप है. मोतिनके झालरी सहित नाना प्रकारके चंदवाहै. जहांस्थान स्थानमें तुंबरकौंआदिले करि गंधर्व घृताचीकौं आदिले करि अपसरा समय समयमें गान नृत्य वाद्य करतहै. ऐसी सभामें स्वभ मुहूर्त विचारि धौम्य पुरोहितकौं वा वेदव्यासादिक मुनि सहित वास्तु पूजनकरि महाराज युधिष्टिर प्रवेस कस्यो. तोउत्सवमें देसदेसांतरके सर्वही राजा मुनिहितूजन आदि सबही आये. तिनको राजा युधिष्टिर भक्ष भोज्य स्वगंध वस्त्र अलंकार धन रत्नादिक दे करि बहुत सनमान जथाजोग्य कस्यो तासमयमें आकासतें वीणा वजावत नारद मुनि आवत भये. तिनकों महाराज युधिष्टिर बहुत सनमान करि सिंघासनमें विराजमान करे. तब नारद मुनि बोले महाराज, सभातो अति अद्भुत देषी पण तिहारो पिता पांडु ब्राह्मण इस्त्री पुरुष मारे हे तापापकरि नरकमें पस्योहे. यह वृत्तांत कहिवेकों हम आये हैं. सो स्वणि राजा उदास होय विनती करी हे महराज, मुनिजाको पिता नर्कमें पडयो ताकौ जन्मही वृथा है. तातेजो कोइ उपाइ करि मेरोपिता नर्कतें मुक्ति होई सो कृपाकरि. आग्या करि ये.

सोही मै करोगो. यासें संदेह नहीं. तबनारदमुनि बोले. हेमहारा-
ज आप राजसूयमहाजग्य करो. तापुन्यतें तुम्हारो पिता
नर्कसें निकसेंगो. तब राजा युधिष्टिर बोले. हेमहामुने राजसू-
यजग्यकी कहाविधि है. कोणकोण देवनकों पूजिये अर
कहा कहा सामग्री चाहिये? ऐसे सुणि नारदमुनि बोले.
अठ्यासीं हजारतो उत्तमब्राह्मण बुलावणे. और बारहजो-
जनकी सुवर्णमयमंडप चाहिये. सो मंडप पातालमें है. अ-
संष्यात द्रव्य चाहिये. सो लंकामें है. श्रीकृष्ण सहाई चाहि-
ये. सो द्वारकामेंहै. अनेक राजा सेवाकों चाहिये. ते राजाज-
रासंधके गिरिव्रजनामा गढमें कैदहै. ए सब आवे तब काम-
धेनु चाहिये. तब राजसूय यग्य होइ. ऐसे श्रीनारदमुनिकों
वचन सुणि सब पांडवनि विचार कर्यो. कार्य बहु भारी है.सो
कोण कोण कहां कहां कार्य करोगे.सो कहो. तब अर्जुन बो-
ल्यो मैं लंकापुरी जायके सुवर्ण लाऊंगो. नकुल कही मंडप
मैं ल्याऊंगो. सहदेव कही श्रीकृष्णकों मैं ल्याऊंगो. भीम
कही जरासंधकों मारी राजानकों मैं छुडाय ल्याऊंगो. तब
महाराज युधिष्ठिर कही मै सत्यधर्म सुमरण करि कामधे-
नुकों बुलाऊंगो. परंतु हे सहदेव तुम पहले श्रीकृष्णकों ल्यावो.
तब यग्यको आरंभ होइगो. तब सुभ मुहूर्तमें सहदेव पश्चिम-
कों द्वारकाके सनमुष यात्रा कीनी. जब मार्गमें योगनी सनमुष
आई. स्याम मुष लाल नेत्र त्रिशूल धारे ऐसे भयंकर रूप-
सों आई सहदेवसों बोली हे सहदेव तुम कहां जायहो सो
कहो. तब सहदेव कही. राजसूययग्यकों बडो भारी कामहै.
सो ताकी सहाई करिवेकों श्रीकृष्णचंद्रकों द्वारिकामेंतें लेवे-
कों जाऊंहूं. जब योगनी बोली मैं या दिसामें वसूहूं सो तूं
आईहै तो मोसों युद्ध करि. तब सहदेव कही. मै पुरस हों. तूं
अबला है. तातें युद्ध कैसे होई. जब योगिनी कही. जैसे भवानी

निसुंभतें युद्ध कस्यो तैसें मेरो भी युद्ध होइगो यामें संदेह न
हीं. ऐसें कहिके दोउ युद्ध करत भये. परसपर विजैकी इच्छा
करिकै तबवीर सहदेव अर्द्धचंद्र बाण करि बाके वस्त्रनकों छि
न्नभिन्न करिडारे. ऐसें योगनीकों वस्त्रहीन करि सहदेव मुष
फेरिलियो. जब योगनी बोली हे वीर तूं मोसों मुष फेस्यो सोयु
द्ध करिवेकों समर्थ नहीं. तब सहदेव कही नग्न इस्त्रीकोंजो
देषै वे नर्क जायहै. ता पाप सोंडरि मुष फेस्योहै. काई रता-
सों नहीं. अब नवीन वस्त्र परिधान करि आव. फेरि युद्ध क
रैगो. तबदोउ फेरि युद्ध करत भये. वायुद्धमें योगनीके सरी
रतें जितने रुधिर बुंद भूमिमे गिरे तितनी ही योगिनी होत भ
ई. जैसोही जिनकोरूप अरु तैसोही पराक्रम जब योगनीबो
लीहेसहदेव मेरे असंख्यात रूप देषि वस्त्रहीन वस्त्रसहितए
जितने रूपहैं सो मेरैहीहै. पर तेरो मन परनारीपर बिमुष हैता
तै तोसों प्रसन्न भई सोवर मागि तब सहदेव कही जो देवी तु
म प्रसन्न तो ऐसे ही मोकों भी बहुत रूप धारिवेकी सक्ति द्यो
यह ही वर मांगो हों. योगनी ऐसैही हो कहि अपने स्थान गई.
सहदेव द्वारिका कों गयो. तहांजाय श्रीकृष्णके द्वारपालसों
बचन बोले हे जसवंत द्वारपाल मैं हस्तना पुरसों आयोहों स
हदेवहों सो मालुम करो. ऐसेंसुणि द्वारपाल जाय श्री कृष्ण
सों कही तबश्री कृष्ण कह्यो कहा कार्य आयोहै तब द्वारपाल
आय पूच्छों हेवीर कहो कहा कार्य है. जासों तुम इहां आये.
तब सहदेव कही जो मै युध करिवे कों इहां आयो हों यह स्त
निकै छपन्न कोटि यादव युद्धको आये. सहदेवहू योगनीके ब
लतें उतनेही रूप धारि उनसों युद्ध कस्यो तहां जादवन के
अरु सहदेवके घोर संग्राम भयो. जहां जादव कितनेक छि
न्न भिन्न होइ भागे. तवश्री कृष्ण आय सहदेवसों बोले मै
तेरे पराक्रमतें प्रसन्न भयो सो वर मांगी. जव सहदेव बोले

मैंहूं प्रसन्न भयो तुमहू वर मांगो. ऐसे सहदेवको वचन सु
णि श्रीकृष्ण बोले तुम यह प्रतग्या करो सोमे जादवनसोंजु
द्ध करों नहीं. जोतीस शास्त्रकों पूछे विना जात्रा नहीं करूं
तब सहदेव बोले हे वासुदेव जो तुम प्रसन्न भये. होतो एक
वरदान मोकों द्यो. युधिष्ठिरको आदिदेके हम पांच भैय्या हैं
तिनकी महां दुख्खमें भी सदा सहाई करोंगो. यह सुणि श्रीकृष्ण
अंगिकार करत भये. तब कही राजसूय यग्यको विचार क
स्यो है सो सहाइ करिवेकोंचालिये. तब श्रीकृष्ण वाही समै
सहदेवको सनमान करि द्वारिकातें इंद्रप्रस्थपुरको चले. सो
क्रम करिके मार्ग चालि इंद्रप्रस्थआये युधिष्ठिरादिकसों मि
ले. सबनकों बडो आनंद भयो तब युधिष्ठिर श्रीकृष्णकों ए
कांतमें लेजाय बोले. मैं राजसूय यग्य करिवेको विचार कस्यो
है. सो आपकी अनुग्रहतें होइगो तब श्रीकृष्णहू सबरीत
सों सहाय करिवेकों अंगिकार करत भये. ॥ ॥ इतिश्री
भाषाभारतसारचंद्रिकायांसभापर्वणिप्रथमोऽध्यायः ॥ १॥
॥ ॥ जनमेजय बोले हे मुने, श्रीकृष्णचंद्रतो कहा क
स्यो युधिष्टिर कहा कस्यो नकुल अर्जुन राजसूय महायग्यमें
कहा कस्यो सो कहो. तब वैशंपायन बोले कृष्ण अर्जुनज
ग्यके अर्थ धन लेवेकों लंका पुरी गये. सो समुद्रके तीर श्रीकृ
ष्ण अर्जुन जाय बैठे हनुमंतको स्मरण कस्यो तहां हनुमंत
आये. जब अर्जुन वचन बोले आगे लंकाके जुद्धमें समुद्रम
ध्य सेत बांधी वान्नर गये लंकाको घेरि जुद्ध कस्यो श्रीराम
मचंद्र विजै पाइ सो सेतु बांध्यो जासों सर पंजरही बांधि वा-
न्नर पारक्योंनगये. तब हनुमान बोले वान्नर बडे पराक्र
मीहैं सो उनके कूदिवेतें सर पंजर छिन्नभिन्न होइ जाइ र
हे नहीं. जब अर्जुन बोले जोमें सर पंजर बांधों ताकों कोन छे
दन करे. तब हनुमंत कही तुम बांधो मैंही छेदन करोंगो.

जब अर्जुन सर पंजर बांध्यौ तब हनुमंत उछालिकैं परे सोतिल
तिल छिन्नभिन्न करि डार्यो तब अर्जुन उदास भयो. जबश्री
कृष्ण बोले फेरि सरपंजर बांधि तब अर्जुन फेरि सरपंजर बां
धी पुनः अर्जुन फेरि सरपंजर बांधत भयो श्रीकृष्ण वाकेनी
चै जाइ कूर्म स्वरूप होई ठाढे भये. अर्जुन कहि. अब यह तोडि
यै तब हनुमंत वापै कूदे सो बहु तेरे प्रहार किये परंतु नेकभी
चलित भयो नही. तब हनुमंत अर्जुनसौं बोले मैं प्रसन्न भयो
वरमांगि. जब अर्जुन बोले जुद्धसमे मेरी धुजासें तुम आय
बिराजो. सो हनुमंत तथास्तु कह्यो फेरि श्रीकृष्ण बोले हम
कौं लंका पुरीमें लेचलौ. सो हनुमंत श्रीकृष्ण अर्जुनकौं ले
गये. वहां विभीषण बहुत सनमान करि पूजन कर्यो फेरि
कह्यो आग्या करो तब श्रीकृष्णबोले युधिष्ठिर महाराज के
राज सूयजग्यकौं धन चाहियेहै सोद्यो. तब विभीषण असं
ख्यात स्ववर्ण निवेदन कर्यो फेरि आपके किंकरनसौं कही
जहांये आग्या करें तहां पहुचाइद्यो सो श्रीकृष्ण अर्जुन स्वव
र्णलेकरि इंद्रप्रस्थआये. युधिष्ठिर महाराजकौं अनेक स्वव
र्णनिके पर्वत निवेदन किये युधिष्ठिरहू बहुत प्रसंन्नहोइ श्री
कृष्णकी स्तुतिकरी. अर्जुन कही मैं सरपंजर बांध्यो सोह
नुमंतसौं भेद्योनहीं. तब श्रीकृष्णचंद बोले क्षमा करो मेरो
शिरदेषो. छलसौं हनुमंतकौं वस करि तुह्मारो कार्य कर्यो. त
व राजा युधिष्ठिर कही सब पराक्रम श्रीकृष्णहीकोहै. औ
रहू जो कार्य होहिगेंसो इनहीसौं होइंगे. ऐसें मनमें विचारि
श्रीकृष्णकौं एकांतमे लेगये. तहां फेरि विनती करी हे श्रीकृ
ष्ण मैं राजसूय यग्य करिवेकौं विचार्यो है सो कैसें वणि आ
वै. आप मंत्र दीजे तब श्रीकृष्ण बोले सब राजानकौं जीति
करि पृथ्वीकौ वस करि सर्व सामग्री संचय करि महाजग्यकौ
आरंभ करो ऐसो कृष्णको वचन स्रुणि प्रसन्न भये. श्रीकृ

याके अनुग्रह करि बलवंत ऐसे भ्रातानकों दिग-विजयकों विदा किये सहदेवकों दक्षिण दिसाकों स्वजय वंशी राजानकों साथ दे करि भेज्यो. नकुलकों पश्चिम दिसानकों भेज्यो. उत्तरकों अर्जुनकों भेज्यो. पूर्व दिसाकों भीमसेनकों मत्स्य केकय मद्र देसके राजा साथ दे करि भेज्ये. भगवानश्रीकृष्ण सबनकों सनेह दृष्टि करि देषि आशीर्वाद दियो. सो च्यारोंही च्यारों दिसानके राजानकों जीति बहुत धन्यल्याये. युधिष्ठिर महाराजकों निवेदन कर्यो. एक जरासंध जीति वे मैं न आयो. तब राजाकों बडी चिंता भई. जब श्रीकृष्ण द्वारिकामें उद्धवसों जो मंत्र कर्योहो सो कह्यो. तब युधिष्ठिर कही. आपही यह उपाय करो. जब श्रीकृष्ण भीमसेन अर्जुन एतीन्योंही ब्राह्मणकों रूप धारि जरासंधकी राजधानी गिरिव्रज नामा पुरकों गये. वहां पहले वृषभासुरकों मारि वाके षाल करि मढी वाके हाडनकी ऐसी तीन टांक बनाई जरासंध दरवाजेपै धरी जोकोई कपट करि वाके नीचे आवै तब वे आपहीसों वाजे सो यह वृत्तांत श्रीकृष्ण जाणि भीमसेनके हाथ पीछूकी बुरज फुडवाय विना द्वारही पुरमें प्रवेस करिके जरासंध राजा जामहलमें नित्यदान करै हो तहां और ब्राह्मणनके संग एभीतीन्यूं कपटरूपी ब्राह्मण होइ गये. सो राजा अतिथ आवै तिनकों चरण पूजन करि करि दक्षिणादे. तहां और तो ब्राह्मण दक्षिणा लेले करि गये और एतीन्योंही बैठेरहे. जब इनकों जरासंध पूछ्यो सो तुम कौणहो दीषोंतो ब्राह्मणहो पण अमार्ग होइ कैसे आये. तब तीन्यो बोले हम दूर ते आये अतिथहै सो जाणो. हमजो कामना करैहै सो दीजे जासों तुह्मारो कल्याण हो राजा हरिसचंद्र रंतिदेव सिविरब लि पृथ्वीमें गिरया कण चुगे. ऐसो उत्सव ब्राह्मण व्याध कपोत इनकों आदि दे करि अनेक अतिथ सत्कार करते

करतेही यह अनित्य शरीर ताकरि परम पदकों गये. इतनो क
हिके चुप होइ रहे. तब राजा जरासंधहू इनकी आकृत वा
णी प्रत्यंचानके चिन्ह पहुंचे नमें देषिये अधम क्षत्री है ऐ
से जाणिके विचारत भयौ पैये हैं तो कोइ क्षत्रीही परंतु आ
पदाके मारे ब्राह्मणको रूप बणाय आये हैं तासौं भिषारी
न्कों प्राण पर्यंत भी मांगे तो देणोंही ऐसे उदारता विचार
राजा जरासंध श्रीकृष्ण भीम अर्जुन इन तीन्यौंसों बोले
हे ब्राह्मणहो तुह्मारी वांछा होइ सोही मांगो मैं तुह्मे मस्त
क पर्यंत देवेकों तयार हौं तब श्रीकृष्ण बोले हे राजेंद्र हम
कों दुंद जुद्ध द्यो हम क्षत्री जुधके जाचक हैं अन्नके जाचक
ब्राह्मण नाहीं जब जरासिंधु कही कोणसे क्षत्री हो तब श्री
कृष्ण बोले दानवमें सिरोमणि ऐसे कंसकों मारिवे वालो
तोमें श्रीकृष्ण हौं. हिडंबनको शिर षंडन करिवे वारो यह भी
म है और षांडव वनकों दाहकरि इंद्रकों जीतन वारो यह अ
र्जुन है सोइन तीन्योंनमेंसों तेरी इच्छा होइ ताहीसों दुंद यु
द्ध करि ऐसे स्रुणि जरासंध अट्टहास करि बोल्यो इतनो
छलकरि जुद्ध मांग्यो सो ऐसे मै कहा नहीं देतो. तासौं अ
र्जुन तौ बालक है सो जुद्ध लायक नहीं तूं मेरे आगे भाग्यो
सो भगोरासों कहा जुद्ध करों तासौं भीम मेरे जुद्ध लायक
है. सो यासौं जुद्ध करोगों. ऐसे कहि करि एक गदा आप
लीनी. एक गदा भीमकों देकरि पुरके बाहरी रंग भूमि है त
हां जुद्ध करिवेकों गये. दोउही सन्नद होई जुद्ध करत भये.
वज्र तुल्य गदानके प्रहार करत भये. परसपर वाम दक्षिण
मंडल करे हैं. तिनकी गदानको सब्द वज्र पात समान हो
तहे. ऐसे जुधकरते जिनके अंगन करि जैसे आककी सा
षा चूर्ण होइ तैसे गदा होत भई. तब फेरि मल्ल जुद्ध कर
त भये या प्रकारसों सत्ताईस दिनलौं जुध करत भये. सो

दिनमै तौ जुद्ध करै रातिके समै मित्र जैसै मिले. तैसे भोजनस
यन करे तब सताईसमी राति भीम श्रीकृष्णसौं बोले ज
रासंधको बल अधिक दीसै है सोमै जीति नहि सकौं जब
श्रीकृष्ण भीमकों समाधान कर्‌यौ फेरि जरासंधको पकडि
एक पाउ तो दौ उपाबनसौं दाबि एक पाउ दोउ हाथनसौं लेक
रि चीर डारो तब अठाईसवे दिन भीम जुद्धमे व्याकुल भयो रा
तिकीबात यादि रही नहीं तब श्रीकृष्ण वाके सनमुष एक वृ-
क्षकी साषाले चीरके दिषाई. जब भीमकों वह वृत्तांत याद
आयो सो वैसैही दाबि चीरके फेंकि देत भयो. एक पांव ए
क जांघ एक वृषण. एक कटी एकस्तन एक हाथ एक का
न एक आंषि एक भौंह ऐसै जुदे जुदे दोइ टूक सब देषत भ-
ये. या प्रकार जरासंध मर्‌यो देषि सब प्रजा हाहाकार करतभ
ई तब श्रीकृष्ण अर्जुन भीमसौं मिलिके सराहत भये. ताउ
परांत नगरमें आय जरासंधको पुत्र सहदेव ताको राज्य सिं
घासन पै बैठाय राज्याभिषेक कर्‌यो कैदमें राजाहैं तिनकों छु
डाय गुंफामेसौं निकसाय बुलाये बीस हजार आठसें राजा
आये सरीरमे मैल जमि रह्योहै, जीर्ण मलीन वस्त्रहै ऐसे स
बही श्रीकृष्णको दरसण करि प्रणामकरि स्तुतिकरी तब
श्रीकृष्ण उनको स्नानादिक करवाय वस्त्र भूषण पहरावत
भये. जब वे राजा वरषाके अंतमे जैसै तारा मंडल सोहै तैसै
सोभित भये. एक रथ इंद्र वसु राजाको दियोहो वह रथ वृक्ष
नदी पर्वतनसौं अटकै नहीं सस्त्र पात न करि कटै नहीं. अ
षंड जाकी कांति सर्व रथनतें अति ऊंचो जाकी धुजा जय स्तं
भसी दीसै वह रथ वसु राजा ब्रहद्रथकों दियो. वृहद्रथ ज
रासिंधुकौं दियो. सोवह अद्भुत रथकों श्रीकृष्ण देषि भीम अ
र्जुनकौं सवार करि आप सारथी भये. गरुडको स्मरण कर
तही आये. तब उनकों धुजामें स्थापित किये. जरासिंधुके

पुत्रकी नम्रता देषि वाकों भी रथपै चढाय लियो. राजा छुडाये हैं तिन सबनकों संगले करि इंद्रप्रस्त पुर आये. जहां श्रीकृष्णभीम अर्जुन महाराज युधिष्ठिरसौं मिलि सब राजानकों भी प्रणाम करावत भये. फेरि वहांको सब वृत्तांत कहत भये. जबवे राजा सबही प्रणामकरि विनती करत भये. जरासिंधु रूपी समुद्रमें बुडे है तिन हम सबहीकों तुम उधार कर्यो सो अब हम किंकरनको कहा आग्याहै तब श्री कृष्ण बोले एक बेर अपने अपने स्थाननमें जाय स्त्री पुत्र मंत्रीनकों समाधान करो तापीछे सीघ्रही महाराज युधिष्ठिरकी राजसूय जग्यकी सेवामे सहायतामें रहो. ऐसे कहि सर्वही राजानकों विदा किये तापीछे युधिष्ठिर महाराज मगधराजकी विजयकों सारजोरथसौं श्रीकृष्णकी भेट कर्यो. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायां सभापर्वाणि द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥२॥ ॥ ॥

ताके उपरांत वैसंपायन बोले श्रीकृष्ण नकुल वा रथमे सवार होइ नाग लोककों गये. तहां नागलोकमें नाग रथकी धुजामें गरुड कौ रथमें नकुलकों देषि भयभीत होइ श्रीकृष्णके शरण आय कही आग्या करो. तामें हाजिरहै. तब श्रीकृष्णकही महाराज, युधिष्ठिरके जग्य निमित्य दिव्य मंडप द्यो. जब सर्व नागननें ल्याय स्कवर्ण मई मंडप इंद्रप्रस्थ पहुंचाय दीयो साथि श्रीकृष्ण नकुल आय मंडपकी शोभा दिषाय कही. अब आप कामधेनुकों बुलावो जब राजा युधिष्ठिर एकाग्रमन ल्याय कामधेनुको ध्यान कर्यो तबही काम धेनु आई सो राजा कामधेनुसों देषि हाथ जोडि प्रार्थना करी जब तांई मैं जग्य करौं तब ताई तुम इहां रहो. मेरी कामना परिपूर्ण करो. कामधेनु इतैं सैही अंगिकार करि वहां वास कर्यो तब राजा युधिष्ठिर जग्यको प्रारंभ करत. भये तहां अठ्यासी हजारतो ऋषिआये. सो उनकी स्कभ मुहूर्तमें श्रीकृष्णकी आग्यातें वरणी करी उनमें मुष्य मुष्य ऋषी तोइत

ने तिनकी प्रथम वरणी भई. वेदव्यास, भरद्वाज, सुमंतु, गौतम, असित, वसिष्ट, च्यवन, कद्रू, मैत्रेय, कश्यप, द्विजी, अति, एकत्र, विश्वामित्र, वामदेव, सुमति, जयमनी, क्रतू, पैल पराशर, गर्ग, वैशंपायन, नारद, अथर्वन, धौम्य, परसुराम, वीति होत्र, छहछंदा, रामासिष्य, ऐसो अकतत्रए. औरहू बुलाये आये. द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य, इनकों आदिलेके औरहू पुत्रन सहित धृतराष्ट्र, विदुर, और सर्वराजा देस देसांतर ते स्त्री पुत्र, मंत्री, सेनासहित आये. और प्रथ्वीमे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, जो जग्य दरसणको वांछा करि आये तिन सबही कों महाराज युधिष्टिर जथा जोग्य बैठाये तबवे ब्राह्मण सुवर्ण के हलन करि प्रथवी सोधि कुंड मंडप वेदिका रचत भये. सुवर्णमय सर्व सामग्री करी. सर्व ब्राह्मण राजसूय सभामें अपने अपने आसनपर बैठे तब महाराजहू जग्य दीक्षा लेकरि प्रारंभक स्यो वहां सभामे नारदादिक मुनि श्री कृष्णादिक क्षत्रीन करि सभा बहुत सोभायमान भई. तहां वेदव्यास ब्रह्माको कर्म करत भये. धौम्य आचार्य कर्म करत भये. और मुनि अध्वर्य उद्गाता को कर्म करत भये. और होम पाठ जप पूजनादिक कर्म करत भये. फेरि विशेष करि होमकों करत भये. तासमयमें अर्जुन षांडव वन चराय अग्निकों नैरोग्य कर्योहो सो अग्नि घृतादिक सामग्रीनकों पुष्टताके निमित्य प्रीतिसों भोजन करत भयो. ऐसे होमते होमतें इंद्रादिक लोकपाल. ब्रह्मा महादेव. सिधगंधर्व, विद्याधर, नाग, मुनि, यक्ष, राक्षस, पक्षी किन्नर, चारण, और इनसहित तेतीस कोटी देव सर्वही पूजन आहुतिन करि कै जथा जोग्य तृप्त भये. अग्नि मुष आहुतिन करि देवता तृप्त भये. परंतु अतिसै तृप्त न भये. तातें अनेक प्रकारके भक्ष भोज्य सामग्रीकों देवता भूदेव होड होड करि भोजन करिकै त्रप्त भये. जाचकनके मनोर्थनहूतें अधिक भूमि रत्न हाथी घो-

डा रथ, सुवर्ण आदि देतभये. ऐसे उत्सव होते होते सोमाभि
शेषको दिन आयो. तादिन सर्वहीके पूजनमें प्रथम पूजन कोण
को करणो ऐसे विचार करत भये तहां युधिष्ठिर महाराजनें
भीष्म पितामह, सहदेव. इनकों पूंछ्यो जो प्रथम पूजन कोण
को करणो. राजा अरु मुनि आदि बडे बडे महान भावहै प
रंतु जाके पूजनतें कोई द्रोह नमानें ऐसे वतावो. अरुजाकेपू
जे तें सर्वही पूजन होइ ऐसो पात्र बतावो. तब भीष्म बोले इंद्रा
दिक देव पूजे सर्व लोकनके गुरु ऐसे श्री कृष्ण तिनको तुमजा
नोहो. परंतु बडेनको बडपन राषिवेकों तुम पूंछोहो सो जाके
चरणोदककों शिव शीसपर धरें ता पुराण पुरुषोत्तमहीकों
पूजन करो. जब सहदेवहू यहही कही तब राजा युधिष्ठिर श्री
कृष्णको बुलाय रत्नमय सिंघासन परबैठाय मंडपके बीचि-
पाद्य अर्घ्य मधुपर्क वस्त्र भूषणादिक सामग्रीन करि पूजन
करत भये. तहां सर्वही देषि नमोनमो जयशब्द करत भये. ऐ
से श्रीकृष्णकी महिमा गुणानुवाद सुणकर क्रोध करिज
ल तहां ते शिशुपाल उठकें चल्यो तब युधिष्ठिर महाराज निवा
रण कर्‍यो. तब शिशुपाल हाथऊंचो करि बोल्यो द्रुपद, अगस्त
नारद, पाराशरादिक मुनि रहतें याही गोपालको पूजन करणो
हो सो इनको बुलाइ अनादर क्यों कर्‍यो परंतु पुत्रहीनकी ग
ति नहीं. तातें गंगापुत्र भीष्म गतिहीनहीहै. जातें हे युधि
ष्ठिर तोकोंभी ऐसी बुधिदीनी जो कृष्णको पूजन करि तेरीहू
सदगतिको नास कर्‍यो. जामें बालकपणे ही मेंतो पूतना
कों मारी. ऐसोही पुण्यात्मा पीछु संकट तोडि बैल बच्छरा
हाथी घोडा साप. गधेनकों मारिवे वालो ऐसेकों ऐसेंउत्सव
में पूज्यो यह जोग्यही कर्‍यो. परंतु होणहारकी महिमा सों
जरासंध तो स्वर्ग गयो अरु बालक सहदेवकी बुधिसों बडेब
डेनकी बुधि भ्रष्टभई. ऐसे श्रीकृष्णकी निंद्या सुणि भीम

जुधकों उठ्यौ तब भीष्म पितामह निवारण करि बोले आगें याके तीन नेत्र च्यारि भुजा जन्मले तेंही भई अरु रासभकेसी धुनि करी तब माता पिता ब्राह्मणनकों बुलाय पूछ्यो याकौ कारण कह्या जब ब्राह्मण बोले जाकी गोदमें बैठे याको एक नेत्र दोइ भुजा गिरेगें ताके हाथ याकी मृत्यु होइगी. तब याकी माता सब राजानकी गोदमें धर्यो पीछु श्रीकृष्णकी गोदमें धर्यो तब गिरेसो देषि याकी माता स्रुश्रवाहीसों भती जे श्रीकृष्णसों बोली हे कृष्ण पुत्रकों तुम केसे मारोगे. तातें याकों अभैदानद्यो जब श्रीकृष्ण कही सौ अपराधकों तो माफ करोंगो तातें अब एक अपराध होवेलगेहे. सोसत अपराध लों आर्बलहे. तुमकाहेकों षेद करौहो ऐसें स्रुणि सिसुपाल बोल्यो अपात्रकी पूजा वतावे वाले करवे वाले अरु कराइवेवाले भीष्म पांडव कृष्ण इनकों मेरे पराक्रम रूपी अग्निमें होमौहौं जाकों जुध करिवेकी सामर्थ्य होइ सो आवो ऐसें कहि षड्ग लेइ सिंघासन तें कूदि सनमुष आयो. तब श्रीकृष्ण स्रुदर्शन चक्रसों वाको शिर छेदन कर्यो तासमें वाके सरीरमें सों तेज निकसि सबके देषत श्रीकृष्णमें लीन भयो. जब युधिष्ठिर महाराज. अपने मासीके वेटाकी दाह क्रिया करिवेकों आग्यादिनी धृष्टकेतु नामा वाको पुत्र होताको राज्याभिशेष करि समाधान कर्यो. तापीछे अठ्याशीं हजार मुनिराजसूजग्य सामग्री देषि कह्यो यहजग्य बलिके जग्य समान भयो पण एक न्यूनहे. युधिष्ठिर कही कहान्यूनहे. तब कृष्ण कही एक तापस वनमेंहे सो वहां नही आयो. वाके बुलाइवेकों भीम भेज्यो. जब भीम जाइ ब्राह्मणसों कही तुमकों महाराज युधिष्ठिर बुलावेहे. उन कही कोणकों णको बेटा पोताहे. जब भीम कही धर्मको बेटा सत्यको नाती. संतोषको पडपोता. तब तापस बोल्यो हम संतोषमें मग्नहे. उहां काहेकों चलें. तब-

भीम बहुत वीनती करि ल्यायो ताकों देषि राजा शिरकं पाइ आ
सूं गेरे. तब तापस पूंछ्यो याको कारण कहा राजा कही अबतो
ब्राह्मण बुलाये सों भी नही आवैहै. कलिजुगमें विना बुलाये
ही आवेंगे. ता दुष्यसों मेरे आंसू आये. ऐसे कहि वाको पूजन
कर्यो तापीछे. जग्यकों समाप्तकरि औभृत स्नान कर्यो सब
कों विदा करे. सोसबही देव राजा मुनि आदि जग्यकी महिमा
करत आप आपके स्थान गये. श्रीकृष्ण दुर्योधनादिकनकों
फेरिहू आपके पास कितेकदिन राखे. ऐसे श्रीकृष्णके अनुग्रह
सों राजा जग्य करि बहुत आनंदकों प्राप्त भये. ॥ ॥ इ-
तिश्रीभाषाभारतसार चंद्रिकायांसभापर्वणितृतीयोऽध्यायःस
माप्तः ॥ ३ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ऐसे युधिष्ठि
रके राजसूयकों देषि जोजो आयेहै सोसर्वही आनंदकों पावत
भये. एक दुर्योधन विना वाकों बहुत संताप भये. जनमेजयपूछ्यो
याको कारण कहां तब वैशंपायन बोले युधिष्ठिरके राजसूयमें स
बही बांधव प्रेम करि जुदी जुदी सेवामें रहे. भीमसेनतो रसोई
के अधिकारमें रहे. आमद षरचको मालिक दुर्योधन भयो सह
देव पूजाको अधिकारि भयो. करण दान देवेमें रह्यो आवे जि
नकों समाधान करिवेमें अर्जुन रह्यो श्रीकृष्ण पांव धोवेमें र
हे. नकुल पूजन सामग्रीको अधिकारी भयो. पुरोसवेमें द्रौपदी
रही और सात्यकी भूरिश्रवा हारद्यक्य विदुर विकर्न सतदर्नकों
आदिदे औरहू अनेक कामनकों करत भये. याविधिजग्य भ
यो तहां द्रव्यकी आवंद देषि दुर्योधनके दुष्य भयोही हो दूजे
औभृत स्नानकी सामा देषि महा आताप भयो सो अंतःपुर
में जाय देषेतो द्रौपदीकी निजर श्रीकृष्णकी महाराणी. सर्वही
करेहै और विनती करेहै. ऐसे सोभा देषि आतापतें व्याकुल
होइ बाहर आयो. फेरि मयकी बणाई हुई सभामें महाराज
युधिष्ठिर विराजेहै तिनके पास शतही भायन सहित चल्यो.

सो द्वार हीतें द्वारपालनपै कोपकरत प्रवेस कस्यो आगे स्फटिक शिलानकी फिरसमै जलजांनि वस्त्र उठाये. आगे रत्न मई वापि काकौ फरस जांणि वस्त्र सहित गिरिकै भीज्यौ. सो देषि दास दासी सवही हंसे. फेरि उहांतें आगे चले सो एक भीतकों द्वारि जाणि धासिवे लगे सो ललाटहू मैं लगे. तबतो भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव आदि ताली देके हंसे. कही यह आंधे को आंधोहीहै. इत उत देषै तौभी तिनमें उनके प्रति बिंब ह सैहै. सो मानो चित्रहू हंसैहै. तासौं दुर्योधन लजायमान होइ महाराज युधिष्ठिर सौं विना मिलेही क्रोधसों संतप्त भयो सो देषि महाराज युधिष्ठिर सवहीकों बहुत निवारण कस्यो. परंतु श्रीकृष्णकी मरजी पाय बाल वृद्ध आदिदे सबही हंसत भये. रुके नहीं. ऐसे अनादर करि वहांतें बाहर आइ सवारि करि हस्तना पुरगयो वह वृत्तांत देषि युधिष्ठिर उदास भये. अरु श्रीकृष्ण प्रसन्न होइ विचारत भये. भूमि भार दूरि होवेकी यहही बीज वह्यो. ऐसे युधिष्ठिरको जग्य समाप्त करि श्री कृष्ण द्वारिकाकों गये. महाराज युधिष्ठिरहू जग्यसमाप्त करि सभामै बैठेहैं तहां नारद मुनि आये राजा सतकार करि आसन पर बैठाये. तब नारद मुनि कही. जग्यके प्रभाव करि तुमारो पिता नर्कतें स्वर्ग गयो. आगे हरिश्चंद्रही जग्यकरि समराट भयो. दूसरो पृथ्वीपति समराट तूंहीहै. सो तेरो अहो भाग्यहै. ऐसें कहतेही उलका पात भयो तब राजा कही याको फल कहा जब नारद कही आजसौं तेरहै वरसमैं तोको निमित्य करि सबही भूमिके क्षत्रीनको नास होइगो. सो सुणि महाराज. कहीजो कोई हठ करे तब जुद्ध होइहै.ता तें जो कोई बांधव बुलावेगे रणमें वाजु षामें तौमे जाऊंगो तिन पास हठकरि नटूंगो नहीं. आजहीसौं यहपण लीयो. जबकैसें जुद्ध होइगो. सो सुणि नारदहू हांसिकर बोले. राजा हो-

एगढारतो मैटयो मिटै नहीं ऐसे कहि ब्रह्म लोक गये. राजा हू पिताको उद्धार स्रुणि प्रसन्न होइ प्रजानको पालन करत भये.॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां सभापर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ताउपरांत दुर्योधन युधिष्ठिरके जिग्यकी शोभा आपको मान भंग तिनकों यादि करि करि बहुत संताप करि व्याकुल भयो. वारंवार हाहाकार करि स्वास भरैहै. सरीर कृस स्रुपेद हो इ गयो. ऐसे वाकी दुर्दसा देषि शकुनी धृतराष्ट्रसों कह्यो हे महाराज. तुमारो पुत्रको स्त्रीजन वैसे ही सेवतहै. वस्त्र भूषण पहरैहै. तोहो कृस्क होतहै. जैसे वर्षा कालमें समुद्र स्रुस्क होइ ऐसे राजा स्रुणिके दुर्योधनकों बुलाइ बोले हे पुत्र सकल संपत्ति करि सहीत है तोहू चंद्रमाकीसी कांतिक्षीण क्यों होतहै. तेरे सत्रु पांडवतो दूरि है. बाप दादाको संपत्ति जोहै तो नित्य वधतहै. तातें अबतू क्यों चिंता करतहै. तब दुर्योधन बोल्यो क्षत्रीतो वैहीहै जो आपणी भुजानके वल करि संपदा जीतै. पांडवनकीसी तरे. उनहीकी स्तुतिहोतहै और बाप दादानकी संपदाकों बधाइ बधाइ हर्ष पावै यह कर्म वैश्यनकोहै. क्षत्रीनको नहीं. तातें क्षत्रीतो पांडवहीहै जिननें इंद्रप्रस्तमें यह संपदा ल्याय या प्रकार को जग्य कस्यो जाके जतुर्भुज श्री कृष्णनें चारो भुजानसो चारो दिसानकों जीति या प्रकारकी संपदा भेट करवाई सोवे मेरे सत्रु. तिनको या प्रकारको ऐश्वर्य यादि करि मोकों दाह होतहै. पृथ्वीमें उदयाचल अस्ताचल पर्यंत चारों दिसानमें ऐसो राजा कोई रह्यो नही. जिननें इनकी भेट करी नहीं. और भेट जोजो वस्तु आई सो सब मैंही लीनी. परंतु तिनमें कितनीक वस्तु आज तांई न देषी. न स्रुणी न पहचाणी. सोइतनी आई जिनके लेतलेत मे

थकि गयो. मणी रत्न मोति हाथी घोडा चंदन येइतने आये.
सो इनहूंकी जाति पहचानै नहि राजा युधिष्ठिरके अवसेषकों
नारदादिक सर्व तीर्थनको जल लाये. और वा समेमें सर्वही
राजा दास सेवक दीसे. बाल्हिक राजातो घोडा नकों लिये
ठाडोहै. कांबोज राजा रथ जोयो सुनीथ राजा धुजा धरै है.
वसुदान राजा हाथी लीये हाजर मगधराज मुकुट माला
लिये. एकलव्य भील राजा उपान लीये ठाडो कास्य राजा धनु
ष लिये पांड्य राजा कवचालिये चेकतान राजा तरकस ली
ये सल्य राजा षड्ग धारे सात्यकी जादव छत्रलिये भीम अर
जुन दोउ तरफ चवर करे. वासमयमें समुद्र आय वरुणको
संष नजर कस्यो वा संषको अर्जुनने धारण कस्यो श्रीकृष्ण
धौम्य व्यासादिक मुनि मंत्र पढत अविसेष करत भये. सर्वही
वीरननें मंगलीक संषनकी धुनिकरी. सो सुणि कितनेक राजा
मूर्छित भये. तहां मोहूकों मूर्छा आई जब श्रीकृष्ण पांडव सा
त्यकी धृष्टद्युम्न आदि सबही हसत भये सो वहवात मोसों भू
लि कैसे जाय श्रीकृष्णकी पूजन समे सुमन वृष्टि भई. सिशु
पाल मास्यो गयो सो एहू कैसे भूलो. फेर बावडीमें गिस्यो त
ब द्रौपदी स्त्रीसहित भीमादिक सर्वही हसे. सोइन वातनके
संताप करि मेरो मन कहूं भीलगै नहीं. तातैं अबतोमें म[illegible]
णहीको उपाय जीवनबीचे उचित मानोंहो. ऐसो पुत्रको व-
चन सुणि धृतराष्ट्र बोले पुत्र, पराई संपदा देषि [illegible]
णों यह कायरनको धर्महै तुंहू पराक्रम करि [illegible]. और
कृपाचार्य कर्ण द्रोण अश्वत्थामा इनचारों [illegible] चारों दि-
साजीति ऐसो हीजग्य करि युधिष्ठिर [illegible] भाई है वाका
की कीर्तिहै सोतो तेरीहीहै. तव दुर्योधन [illegible] करि फेरि बो
ल्यो. दिसानको धन पांडव लेआये. और [illegible] तातैं धन
कैसे आवै. धनाविना राज [illegible]

कर्ता जीवतें दूसरो राजसूय कैसे होइ तातें सबसेन सहितजा
य पांडवनकों जीति नगरसंपदा सहित सबही लेल्यौ यह मेरे
मनमें है. यह सुनि धृतराष्ट्र दुर्मन्त्रहे ऐसे बोलतहो वाही स
मै सकुनी बोल्यौ श्रीकृष्ण भीम अर्जुन सहदेव नकुल जाके
रक्षक है और क्रोधसों सबजगतकों दग्ध करिवे वालो राजा
युधिष्ठिर सों कैसे जीतवेमें आवै तासों एक उपाइ है राजाकों
चौपडिकों षेल आवै नहीं और बुलाइ कहवेसों वह नटे नहीं.
तासों छलकरि वाकी संपूर्ण संपदा जीति लीजे तुम सभा बणा
वौ युधिष्ठिरकों बुलाई भेजो तुह्मारी सभा समानहू सभा र-
चि है सो देषो जब वेआवेंगे तब मैं सर्व काम करोंगो. ऐसे सु
णि धृतराष्ट्र बोले यामंत्रको धिक्कार है धर्मात्माको छल करि
जीतिवो जोग्य नहीं ऐसे काम करिवेसों धर्मजस प्रताप सर्वही
नष्ट होतहे तब क्रोधकरि दुर्योधन बोल्यौ वैरीको धर्मअधर्मदे
षि वोही नहीं. बलतें बसन होइ तो छलसों जीतनो आगे बलि
कों विष्णुहू छलकरि बांध्यों तातें यह काम करोंगो. पांडवनके
पक्षपाती विदुरादिकनके कहेसों तुमनहीं मानोगे. तो मैं म
रोंगो. ऐसें पुत्रको हठ देषि याकी दुर्बुद्धिसों कुलको नास स
मझि लीनों तोहू धृतराष्ट्र मोह करि ऐसें ही करो यह कहत भ
यो तब दुर्योधन सभारची. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार
चंद्रिकायां सभापर्वणि पंचमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ५ ॥ ॥
॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तब विचारि युधिष्ठि
रकी सभा समान मेरै भी सभा महिमा पावै या वांछा करिअ
नेक शिल्पकारनकूं बुलाय दुर्योधन राजा सुधर्मा सभा बरा-
बर सभाबणावाई जब सभा तयार हुई देषि यासभामें द्यूत-
क्रीडा करि पांडवनको सर्वस्व हरण करणो यह विचारविदुर
को युधिष्ठिरल्यावेके ताई इंद्रप्रस्थ पुरगयो तहां विदुर युधि
ष्ठिरसूं सन्मान पूर्वक मिलकर बोले राजा दुर्योधननें सभा-

नवीन बणवाई है. तुमसों द्यूत क्रीडा करवेकों बुलाये है. तुह्मारी कहा इच्छा है. तब युधिष्ठिर हसिकरि बोले सकुनी पासान के छलकूं जाणो है सो कपटके पासन करि मोकों जीत्यो चाहत है. वैरी युधसों नजीत्यो जाय त्यों छल करिही जीतणो. यह बुधिवाने विचारे है सो ठीकही है. परंतु मैं हूं बुलायो हुयो रणतें वाद्यूततें निवृत्त नहीं होवूंगो. यातें ज्यों यह पण लियो है होणहार होयसो होवो मैं हूं चलूंगो. ऐसो निश्चयकर द्रोपदी भीमादिक चारूं भाईन करके सहित रथनमें सवार होय हस्तिनापुर आये. तहां भीष्म पितामह द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र इनसों मिलिकें युधिष्ठिर बहुत सनमान पायो. दुर्योधनहू अश्वमेधके अश्वकीसी नाहीं पूजन कर्यो वा रात्र सबही हर्ष पूर्वक वा भवनमें वास कर्यो. प्रभात दुर्योधन द्यूत सभाकी शोभा बणवाई चारों तरफ गजेंद्रनके झूंड गाजे हैं सर्व वाजावजे है गीत नृत्य वाद्य होत है ऐसी सभामें भीष्मादिक वीरन सहित आपहू प्रवेस कर्यो वहां औरहू राजा जथा जोग्य प्रणाम करिकरि बेठे भीष्मादिक देषे है तहां सकुनी दुःसासन कर्ण इनसों वार्ता विनोद करि करि दुर्योधन हाथन में ताली देदेके हसत है भीष्मद्रोण जयद्रथ कर्ण अश्वत्थामा कृपाचार्य इत्यादिक वीर मंडली इनकरि सभा सोभित वा भयंकर देषि पांडव नहूकों तहां बुलाये सो आये. तिनकों दुर्योधन निकट आये देषि अनादर करि कछुक सनमानसो हू कर्यो तब पांडव शिर नीचे करि भीष्मसमीप बैठे जब दुर्योधन सभामें स्रुवर्ण मढ़ बेदी तापें बेट पांडवनकों निकट बुलाय द्यूतकों प्रारंभ कर्यो सो युधिष्टिर दुर्योधनतो द्यूतषेलै तिनकों सकुनी मध्यस्थ भयो सो राजा युधिष्ठिर जोजो पण कियो तव तव सकुनीछल करि कहै यह हूजीत्यो. या प्रकार सर्व राज सामग्री युधिष्ठिर हरिगये. तापीछे भीमादिक भाई

कर्त्ता जीवतें दूसरो राजसूय कैसे होइ तातें सवसेन सहितजा
य पांडवनकों जीति नगर संपदा सहित सवही लेल्यो यह मेरे
मनमें है. यह स्कनि धृतराष्ट्र दुर्मंत्रहै ऐसे वोलतहो याही स
मै सकुनी वोल्यो श्रीकृष्ण भीम अर्जुन सहदेव नकुल जाके
रक्षक है और क्रोधसों सवजगतकों दग्ध करिवे वालो राजा
युधिष्ठिर सों कैसे जीतवेमें आवे तासों एक उपाइ है राजाकों
चौपडिकों षेल आवे नहीं और बुलाइ कहवेसों वह नटे नहीं.
तासों छल करि वाकी संपूर्ण संपदा जीति लीजे तुम सभा बणा
वो युधिष्ठिरकों बुलाई भेजो तुह्मारी सभा समानहू सभा र-
चिहै सोदेषो जब वेआवेंगे तब मैं सर्व काम करोंगो. ऐसे स्क
णि धृतराष्ट्र बोले यामंत्रको धिक्कार है धर्मात्माको छल करि
जीतिवो जोग्य नहीं ऐसे काम करिवेसों धर्मजस प्रताप सर्वही
नष्ट होतहै तब क्रोधकरि दुर्योधन वोल्यो वैरीको धर्मअधर्मदे
षि वोही नहीं. बलतें बसन होइ तो छलसों जीतनों आगे बलि
कों विष्णुहू छलकरि बांध्यों तातें यह काम करोंगो. पांडवनके
पक्षपाती विदुरादिकनके कहेसों तुमनहीं मानोगे. तो मैं म
रोंगो. ऐसें पुत्रको हठ देषि याकी दुर्बुद्धिसों कुलको नास स
मझि लीनो तोहू धृतराष्ट्र मोह करि ऐसें ही करो यह कहत भ
यो तब दुर्योधन सभारची. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसार
चंद्रिकायां सभापर्वणि पंचमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ५ ॥ ॥
॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तव विचारि युधिष्ठि
रकी सभा समान मेरे भी सभा महिमा पावे या वांछा करिअ
नेक शिल्पकारनकूं बुलाय दुर्योधन राजा स्क धर्मा सभा बरा-
बर सभाबणवाई जब सभा तयार हुई देषि यासभामें द्यूत-
क्रीडा करि पांडवनको सर्वस्व हरण करणो यह विचारविदुर
कों युधिष्ठिरल्याबेके ताई इंद्रप्रस्थ पुरगयो तहां विदुर युधि
ष्ठिरसूं सन्मान पूर्वक मिलकर बोले राजा दुर्योधननें सभा-

नवीन बणवाईहै. तुमसों द्यूत क्रीडा करवेकों बुलायेहैं. तुम्हा
री कहा इच्छा है. तब युधिष्ठिर हसिकरि बोले सकुनी पासान
के छलकूं जाणैहै सो कपटके पासनकरि मोकों जीत्यो चाह
तहै. वैरी युधसों नजीत्यो जाय त्यों छलकरिही जीतणो. य
हहु बुधिवानें विचारैहै सो ठीकहीहै. परंतु मैं हूं बुलायो हु
यो रणतें वा द्यूततें निवृत्त नहीं होवूंगो. यातेंज्यो यह पण लि
योहै होणहार होयसो होवो मैंहूं चलूंगो. ऐसो निश्चय कर
द्रोपदी भीमादिक च्यारूं भाईन करके सहित रथनमें सवा
र होय हस्तिनापुर आये. तहां भीष्म पितामह द्रोणाचार्य धृ
तराष्ट्र इनसों मिलिके युधिष्ठिर बहुत सनमान पायो. दुर्योध
नहू अश्वमेधके अश्वकीसी नाई पूजन कर्यो वा रात्र सब
ही स्नेह पूर्वक वा भवनमें वास कर्यो. प्रभात दुर्योधन द्यूत स
भाकी शोभा बणवाई च्यारों तरफ गजेंद्रनके झूंड गाजे हैं स
र्व वाजावजे है गीत नृत्य वाद्य होतहै ऐसी सभामें भीष्मादि
क वीरन सहित आपहू प्रवेस कर्यो वहां औरहू राजा जथा
जोग्य प्रणाम करिकरि बेठे भीष्मादिक देषेहै तहां सकुनी
दुःसासन कर्ण इनसों वार्ता विनोद करि करि दुर्योधन हाथन
में ताली देदेके हसतहै भीष्मद्रोण जयद्रथ कर्ण अश्वत्था
मा कृपाचार्य इत्यादिक वीर मंडली इनकरि सभा सोभितवा
भयंकर देषि पांडव नहूकों तहां बुलाये सो आये. तिनकों दु
र्योधन निकट आये देषि अनादर करि कछुक सनमानसों
हू कर्यो तब पांडव शिरनीचेकरि भीष्मसमीप बैठे जब दु-
र्योधन सभामें स्वर्णमइ बेदी तापैं बेठ पांडवनकों निकट
बुलाय द्यूतकों प्रारंभ कर्यो सो युधिष्ठिर दुर्योधनतो द्यूतषे
ले तिनकौं सकुनी मध्यस्थ भयो सो राजा युधिष्ठिर जोजो पण
कियो तबतब सकुनीछल करि कहै यह हूजीत्यो. या प्रकार
सर्व राज सामग्री युधिष्ठिर हरिगये. तापीछे भीमादिक भाई

नकौं हारि आपाहूकौं हारिगये. तब युधिष्ठिर चारों तरफ देषत भ
ये. सोपण करवेकौं कछुभी देषौ नही. जब दुर्योधन बोल्यौ हा
लतौ द्रौपदीहै. सो अबकै द्रौपदीको पण करि बाजीषेलौ. ऐ
सै सुणि विदुर क्रोध करि बोले अरे अंधके पुत्र अंध यह ते-
री बुधि कुल नास करेगी. तूं तेरी मृत्यु वास्ते सूते सिंघनके ला
त मारि क्यों जगावैहै. ऐसैं कहते कहतेही युधिष्ठिर पण क-
र्यो तब सकुन द्रौपदीहूकों जीति यह कहत भयो तब दुर्यो
धन प्रातकामी सूतकौं बोल्यौ द्रौपदी दासीकौं इहां ल्या वोज
ब वह द्रौपदी पास गयो सर्व वृत्तांत द्रौपदीसौं कही कह्यो.
माता तुमहूको सकुन कर्ण सहित दुर्योधन सभामें बुलावे
है. मैंतो सेवक हौं मोसौं कह्योसो कहतहौं यामें मेरो दोस न
हीं. द्रौपदी ऐसै सुणि विचार करि बोली द्रुपदकी बेटी पांडु
महाराजकी पुत्र वधू सो मैं राज सभामें कैसे आऊं वासभा
में भीष्म द्रोण विदुर अरु मेरे पांचूं पति हैकि नही सो कहो
अरु जोहै तो यह पूंछ्यो जो राजा मोकूं आपो हारे पहली
हारी अथवा पीछे याको धर्म निर्णय कहा है. तब वह बो-
ल्यो हे राज पुत्री सर्वही है परंतु चित्रके लिषे से हैं. कोईमें
धर्म नही है जहां राजातो अंध. सकुनी मंत्री. कर्णवीर तहां
धर्मकी चर्चाही कहां. जब द्रौपदी फेरि बोली तोहू भीष्मसौं
जाय कहो जो तुम परसरामकों जीतवेवाले जा सभामें होइ
तहां द्रौपदीकी लज्जा जाइगी तौ गंगाकों लज्या नहीं आ
वैगी कहा अरु कदाचित राम परस्त्री गवन करै. युधिष्ठिर
मिथ्या बोलै. गंगामें स्नान किये पातक न जाय ए नहो वेकीतो
होय परंतु द्रौपदीतो सभामें आवै नही. तब ऐसै सुणि तब
प्रतिकामी आय सभामें यह कही द्रौपदी ऐसै कहै है. जब
दुर्योधन प्रातकामीसौं बोल्यो वाकौं बलात्कार ।९ ल्य
जब फेरि प्रातकामी बोल्यौ हे महाराज कुमार तुमतो

देवर, भीष्म स्वसर, पांडवपति तासों बलात्कार करिवेकी मे रीतो सामर्थ नहीं. यह सुनि दुर्योधन क्रोध करि प्रातकामी कों सभातें बाहर निकसाई दियो. अरु दुःसासनसों बोल्यो वा दासीसें जाय कहो. जो सभामें चलिके तूंही धर्म पूछिलीज्यो अरु नहीं आवै तो बलात्कार करि ल्यावो तब दुःसासन गयो. जहां द्रौपदी वाकों आवत देषि भयकरि संकुचित भई अरु कही मैं एक बस्त्रा रज्जस्वला होंसो मोकों सपरस मति करो. तब दुःसासन वाकों हे दासी हे दासी ऐसें कही. पकरवेकों दोर्यो. जब वह भय भीत होइ अंतह पुरमें भाजिगई तब वाके केंस पकडि बलात्कार करि सभामें ले आयो. जब द्रौपदीकों देषि सर्वही राजलोक कंपायमान भयो. भीष्म द्रोण कृपाचार्यकोंतो कुलनास भय करि प्रस्वेद आयो और सबही सभाजन हाहाकार शब्द करत भये. कर्णादिकनके हर्ष भयो ऐसी दसा द्रौपदीकी देषि भीमसेन बोल्यो हे युधिष्ठिर तुह्मारे जुवाषेलवेके दोष करि इन हाथनकों जला इ द्योंगो तातें हे सहदेव शीघ्रही अग्नि ल्याव. तब अर्जुन बोल्यो हे भीम तेरी बुधि कहांगई यहां राजा क्षत्री धर्म राषिके आपनकों हारेहै तातें आपनो तोज सही है. तासों तुमहु क्षमा ही करो. ऐसे अर्जुनके वचन सुनि भीमसेनकों क्षमायुत देषि दुःसासन द्रौपदीकों सभामें ल्यायो. एक वस्त्रा कुंचकी रजस्वला ऐसे वह द्रौपदी सभावीचि पति नहीकों रुषी दृष्टि करि देषत भई. तब युधिष्ठिरादिक लज्जावान होइ नीचे मुष करिलीने. वासमैमे दुःसासन फेरि बोल्यो हे दासी तोकों जीति लीनी है. सो अबइनकों कहा देषे है. दुर्योधनकों देषि ऐसें वचन सुणि द्रौपदी भीष्मादिक गुरुजननकों प्रणाम करि बोली मैं श्रीकृष्णकी सषी पांडु महाराजकी पुत्र वधू द्रुपदकी बेटी. ताकों यह दुर्बुद्धी दासी कहै सो तुम याकों रोकोक्यों

नहीं धर्मदेषिकैतो बोलिवो जोग्यहै. तब भीष्म बोले. हे पुत्री तेरे अनादर तैं यह कुलनास होवेकी चिंताकरि हमकों कछूभी दरसै नहीं. जब दुर्योधन सभाकेनकों पूंछत भयो यह जीति है कि नहीं तब भयकरि सभाके कोई न बोले. एक धृतराष्ट्र पुत्र विकर्ण बोल्यो हे सभासद हो तुमकों कहा डर है. धर्मकी बात होइ सो कहो. राजा पहलें आपो हारी पीछैइनकों हार्यो तातें यह जीति बेमें आई नहीं. याके वचनकों सर्वही सभासद सराहत भये. तब दुर्योधन बोल्यो विकर्ण तूं जाणै नहीं यहतो सर्वस्व पणमें पहले ही जीती. अब पांडवनके सस्त्र वस्त्र सबही लेज्यो या पांचनकीप्यारी असतीताकों विचित्र वस्त्र हू लेज्यो. ऐसे कहतही पांडवतो वस्त्रादिक उतारि धरि दीने तोहू वर्षा कालमें बादलसूं निकसि सूर्य सों है तैसे सोभितभये. तासमै सभामें दुःसासनसों कर्ण बोले यह गौहै गौतो वसत्रही नही सोभितहै. यातें याहू तें सोभित करो तब दुःसासन चीर गह्यो जब सभाजन तो नैन मूंदि धृतराष्ट्रसो भये. द्रौपदी कृष्णको स्मरण करि बोली हे कृष्ण हे विष्णु हे मधुकैटभारे. हे केसव हे लोकनाथ हे गोविंद हे दामोदर हे माधव या समयमें माता पिता भ्राता बंधु सुहृदकोंउ रक्षक नहीं तुमही सहाइ करो. अनाथकेनाथहो ऐसे द्रौपदीके स्मरणतें कृष्ण वस्त्र रूप होइ रक्षाकरी दुःसासन ज्यूंज्यूं वस्त्रषैंचे त्योंत्यों नवीन उज्वल प्रगट होइ वह षैंचित षैंचित थकि गयो. वस्त्रको पर्वत समान ढेर भयो. सोदेषि भीम बोल्यो हे सभासद हो मेरी प्रतंग्या सुणो दुःसासनको हृदय विदीर्ण करि याके रुधिरकी तीन अंजुली पान न करूं तो वस्त्र हरणको पातक मोकोंही लागो. वस्त्र हरण करतै दुःसासन थकितहोइ बैठ्यो तब द्रौपदी बिलाप करत बोली नाथछतें मो पतिव्रताकों अनाथसों या पापीनै

दुरदसा करी. यातैं जीवनतै मरन श्रेष्ठहै यह सुणि कर्ण
बोल्यो जाके पांच पति होइ सो पतिव्रता कैसे. अर अब तूं
अनाथ है तो कुरुराजकों पति करि सनाथ क्यों नही होइ ऐसें
कर्णके बोल तही दुर्योधन द्रौपदीकों वामजंघा दिषाय बोल्यो
इहां बैठी. यह सुन तही भीम क्रोध करि बोल्यो अरे दुर्योधन
तेरी याही जंघाकों गदा प्रहार करि भंजन करूंगो. अरे
तेरे सकल भ्रातानकों हौंही मारोंगो. ऐसें कहतैं भीमकों
कोप सहित देषि विदुर धृतराष्ट्र सों कही तेरे सर्व कुलको ना
स होतहै. रक्षा कियो चाहैतो द्रौपदीको समाधान करि
तब धृतराष्ट्र दुर्योधनसों बोल्यो बडे भ्राताकी भार्या माता
समान है. दूजें पतिव्रता है ताकों रे दुर्बुद्धि क्यों दुष देत है ऐ
सें दुर्योधनसों कहि द्रौपदीसों बोल्यो हे पुत्री तूं निजतेज क
रि अखिल जगत भस्म करिवेकों समर्थ है तोहू क्रोध नक
रत है. तातें मैं प्रसन्न भयो तूं वर मागि द्रौपदी बोली राजसू
य यग्यमें जाके सकल राजा किंकर भये सो राजा किंकर न
होइ यह धृतराष्ट्र अंगीकृत करि कही और वर मांगि. फे
रि द्रौपदी कह्यो ए सकल पांडव सस्त्र अस्त्रन सहित रथारू
ढ होइ. निजस्थान जाय यहहू धृतराष्ट्र अंगीकृत कीयो त
व सभासद बोले आपति समुद्रमें डुबत पांडवनकों द्रौप
दी नौका भई. यह सुनत सकोप भीम गदा गहिके उठि बो
ल्यो हमारे स्त्री नौका कहा या विपति सागरकों भुजबल
करि तरै है सो तुम देषो ऐसे कहि दांत पीसत सबनके
मारिवेकों गदा गहि. सनमुष दोड्यो. याकों आवत देषि.
दुर्योधन कर्ण दुःसासन सकुनादि कंपित भये. युधिष्ठिर
भीमकी बाहु गहि निवारण कर्यो जब धृतराष्ट्र युधिष्ठिर
सों बोले हे पुत्र दुर्योधन तेरो कनिष्ठ भ्राता पुत्र समान है
याकों अपराध क्षमा करो तुम तुह्मारे सस्त्र अस्त्र धारि

पुरीमें जाय राज्य करो. तब आग्या प्रमाण युधिष्ठिर भ्रातान सहित स्यंदन सवार होइ निज पुरकों चले. जब दुर्योधन धृतराष्ट्र सौंकही पांडव क्रोध करि मालिन होइ जात है सो अपने कुलको नास करेगे. मै इनसों युद्धमें तो जीतो नहीं ताते एक बाजी फेरि षेलि प्रतंग्या करें जो हारे सो जटा वल्कल धारि द्वादस वर्षलों वनवास करे. एक वरस अग्यात रहे वा वर्षमें प्रगट होइ तो फेरि वैसेही वनवास करे ऐसे उनकों वनवास कराय द्वादश वर्षलों मै सामर्थ होउंगो. यातें आग्या दीजे. लोभतें धृतराष्ट्र आग्या दई. तब कर्णजाय मार्गहीमें युधिष्ठिरसों कही तुह्मे राजा बुलावैहे. युधिष्ठिर प्रतंग्या के वसतें फेरि आये. धृतराष्ट्र सों पहली मंत्रकीयो हो सोही मन करि सकुनकों मध्यस्थ करि बहू पनजीत्यो तब राजा वैभव दुर्योधनकों दे धर्मपुत्र मृग चर्म धारि वनकों चलत शिव समान शोभित भये. तिनको संग द्रौपदीकों जाती देषि दुःसासन बोल्यो अबतो इन दरिद्रिनकों तजि कौरवेंद्रकों भजिवो जोग्य है. तब भीम कही या वचनको फल चौदहे वर्ष पावेगो. जब फेरि दुःसासन बोल्यो याग उकों देषो. ऐसे कर्णक र्णसकुन्यादि अनेक राजा हँसे तब अर्जुन कर्ण मारिवेकी प्रतिग्या करी. नकुल सकुनीके मारिवेकी प्रतंग्या करी. सहदेव अपर राजानके मारिवेकी प्रतंग्या करी. कुंतीकों पांडवनके संगवन गवन करत देषी. विदुर हठकरि निज भवनमें राषी. वनकों चलत युधिष्ठिर विचार कियो जो कौरव मेरी कोपदृष्टि तें दग्ध होय तो इनके नासको कारण मैही हों यातें मुषकों ढांकि निकसे भीम भुजा पसारिकै यह जनाई जो इन भुजानसों सबनकों नासकरोंगो. अर्जुन मार्गमें रज उडावत चलेतो यह जनाई जो बाणानकी वृष्टि

करि इतनो निपात करोंगो. सहदेव मुषस्यामकर यह विचार च
ल्यो. सकुनको मारे मुष उज्जल होय. नकुल रजालिस सरीर क
रि यह विचार चल्यो जो इन सर्व राजानकों मारों जब निर्मल
होऊं. द्रौपदी केंस षोलि अश्रुपात ढारती यह विचार चली
जो ऐसै ही सकल कौरवनकी भार्या पुर प्रवेस करैगी. अरु
नैऋत्य दिसाकी वोर धौम्य मुनि दर्भ सहित कर उच्च करियम
सूत्र गान करि यह विचार चले जो कितेक दिन पीछै कौरवनकी
भार्यामै गान करों तैसै रुदन करौ ऐसै आप देत निकसे तब
अनेक उतपात भये. जब नारद मुनि आय धृतराष्ट्रकों कौर-
वौ भविष्य नास सुणायौ. तातैं त्रसित दुर्योधनादि द्रोणाचा
र्यके सरण गये. तब द्रोणहू अभय देयकै मंगल समाधान करत
भये. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भाषाभारतसार यह सभापर्व
सुषदाय ॥ रावचांदसिंघके हुकम कियोचैनचितचाय ॥१॥
॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां सभापर्वणि ष-
ष्ठितमोध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ इति सभापर्वसमाप्तः ॥ ॥

इतिभाषाभारतसार स.प.

सम्पूर्णम्.
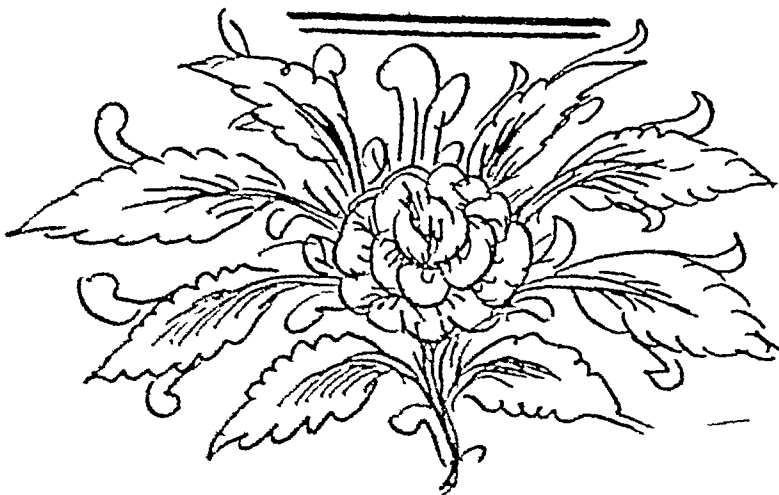
वनपर्वचित्र १
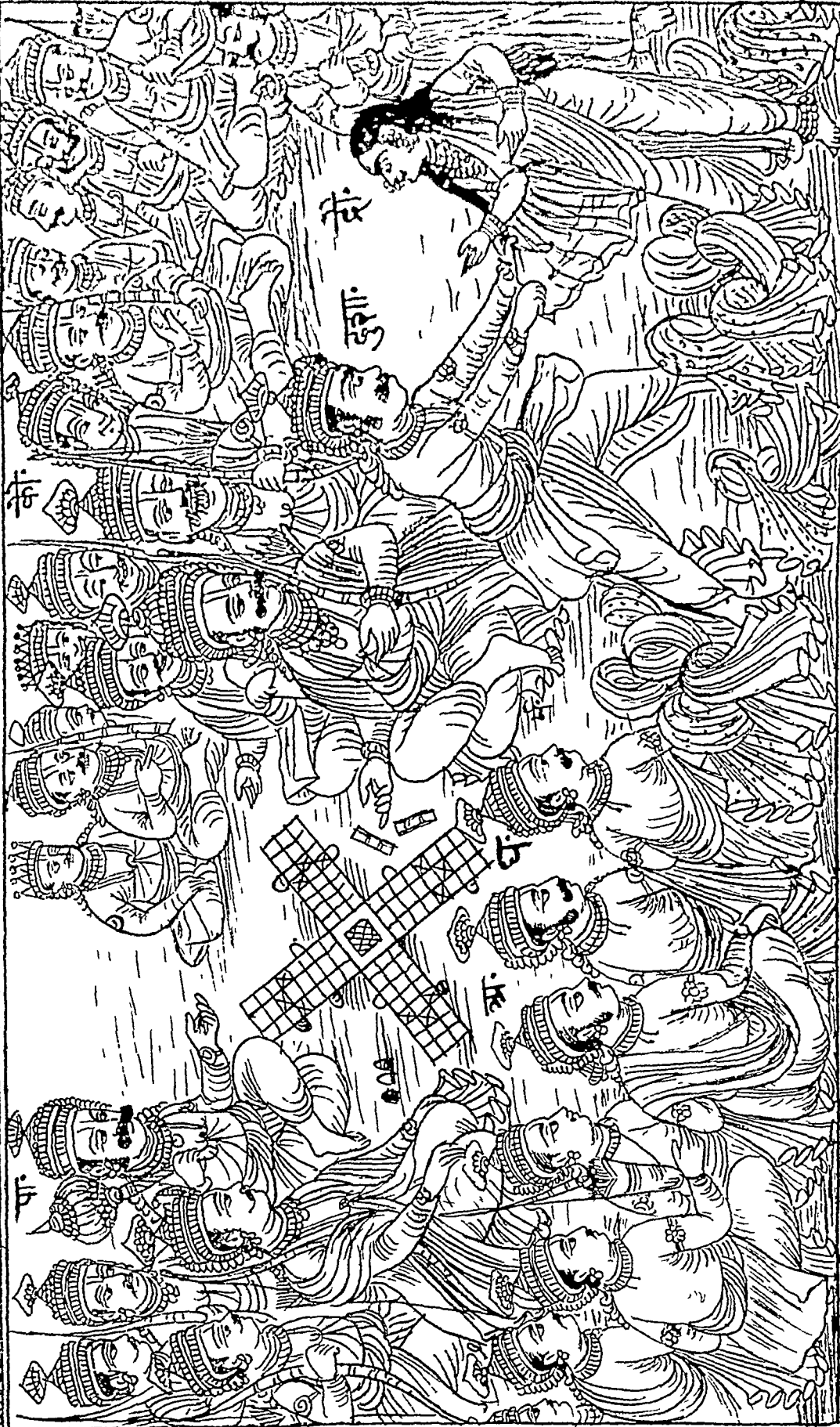
वनपर्व चित्र २
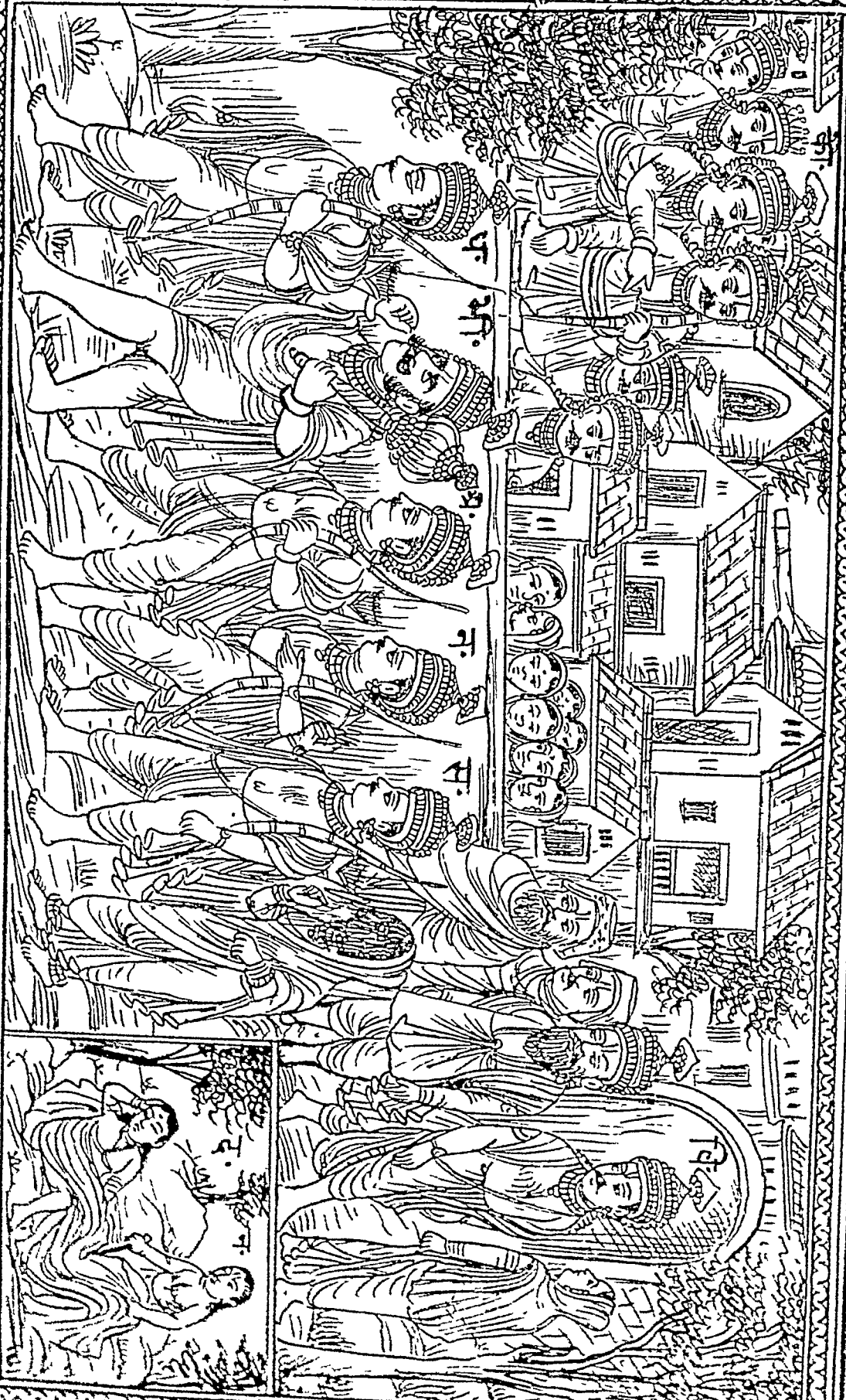
अथ भाषाभारतसारवन- पर्वप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापी छे पांडव गंगातीरगये. तहां इंद्रसेनकों आदिलेके चौदह सेवक रथ सहित सेवामें आये. अरु धृतराष्ट्र रथ आदिदे सरंजाम भेज्यो. ताकों वचनहींसों सतकार करि फेरि दियो अरु पुरवासी साथचले तिनहूकों पाछे फेरि उत्तर दिसाकों गये. उहां ब्राह्मण मंडलि बहुत यह देषि धौम्य राजाकों सूर्यस्तोत्र दियो ताकरि युधिष्ठिर सूर्यकी स्तुती करी जब सूर्य प्रसंन होइ षद्रस अक्षय सामग्री देवे वाली ऐसी चरी दई. अरु यह कही जहांताईं द्रौपदी भोजन नकरैगी. तहांताईं वांछित सामग्री देगी. द्रौपदी भोजनकीये पीछू दुसरे दिन फेरि देगी. उहांतें सरस्वती तीर वास करि कुरुक्षेत्र जाय काम्यक वन आये. उहां बकासुरको भाई किमिर नामा असुर मार्ग रोकि युद्धकों आयो ताकों भीम मारि यम लोक पहुंचायो तापीछु धृतराष्ट्रसों विदुर कह्यो या दुर्बुद्धि पुत्रको निकासो नहीतो वृथा वंसको नास होइगो. ऐसे सुणि दुर्योधन विदुरकों अनादर करि निकासे. जब विदुरहू पांडवन पास गये. सो सुणि विदुरके वियोगसों धृतराष्ट्र दुष्षत होइ संजयकों भेज्यो जब संजय जाय विदुरकों ल्याये तापीछु इकले पांडव है तिनकों मारिवो विचारि दुर्योधन कर्णकों सेना सहित भेजिवेको तयार कियो. जब वेदव्यास आय कही अनीत रूपी कीचमेंक्यों डुबो हो ऐसे कहि निवारण कस्यो तापीछे मैत्रेय मुनि आय दुर्योधनसों भीमसेनकि मिरकों मास्यो सो वृत्तांत कह्यो और दुर्योधनसों कही तुमहूं उनसों विरोधमति करो.

तब दुर्योधन मैत्रेय मुनिकी जंघापै हाथ पटकके वरजे. जब मैत्रेय श्रापदियो तेरी जंघा भीमकी गदा करि षंडित होइगी ऐसै श्राप देय गये. अरु पांडवनकौं द्वैतवन आये सुणि इनके संबधी मित्रादिक राजा मिलिवेकौं आये. युधिष्ठिरकौं सबही-नैं समाधान कर्यो वनवासमैं कलेस अधिक जाणि द्रौपदीके पांचौं पुत्रनकौ लेय धृष्टद्युम्न आपके पुरकौं गयो. अरु श्रीकृष्ण अभिमन्यु सहित सुभद्राकौं लेय द्वारिकाकौं गये. जब अर्जुन युधिष्ठिरसौं बोल्यौ हे महाराज, मोकौं आग्या करो तो-वैरिनके जीतिवेकौं तप करिवेकौं जावौं. ऐसै सुणि युधिष्ठिर वेदव्यासकौ सुमिरण कियो सो मुनि आय अर्जुनकौं प्रतिश्रुत नाम विद्या दई अरु कही इंद्रकील पर्वतमें जाय यो जप करौ इंद्रकौ आराधन करौ तासौं सर्व अस्त्र लाभ होइगो उहां अस्त्र सस्त्र कवच धारि ब्रह्मचर्यसौं तप करो तहां तपकरतें कोई दुष्ट जीव आवै ताकौं मार्ग दीज्यौ ऐसै कहि वेदव्यास तौ अंतर्ध्यान भयो अर्जुन इंद्रकीलमै जाय वैसैही तप करत भयो तहां याकी तपस्या देषि वांके वासी इंद्रसौं जाय कही. कौउ तुह्मारे पर्वत मै तप करे है. सो न जाणिये आप-हीकौ स्थान लेवेकौं तपैहै कहा. ऐसै इंद्र सुणि गंधर्व अप्सरा. वसंत. कामदेव. इनकौं याकौ तप भंग करिवेकौ पठाये. सो उहां जाय सबही वाकौ तपभंग करिवेकौ यत्न कर्यो पैं एकहूकौ पराक्रम सफल न भयो तब इंद्रपास आय इंद्रसौं वृत्तांत निवेदन कर्यो सो सुणि इंद्र प्रसन्न होइ ब्राह्मणकौ रुप धारि अर्जुनके पास आयो तहां इंद्र बोले. हे वीर कवच धनुष धारि तप करत है तातै कोई कामना है सो काम भोग मिलै. तब तो सुष है. पीछै अंतमै दुष देत है. तासौं कामना छोडि मोक्षके निमित्य तप करो जब अर्जुन बोल्यौ विनास मके बोले तो बृहस्पतिकौ वचन निष्फल जाय. मैं तो अग्र

ज सरूपी कीचकौ सत्नु. स्त्रीनके नेत्र नके जलसौं धोयो चाहत हौंसो दुर्योधननैं हमारौ सरवस्व हरण कियोहै तासौं वाकौं मारि युधिष्ठिरकौं राज्य द्योंगो अथवा पर्वत ही मे देह त्याग करौंगो. ऐसो वचन सुणि इंद्र निजरूप धारण करि पुत्र अर्जुनसौं मिलि शिवकी आराधना वताई तब अर्जुन शिवकी आराधना करी. सो तीन दिन उपरांत एकदिन फलार करणौं ऐसे एकमास बितीत कर्‍यो अरु छह दिन पीछु फलहारकरणौं ऐसे दूसरो मास वितीत कर्‍यो तीसरे महिनामैं पंद्रह दिन पीछु सुष्क पत्र अहार करि बीतीत कर्‍यो चतुर्थमास मे समाधि लगाई एक पांवसौं ठाढो रह्यो याके तपके प्रभावसौं सुभावहीसौं वैरी जीव हैसो सब निर्वैर होत भये. यह प्रभाव देषि दिक्पाल व्याकुल होइ शिवसौं निवेदन करत भये तब याके तपसौं प्रसन्न होइ शिव परवार साहित किरात रूपधारि आये. अरु मूक दानकौं सूकर रूप करि वाके सनमुष भेज्यो तब वाकौं आवतही अर्जुन बाण करि मार्‍यो अरुवाहीके शिवके तर्कसमें प्रवेस कर्‍यो अर्जुनको बाण पृथ्वीमै पड्योहौ ताकौं लेवेकौं जब उतसौं एक किरात बडो धनुष धारै आइ कही यह बाणहमारे धणीको है. अर्जुन कही मेरोहै ऐसे आपुसमै विवाद भयो. जब वानै जाय शिवसौं कही तब शिव आपके गुण किरात रूप धारे है तिनको भेजे. सो आय अर्जुनसौं जुध कियो जब अर्जुनहू बाणनसौं महा घोर संग्रामकरि सेनाकौं भजाइ दीनी. सो सेना जाय शिवसौं ... रकरी. तब शिव युध करिवेकौं आये. तहां दोउनके ... स्त्र अस्त्रन करि युद्ध भयो जब अर्जुनके अस्त्र युद्धतें गणनकौं व्याकुल देषि शिव सब अस्त्र सस्त्रनकौं भक्षण करि गये तब यानै केवल धनुषको प्रहार कियो. जब शिव धनुषहूकौं अंतर्ध्यान कर्‍यो तापीछू यानै षड्गको प्रहार कर्‍यो.

वेसकी तयारी करैहै तिनसौं कही सामग्री तयारहै भोजन करि वे मुनिनकौं बुलावौ. तब राजाकी आग्यासौं भीम बुलावेकौं गयो तहां भीमकौं शब्द सुणि मुनिनके मनमें भय भयो जो भोजनकी रुचि नहीं पाक वृथा जायगो तासौं राजान जाणिये कैसे आपदे आगे अंब ऋषके अपराध करि दुष पायो हो ऐसे विचारि उहांतें भजिगये. जबश्रीकृष्णहू युधिष्ठिरकौ समाधान करि द्वारिका गये. श्रीकृष्णके गये पीछे राजा युधिष्ठिर आपतिकौ विचार करि षेद युक्त भयो तबवा समयमें वृहदश्व मुनि आये राजा उनकौं अर्घ्य पाद्यनसौं पूजन करि वेंगाय हाथजोडि विनती करी आप दरसन दे मोकौ कृतार्थकस्यौ परंतु एक मोकौं संदेहहै मो बराबर दुष्यंत और राजातो न भयो न होइगो. जुवामै धनराज्य मेरो गयो मै पासानकी विद्या जाणौं नहीं. उन कपटके पासीन करि मोकौं जीति घोर वनवास दीयो सभामे मेरी राणीकौं ल्यायके संग्रह करि दुर वचन सुणाये. अब हमारो प्राण अर्जुन गयोहै वाकै विरह करि रात्रकौं निद्रा नहीं आवैहै तासौं यह विचार मैदीसैहै जो मोसौं दुषी और पुर्षन होइगो. ऐसे सुणि वृहदश्व बोले हे राजा एकाग्र चित्त होइ सर्व भ्राता सुणौ तुमते हूं महादुषी एक पृथ्वी पति राजा भयो ताको आष्यान कहौंहौ सो सुणो. निषधदेसनको राजा वीरसेन भयो वाको पुत्र नल भयो वाको पुष्कर नाम राजाजीत्यौ सो भार्या सहित वन मे दुषित भयो वाकौ संग अश्वरथ बांधव भ्राताको इनही रह्यो तुह्मारे संग भ्राता भार्या अश्वरथ हजारों मुनिहैं तातैं सोच करिवेकौ योग्य नहीं जब युधिष्ठिर बोले वा नलको चरित्र मोकौं विस्तार करि कहो तब वृहदश्व मुनि बोले वह नल राजा सकल गुण संपन्न रूपमें अश्विनी कुमार सम देवन मैं इंद्र जैसे राजानमैं वह भयो तेजकरि सूर्य समान ब्रह्मज्ञ

यह गुण होयगो ऐसे अर्जुनको समाधान करि अस्त्राभ्यास करावत भये. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायां अरण्य पर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥

अथ दुतीय अध्याय सूं नलोपाख्यान कथा ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ अर्जुनकों तप करवे गये पीछे पांडव द्वैत वनमें वसत भये. उहां दुर्योधन दुर्वासाकी बहुत सेवा करी जब दुर्वासा प्रसन्न होई कही. तुम वर मांगो तब दुर्योधन कही द्रौपदी भोजन करि चूके तापीछे आप दस हजार शिष्यन सहित युधिष्ठिरके भोजन करिवेकों जावो या वातकों अंगीकार करि द्वादशीके दिन सब पारणा करि चुके जब युधिष्ठिरके दुर्वासा शिष्यन सहित जाय आतिथ भये. तब युधिष्ठिर अर्घ पाद्यानसों पूजन करि भोजनकी प्रार्थना करी जब मुनि कही हम मध्यान्ह संध्याकरि आवत हैं. ऐसे कहि गये. तब युधिष्ठिर द्रौपदीसों कही सामग्री कहा है दुर्वासा दस हजार शिष्यन सहित संध्याकरि भोजनकों आवेंगे तब द्रौपदी कही मैं भोजन करि चुकी टोकणी षाली है. ऐसे स्रुणि पांडवन विचारी मुनि आज भोजन किये विना श्रापदे दग्ध करेंगो. तासों आप नही काष्ठमें बैठि दग्ध होइ ऐसे विचार काष्ट मंगायो तब द्रौपदी पर्नकुटीमें जाय स्मरण करि ध्यान कीयो जब श्रीकृष्ण पीतांबर पहरे चतुर्भुज स्वरूपसों आय बोले मैं द्वारिकासों चल्यो आयो भूषो हों. सो मोकों भोजनदे. द्रौपदी कही हे प्रभु मेरे भोजन किये. पहली तो यह टोकणी अक्षय सामग्री देत है. सो मैं भोजन कर चुकी अब षाली है जब कृष्ण बोले देषै वाकों ल्यावो सो टोकणी मंगाय वाके किनारे पत्र निकस्यो ताही हाथमेले बोले या करि विश्वात्मा न तृप्त होवो. ऐसे कहि भक्षण कियो तब तीन लोक . भये मुनिनके उदर आफर गये. अरु उहां युधिष्ठिर काष्ठ

वेसकी तयारी करैहै तिनसौं कही सामग्री तयारहै भोजन करि
वे मुनिनकों बुलावो. तब राजाकी आग्यासों भीम बुलावेकों ग
ये तहां भीमकों शद्ब सुणि मुनिनके मनमें भय भयो जो भो
जनकी रुचि नहीं पाक वृथा जायगो तासों राजान जाणिये कै
से आपदै आगै अंब ऋषके अपराध करि दुष पायो हो ऐसे
विचारि उहांतें भजिगये. जबश्रीकृष्णहू युधिष्ठिरको समा
धान करि द्वारिका गये. श्रीकृष्णके गये पीछे राजा युधिष्ठि
र आपतिकों विचार करि षेदयुक्त भयो तबवा समयमें वृह-
दश्व मुनि आये राजा उनकों अर्घ्य पाद्यनसों पूजन करि वे-
गय हाथजोडि विनती करी आप दरसन दे मोकों कृतार्थक-
र्यो परंतु एक मोकों संदेह है मो बराबर दुष्यंत और राजातो
न भयो न होइगो. जुवामें धनराज्य मेरो गयो मैं पासानकी
विद्या जाणों नहीं. उन कपटके पासीन करि मोकों जीति
घोर वनवास दीयो सभामें मेरी राणीकों ल्यायके संग्रह करि
दुर वचन सुणाये. अब हमारो प्राण अर्जुन गयोहै वाकै
विरह करि रात्रकों निद्रा नहीं आवैहै तासौं यह विचार मैंदी
सैहै जो मोसों दुषी और पुर्षन होइगो. ऐसे सुणि वृहदश्व
बोले हे राजा एकाग्र चित्त होइ सर्व भ्राता सुणो तुमतें हू
महादुषी एक पृथ्वी पति राजा भयो ताको आख्यान कहीं ही
सो सुणो. निषधदेसनको राजा वीरसेन भयो वाको पुत्र
नल भयो वाको पुष्कर नाम राजा जीत्यो सो भार्या सहितवन
में दुषित भयो वाको संग अश्वरथ बांधव भ्राताको इनही र
ह्यो तुह्मारे संग भ्राता भार्या अश्वरथ हजारों मुनिहै तातें
सोच करिवेकों योग्य नहीं जब युधिष्ठिर बोले वा नलको चरि
त्र मोकों विस्तार करि कहो तब वृहदश्व मुनि बोले वह नल
राजा सकल गुण संपन्न रूपमें अश्विनी कुमार सम देवन
में इंद्र जैसे राजानमें वह भयो तेजकरि सूर्य समान ब्रह्मज्ञ

वेदवेत्तासूर अक्ष अभ्यासमैं रुचिवान अनेक अक्षोहिणी
पति सत्यवादी नारीनको मनोहर जितेंद्रिय प्रजा पालनमैं
मनु तुल्य ऐसो भयो तैसेही विदर्भदेसनमैं भीमराजा भयो
वाके संतानके वास्ते जत्न करत भयो कोई समैमे दमन नाम
ब्रह्मऋषी आये उनकी सेवा करि प्रसन्न करे तब मुनि एक
कन्या तीन पुत्र दिये. कन्याको नाम दमयंती पुत्रके नाम दम
१ दांत २ दमन ३ दमयंती रूप तेज गुण इन करिकै विष्यात
भई याकों सत दासी सत सषी सेवत भई इन सबनके मधि
इंद्राणी ज्यूं शोभित भई जाके रूप समान देव लोक नागलो
क जक्षलोक नरलोकमे दूसरी स्त्री पैदा नही नलहू रूप करि
काम तुल्य हो सो दमयंतीके गुण स्रुणिवामें आसक्त भयो
तैसेही दमयंतीहू वाके गुण स्रुणि आसक्त भई. नलकों का
मवेग बहुत भयो जब मनमें आनंद करिवेकों बागमें गयो उ
हां सरोवरमें स्रुवर्ण पक्ष हंस देषे तिनमे सों एककों पकड्यो.
वह बोल्यो मोकों मारे मति मैं तेरो कल्याण करोंगो. दमयंती
के पास तेरी ऐसी महिमा कहों जो तोसवाय औरकों वरेही
नहीं. जब नल वाकों छोडि दीयो तब जूथ सहित हंस जाय
कुंडनपुर दमयंतीके बागमें उतरे दमयंती उन हंसनकों अ-
द्भूत रूप देषि पकडिवेकों दौडी जब वे हंस विषरिगये. तव ए
क एक सषी एक एक हंसकों दौडी जा हंसको दमयंती दौडी
सो एकांतमें मनुष भाषासों बोल्यो हे दमयंती निषध देसनमें
नल नाम राजा रूपकरि अश्वनी कुमार तुल्य है. तूं वाकी भार्या
होइ तो तेरो जन्म रूप योवन स्रुफल होइ हम देव दानव
नाग मनुष्य सब देषे परंतु वाके रूप तुल्य और है नहीं तैसें
ही तुही नारिनमें उत्तम है. तासें उत्तमतें उत्तमको योगही
उत्तम है. ऐसें स्रुणि दमयंती हंसि करि हंस सों कह्यो
अंगीकार कर्यो पै नलहूकों तूं ऐसें कहि जब हंस अंगि

कार करि तैसैंही नलके पास आयकही. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्यानवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॥बृहदश्वोवाच॥ ॥

दमयंती हंस वचन स्रुणि नलकैसे मिलैया चिंताकरि क्रस होइ गई स्वास नाषतहै. ऊर्ध्व दृष्टिकरि देषत भई उनमत कैसी दसा भई काम करि पीडित होइ भक्ष भोज्यकी निद्रा करै नहीं दिनरात्र हाहाकारकरि रुदन करै ऐसी दशा देषि सषी राजासों कही जबराजा स्रुणि दमयंती पास आय देषी जोबनमें कामरोगहीहै. यह विचार चारों दिसानके राजानकों स्वयंबरके निमित्य बुलाये. तब दमयंतीकौ स्वयंबर स्रुणि सर्वही राजा अस्त्र सस्त्र वस्त्र भूषण धारि सेना सहित हर्षसों आये. जे राजा आये तिनकों भीमराजाही सनमान करिरापै. तासमैमें नारद पर्वत मुनींद्र लोक गये इंद्र सनमान कुसल प्रसन्न करि बोले आगे क्षत्री युद्धमें देह त्याग नकरि मेरे लोक आवते तिनकों सनमान करि मैं संपत्तिकों सफल मानतहौं सो अब कहा भयो. एकहू क्षत्री अतिथ आवै नहीं सो क्षत्री अथवा जुधही करै नहीं बीर नहीं याको कारण कहो तब नारद बोले विदर्भराज भीमकी पुत्री दमयंती सर्व गुण संपन्न है वामें सबनको मन अनुरुद्ध है तातें कोऊहू राजा युधकरै नहीं सो अब वाको स्वयंवर है तहां सबही जाइहै अरु हमहू उहांही जाइगे. ऐसे कहतही इंद्रके पास यम अग्नि वरुण आये सो नारद कौं वचन स्रुणि वेहू दमयंती की चाह करि स्वयंवरकों आवत भये. नलराजाहू योग्य सामग्री करि कुंदन पुरकों आवतहो ताकों लोकपाले देषि विमाननकों आकासमें रापि पृथ्वीमें आय नलसों बोलत भये. इं० हे नल तूं सत्यवादी है हम तेरे जाचकहैं सो हमारी मनसा पूर्ण करि जाचक नाम स्रुणतही नलहू रोमांचित होय कही.

तुम कौणहौ कहांजावतहौ इंद्र बोल्यो मै इंद्रहौं यह यमहे
यह अगनिहै यह वरुणहै. सोसबही दमयंतीकों हरिवेकी
कामना करि जातेहै. सो तुम हमारी वाके पास दूतता करो. न
ल बोल्यो मै जाकों वरवेकों जाऊं तासों दूतता कैसे करो. यह
तो माफ करो जब देवता बोले पहले अंगिकार कर अब नटे
है यामें तेरो धर्म जाइगो. तब नल बोल्यो राज कुमारीके पास
राज भवनमें मेरो प्रवेस कैसो होइगो इंद्रबोल्यो अदृस्यसि
ध्य तोकों देतहौं तासो राजभवनमें प्रवेस करो पीछे जहां द
मयंती होय तहां दूतता करो. ऐसे उनको वचन स्रुणि दूतता
अंगिकार करि कुंदनपुर गयो तहां रथ बाहर राषि अदृश्यहो
य नगरसो भादे षत दमयंतीको सषीनकी मंडलीमै प्रकासमा
न देषि वाको रूप देषतेही याकों कामोद्दीपन भयो ताहू धर्म
राषिवेकों कामके वेगकू दाबि दर्सन दियो जब याको रूप दे
षि सषी मंडली सहित दमयंती उठी. अरु आपसमें याकी
स्तुती करत भई ऐसो रूपकांति धीरज कहूं देष्यो नहीं ता
सों यह देवहै कि जक्षहै. किगंधर्वहै ऐसोविचार करतेही द
मयंती हासिकर बोली हे मनोहर दर्सनतेंही काम बंधावत ऐसे
तुम इहा कैसे आये. द्वारपालननें लषे नहीं अरु मेरे पिता
कौ भय मान्यो नही याको कारण कहा. जब नल बोल्यो हे
कल्याणी मोकों देवदूत नल जाणो. उनकी कृपातें राजभ-
वनमें आवत काहूने लष्यो नहीं. अरु इंद्र वरुण अग्नि
यम ये चारों देवतोकों वर्यो चाहेहै. सो एककू वरि अथवा
सबहीकों वरि ऐसे स्रुणि दमयंती बोली मैतों हंसनको
न स्रुणि यह देह तुम्हारे अर्पण करीहे सो तुम अंगीका
र नकरोगेतो विषकरि अथवा अग्निकरि फांसी करि
वा जलकरी देह त्याग करोंगी. तब नल बोल्यो लोकपाल-
मिलतें नरकी वांछा क्यों करेहे. जिनकी चरणरज तुल्य हूं

मैं नाहीं तासों उनमें द्रोहतें मृत्यु होइ तासों उनही कोंवरि. अरु मेरी उनसों रक्षाकरि जिनके द्रव्य वस्त्र भूषन विचित्र निर्मल माला जरा स्वेद रहित उनके संग दिव्य भोग भोगि जो सकल पृथ्वीकों दग्ध करै ऐसे अग्निकों कौएान वरै जाके जाके दंड भयतें सर्व जीव धर्ममें चलै ऐसे यमकों कौएा वरै जो सकल दैत्य दानवकों मर्दन करै वज्र जाके हस्तमें ऐसे इंद्रकों कौएान वरै जो सर्व रत्नाकरनकों पति ऐसे वरुणकोंकौएानवरै अरु इनसों द्रोह करि कौन वचै ऐसे नलके वचन स्रुणि दमयंती नेत्रनसों अंबपान करि बोली मैंतो सव देवनकों नमसकार करि तुमहीकों वरोंगी यह सत्यजाणो जब नल फेरि बोल्यो मैं देवतानसों दूतता अंगिकारकरि तोकों कैसेवरों यामें धर्मजाय. तब ऐसे स्रुणि दमयंती बोली मे एक उपाय विचास्योहै. जामें तुह्मारो दोसनही. उन लोक पालन सहित तुम स्वयंवरमें आवो तहांमें उनकों वरोंगी. ऐसे स्रुणि लोकपालनके पास जाय सब व्रत्तांत कह्यो. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारत सारचंद्रिकायांवन पर्वणि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥ ताउपरांत राजा भीम स्रुभ मुहूर्तमें सव राजनकों बुलाये सो रंग भूमिमें सबही राजा मंचन पैं वैठे तहां लोक पालन सहित नलहू एक मंचनपैं वैठे जबलोक पालन विचारी जो नलके भ्रमसौ दमयंती हमें माला पहरावै तासों नलको सरूप वेहू धारत भये. तब भीम राजाके ध्यान करिवेसों सरस्वती वहां आय सातों द्वीपनके राजानकों वंस कहत भई सो स्रुणि दमयंती सवहीकों प्रणाम करि जहां नलहो तहां आई. तहां सरस्वती एकेककों वर्नन ऐसो कस्यो जो पांचो हीकों वर्नन होत गयो. जब दमयंती संदेह करि मनमें विचारत भई जो देवनके

चिन्ह इहनके मुषसों नरनतें भिन्न सुणेहेसो एकहू दीसै नही तातें यह विचारि देवतानके सरण आय उनकी विनती करत भई. मै हंसन के वचन सुणि करि जाको पति निश्चै कस्यो है यह सत्य हे. तो हे देवताहो मोकों वहही वतावोजो मै नल सेवनको दृढव्रत धास्यो है तोतुमहू निजरूप धारो जासोंमें पुण्यश्लोक राजाकूं जाणों. ऐसें दमयंतीके दीन वचन सुणि लोकपाल निज रूप धारत भये. जब दमयंतीउ नके अंगनमें पसीनान देष्यो नेत्रनमें पलक नदेषे. पुष्पमा लानकों मलिन नदेषी वस्त्रनमें रज नदेषी. चरणनको प्रथवी कों परस करत नदेषे. सरीरकी छाया नदेषी इन चिन्हिनतें विपरीत चिन्ह नलमें देषि वरमाला पहराई. सो देषि औा र राजाननें तो हाहाकार शब्द कस्यो अरु देव ऋषिनमें साधु साधु कह्यो जब नलहू दमयंतीसों बोल्यो तैने लोक- पालनके समीप मोकों वस्यो तासों मैंहू जीउगो. तब तांईते रो वसवर्तीही रहूंगो. तापीछे दोउनही लोकपालनके स्तुति करी सोसुणि प्रसन्न होइ. लोकपालहू आठवर दिये. य ग्यमैंतो तोकों प्रत्यक्ष दरसण अरु मेरे लोकमें अषंडगति ये दोइ वरतो इंद्र दिये. अरु अगनी कही जहां तेरी वांछा होइ तहांही प्रघट होहु अरु तूंहू मेरे लोककों आवे ऐसें दोयवर दिये. अरुतेरे सपरसतें अन्न मधुर होइ. धर्ममें ने ष्ठा होइ. ये दोयवर यम दिये. वरुणकही मरुदेसहींमें जोतूं चाहे तो जलको समुद्र होइ और तेरी पुष्पमाला सुगंधस हित सदा प्रफुल्लित रहे. ऐसें दोयवर वरुणने दिये. ऐसेंच्या रौं आठवरदेय अपने स्थानगये. तापीछे भीमराजाहू र राजानकों सीषदे विधिवत नलको विवाह कस्यो जबे न लहू आपकी इच्छा माफिक उहां रह तापीछू अपने नगरकों आयो दमयंतीके संग नलहू ऐसें विहार कस्यो. जैसें निज

लोकमैं इंद्र इंद्राणी विहार कस्यौ धर्म करि प्रजा पालन क
स्यौ अश्वमेधादिक यग्य करि ऐसै अनेक विहारनकों कर
त राज्य भोग भोगत भये. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारत
सारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्यानचतुर्थोऽध्यायः ॥
॥४॥ ॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥
राजा नल दमयंतीके व्याह भये पीछे लोकपाल आपके लोक
नकों चले जात मारगमैं द्वापार सहित कलिजुगको देख्यो तब
इंद्र बोल्यो हे कलिजुग, तुं द्वापार सहित कहां जायहै. जब क
लियुग कही भीमराजाकें स्वयंवर है सो उहां जाय दमयंती
कों वरौंगो. मेरो मन वामें वसैहै. तब इंद्र हंसिकरि बोले वह
स्वयंवर तो होइ गयो हमारे देषत नलकों दमयंती वस्यो. ऐसैं
स्रुणि कलि क्रोध करि बोल्यो देवनकों तजि नर नलकों वस्यो
तातें वाकों दंड देवो जोग्य है ऐसे कलिको वचन स्रुणि देव बो
ले हमारी आग्यासों नलको दमयंती वस्योहै सर्वगुण संयु
क्त ऐसे नलसों कोण प्रसन्न नहोइ. जो सकल धर्म जाणे.
सर्व व्रतनकों करता च्यारूं वेद इतिहास सहित पढे जाकेय
ग्यनसों देवता नित्य तृप्त रहै अहिंसा निरत सत्यवादी द्र
ढव्रत सत्य धृतिदान तप सौच दम सम इतने गुन जामें नि
त्य वसै जो नल कों जो आपदे सो आत्माको आपदे. जो मारे
सो आत्माकों मारे ऐसे नलसों जो द्रोह करे सो नर्कनमें डू
वे ऐसे कहिके देवता आपके लोककों गये. जब कलि द्वापा
रसों बोल्यो कोपकों दावि नसकौंहों तो नलमें वसि राजसों
सो भ्रष्ट करिवाकों दमयंतीसों वियोग करौंगो तूं हूं पासान
में प्रवेस करि सहाइताकरि. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभार
तसारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने पंचमोऽध्यायः ॥
॥५॥ ॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥
ऐसैं संकेत करि कलियुग द्वापार सहित राजा नलके नगर

मे आये. जब वाकों रहिवेकों कहूं स्थान मिल्यो नही तबवा
के बागमैं एक बहेडेके वृक्षमें वास कर्यो तहां रहते वारहे
वरस अवकास आयो. नल राजा लघु संका करि पांव धो-
ये विना संध्योपासन करतहो. जब वाही समैं कलियुग वा-
मैं प्रवेस कर्यो वामे दृढ निवास करिवाके भ्राता पुष्कर सों
जाय कही तूं अक्ष द्यूत करि नलकों जीति निषिध देसनकों
राज्य करिमैं तेरी सहाय करौंगो. ऐसे कलियुगके वचन सु
णि पुष्कर नलपास आयो ताके साथ कलिजुगहू बैलकोरूप
धरि आयो तहां पुष्कर नलसों बोल्यो योबैल है सो येक येक
बैलकी बाजीलगाय चौपडि षेलै जब नलहू वाके कहेसों दम
यंतीके देषतही द्यूतक्रीडा करत भयो तब कलियुगके प्रवेस
होवेसों नल बाजी हारिवे लग्यो सो. स्वर्ण हाथी. घोडा रथ
आदि जो बाजी लगी सो सबही हारत भयो तहां कलि-
को आवेस द्यूतकों मदताकरि जाकों मंत्री हूकी सामर्थम
नै करिवेकी नही भई जबसब पुरवासी मंत्रीन सहित रा
जाकोंमनैं करिवेकों आये तब वारहस्नेहसूत दमयंतीसों
निवेदन कर्यो यह पुरवासी जन द्वारपर ठाढे सो राजासों
निवेदन करौ ऐसे सुणि दमयंती जाय राजासों कही पुरवा
सीजन द्वारपें आयेहै सोवे कहे सो सुणिये. ऐसे दमयंती
वारंवार कही पै राजा कछू सुणी नहीं तब पुरवासी बोले
यह आपमें नहीहै तासों भ्रष्ट होइगो ऐसे कहि सब
प आप आपके स्थानगये. अरु नलके पुष्करके - स.
बहुतमास तांई द्यूत भयो तामें नल हार्यो तब दमयंतीन
लकों सर्व सुहीन जाणि ब्रहस्तेना नाम धायकों बुलाय बो
ली हे ब्रहस्तेने मंत्रीनकों राजाको नामलेके बुलाय सो मं
त्रीनकों बुलाये जब मंत्रीन जाणी हमारो धन्य भाग्यहै
सो राजा बुलाये ऐसे विचार करि आये. तब दमयंती

कही हे मंत्रीहो तुम महाराजकों समजावो जब मंत्री बोले हमारे वसकी बात नहीं ऐसे कहि गये दमयंती फेरि धाइ सोकही वार्ष्णेय सारथीकों बुलावो तब बुलायेसों वहआयो तासो दमयंती बोली हे वार्ष्णेय महा राजकी तो सों सदा प्रीतहै. पै अब इनकी दुर्बुद्धि भई है सो तुम साहायता करो ज्योंज्यों हारेहे त्योंत्यों प्रेम बधेहै काहूको कह्यो मानै नहीं तासों मैं कही जैसे करि नलके प्यारे घोडा है तिनकों रथमें जोड़ इंद्रसेन पुत्र अरु इंद्रसेना कन्या इन दो उनकों चढाइ विदर्भ देसनमें जाइ भीमराजा पास पहुंचावो जबसारथी दमयंतीको वचन स्रुणि मंत्रीनसों मसलत करि वैसैही करत भयो. भीम राजाको पुत्र कन्या रथघोडा निवेदन करि सीष मांगि अयोध्यामे आय ऋतुपर्णराजाके सारथी हो रहत भयो. ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां वन पर्वणि नलोपाख्यान षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

॥ ॥ बृहदश्वउवाच ॥ ॥ वार्ष्णेय गये पीछे नल राजाको राज्य धन हाथी घोडा सर्वस्व जीति पुष्कर कही अब तुह्मारे औरतो कछूहै नही तासो एकबाजी दमयंतीकी फेर षेलो. ऐसे वचन स्रुणि नलहू महासोच मै मग्न भयो ह्रदय विदीर्ण सो भयो कछू बोल्यो नहीं पुष्करकों सर्वस्वको स्वामी देषि उदास होइ भूषण वस्त्र छोडि एक वस्त्रहीसों पुरके बाहर निकस्यो ऐसे स्वामीकों देषि दमयंतीहू एक वस्त्रापीछूसों निकसी जब नल दमयंती सहित नगरके बाहर बागमें तीन दिन रहे तब पुष्कर नगरमें यह दुहाई फेरी जो कोई नलको सत्कार करैगो सो राजासों मृत्यु दंड पावैगो. ऐसै पुष्कर वचन स्रुणि नल राजा सत्कार योग्य हो तोभी काहूनै सत्कार कियो नहीं. तब बागमैं नलराजा तीन रात्र जल पान नही कियो. तासों क्षुधा

तुर होइ फलचूएतैं ही गवन कियो वाके पीछे दमयंती हू चली ऐसे बहुत दिनकों भूषो नल एक दिन स्वर्णपंषके पक्षी देषे तब विचार कियो इनको मांसतो षांहिगे. अरु पंषनसों धन होइगो. यह जाणि उनकों वस्त्रसों ढांकि दिये. जब वे पक्षी वस्त्रले आकासकूं गये. तब नलकों दिगंबर भूमिमें अधो मुषदेषि वे पक्षी बोले. हे दुर्बुद्धि हम पासे हैंतेरे वस्त्र देषि दुषी होइ वस्त्र लेवेकों आये है. ऐसे सुणि उनकों पासे जाणि आपकों नग्नदेषि नल दमयंतीसों बोल्यो हे सुंदरी जिनके कोपसूं मैं राज भ्रष्ट भयो प्रजा सत्कार कर्योनही आहार मिले नहीं क्षुधातुर हों सोवे पासा पक्षी होइ. मेरो एक वस्त्र है सोहू हरे है यह तेरे स्वामीकी दसा है सो देषि अरु यह मार्ग दक्षिण दिसाको है यह उज्जीनको है यह रिछवंत पर्वतको है यह. समुद्र गामिनी पयोष्णी नदीको है यह रिषिनके आश्रम बहुत फल मूल युक्त यह मार्ग विदर्भ देसको है. यहमार्ग अजोध्याकों है. ऐसे नल कहिदुष्षकरि व्याकुल भयो जब स्वामीके दुष्षतें दुषित होई दमयंती बोली मेरो हृदय कांपै है. राज्य, द्रव्य, वस्त्र हीन, क्षुधातुर, ऐसे स्वामीकों निर्जन वनमें तजि कहां जाऊं मैहू क्षुधा तृषा पीडित होइ तुम्हारी सेवा करोंगी. सर्व दुष्षनकी- औषधि भार्यासम और है नहीं ऐसें सुणि नल बोले. हे सुंदरी दुखित नरके दुष्ष दूरि करिवेकों भार्या समान और मित्र नहीं. यहतें सत्यही कह्यो मैहू तोकों नहीं छोड्यो चाहत हों शरीरकों त्याग करों परंतु तुमारो त्याग करों नहीं तातै तुम संदेह क्यों करोहो दमयंती बोली हे महाराज तुम छोड्यो नहीं चाहोतो विदर्भ देसको मार्ग क्यों बतावोहो मैं हूं यह जानतहूं जो तुम मोकों छोडोगे नहीं परंतु [illegible] र कहा नकरै वेर वेर विदर्भ देसको मार्ग बतावत हो ता

संदेह आवतहै. जो तुह्मारो यहही मनोरथ होय यह माता पिता पासजाय तो आपहू चलौ तौ मैंहूं चलौं उहां विदर्भराज आपकौ सत्कार करैगो तातैं वाके सत्कार करि आपुन सुषसौं वसैंगे. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारवंटीकायांवनपर्वणिनलोपाख्यान सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

॥ ॥ नलोउवाच ॥ ॥ जैसै राज्य तेरे पिताकौ तैसै मेरोऊहै परंतु आपत्ति सहित उहां नहीं जाऊं जहां समृद्धि सहित जाय हर्ष वधावो तहां आपत्ति सहित जाय सोक कैसे वधावो. ऐसै कहि दमयंतीकौं और अनेक वातनकरि समाधान कर्यो. तापीछे दोउ एक वस्त्र होताहीसौं अंगनकौं ढांकि क्षुधातुर होइ इतउत विचरत एक सून्य सभाकौं देषत भये. वा सभामैं दमयंती सहीत नलजमीमैं वेठ्यो तापीछे एक वस्त्र हो वाहीकौं ओढि दोउ धरतीमैं सोइगये. दमयंतीतो निद्रावसि होइ सोई अरु नलकौं व्याकुलता करि निद्रा आई नहीं. जबराजा नलराज्यभ्रंस, मित्र वियोग, वनवास इनकौं विचारत चिंताकरत भयो अब कहा किये मेरो भलो होइ सो कछु भी करत्तव्य दीसै नहीं तातैं कहतो मेरो मरणतैं कल्याण होइ अथवा दमयंतीके त्याग करि कल्याण होइ यह प्रेमकरि जबलौं संगरहैगी तबलौं दुष्षही पावैगी. मोविना मातापिता पास जाय तो कदाचित सुषहू पावै. यह पतिव्रता तेजकरि युक्त है तासौं मार्गमैं याकौं कोऊ कछु कहिहू सकैगो नहीं ऐसै कलिजुगने याकि मति फेरी तातैं दमयंतीकौं त्यागवो निहचै कियो. तब आपतो वस्त्रहीन हो अरु वाके एक वस्त्र तामैंसौं आधो लेवेकौं काटिवेकौ विचार कियो. सोकैसै वस्त्र काटौं यहतो जागै नहीं अरु वस्त्र कटि जाय. ऐसै विचारि सभामैं इतउत विचरत एक खड्ग

कौं देष्यौं वा खड्ग करि अधोवस्त्र काटि स्वासनाषिसूती
ही दमयंतीकौं छोडि भज्यो जब आगेजाय दमयंती याद
आई तब फेरि उलटो आय दमयंतीकौं देषि रुदन करत
भयौ जो मेरी प्यारीकौं सूर्य पवनहू पहले देषि नहीं सोस
भाके मध्य अनाथलौं धरतीमैं सोवतहै. एकवस्त्र सोहू
कट्यौ वोढे सूतीहै सो जागैगी जबतो यह दशा देषि उनम
त्त कैसी तरै याकी होइगी. यह पतिव्रता मो विना सर्पव्या
घ्रन साहित ऐसे घोर वनमें कैसे विचरैगी. हे प्यारी धर्मतै
तेरी रक्षा करैही है. अब आदित्य बारह १२ वस्क अष्ट ८
रुद्र ग्यारह ११ अश्विनी कुमार २ गुण चास मरुत ये तेरी
रक्षा करौ. ऐसे कहि कलिजुगनें हरिहै मति जाकी सो नल
फेरि उहांतें चल्यौ ऐसे वेर वेर आवे है जायहै. सो कलि
जुगतो मतिकौं फेरिले जातहै. अरु दमयंतीकौं प्रेम षै
चिल्यावतहै तातै राजाको चित्तही दोला समान होइ फू
लतहै परंतु बलवान कलिकौ षेच्यौ नल सून्य वनमें सूती
हुई भार्याकौ तजि दुखित होइ करुणा करत जात भयौ.
॥　　॥ इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि
नलोपाख्याने अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥　　॥
॥　　॥ बृहदश्व उवाच ॥　　॥ नल गये पीछे दम
यंतीकौ षेद मिट्यौ जब जागी निर्जन वनमें भरतारकौं न
देष्यौ जब हा महाराज तुम कहां गये. ऐसे पुकार रुदनक
रत भई फिरि हा महाराज, हाराज, हास्वामी हानाथ
तुम मोकौं वनमें इकेली छांडि कहांगये. मै इकेली निर्जन
वनमै डरौंहौं तुम सत्यवादी धर्मात्मा होइ मोकौं इकली वनमें
कैसे छांडिगये. तुमारी तजी हुई मै मुहूर्त मात्र हू जीवत हौं
सो अकालमैं मनुष्यनकी मृत्यु नही यह　　. तातें
अब हांस्य पुरो भयो. सोहे. स्वामी मै दुर्ष

ओट छोडि दरसणद्यो मै मेरे आत्माको सोच नहीं करतहौं परंतु तुम इकले कैसे रहोगे यह सोचत हौं. भूषेप्यासे वृक्षनके नीचे मोविना कैसे रहोगे यह सोचत हौ. ऐसे सोचकरि दुष्षके भारसौं वारंवार गिरेहै उठै है स्वास भरेहै निचेष्टित होईहै रुदन करत बोली जाके पापतें महाराज नल दुष्य पावै है तापापीकों हमारे दुष्य सोभी अधिक दुष्य हो. ऐसे विलाप करती दमयंती भरतारकों हेरत भई. तहां वनमें भ्रमतीकों महा अजगर ग्रसत भयो. अजगरकी गिली दमयंती नलको स्मरण करती विलाप करत भई. हे महाराज तुमसे नाथ पाय अनाथलौं अजगर के मुषमें गिरिहो सो मेरोतो सोचनहीं पैं मोविना दुष्यमें तुह्मारी सेवाकोन करेगो ऐसे विलाप स्रुणि एक सिकारी वनमें फिरेहो तानै अजगरको सस्त्रसौं मुषचीर दमयंतीको निकासी स्नान कराय भोजन दे याको वृत्तांत पूंछ्यो याने सब वृत्तांत कह्योसो स्रुणि रुप देषि कामातुर हुवो. तब दमयंती बोली मै मनतें नलकों ताजि अन्यको चिंतवन नहीं करौं यह सत्य होयतो व्याधि मरो ऐसे कहतही वोहि व्याधि मर्यो. ॥

॥ इतिश्रीभाषाभारत सारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने नवमो ऽध्यायः ॥ समाप्तम् ॥ ९ ॥ ॥

॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥ ऐसे सिकारिकों मारि दमयंती महावनमें गई तहांनाना प्रकारके वनचर भयंकरजीव जंतु वृक्ष तिनकों देषत दारुण वनमें विचरत भर्तारकों चिंतवन करत शिलापर बैठी विलाप करत भई हे निसधदेसनके राजा मोकों यावनमें छोडि तुम कहां जावोगे. अश्वमेधादिक यग्यनमें मोकों साथ राषि अब यावनमें मो विना कैसे जावोगे. अंग सहित वेदनकों पढिवोतो एक तरफ अरु सत्य एक तरफ सो तुम मोको कही मै तेरो त्याग नकरौं.

सो अबत्याग करि कौन गतिकौं जावोगे. ऐसै कहत प्रलाप
उनमादके वस होइ लता वृक्षनसौं पूंछत फिरत है. जोकहू
महाराज नलकौं तुम देषे होइतो मोकौं बतावो. या प्रकार
तीन दिनलौं भ्रमत भ्रमत चतुर्थ दिवस मुनिनके आश्रम
मै गई. उहां मुनिनके दरसण करे सो कितनेक उपवास करे
है कितनेक पवनासन करै है कितनेक पुष्प पत्रासन करैहै
कितेक मासोपवास करैहै. कोई पंचाग्नि तपैहै. कोई जल
वास करै है ऐसै अनेक तपस्वीन करि युक्त आश्रम देषि-
दमयंती बहोत प्रसन्न भई. तहां जाय उनकों प्रणाम करि
जब मुनिहू आशीर्वाद दे करि पूंछत भये. हे सुंदरी तूं कोण
है कहां ते आई. यावनमें सीत उष्ण पवन वर्षा कैसे सहैं-
गी. तूं यावनकी देवताहै अथवा देवांगनाहै. के पर्वत देवता
है यों पूंछे. तब दमयंती बोली जो तुम कही सो तो मैं नहीं मा
नुषीहौं विदर्भ देसनको राजा भीमसेन मेरो पिताहै निषध
देसनको राजा नल सर्वगुण संयुक्त मेरो पति है वाकों कोई
दुष्टननें कपटके पासान करि जीति सर्वस्व हर्‍यो. जब मैं
वा महाराज सहित वनमै आईही सो कोई दैव संजोग क
रि मेरो उनसों वियोग भयो. तातें उनकों हेरत हेरत इहां
आईहूं सो तुमनें वाकों देष्यौ होइतो बतावो. अरजो वह
नमिल्यौ तो मैंहूं देहत्याग कर या दुष्षतें छूटौंगी. ऐसे या
याको वचन सुणि करुणा सहित मुनिबोले. हम हमारे
तपोबल करिजाणतहे. तूं वासौं मिलैगी. सर्वराज्य भोगन
करि संयुक्त सिंघासन परि बैठे वाकों देषैगी. ऐसे कहि
आश्रम सहित तपस्वी अंतर ध्यान भये. तब दमयंती हू-
विचारकरत भई यहमै प्रतक्ष देष्यौ अथवा स्वप्न है. ऐ-
सै विचार करि विलाप करत नदी पर्वतमैं हेरतहेरत एक
बडो साथ देष्यौ हाथी घोडा रथन करि सहितसो नदीकौं

उतरै हो तामैंयहहु मिलकरि जलमें प्रवेस करत भई. जब याकों साथके मनुष्यननें देषी उन्मत्तकैसो रूप आधेवस्त्र कों लपेटै मलिन होय रही रजकरि केसहू मलिन होरहे ऐसीकों देषि कितेक भयभीत होइ भगे कितेक चिंताकरत भये. कितेक हसत भये. कितेक पुकारत भये. कितेक दयाकरत भये कितेक पूछत भये. हे कल्याणी तूं कौणहै. कौणकीहै कौणकोहेरैहै देवांगनाहै के वनदेवताहै केपर्वत देवताहै जासों हम सब तेरे सरणहों ऐसी कृपा करि तातें यह साथ कुशल क्षेमसों पार उतरे जब दमयंती बोली मे विदर्भ राजकी पुत्रीहों नलकी भार्याहूं सो वाकूं हेरतहूं तुम कहूं देष्यो होइतो बतावो तब रूचि नामा साथकोसिरदार बोल्यो मैंयावनमे हाथी चिता व्याघ्र रीछ मृगतो अनेकदेषे मानुष मात्र देष्यो नहीं एक तूंही मानुष देषी है नलकों देष्यो नही. सो अबयह महाघोर वनहै तामें माणि भद्र नामा यक्ष हमसों प्रषण होइ ऐसी कृपाकरि जब फेरी दमयंती बोली. यह साथ कहा जायगो. तब साथको नायक बोल्यो चेति राज सुबाहु कीनगरिकों जाइगो. ॥

॥ इतिश्री भाषा भारत सारचंद्रिकायां वन पर्वणि नलोपाख्याने दशमोऽध्यायः ॥ समाप्तः ॥ ११ ॥ ॥

॥ ॥ वृहदश्व उवाच ॥ ॥ दमयंती वासाथके नायककों वचन सुणि साथके संग आपहू चलत भई. ऐसे चलतें कितनेक दिनपीछें घोर वनमें एक तलाव कमलन करि सहित देष्यो उहां साथके नायककी आग्यातें पश्चिमतीर सबही साथ मुकाम करत भयो. तहां परिश्रम करि सबही सोइगये. जबअर्धरातके समै हाथीनकों समूह आयो सोवा सरोवरके मार्गमें साथ सोवैहै अरु वेहाथी सरोवर कों जात हैं ताकरि उनकों षूंदत.

भये. तबवे हाथीनके भयके मारे पुकारत पर्वतपैं वृक्षनः
मैं जात भये. कोई कहै मेरोरथ टूट्यो कोउकहै धनुषगयो
या प्रकार भयभीत होई हाहाकार करत भये. तब दमयं
ती जागी यहहाको. लाहल देषि भयभीत होइ भगी. सोको
ई ऊचे स्थान पैंसों रचना देषत भई. सो केतेक तो मरिगये
अरु केतेक वचे सो सामिल होइ बोले यह कोण पापकों
फल आयो माणिभद्र गणको पूजन कस्यो अथवा यक्षरा
ज कुबेर अथवा गणपतिकों पूजे नहीं अथवा विपरीत
सकुननकों फल भयो अथवा ग्रहही विपरीत भयो औ
र कितनेक दुषी बोले वहनारी. जो साथ आई ही तानें य-
ह कस्यो तातें वह राक्षसी कैसी पीसाची कैजक्षणी हीजातें
अब वाकों देषे तो त्रण काष्ट पाषाण करि मारे. के रजमें
पूरिदे यासाथकी मारण वाली है . ऐसे उनकी बातें सुणि
दमयंती भाजत भई. सो शून्य वनमें जाय विलाप करत
भई देषो मेरे ऊपर कोण विधाताको कोपहै जो सुषको -
तो लेसहू मिले नहीहे. दुष्यनकी परंपराही आवत है.
भर्त्ताकों राज्य भ्रंस स्वजनतें पराजय पति पुत्र कन्यातें
वियोग अनाथता वनवास सोवनहू जनरहित तातें ऐसों
याजन्ममें के पूर्वजन्ममें कोण पाप कस्योहै. जो साथ
मिल्यो सोहू हाथीनके समूह करि मस्यो सो देवकृत्य वि
ना मनुष्यनकों सुष दुष होनहीं में स्वयंवरमें इंद्रादिक
लोक पालनको अनादर कियो ताहीको फल आयो है.
कहा ऐसें विलाप करत साथमेंते वचे ब्राह्मण तिनके सं
ग होइ चलत चलत कितनेक दिनमें चेदि राज सुबाहु
के नगरकों पहुची सो संध्यासमें प्रवेस कियो तहां याकों
आधेवस्त्रसों लिपटी महा रूपवान देषि लक्ष्मीही
जाणि पुरवासी संगचले जब उन पुरवासीनके समूह

वीचि आवत अटाये बैठी राजमाता याकों देषत भई.ज
ब धाइसो आग्या करी याकों भीतरील्यावो. तब धाइ आइ
भीतरि लेगई जब राजमाता यासों पूछ्यो तूं दुषीहू दिव्य
रूपकों धारेहै. वस्त्र आभूषण विनाहू तेरी अद्भुत सोभाहै
सहाय विनाहै तोहूं निर्भयहै तातें तूं कौणकी है कौणहै
सोकहो. ऐसें सुणि दमयंती बोली मैं मानुषीहों कंद मूल
फल आहार करोंहों जहां सांझ होइ. तहां वास करोंहों मे-
रो भर्त्ता असंख्य गुणवानहै. ताकी साथ छायाज्यूं रहोहों.
सो देव वसतें द्यूतमें सर्वस्व हारि वनमें गयो वाके समा
धानकूं मैंहूं वन मैं गई वहां पंछी वाकों एक वस्त्र हो सोहूं
लेगयो जबमैं वाकों दुष देषि रात्रिमें सोईनहीं ऐसें रहतें
कोई समैमें सोइगई तबवे मेरो आधो वस्त्र काटिले गये.
सो मैं उनकों हेरत हेरत इहां आइ वाके वियोगतें मैं दुखी
हों यों कहतही याके नेत्रनमें अश्रु आये. सो देषि राजमाता
याकों दुषी देषी समाधान करतबोली हे कल्याणी अबतूं सु
ष पूर्वक इहांही रहु तेरो दुष दूरि होइगो. अरु मेरे चाकरहै
सोतेरे भर्त्ताकोंहू हेरैगे. अथवा वहही फिरत फिरत इहांआ
य जायगो ऐसें सुणि दमयंती बोली इहांमैं करार करि वसोंगी.
जूठण पाउंगी नहीं पांव दावोंगी नहीं और पुरससों बोलों
गी नहीं कदाचित्त कोई जोरकरे तो वाकों प्राणांतक दंड द्योंगी
भरतारके तलास निमित्त ब्राह्मणनकों देषोंगी. ऐसें करे
तैमें वसोंगी. जब राजमाता बोली जैसेंतें कह्यो तैसेंही क
रैंगी. तूं धन्यहै ऐसें यासों कहि सुदानंदा नाम आपकीपु
त्रीही तासों बोली हे पुत्री यह देवरूपणी सैरंध्री है तेरीअ
वस्था समानहै तातें तूं यातें तेरी सषी करि संगराषि तबसु
नंदा वाकों संगले आपके महलमैं आय वाकों स्नान करा-
य वस्त्र भूषण पहराय पास राषत भई. दमयंतीहूं सुष-

सौं उहां वास करत भई. ॥　　॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने एकादसोऽध्यायः ॥११॥

॥　　॥ ब्रहदश्वउवाच ॥　　॥ नलराजहूं दमयंतीकौं छोडिवनमै फिरते एक ठौर दावानल वनकौं भस्म करत देष्यौ वा अग्निके मध्य कोईको वारंवार यह शब्द सुन्यौ सोहे नल राजा इहां आव डरोमति ऐसे वासौं कही तबनल अग्निमें प्रवेस करत भयो उहां कुंडलाकार सूतो नागराजकौं देष्यौ वहनाग हाथजोडि नलसौं बोल्यो हे राजा मोकौं कर्कोटक नागजाणि मै नारद मुनिकौं अपराध कस्यौहो सोउन श्रापदीयो. जोतू स्थावर होइ रहो जब नल राजा तोकौं और ठौर लेजाइगो तब श्रापसौं मुक्त होइगो. तातें एक पैंड हूं चलि सकौं नहींहूं सोतुममेरी रक्षाकरो. मैंहूं तेरो कल्याणकारीमित्र. होउगो मोसमान और हरेक सर्पकौं मति जाणै मैंहूं अब लघु होई जाउंगो. सोतूं मोकौं लकै अग्नि रहित ठौरमें चलि ऐसे कहि वह नागेंद्र अंगुष्ठ प्रमाण भयो जब नलराजा वाकौं उठाय अग्नि रहित देसमे जाय धरिवे लग्यो तब वह बोल्यो हेराजा अबतू तेरे पैंड गणित गणित चलिमै तेरो कल्याण करौंगो. जब पैंड गणित चले ते नलकौं दसवै पैंडिपैं डस्यो. सोडसत ही राजा को रूप होसो विरूप होइ गयो तब राजा आपकौं विरूप देषि नागकौं निजरूप धारी देषि उदास भयो जब नागसमाधान करतही बोल्यो मै तोकौ जगत नजाणै यावासतें विरूप कस्यौ अरुजोमै तोकौ राज्य भ्रष्ट करि तेरे सरीरमै वसै है सो मेरी विषज्वाला करि जलतही रहोगो जब तोकौं छोडोगो तब सुष पावैगो. यह डस्यौहै वाकौ दंड देकै तेरी रक्षा करी है मेरी विषज्वालाहू तोकौ पीडा करैगी नहीं अब मेरे अनुग्रहते तोकौं चक्षुसुवादंष्ट्रीवा ब्रह्म ऋषी

इनतें भयन होइगो. संग्राममें जयपावैगो अब तुम बाहुक नामां सूतह्रो ऐसें कहत रितुपर्ण नामा राजा पास अजोध्यामें जावो. वह तोसों अश्वविद्यालेकें अक्षविद्या देकें तेरो मित्र होइगो. जबतूं अक्षविद्या जाणेगो तबही तेरो कल्याण होइगो. इस्त्री पुत्र कन्या राज्य इनकों प्राप्त होइगो. सो जबतूं निजरूप चाहै तब मेरो स्मरण करि यह वस्त्र देतहों ताकों वोढेगो जबही निजरूप पावैगो. ऐसेकहि दिव्य दोइ वस्त्र नल राजाकों देकैनागराज अंतर ध्यान भयो.

॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायांवन पर्वणि नलो पाख्याने द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ ॥ बृहदश्वउवाच ॥ ॥

नागराजकों अंतरध्यान भये पीछे नलराजा दसवे दिन ऋतुपर्ण राजाकी नगरीमें प्रवेस कियो वहां जाय राजासों मिलिकें बोल्यो. हे राजन् मैं बाहुक नामा सूतहों सो अश्वनके चलावेमें मेरी समानऔर पृथ्वीमें है नहीं नीतशास्त्रनके कठिन रहस्यनकोंमें जाणोंहों और कोऊन जाणे ऐसो अन्न संस्कारहूं जाणोहों. जितने संसारमें सिल्प है सोहूं जाणोंहों औरजो कार्ज काहूसों न होइ सोहूं करोंगों. तातेंआप मेरो भरण पोषण करो. जब ऋतुपर्ण बोले हे बाहुक तूं इहां वसि तेरो कल्याण होइगो. जो तूं मेरै सर्वकार्ज करेंगो तो मोकों अश्व शीघ्र चलिवेमें बहुत रुचिहै तातेतूं ऐसोकाम करि जोमेरे घोडा शीघ्र चलै तोकों सब अश्वनकों मालिक कियो औरसो महोरको तेरो रोजीनाहैसो याहूतें कछुक शिवाय द्योंगो. और वार्ष्णेय वाजीवन ये दोउ तेरे आगे काम करिवेकों रहैगे. इनसहित हे बाहुक सुख पूर्वक वसो. ऐसें ऋतुपर्ण राजाकी आग्यातें बाहुक नाम धारि वार्ष्णेयजीवन सहित नलराजा वसत भयो. वहांराजा वारंवार दमयंती-

कौ स्मरण करत संध्यासमें नित्य होय यह श्लोक कहत भयो. ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ क्व नु सा क्षुत्पिपासार्ता श्रांता सेते तपस्विनी ॥ स्मरंती तस्य मंदस्य कं वा साद्य पति ष्ठति ॥ १ ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ यह भूषप्यास करि दुषित श्रमित होय वा मंदकों स्मरत कहां वसत है कौणकी से वा करत है ऐसे कहत बाहुक तूं कौण नारीकों सोचत है अरु वह नारी कौणकी भार्या है जब नल राजा बोल्यो को ई एक मंद भागीकी नारी बहुत प्यारी भई है. अरु वहहू वा कौं प्यारो भयो. सो कोऊ देववस करि उनके वियोग भयो. तातें वाके वियोगसों दुषित होइ रात्रिमें वाको स्मरण कर त एक श्लोक गावे है. वह नारी वाके संग निर्जन वनमें आ ई ताकों वा मंद भागीनें छोडी सो वाको जीवन कठिन है. एकतो अबला दूसरें मार्ग जाणे नहीं भूषप्यास करि पी डित सो महा दारुण निर्जन वनमें छोडी ऐसे नल राजा द मयंतीकों स्मरत ऋतुपर्ण राजाकी नगरीमें अग्यातवा स करत भयो. ॥ ॥ इति श्री भाषा भारतसार चंद्रि कायां वन पर्वणि नलोपाख्याने त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥ ॥ बृहदश्व उवाच ॥ ॥ नलराजा राज्य हारि दमयंती सहित वनमें गयो यह स्रुणि भीम राजा उन के हेरिवेकों ब्राह्मणनकों बुलाय यही कही तुम नल दम- यंतीकों हेरो जो कोई नल दमयंती दोऊ में सों एकहूकों हेरि ल्यावेगो. ताकों भूषण वस्त्र गांव द्योंगो. हजार नगहू द्योंगो. अरु जो उनकों कही निहचै हूं करि आवे गो ता कौं हूं सैकडो नग द्योंगो. ऐसे कही. ब्राह्मणनकों षरची दे- चारों दिसानकों विदा किये. तिनमेंसों देवनामा ब्राह्मण चेदराजाके पुरकों गयो वहां पुन्याह वाचन समें स्रुबाहु राजा याहूकों बुलायो सो अंतह पुरमें जाय उहां दमयं-

तीकौं देषी जब अनेक चिन्हन करि वाकौं पहचानी सुनंदा पास बैठी दमयंती सौं बोल्यौ हे दमयंती मैं सुदेव नामा ब्राह्मण तेरे भ्राताको मित्रहौं भीमराजाके हुकमतें तोकौं हेरिवेकौं इहां आयोहौं अरु तेरो पिता माता पुत्र कन्या ये सबही नीकेहै. एक तेरी चिंतातें सबही उदास है अरुतोकौं हेरिवेकौं सैंकडा ब्राह्मण पृथ्वीमें विचरै है. ऐसे सुणि सुदेवकौं पहचाणि दमयंती औरहू समाचार पूंछे.जब सुदेव सब समाचार कहे सो सुणि दमयंती रुदनकरत भई. तब सुनंदा वाकौ रुदन करती देषि एक सषीकौं राजमाता पास पठाई सषी जाय बोली सैरंध्री एकब्राह्मण सौं वात करत रुदन करत है सो आप चलौ ऐसे सुणिराजमाता आय ब्राह्मणसौं पूछ्यौ यह कौणहै कौणकी है यह दसा कैसी भई ऐसे सुणि सुदेव सबही वृत्तांत कहत भयो. ॥ ॥इति श्रीभाषा भारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने चतुर्दसोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥

॥ ॥ सुदेव उवाच ॥ ॥ विदर्भराज भीम ताकी पुत्री दमयंती है वीरसेनको पुत्र नल ताकी भार्याहै वह नल पुष्कर सौं द्यूतमें राज्य हारि वनकौं गयो. ताकी षवर पडी नहीं सोहम नल दमयंतीके हेरिवेकौं पृथ्वीमें विचरतहै. सो हेरतें यहतो तेरा पुत्रके घरमें पाई याकी भृकुटीनके मध्य कमलसमान पीलुहै. सो मैल करि ऐसे ढक्यौ है जैसे वादलमें चंद्रमा वाचिन्हतैं मैं पहचानी ऐसे सुणि सुनंदा मैल दूर कर्यौ तब वाको पीलुचिन्ह ऐसे दिस्यौ. जैसे वादल दूर भये चंद्रमा दीसै वाचिन्हकौं देषि राजमाता अरु सुनंदा दमयंतीसौं मिली रुदन करत भई. फेरि राजमाता बोली हे दमयंती तूं मेरी वहणकी बेटी है सो या चिन्ह करि निहचै जाणी और तेरी माता अरु मैं ए दोऊ दासार्ण

देसके राजा सुदामाकी वेटी है. तेरी माताकोंतो भीम राजाव्या योहो मोकों वीरबाहुक राजा व्याही है. तेरो जन्म मेरे पिताके घरमें भयोहो उहां देषीही तासों अबजे सो तेरे पिताको घर तैसोही यह है. मेरी संपदा है सो सब तेरी जाणि जब दमयंती प्रणाम करि बोली मैंतो इहां विनाजाणेहूं सुषसों रही. परंतु अबतो मोकों पिताके पास जावेकी आग्याही दीजै. मेरे पुत्र कन्याहू उहां वसत है उनके देषवेकी लालसा है तातें सवारी दीजै तब राजमाताहूं पुत्रसों सलाह करि सुंदर सवारी दे रक्षा वास्ते सेन्यासंग देत भई जब दमयंती विदा होइ शीघ्रही विदर्भ देसनकों गई. तहां याकों आई सुणि बंधुजन सर्वही सनमुष आय महलमें लेगये. तब दमयंतीहू माता पिता पुत्र कन्या बांधव सषीजन सर्वसों मिलि हर्षित भई. देवब्राह्मणनको पूजन करत भई. पीछू राजा सुदेव ब्राह्मणकों गांवद्रव्य हजारन गउ देकरि प्रसन्न कियो. दमयंतीहूं पिताके घरमें सुष पूर्वक वास करि माता सों बोली. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥ दमयंतीउवाच ॥ ॥ हे माता मोकों जीवायो चाहौतो महाराज नलके ल्यायवेको उपाय करो ऐसे सुणि माता अश्रुधार छोडत उत्तर दियो नहीं जब दमयंतीकी अरु माताकी यह दसा देषि सब अंतःपुर हाहाकार करि रुदन करत भयो तब भीम राजासों महाराणी बोली हे महाराज दमयंती लज्जा तोडि मोसों कह्यो नलकों ल्या वेके निमित्य दूतनकों भेजों यो सुणि राजा वसवर्ती ब्राह्मणनकों आग्या करी जो तुम नलकों ल्यायवेको यत्न करो. ऐसें कहि षरची दे विदा किये. जब ब्राह्मण दमयंती सों बोल्यों हम नलके हेरवे कों जातहै तब दमयंती उनसों

बोली सब देसनमें राज सभानमें यह श्लोक पढो. ॥ ॥
श्लोक ॥ ॥ क्वनुत्वंकिंतवच्छित्वावस्त्रार्धंप्रस्थितोमम ॥
उत्सृज्य विपिने सुप्तामनुरक्तांप्रियांप्रिय ॥१॥ ॥ अर्थ ॥
॥ हेजुवारीवनमें मेसे आधो वस्त्र काटि सूतीकों छोडि तूं
कहां गयो. तेरे विरहतें वह वाला तपैहै. ता सौं वापरि करु
णाकरी प्रत्युत्तर कहो भर्त्ताकों पत्नीको भर्ण रक्षण करणो
तेरे दोउही कैसे गये. दया परम धर्महै यह तो हो तै सुणयो.
हो सोतें कैसे छोड्यो ऐसे बोलतें जो तुमकों उत्तर दे सोसुणि
इहां आवो वह संपत्तिवानहो अथवा दरिद्रि हो वाकी चेष्टा
देषियो सब नगर गांव पुर हेरते हेरते वा श्लोकको उत्तर काहू
नै दियो नहीं. तब आय दमयंतीसों कहत भये. ॥ ॥
इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने
षोडशोऽध्यायः ॥१६॥ ॥ बृहदश्वउवाच ॥
॥ ॥ ऐसे बहुत कालतें पर्नाद नामा ब्राह्मण आय
दमयंतीसों बोल्यो हे दमयंती नलकों हेरत हेरत अजोध्या
नगरीमे राजाऋतुपर्ण ताके पास गयो जहां वाकों श्लोक
सुणायो जब वह उन बोल्यो और सभाके उनबोले तबउ
हां राजासों विदा होइ अश्वशालामें गयो उहांको अधिका
री राजाको सूत बाहुक देष्यो सो रूप करि महा कुरूप भु
जाहु छोटी. घोडानकों शीघ्र चलावेमें महा चतुर भोज
न सामग्री करिवेमें कुसल वाकोंहूं श्लोक सुणायो.जब
वह सुणि स्वास नाषि रुदन करि मोकों कुसल पूंछि
बोल्यो पतिव्रता होइसो आप दाहूमे आपकी रक्षा करे.
भर्ता त्याग करेतोहू क्रोध करे नही राज्य भ्रष्ट लक्ष्मीहीन
हुवी पक्षीननें जाके वस्त्र हरे ऐसोहूं पति आदर करे वा
अनादर करे तोहू पतिव्रता क्रोधकरे नहीं. ऐसे वाके मु
षतें सुणिमें इहां आयो अब तुह्मारी इच्छा आवे सो

करो. ऐसे सुणि दमयंती एकांतमें मातासों बोली यहप र्णाद ब्राह्मण समाचार ल्यायोहै तासों अबतोमें तुमसों कहों सो करो येसमाचार महाराजसों कहो मति याहीमें मेरो कल्याणहै अरु सुदेव ब्राह्मण मोकों तुमसूं मिलाई जैसेही मंगल मुहूर्तमें नलराजाके लेवेकों जावो. पर्णाद ब्राह्मण षेद पायोहैसो विश्राम करो. यह दमयंतीकोव चन माता अंगीकार कीयो तब दमयंती प्रसन्न होइपर्णा दकों धनदे बोली हे महाराज नल आवेगे जब तोकों औ र बहुत धनदे प्रसन्न करोंगी. तैं मेरो बडो उपगार कर्यो प्राणराषे ऐसें सुणि पर्णाद ब्राह्मण आशीर्वाद दे आप के घर गयो तापीछे दमयंती सुदेव ब्राह्मणकों बुलायमा ताके पासही बोली हे सुदेव अयोध्या नगरीको राजा- ऋतुपर्ण ताके पास राहगीर सो होइ जायके ऐसे कहो दमयंतीको फेरि स्वयंवर होइगो उहां सबही देसके राजा वा राजपुत्र जाइगे. सोस्वयंवर काल्ह सूर्योदय समै होइ गो दमयंती दुतीय भर्त्ता वरेगी. नल राजाकी षबर नहींजी वत है वा नहीं. जीवत है तासों जब ऐसे सुदेव ब्राह्मणद मयंतीके कहेसों अयोध्या नगरीमें ऋतुपर्ण राजापास जाय सर्व स्वयंवरकी वार्त्ता कही. ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने सप्तदशो ऽध्यायः ॥१७॥ ॥ बृहदश्वउवाच ॥ ॥

ऋतुपर्ण राजा सुदेवको वचन सुणि बाहुकसों बोल्यो कुंदनपुरमें दमयंतीको स्वयंवर है स्वयंवर है सोउहां तूंच लै चलै तो एक दिनमें गयो चाहत हों ऐसें सुणतही नल कौहू हृदय दुष्यतें विदीर्ण भयो फेरि विचार करि बेल्यो दमयंती ऐसेहूं करे अथवा दुष्यकरि व्याकुल कहा नकरे अथवा मेरे मिलवेको उपाही है तातें पतिव्रता दमयंती

अन्य भर्त्ताचाहै यहतो असंभवही है मैछुद्र पापी कपटक
रि वाको अनादर कर्यो. स्त्री स्वभाव चंचलहै मेरो दोसदा
रुण है. जातै कदाचित् ऐसेहु करै. पैं मेरै. सोकतें स
नेह छोडि पुत्रवती है सो ऐसें करे तो नहीं तातें सत्यहै.
वा मिथ्याहै. उहतो निश्चै उहां गये तेंहीं होयगो. ऋतु
पर्णको काम मेरे अर्थ करूंगो. ऐसे बाहुक निश्चै करि
हाथ जोडि ऋतुपर्ण राजासों बोल्यो हे नरेंद्र एक दीनही
में कुंदन पुरले चलोंगो. यह सत्यही जाणो. ऐसे कहि
ऋतुपर्णकी आग्यातें अश्व सालामें जाय घोडानकी परि
छा करिवे लग्यो सो सरीर करि कस चलिवेमे समर्थ तेज
बल शील कुल युक्त हीन लक्षननकरि रहित पुष्ट थोथरा
लंबी गोडी दस आवर्तन करि स्त्रध सिंधु देसके पवन स-
मान वेग ऐसे चारि घोडानकों निश्चैकरि राजा ऋतुप-
र्ण उनकों देषि बोल्यो अरे बाहुक यह हमारी हंसी करि
वेहीकों ये मरेसे अश्व निकासे हैं. ये अश्व इतना दीर्घ
मारग कैसे चलेगे. जब बाहुक बोल्यो ये अश्व निश्चैकरि
कुंदन पुर एक दिनहीमें पहुंचैगें. आप और अश्वनकी
आग्याकरो तो उनकों जोतों. तब ऋतुपर्ण बोल्यो तूंही अ
श्वनकी परिक्षा जानवे वालो है जोतें सीघ्र पहुंचे सोही-
जोतो जब उनही चारों घोडानकू रथमें जोये तब ऋतुप-
र्णही सीघ्र असवार भयो जब घोडा गोडी टेकी प्रथवी मे
बैठिगये. तब नल राजा उनपें हाथ फेरि तेज धरि वार्ष्णेय
आपको सारथी हो बाहूकों धरि रासिपैं चढत भयो ता
पीछे बाहुक आपकी अश्वविद्याके प्रभाव करि रथकोंच
लायो सो अब आकास मार्ग होइ घोडा राजाकों मोहित
करतही चले अयोध्यानाथहू घोडानकी पवन वेग चलि
ते देषि चकित भयो वार्ष्णेयहू रथकी घोष लागि बाहुक

करो. ऐसे सुणि दमयंती एकांतमें मातासों बोली यहप
र्णाद ब्राह्मण समाचार ल्यायोहै तासों अब तोमें तुमसों
कहौंसो करो येसमाचार महाराजसों कह्यो मति याहीमें
मेरो कल्याणहै अरु सुदेव ब्राह्मण मोकों तुमसूं मिलाई
जैसैही मंगल मुहूर्तमें नलराजाके लेवेकों जावो. पर्णाद
ब्राह्मण षेद पा यो है सो विश्राम करो. यह दमयंतीको व
चन माता अंगीकार कीयो तब दमयंती प्रसन्न होइ पर्णा
दकों धनदे बोली हे महाराज नल आवेगे जब तोकों औ
र बहुत धनदे प्रसन्न करोंगी. तें मेरो बडो उपगार कर्यो
प्राण राषे ऐसे सुणि पर्णाद ब्राह्मण आशीर्वाद दे आप
के घर गयो तापीछे दमयंती सुदेव ब्राह्मणकों बुलायम
ताके पासही बोली हे सुदेव अयोध्या नगरीको राजा
ऋतुपर्ण ताके पास राहगीर सो होइ जायके ऐसे कहो
दमयंतीको फेरि स्वयंवर होइगो उहां सबही देसके राज
वा राजपुत्र जाइगे. सो स्वयंवर काल्ह सूर्योदय समे होइ
गो दमयंती दुतीय भर्त्ता वरेगी. नल राजाकी षबर नहींजी
वत हैवा नहीं. जीवत है तासों जब ऐसे सुदेव ब्राह्मण द
मयंतीके कहेसों अयोध्या नगरीमें ऋतुपर्ण राजापास
जाय सर्व स्वयंवरकी वार्त्ता कही. ॥ ॥ इतिश्री भाषा
भारत्तसार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने सप्तदशो
ऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ बृहदश्व उवाच ॥ ॥
ऋतुपर्ण राजा सुदेवको वचन सुणि बाहुकसों बोल्यो
कुंदनपुरमें दमयंतीको स्वयंवर है स्वयंवर है सोउहां तूंच
लै चलै तो एक दिनमें गयो चाहत हौं ऐसे सुणतही नल
कोहू हृदय दुष्यतें विदीर्ण भयो फेरि विचार करि वेल्यो
दमयंती ऐसेंहू करे अथवा दुष्यकरि व्याकुल कहा नकरे
अथवा मेरे मिलवेको उपाही है तातें पतिव्रता दमयंती

अन्य भर्तीचाहै यहतो असंभवही है मैछुद्र पापी कपटक
रि वाको अनादर कर्यो. स्त्री स्वभाव चंचलहै मेरो दोसदा
रुएा है. जातैं कदाचित् ऐसेहू करै. पैं मेरै. सोकतें स
नेह छोडि पुत्रवती है सो ऐसैं करै तो नहीं तातें सत्यहै.
वा मिथ्याहै. उहतो निश्चै उहां गयेतेंहीं होयगो. ऋतु
पर्णको काम मेरे अर्थ करूंगो. ऐसे बाहुक निश्चै करि
हाथ जोडि ऋतुपर्ण राजासों बोल्यो हे नरेंद्र एक दीनही
में कुंदनपुरले चलोंगो. यह सत्यही जाणो. ऐसे कहि
ऋतुपर्णकी आग्यातें अश्वसालामें जाय घोडानकी परि
छा करिवे लग्यो सो सरीर करि ऋस चलिवेमे समर्थ तेज
बल शील कुल युक्त हीन लक्षननकरि रहित पुष्टथोथरा
लंबी गोडी दस आवर्तन करि स्वधसिंधु देसके पवन स-
मान वेग ऐसे चारि घोडानकों निश्चैकरि राजा ऋतुप-
र्ण उनकों देषि बोल्यो अरे बाहुक यह हमारी हंसी करि
वेहीकों ये मरेसे अश्व निकासे हैं. ये अश्व इतना दीर्घ
मारग कैसे चलेगे. जब बाहुक बोल्यो ये अश्व निश्चैकरि
कुंदनपुर एक दिनहीमें पहुंचैगे. आप और अश्वनकी
आग्याकरो तो उनकों जोतो. तब ऋतुपर्ण बोल्यो तूंही अ
श्वनकी परिक्षा जानवे वालोहै जोतें सीघ्र पहुंचै सोही
जोतो जब उनही चारों घोडानकू रथमें जोये तब ऋतुप-
र्णही सीघ्र असवार भयो जब घोडा गोडी टेकी प्रथवी मे
बैठिगये. तब नल राजा उनपैं हाथ फेरि तेज धरि वार्ष्णेय
आपको सारथी ही बाहूकों धरि रासिपैं चढत भयो ता
पीछे बाहुक आपकी अश्वविद्याके प्रभाव करि रथकोंच
लायो सो अब आकास मार्ग होइ घोडा राजाकों मोहित
करतही चले अयोध्या नाथहू घोडानको पवन वेग चलि
ते देषि चकित भयो वार्ष्णेयहू रथको घोष स्रुणि बाहुक

कों रासि पकडि सारथी कर्मकों देषि विचारत भयो यहमा
तली नामा इंद्रको सारथीहै अथवा यह अश्व सास्त्र करता
सालि होत्रही है अथवा वह नलही यह है बाहुकको ग्यान
नल समान देषितहों उमरहू नलके तुल्यही है परंतु नल
सो नही अरु विद्यातो नलकेसीहै ऐसे वार्ष्णेय विचारतभ
यो अरु रितुपर्णहू विचार्‍यो जो मनुष्यकी विद्याको पारा
वार नहीं या रीतिसों विचारत जातहै सो पर्वत नदीउ
पर होइ पवन गतिज्यों रथजात राजाको दुपटा गिर्‍योज
ब राजा कही रथ थांबि दुपटा गिर्‍योहै . तब नल कही दुपट्टा
तो एक योजन पीछै रह्यौ सोस्रुणि राजा मौन गहि. तहां
तैं आगे चलतैं फल सहित एक बहेडाकों वृक्ष देष्योजब
राजा बोल्यो या वृक्षमें जितने फलपत्र है सो सबहीकी सं
ष्या मैं जानतहों अरु अक्ष विद्याहू जानतहों तब नल बो-
ल्यो कितने फलपत्र हैं जब ऋतुपर्ण बोल्यो एक लाख दस
हजार तो पत्र हैं अरु दस हजार फलहै . नल रथकों थांबि
कहीहै महाराज में गिणतहूं घोडानकी रासि वार्ष्णेयपक
डेगो. जब राजा कही विलंबकों समें नहीं तब बाहुक कही
में संष्याकरहीके चलोंगो. अरु आपकों ढीलहू नहीलगे-
गी . मै शीघ्रही कुंदनपुर पहुंचाइ द्योंगो. ऐसें कहि वावृक्ष
के पत्र पुष्प ऋतुपर्णके कहे माफिक गिणि रथ पै चढि
बाहुक बोल्योहे महाराज यह तुह्मारी अति अद्भुत वि-
द्या देषि जब ऋतुपर्ण बोल्यो मैंजैसे गणित विद्या जाणो
हों तैसेही अक्षय विद्याहू जाणो हों तब बाहुक बोल्यो य
ह अक्षयहृदय विद्यातो मोकोंद्यो अश्वहृदय विद्या मोपै
है सो आपल्यो जब ऋतुपर्ण अश्व विद्याके लोभतें बोल्यो
यह अक्षय विद्या मेरे पाससों ल्यो हृदय मेरी धरो हरतोमै
रहों. ऐसें कहि ऋतुपर्ण नलकों अक्ष विद्यादीनी अक्ष

विद्यानलके हृदयमे आवतही कलि वाके सरीरतें निकस्यो सो कर्कोटकके विषकरि कलिको मुष जरत भयो जब क-लि नलके सरीरमें तें बाहर आयो तब कलिके सरीरतें कर्कोटकको विष अरु दमयंतीको श्रापाग्नि ये बाहर निकसत भये जब कलि निज रूपसों नलकों दीख्यो तब नलक्रोध करि श्राप देवे लग्यो. जब कलि हाथजोडि पांवनमें पडि बोल्यो मै दमयंतीके श्रापाग्नि करि कर्कोटकके विषाग्नि करि तेरे सरीरमे जलतही रह्यो सो अब बाहर निकसि तेरे सरणे आयोहों जो तूं मोकों श्रापन देगो तो मै तोकों वर द्योगो. जो मनुष्य तेरो कीर्तन करेंगे तिनकों मेरो भय कदाचित नहोईगो. ऐसे सुणि नलको क्रोध शांत भयो. कलि भयभीत होइ बहेडेमे धसि गयो. नलके अरु कलिके संवाद कोउ सरेने लख्यो नही. तापीछे नल ताप रहित होय रथपें सवार होइ विदर्भदेसनकों गयो. कलिके वासतें बहेडेको वृक्ष अमंगल रूप होत भयो. नल दूर गयो जब कलिहू आपके घरगयो अरुनलहूकी ओर तो सर्व ताप दूर भई एक विरूपताही रही. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायांवनपर्वणि नलोपाख्यानेअष्टादसोऽध्यायः ॥१८ ॥ ॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥

जब ऋतुपर्ण राजा आयो यह षबर भीमराजकी परवानगीतें ऋतुपर्ण कुंदनपुरमें प्रवेस कर्यो. प्रवेस समेमें रथको घोष नलके घोडाननें सुण्यो सो सुनिके हर्षित भये दमयंतीहू नलके सौरथको घोष सुणि आश्चर्य मानतभई. और महलनके मोर हाथी घोडा ए सबही वा रथकोघोष मेघ गर्जना समान सुणि हर्षित होय बोलत भये जब दमयंती बोली यह रथ घोष मेरे मनकों हर्षित करे है तातें जानत हों नलराजा आयो आज नलकों नदेषों तो

मेरो प्राण न रहैगी. ऐसे विचारि राजा नलके देषिवेकों म
हलको ऊंचो एक झरोषाहो तामें गई . वामेंतें वीचकी की
डयो ढीमें रथपें बेठ्यो वार्ष्णेय बाहुक सहित राजा ऋतुप
र्णकों देष्यो वार्ष्णेय बाहुक दोऊ रथतें उतरि घोडानकों
छोडि रथकों उहां थापित कियो . जब राजा ऋतुपर्ण रथतें
उतरि भीमराजा पासगयो भीमराजाहू सनमुष आय
भीतर लेजाय. बडो सतकार कर्यो दमयंतीको स्वयंवर
स्रुणि आयो है सोतो जाण्यो नहीं अरवासों पूछ्यो आ
पको आवन कैसे हुवो तब ऋतुपर्णहू उहां और कोऊ
राजावा राजपुत्र वा स्वयंवरकी रचना ब्राह्मणनकी धुनिउ
कछू देषी स्रुणि नहीं जब मनमें विचार करि बोल्यो तुमकों
प्रणाम करिवेहीकों आयो तब राजा भीमहू हसि करि
मनमें विचारत भयो. जोसोजोजनतें हू सिवाय केवलप्र
णाम करिवेहीकों आवे यहतो असंभव है तातें कछु औ
रही कारण है सो पीछू षवरि पडेगी. ऐसे विचारि भीम
राजा बोल्यो आपको मार्गको श्रम हुवो होइगो तातें वि-
श्राम कीजे ऐसे उनकों कहि सेवकनकों भेजि दिव्य भव
न बताय भक्ष भोज्य सामग्री भेजत भयो जहां राजाऋ
तुपर्णहू वार्ष्णेय सहित वास करत भयो बाहुक रथपें स
वार होय अश्वशालामें गयो. उहां सास्त्रोक्त सों घोडान
की परचर्या करि रथपें बैठत भयो. झरोषामेंसों दमयंती
ऋतुपर्ण वार्ष्णेय बाहुकको देषि विचारत भई यह रथकी
धुनि कौणने करी. धुनितो महाराज नलकीसीहै परंतु न
जर आवे नहीं. ऐसो विचारि नलके हेरवेकों दूती भेजत
भई. तासों दमयंती बोली हे केसनी तूंजाय करि पूछि
यह कुरूप ओछी भुजानको रथ हांकिवे वालो कौण है
वाको देषि मेरे मनकों आनंद होतहै . सो राजा नलही.

तो नहोइ तातें जो श्लोक वार्ता परनाद कहे है सोही तूंहू जा
इके कहो वहू जो कहै सो स्रुणि आऊ जब दमयंती कही
ही सोइ जायके सनी बाहुकसों कहत भई दमयंतीहू उहां
तें बैठी देषत भई केसनी कही हे नरेंद्र तुम कहां सों कब
के चले इहां कब आये तब बाहुक बोल्यो दमयंतीको दूस
रो स्वयंवर स्रुणि ऋतुपर्ण अयोध्या नाथ सतजो जन
अश्व सहित रथपेंचढि एक दिनमें इहां आयेहें. मैइनको
सारथीहों जब केसनी बोली तुम सारथी अरु वे रथी यह
तीसरो कोणहै. तब बाहुक बोल्यो नलको वार्ष्णेय नामा
सारथी है. नलगयो तापीछे सोयह अजोध्या नाथपास र
हेहै. मैहूं अश्व विद्यामें निपुण हों तासों राजा सारथी क
र्ममें अरु भोजन कर्ममें राख्यो है. ऐसे स्रुणि केसनी बो
ली वार्ष्णेय जाणेहे सो नल राजा कहां गयो. जब बाहुक
कही वा पापिष्ठके पुत्रकन्यानकों इहां धरि ऋतुपर्णके
जाय रह्यो तापीछे याकों षबर नहीं यह कुरूप भयो गुप्त
विचरे है तासों नलकों कोउ पुरुष जाणे नहीं ताते आप
ही आपेकों जाणेहै अथवा वाकी अति वल्लभा है सो को
उ चिन्हन करि पहचाणे है. नल आपके चिन्ह काहूसों कहे
नहीं. जब केसनी बोली जो वह ब्राह्मण पहली अजोध्या
गयोहो सोस्त्रीके वचन वेर वेर पढथो ताको तें उत्तर कहा
दियो वह दमयंती स्रुण्यो चाहेहै. जब बृहदश्व बोल्यो ऐ
से केसनीके वचन स्रुणि नलके आंसु चले तब आंसुन
कों रोकि धीर्य धरि बोल्यो कुलस्त्री विपदाहूमें आपकी र
क्षा करेहे. पति विपतामें त्याग करे तोहू रोस करे नहीं औ
र जीवकाको उपाय करतें पंछीननें वस्त्र हरण कीयो तादु
र्बुद्धिपें रोस करणो योग्य नहीं. तब केसनी दमयंती पास
जाय सब समाचार कहे ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभार

तसार चंद्रिकायां वनपर्वणिनलोपाख्याने एकोनविंसततमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ बृहदश्ववउवाच ॥ ॥
ऐसे केसनीके वचन सुणि दमयंती बोली हे केसनी फेरि जाय बाहुककी परिक्षाकरि तूं बोलै मत पासरहि वाके चरित्रदेषि औरतूं पाक सामग्री तो संपूर्ण लेजाय वाकोदे एक अग्नि जल मति पहुंचावै जब वह पाक करे सोसंपूर्ण चेष्टा देषि मोसोंकहियो ऐसे सुणि केसनी वाके पास जाय पाक चेष्टा देषि दमयंतीसों आयकहत भई हे दमयंती आचार वाको ऐसो देख्योजो और मनुष्यमैंनही. नीचे द्वारमैं प्रवेस करत मस्तक नवावे नहीं. संकीर्ण मार्ग जाय जब मार्ग आपही चोडो होयजाय. रितुपर्ण राजाकी भोजन सामग्री अनेक प्रकारकी करी. तामैमांस धोइवेकों रीतो घटमैं धरि दीनो सोवाकी तरफ बाहुक देख्यो तबही वह जलसों भरिगयो वा मांसको धोइ चूल्हे पैं चढायो अग्नि देषीनहीं जब घांसकी मूठिले सूर्यसनमुष करतही जल ऊठ्यो औरहू आश्चर्य देख्यो सो अग्नि सों जलैनहीं और जलवाकी इच्छा माफिक वहतहै वाके हाथके मर्दित पुष्पमै अति सुगंध होइ ऐसे आश्चर्य रूप चेष्टादेषि तुह्मारे पास आईजब दमयंती केसनीके पास ऐसी चेष्टा सुनि नलही मानत भइ. तब फेरि दमयंती बोली हे केसनी बाहुककों रांध्यो मांस वाके विनाजाणे तूंले आव जब वह जाइ बाहुक और काम करवे लग्यो तबगरमही मांस ले दमयंती पास आई वाकों भक्षणकरि दमयंती नलकोही रांध्यो मांसहै ऐसे स्वादसों पहचाणि वाकों नल निश्चै मानत भई. तापीछे. हाथ मुष धोइ इंद्रसेन पुत्र इंद्रसेना पुत्रीकों केसनीके साथ वाके पास भेजत भई जब बाहुकहू उनकों दूरसों देषिके दौडि छातीसोंल

गाई आनंदके अश्रु नाषत भयो फेरि धीर्ज धरि केसनी सो बोल्यो ये दोउ बालक मेरे पुत्र कन्या समान है सो इनकूं तूं लेजा अरु वेर वेर तूं आवेहै जासों और नके संका होत है तासूं हम अभाग्यत है तुम स्वइक्षा माफिक जावो. ॥

॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्याने विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ बृहदश्व उवाच ॥ ॥ या प्रकार सों केसनी नलकी संपूर्ण चेष्टा देषी सो आय दमयंतीसों कही. जब दमयंती केसनीकों माताके पास भेजी अरु कही तूं जाय कहना बाहुककों नल संका करि परिक्षा करी. सो और तो नलकी संपूर्ण वात मिली. एक रूपहीकी आसंका है सो मैं साक्षात जाण्यो चाहत हों तासों महाराज या वातकों जाणे हों नहीं सो आप कहिके परवानगी दिवावो. ऐसे दमयंतीसों सुणी केसनी महाराणीसों मालूम करि जब महारानीहु भीमसों सब वृत्तांत कहि परवानगी लीनी तब माता पिताकी आग्यासों दमयंती आपके पास बाहुककों बुलायो उहांजाय नलहू सोक दुष्यन करि नेत्रनसूं आंसू छांडत भयो जब दमयंतीहू नलकी दसा देषि दुषित भई अरु मलिन वस्त्र धारेके सनकी जटा होइ रही अंगनमें मैल. लगि रह्यो है ऐसे रूपसों नलसों बोली हे बाहुक तुम ऐसो धरमाग्यनरहू कोऊ देष्यो जो निर्जन वनमें परिश्रम करि सूती निरपराध भार्याकों इकली छोडि जाइ ऐसे महाराज नल विना तो और न होइगो मैं देवतानकों ताजि वाको वर्यो फेरि पतिव्रता पुत्रवती ताकों कैसे छोडी पाणिग्रहण समै अग्नि आदि देवतानके आगे प्रतग्या करी जो मैं ताकों छोडों नहीं. सो पण कहां गयो. ऐसे सुणि नलके नेत्रनसों अधिक जल गिरते बोल्यो मेरो राज्य गयो सो अरु ताकों

छोडी यह कार्य मेरी इच्छासौं कियो नहीं यह कृत्य सब कलि
जुगको कियो भयो. मोविना तुम इकली वनमे दुष पाय क
लिकौं श्राप दियो तासौं दग्ध होइ वह मेरे शरीर मे रह्यो.
अरु मेरे तपहूतें तपत रह्यो तापीछे अपणे दुष्यनकौं अं
त आयो जब वह पापी निकसि गयो तबमे इहां तेरे निमि
त्यही आयो और मेरे आवेको कारण नही अरु तेरो स्व
यंवर स्रुणि यहहू संदेह आयो सो पतिव्रता दूसरेसौं कैसे
वरैगी. अरु जहां तहां दूत कहत फिरे जो दमयंती कौ दू
सरो स्वयंवरहै यह स्रुणतही रितुपर्ण महाराजहू अति
सीघ्रतासौं आयो है ऐसे नलको वचन स्रुणि दमयंती भ
य भीत कंपीत होय हाथजोडि वचन बोली.॥ इतिश्रीभा
षाभारतसारचंद्रिकायांवनपर्वाणिनलोपाख्याने एकविंस
तित्तमोऽध्यायः ॥२१॥ ॥दमयंतीउवाच॥ ॥
हे महाराज मोमें दोस संका करिवो योग्य नहीं में देवतान
कों छोडि तुमकों वरे हैं तुह्मारे हेरिवेकों ब्राह्मण च्यारि दि
सानमे गये सो सबठौर मेरे कहे वचन पढत भये तिनमें
पर्णाद नामा ब्राह्मण अयोध्या नगरीमें तुमकों स्रुणाये
तब तुम उत्तर दियो सो मोसो आय कह्यो जबमे तुह्मारे
बुलायवेकों ऐसे उपाय कर्यो. तुमविना एक दिनमें अ
यो ध्यासौं इहां आवे यह विद्या औरमे है नही. यातें स्वयं
वरके छलकरि तुमकों इहां बुलाये अबमें तुह्मारे चरणन
कौं प्रणाम करतहौं. अपराध कछू मनहूतें नहीं कर्यो है
यह पवन सर्व साक्षी विचारै. हे सूर्यचंद्रमाहू तैसेही है
जोमे मनहूसों पाप कर्यो होइतो तीन्यो देवताहू मेरो प्रा
ण नास करो ऐसे कहतही पवनहू अंतरिक्षमे बोल्यो.
हे नल याने कछू अपराध कर्यो नहीं तीन वरसलों हम
याकी रक्षा करी है स्वयंवरको उपाय तेरे मिलवेहीकों क

स्योहै अब यह दमयंती निर्दोष तासों निःसंक विहार करो. ऐसे पवनके कहतेही आकाससों पुष्पनकी वृष्टि भई देवतानके नगारे बजे. त्रिविधि पवन चल्यो यह अद्भुतता देषि नल दमयंतीमें संका छोडत भयो. तापीछे नलनागराजको स्मरण करि वह दिव्य वस्त्र धारि निज रूपकों प्राप्त भयो दमयंतीहू दिव्यरूप भर्ताकों देषि हर्षतें उच्च शब्द करि आलिंगन करत भइ. नलहू पुत्रकन्याहै तिनकों आशीर्वाद दियो फेरि मलीन अंगन करि सहित ऐसी दमयंतीसों मिलि सोककों छोडत भयो तब दमयंतीकी माता यह वृत्तांत भीमराजाकों कह्यो जब भीमहू बोल्यो स्नान अलंकार कराय प्रभात नल राजाकों देषोंगो. नल दमयंती दोउ रात्रकों उहां वसे परस्पर आपके सब वृत्तांत कहे. ऐसे दोऊ चतुर्थ वर्षमें मिलि आनंद पावतभये. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायां वनपर्वणिनलोपाख्यानेद्वाविंसतितमोऽध्यायः समाप्तः ॥ २२॥

॥ ॥ वृहदश्वउवाच ॥ ॥ तारात्र नलसुषपूर्वक वासकरि प्रभातही स्नान करि वस्त्र अलंकार धारण करि दमयंती सहित ससुर पास जाय प्रणाम करत भयो तब भीम राजाहू पुत्रवत सनमान करत भयो अरु नगरमें नलको आयो सुणि बडो हर्ष भयो मार्गकों सुगंध जल करि छिडकत भये. नगरकों धुजा पताकानकरि सोभित कियो. देव मंदिरनमें द्वार द्वारमें अति उत्सव करत भये. यह वृत्तांत सुण्यो बाहुक नलहोसो दमयंतीसों मिल्यो. जब रितुपर्णहू प्रसन्न भयो तापीछे नलहू रितुपर्णकों बुलाय बहोत समाधान कस्यो. जब रितुपर्ण बोल्यो हे नल महाराज आप स्त्री पुत्रनसों मिले यह बडो आनंद भयो. और मोहसों तुह्मारो कछु अपराध तो

नहीं बएयो. तुम अग्यात वास रहे तासमयमैं अग्यानसौं
जो कछु अपराधहू भयो होई तौ ताही क्षमा करौगे तब न-
ल बोल्यौ हे महाराज तुम मेरो स्कत्यही अपराध कर्यो न
हीं अरजो कोई अंजाणि तासौं होइ तौ क्षमाहीहै. तुह्मा
रे घरमैं आपके घर समान स्कषसौं वास कर्यौहै. यह अ
श्व विद्या तुह्मारी धरो हहै सो लीजे ऐसे कहि ऋतुपर्ण
कौं अश्व विद्या दीनी. जब रितुपर्णहू नलकौं अक्षयहृ
दय विद्यादेके और सारथीलै आपके पुरकौं गयो. तापी
छै नलहू कितनेक दिन कुंदन पुरमैं वास करत भयो. ॥
इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां वनपर्वाणि नलोपाख्याने
त्रयोविंशातितमो ऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ ॥
॥ बृहदश्वउवाच ॥ जापीछे नल राजाहु एक मास वास
करि भीमसौं आग्या मांगिसूं छिम परिवार सहित पुरकौं
आवत भयो एक दिव्य रथ सोलह हाथी पचास घोडा छह-
सैं पयादे इतनीही स्कछम सेनासौं पृथ्वीकौं कंपावत पुर
मै प्रवेस करि पुष्कर पास अचाणक जाय राजा नल कही
हे पुष्कर मेरे पास बहुत द्रव्य ल्यायोहौं अरु दमयंती है सो
मेरो द्रव्य दमयंती तेरो राज्य ऐसे एक बाजी फेरिहू षेलैगे.
अरुजो यह द्यूत न रुचै है सो प्राण द्यूत षेलैं ऐसे नलको
वचन स्कणि पुष्कर पहली जीत्यो होसोही जाणि बोल्यौ
हे नल तुम दमयंती सहित जीये अरु द्रव्य पैदा कर्यौ
सो बडी षुसी भई अब दमयंतीको पाप नष्ट भयो जासौं
अबया धन सहित दमयंती मेरी सेवा करेगी. जैसे इंद्रकौं
अपछरा है याही वासतें मैंहूं तोकौं नित्य यादि करौंहौंद्यु
तसौं श्रम भयोनहीं सो अब दमयंती सौं जीति स्कत्यकृ
त्य होउंगो. ऐसे वचन स्कणि नल षड्गसौं वाको शिर काटिवे
की इच्छा करि बोल्यो द्यूत करे पीछे. विजै पाय बोलै गोसो

देषैगे ऐसे कहि कहि नल पुष्करसों सर्वस्वकी एक बाजी
करिजीते तापीछे हंसि करि बोले यह सर्व राज्य मेरोहै ता
सों अरे अधम तूं दमयंतीको देषिवे लायक नहीं अबतूं
परवार सहित दमयंतीको दासहै पहले जीत्यो जो यहका
र्यतें कस्यो नहीं. केवल कलिको कृत्यहै पैतूं जाणैनहीं
जासों परायो दोष तोको नहीं लगावतहों तासों तूं जीवै
है तोकों प्राणहू देतहों अरु तेरे अंसको राज्यहू तोकों
देतहों. अरुतेरे मेरे प्रीतिहू घटेगी नहीं तूं मेरो भ्राता है
तासों नल ऐसे समाधान करि पुष्करकों निजघरजावे
को सीष दीनी. तब पुष्कर नलके पांवनमें प्रणाम करि
हाथ जोडि बोल्यो हे पुण्य श्लोक तेरी अक्षय कीर्ति हो
सैंकडन वर्षतांई जीवो मेरे अपराधतो गिणे नहीं अ-
रु प्राण सहित राज्य दीयो. ऐसे नलकी अस्तुति करि
पुष्कर एक मास उहांर हि पीछे आपके पुरकों गयो. ता
पीछे नलहू आपके राज्यस्यंघासणपें बैठि पुरवासिन
कों समाधान कस्यो जब पुरवासी सब बोले हे महारा-
ज आज हम सबकों आनंद भयो है जैसे देवता इंद्रकी
सेवा करे तैसे तुह्मारी सेवा करेंगे. ॥ ॥ इतिश्रीभा-
षा भारतसारचंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्यानेन्चोइस
मो ऽध्यायः ॥२४॥ ॥ बृहदश्वउवाच॥ ॥
नलराजा वापुरमें उत्सव करि सेना भेजि दमयंतीकों
बुलाई जब भीम राजाहू सतकार करि दमयंतीकों भेजी.
पुत्र पुत्री सहित दमयंती आई ताहि नलराजा देषि जै
से इंद्र नंदन वनमें इंद्राणि सहित विहार करे तैसे कर
त भयो. जंबु द्वीपके सब राजानमें प्रसिद्ध भयो अनेक
यज्ञ पूर्ण दक्षिणा सहित करे. यातें हे महाराज यु-
धिर तुमहू तैसेही थोडेही दिन पीछे यज्ञ करोगे.

द्यूत करि भार्या सहित एकाकी दुषपायो फेरि ऐश्वर्यहू पायो. तुमतो द्रोपदी राणी भीमादिक भ्राता इनकरिकै तथा वेद वेदांग पारंगत ब्राह्मणन सहित वनमें धर्महू सेवन करोहो तासों तुमकों कहा दुर्लभहै यह कलि नासन इतिहास सुणि धीर्ज धरो पुरुषार्थ अस्थिर जाणि देव के दोसतें विवेकी विपति संपत्तिमें दुष सुष नहीं पावत है यह नल चरित्र जो कहेंगे वा सुणेंगे तिनकों अलक्ष्मी सपर्सन करेगी. अर्थसिध्य होइंगे पूज्य ताको प्रापति होइंगे. पुत्रपौत्र पसू वृद्धि होगी. मनुष्यनमें श्रेष्ठ नेरोग्य सुषी होइंगे और हे महाराज, युधिष्ठिर तुमकों यह भयहै सोदुर्योधन फेरि द्यूतकों बुलावेगो. सोता भयकोमें नास करत हों मैं अक्ष हृदय जाणत हो सो तुमकों द्योंगो.

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ऐसे सुणि राजा युधिष्ठिर ब्रहदश्व सों बोल्यो यह अक्ष हृदय मोकों कृपा करिके दीजे जब ब्रहदश्व अक्षहृदय देके आपतीर्थस्नानकों गयो तब राजाहू अर्जुनके तपस्याके समाचार सुणि भ्राताके वियोग करि चिंता करत भयो.॥ ॥ इति श्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां वन पर्वणि नलोपाख्याने पंचविंसमो ऽध्यायः समाप्तः ॥ २५ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयंत्यानलस्यच ॥ ऋतुपर्णस्यराजर्षेः कीर्तनंकलिनाशनम् ॥१॥

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ युधिष्ठिरकों चिंता युक्त जाणि वेदव्यास आये जब महाराज सतकार कर्यो तब वेदव्यास राजासों सत्कार पाय आसनपें बैठि बोले हे, महाराज तुम्हारे दुष्षकों अंत होइगो चिंता मति करोजैसे तुम दुषीहो तैसें आगे हरिश्चंद्रहू दुषपायोहो सो सुणो. त्रेतायुगमें अयोध्यामें सूर्यवंशी हरिश्चंद्र राजा.

राज करत हो ताको दान धर्म देषि इंद्र भयभीत होइ विष्णु
के पास आय विनती करत भयो हे नारायण प्रभु भरत षं
डमें हरिश्चंद्र राजा राज करत है सो वाको दानधर्म देषि मेरो
हृदय कांपत है. ऐसे स्रुणि विष्णु बोले तूं तेरे लोककों जा
मैं वाकों भ्रष्ट करोगो. ऐसे इंद्र सों कहि विश्वामित्रको स्मर
ण कस्यो जब आये. जो विश्वामित्र तिनसों बोले तुम ह
रिश्चंद्रकूं राज्यतें भ्रष्ट करो. निरपराधकों पीडा करत मेरे
वचनतें तुमकों दोस लगेगो नही. ऐसे नारायणकी आग्या
पाइ विश्वामित्र हरिश्चंद्र पास आये तब राजासों सनमा
न पाय आसन बैठे जब राजा बोल्यो. मोकों आग्या की-
जै जो आप आग्या करोगे सोही करोंगो तब विश्वामित्र
बोले जो राजा तूं सत्यवादी है तो मोकों सर्व राज्य दे. ऐसे
स्रुणि हरिश्चंद्र सर्व राज्य दियो. तब राज्यको दान लेके वि
श्वामित्र बोले दर्भाहीन संध्या, तिलहीन तर्पण दक्षिणा-
हीन दानये निस्फल होताहै तातें दक्षिणाहू दीजे जब रा
जा तीन भार स्रुवर्ण संकल्प करि जल मुनि के हाथमें दी
यो तब मुनि बोले यह ससांग राज्य तो मेरो है जासो और
धन ल्यायकें दे. जब राजा बचन बंध होइ बोल्यो वाराण
सीमें मोकों पुत्रस्त्री सहित लेचलो उहां वेंचिके द्रव्य आ
वे सोल्यो जब विश्वामित्र काशीमें लेजाय तीन्योनकों जु
दे जुदे वेचे. रोहित पुत्रकों तो एक ब्राह्मणकों वेच्यो राणी
कों एक ब्राह्मणको दासी दान दीयो राजाको चंडालके वे
च्यो जब चंडाल मुरदानके वस्त्र लेवेकों राष्यो जब कोई
समैमें राजाको पुत्र रोहित ब्राह्मणनके बालक सहित पु
ष्प लेवेको वनमें गयो राणीहु उहां आई सो मरे पुत्रकों
आपकी आधी साडीसों ढांकि समसानमें दग्ध करिवेकों
ल्याई जब उहां चंडाल कोराष्योहू राजा रहे हो ताने आ

इ कही याको वस्त्र मोको दे पीछे दग्ध कीज्यो तव राणी व-
ह वस्त्र षाको देइ दाग दीयो. तापीछे फेरि राणी ब्राह्मणके
घर सेवा करत रही तहां रहते कोई समै जल भरिवेकों गं-
गागई. वहां काशी राजकीराणीहूं स्नानकरिवेकों गईही
सो वानें स्नान समैमें कंठा भर्ण षोलि धस्यो हो ताकों एक
काग भक्षके भ्रमसों वाकों लै उड्यो सोया देवदासी जल
भरिवेकों गईही ताके मस्तगपैं धस्यो वह राणी स्नानक
रिजाइ राजासों कह्यो मेरो कंठा भरण चोस्यो गयो जब
राजा डौंडी पिवाई जाने राणीको कंठा चोस्योहै सो मास्यो
जायगो. यह सुणि पुरवासी राजासों कहत भये एक कं
ठा भरण देवदासीके सिरपै देष्योहो तब राजा कही स्त्री
हो पुरुषहो वा नपुंसक हो ताको विना बूजे मारिवेमें वि-
लंब मतिकरो. ऐसें राजाकी आग्या सुणि चाकर वा देवदा
सीकों गंगातीर लेजाय चांडालकों मारिवेकी आग्यादीनी
जब चांडाल वा आपके राषेचाकरसों कही तूं मारि तब रा-
जा हरिश्चंद्र षड्गले मुंड काटिवेकों उठ्यो उहां राणी राजा
कों देषि विलाप कस्यो हे राजा तूं मेरो नाथ पृथ्वीपती हरि
श्चंद्रहै सो मोहिकों कैसें मारैगो और नाता नमानेतो अ
बला जाति अवध्य है याकों तो देषो जब राजा बोल्यो मैं
तो चांडालको दासहों वाकी आग्या होइ सो करों ऐसें
कहिकै नारायण देवकों स्मरण करिकै बोल्यो हे नारा
यण जन्म जन्ममें मोको विश्वामित्र गुरु मिलो. और तु
म्हारी भक्तिहो यो कहिके षड्गको प्रहार कस्यो जितनेही-
में विष्णु वैकुंठनाथ चतुर्भुज रूप धारि राजाको हाथआ
इ पकड्यो अर बोले हे राजा साहस मतिकरे मैं तेरे स-
त्वतें संतुष्ट भयो यह तेरो पुत्रहू आयो है और विश्वामि
त्रहू आयोहै और जोतू वर चाहै सोही मांगि जब ह

रिश्चंद्र बोल्यौ जो स्वामी तुम प्रसन्नहो तौयह वरद्यौ. जो
मै वगर पुत्रसहित वैकुंठवास पावौं जहांसौं फेरि संसार
बंधनके पावै नहीं ऐसैं कहतही विश्वामित्र बोले हे राजन्
मै दक्षिणा सहित सर्वस्क दान पायौ तातें तूंहू पुत्र बांधव
सहित राज्य भोगो पीछु नगरी सहित वैकुंठ वास करोगे.
ऐसैं कहि गये. नारायणदेव अंतर ध्यान भये. तापीछु
हरिश्चंद्रहू अयोध्यामें आय राज्य करि नगरी सहित
वैकुंठकों गयौ तासौं हे राजा, युधिष्टिर तुमही सोच म-
ति करो. याद्रुष्यके पीछु तुमही वैसेही स्कष भोगोगे.ऐसौ
कहि वेदव्यासहू आपके आश्रमकूं गये. ॥ ॥ इति
श्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि हरिश्चंद्रोपा-
ष्यानं नाम षड्विंसतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥
॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे कोइक समैमें राजा
युधिष्टिरके पास मार्कंडेय मुनि आये. जब उनकों पूजन
करि युधिष्टिर बोले तुमकों सप्त कल्पांत जीवी स्कनेहैं.
सो प्रलैकोणतेरे भयो आप देष्यो सो कहो तब मार्कंडेय
बोले एक समैमें आपके आश्रममें शिष्यनकों पढावतहो
तासमे प्रचंड पवन चल्यौ ताकरि दाम दाम वृक्ष उडिग
ये. तापीछे विकराल मेघ घटा आय मूसल धारवृष्टीकरि
तासौं चारो समुद्र एक होइ गये. जब सर्व पृथ्वी जलमें डु
बगई. तबमैंहू जलमें गोता षात षात एकटी वापर बटकौ
वृक्ष देष्यो वाके पातनके जोटमें एक बालककों देष्योज
ब वाके पास डुबवेकों गयौ तब वाके स्वासके संग उदर
में गयौ जहां संपूर्ण विश्व रचना देषी फेरि मेरी पर्नकु
टी देषी तब वामें प्रवेस करिवेकी मनसा करी. जबही स्वा
स करि बाहिर आयौ तबमे उनकों विष्णु जाणि स्तुति
कारत भयौ. ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ करार विंदेन पदा

रविंदं मुखारविंदेन निवेसयंतं ॥ वटस्य पत्रस्य पुटेशया
नं बालं मुकुंदं मनसास्मरामि ॥१॥ कंठेस्रमालंतिलका
ढ्य भालं सौंदर्य कांत्या जित मेघजालं ॥ रिपोः करालंजलजं
मरालं बालं मुकुंदं मनसा स्मरामि ॥ २ ॥ गोपालबालं भु
वनै कपालं संसार मायामति मोहजालम् ॥ यशो विशालं
शिशुपालकालं बालं मुकुंदं मनसा स्मरामि ॥ ३ ॥ ॥
ऐसे में स्तुति करी जब वेही नारायण होइ नाभि कमलतें
ब्रह्माकों प्रगट कस्यो तब वह ब्रह्मा नाना प्रकारकी सृष्टिपै
दा करत भयो ऐसे हरिकी कृपातें अनेक वेर सृष्टिकी प्र
लै उत्पत्ति देषी तासों तुमभी हरिकों भजो ऐसे कहि राम
चरित्र श्रवण कराय अंतरध्यान भये. ॥ ॥ इतिश्री
भाषाभारत सारचंद्रिकायां वनपर्वणि सप्त विंसतितमो
ऽध्यायः ॥ २७॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
तापीछें कोइक समैमै लोमस मुनी इंद्रके पास आये इं
द्रसों सत्कार पाय अर्जुनसों मिले. जब अर्जुन समाचा
र कही प्रार्थनाकरि आप पृथ्वीमें जाय राजा युधिष्ठिर
सों कहो में इहां अस्त्राभ्यास करोंहों सो पांच वर्ष रहि
फेरि कैलास यात्रामें तुह्मारे पास आऊगो जोलों तुम
और तीर्थयात्रा करोये समंचार ले लोमस मुनि अर्जुन
के विरह करि व्याकुल युधिष्ठिर ताके पास काम्यवनमें
आये. वासों सत्कार पाय अर्जुनजो समंचार कहे हेसो
इंद्रकीलमें तप कस्यो ताको आदि लेर सर्व समंचार क
हि युधिष्ठिरसों फेरि अब तुम तीर्थयात्राको चलो तब
लोमस मुनिकी आग्यासों वृद्ध जन हे तिनको उलटे फे
रि धौम्य नारद पर्वत लोमस सहित पूर्व दिसाकों तीर्थ
यात्रा करिवेकों चले. तहां नैमषारन्य प्रयाग काशी हो
इ गयाकों गये चातुर्मास गयामें बास करि गया महात्म

श्रवण कर्‍यो उह्यांतैं गंगासागर जाइ दक्षिणकौं चले. उह्यां अकृत वरणके आश्रममें आय उनकी आग्या पाय महेंद्रा चलमें परस्रामके दरसण करे. उनको आशीर्वाद पाय-गोदावरी स्नान करि द्रवड देसमें जाय अगस्त्य तीर्थमें स्नान करि नारी तीर्थ आये. उह्यां अर्जुनकौं प्रभाव सुणि पश्चिम दिसामें प्रभास तीर्थ आये. तह्यां बलदेव श्रीकृष्ण आय युधिष्ठिरको सतकार कर्‍यो जब द्वादस दिन उह्यां वास कर्‍यो उह्यांतैं विदर्भ देसमें जाय पयोष्णी स्नान करि ब्राह्मणनकौं पूजन करि दान देत देत उत्तर दिसाके तीरथ करत करत सुबाहु पुरकौं आये. ॥ ॥ इतिश्रीभाषा भारतसारचंद्रिकायां वन पर्वणि तीर्थयात्रावर्णनं नामअष्टाविंसततमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ तापीछे अर्जुनकी तपस्या इंद्र लोक गवनको सब वृत्तांत वेद व्यास सौं सुणि धृतराष्ट्र दुखित भयो तापीछे पांडव सुबाहु पुरमें रथादिक सब सामग्री धरि पावन तिहि हिमालय पैं चढे. पथ्थरनकौं पावनसूं चूर्ण करत मार्ग सुधारत आगू भीम चल्यो तापीछू युधिष्ठिरादिक सर्व चढत भये. ऐसें चलत गंधमादन पर्वतकौं गये. तह्यां पर्वतकी चढाईमें ब्राह्मण व्याकुल भये. द्रौपदी मूर्छा करि गिरी ताकौं नकुल उठाइ तह्यां भीमके स्मरण करि घटोत्कच परवार सहित आयो तब परवार ले राक्षसन पैंतो ब्राह्मण चढ्या द्रौपदी सहित पांडवनकौं घटोत्कच चढावत भयो ऐसें चलतें लोमस मुनि मार्ग वतावत बद्रिकाश्रमकौं ले गये. उह्यां गंगास्नान कियो-तापीछु बिंदु सरोवरके कमलनकौं अंगारकरि द्रौपदी अति सोभित होइ कैलासकी सिलान पैं सब बैठत भये. उह्यां ईसान कोणतें बहत आयो येक कमल ताकौं देखि

भीमसौं बोली ऐसे कमल मोकौं औरही ल्यायदौ तव भीम पौनके सनमुष चल्यौ सो गंध मादनपै चढत संषके नाद- सौं गंधर्व किन्नर गुह्यकनकौं मोहित करतही चल्यौ अरु याकी गर्जनातैं पसू पंछी व्याकुल होइ भजत भये. तहांसु वर्ण कदली वनमैं वसत हनुमंतहू गर्जनाको शब्द सुणिवि चारत भये. यह कौण है जब उठि देष्यौसो आपको भ्राता जाणि याकौं उपकार करिवेकौं संकीर्ण मार्गमैं साइ रहे. तहां भीमहू षेद मिटाइवेकौं सुवर्ण कदली वनके सरोवर मैं स्नान पान करत भयो तापीछे उनमत्त गजराजज्यौं चल त मार्गमैं सोये हनुमंतकौं देषि बोल्यो हे वानर मेरे मार्गसौं सरकिजा. नहींतौ तेरे सरीरके टूकटूक करौंगो. तब वेहू आषि षोली कछुक गर्दन उठाइ मंदतर वाणीसौं बोले. तेरो आकार तौ उत्तम कोसो है अरु आचरण नीचकौं सो है जो वृथा गर्जना करि जीवनकौं विथा करे है मे रोग की वीथाकौं निद्राकरि छीन करिवेकौं सोयो हो सौतैं वृथा जगाइ कहा सुकृत कियो यह देव भूमिहै तूं मनुष्यहै ता तैं जा तेरो कहा कामहै. मे सुष पूर्वक निद्रा करौंगो ये स बजीव सुषसौं वसैंगे. जब भीम निजनाम कुल मोकौं उलं घिके जावौ. ऐसे सुणि भीम कहि जो सर्व देह धारीनमैं परमात्मा विराजैहै. सोजीवनकौं उलांघो नहीं तब उनक- ही जो उलंघे नही तौ पूंछकौं उठाइ मार्ग करिकै जावो.जब भीम कंवर बांधि पूंछ उठाइवेकौं अनेक जत्न करे पैं तिल मात्र सरकी नहीं तब लज्जित होइ चार्यौं दिसानकौं दृष्टि करि जो मोकौं कोउदेष्यौतो नहीं. ऐसे याकौं लज्जित देषि हनुमंत कही मे तेरो बडो भ्राताहौं श्रीरामचंद्रकौं किंकर हौ. तेरे देषिवेकी उत्कंठा करि आयो हौं तातैं हे भीम लज्जा मति करे. ऐसे सुणि परम आनंदित होइ हाथजोडि भी-

म बोल्यो मै माया करि तुह्मारो लघुरूप देषि प्रसन्न भयो.
परंतु जारूप करि समुद्र उलंघन कर्यो. ताके देषिवेकी ला
लसाहै. ऐसे सुणि हनुमंत वह विसालरूप दिषायो ज
ब भीम भयभीत होइ चर्णनमे प्रणाम करि स्तुति करी.
तब हनुमंत भीमको भय जुक्त स्तुति करत जाणि वैसो
ही लघु रूप करि सिरसूंघि मिलत भये. जब फेरि भीम
बोले हे कपिवीर रामचंद्रकी सेनामें तुमहूतें कोउ औरअ
धिक दीर्घरूपहो तब हनुमंत कही रामचंद्रहूकी सेनामे
हे. अरु रावणहीकी सेनामेहे. ऐसे सुणि भीम संदेह
कर्यो सो जाणिके हनुमंत कही तेरे संदेह है. ताते मेरी
साथ चलो मै बताऊं जब संग चलतें चलतें एक सरोवर
देषि भीमकही आग्या करोतोमें स्नान करों तब हनुमंतक
ही करो. सो भीमस्नानकरतही डूबत हाहाकार कर्यो ताहि
देषि हनुमंत पूंछि वाकी कमरि सों लपेट निकार्यो.जबभी
मकही मैतो ऐसे सरोवर देष्यो नही. तब हनुमंतकही रा
वणको भ्राता कुंभकर्ण हो ताको रामचंद्र बाणतें काट्यो
जाकोहूकहै सो वर्षाके जलसों भर्योहै सोतोहि दिषावत
हों ऐसेकहि पांवके अंगूठासों पकडि टेढी करि दीनी
सोदेषि भीम सिर कंपाय चकित भयो तबही हनुमंत कही
वासमेंके पराक्रमको पारावार नहीं अबके समेमे तूंहू प
राक्रमीहै. सो धीर्ज छोडियो नहीं. अरु तब तूं सत्रुनसों
जुद्ध कर्ते गर्जना करेगो. जबतेरी गर्जनामे मेरीहू गर्जना
मिलेगी. अरु अर्जुन जुद्ध करेगो. जब वाकी धुजामेबै
ठि वैरीनकों निस्तेज करोंगो ऐसे कहि अंतर ध्यान भये.
ता पीछे भीमहू हनुमंतके मिलनको हर्ष अरु वियोगको
दुष्वता सहित आगेजाइ सुगंध वन देष्यो तहां सुवर्ण
पद्मनी देषी जहांके कमल लेवे लग्यो. जब जक्ष राक्षस या

के रोकिवेकौं सिलानकी वर्षा करी. सो गदा प्रहार करि सिलानकौं षंड षंड करि उनकौं भगायदिये फेरि संष व- जाइ गर्जना करी ताकरि गंधर्वनकौंहू भजाये. तव बव नकौ पालक मणिमंत गंधर्व आयौ ताहि जीति सौगंधि क स्रुवर्णकमल ल्याय द्रौपदीकौं दीये उन पुष्पनकरि द्रौ पदी शृंगार करि बहुत प्रसन्न भई. फेरि युधिष्ठिर परवार सहित घटोत्कचपै चढि नरनारायण आश्रममें जाय च्यारि वर्ष पूर्ण करे उहांते वृषपर्वाके आश्रममें जाय गंधमा दनकौं आये. उहां एक जटासुर राक्षस ब्रह्मचारीकौ रूप धारि इनके साथ बसत भयो. जब घटोत्कच सहित भीम सिकारकौं गयो तब माया करि इनके सस्त्र हरण करि तीन्यो भ्रातानकौं हरिले गयो तहां मार्गमें राजा युधिष्ठि रतो वाकी गति रोकी. नकुल सहदेव सूंकीनके प्रहार करि व्याकुल कर्यो द्रौपदी कोलाहल कर्यो सो सुणि भीम आइ वाकौं यमलोक पहुंचायो ऐसे करि फेरि गंधमा- दनमें आयवसे. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारत सार चं- द्रिकायां अरण्य पर्वणि एकोनत्रिंशातितमोऽध्यायः ॥ ॥२९॥ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥

तापीछे पंचम वर्ष लग्यो जब कैलास देषिवेकौं गये उ हां मार्गमें दिव्य वननके पुष्प लेवेकौं भीम गयो तब य क्ष युद्ध करिवेकौं आये तहां सब यक्षनकौं भीम मल्लजुद्ध करि पटकि पटकि जीते जब उनकौ नायक मणिमान य क्ष युद्ध करिवेकौं आयो ताकौ भीम भुजानसौं पकडि भ्रमायकै पटक्यो सो मूर्छित भयो तब कुबेर आय लडते और यक्षहे तिनकौं निवारण करि इनकौ सनमान कर्यो फेरि कैलास दिषाय बिदाकरे उहांते उत्तरतेही दिव्य रथ कौ सब्द सुणि वाकी तरफ देषतही मातली इंद्रका रथमें

अर्जुनकौं देख्यो जब सबही ठाढे होरहे. तब रथ पर्वत पर्वत मैं उतरि युधिष्ठिरके पास आयो तहां अर्जुन वा रथतें उतरि महाराज युधिष्ठिरके चरणनमैं प्रणाम कर्‌यो तापीछे सबही अर्जुनसों मिलि आनंदित होइ उहां बैठे. जब युधिष्ठिर बोले लोमस मुनि आय तेरो समंचार कहे. जा पीछे कहा भयो सो कहो. जब अर्जुन बोल्यो मोकौं सुरेंद्र अस्त्र विद्या पढाइ कही गुरु दक्षिणा द्यो तब मैं कही आग्या करो सोही द्यों ऐसे सुणि इंद्र बोल्यो पौलो मकालकेय निवातकवच ये घोर दानव हिरण्यपुरवासी देवतानके सत्रु हैं सो ब्रह्माके वरतें देवतानसों तो अबध्य है तातें तुम अस्त्र बल करि इनकौं मारो. जब मैं उनकौ प्रणाम करि आग्या अंगिकार करी. तब इंद्र आपकी किरीट तो मेरे शिरपै धर्‌यो अर भुजानमैं आपके ही हाथसूं भुजबंध बांधे. अस्त्र दिये मातली सहित रथ दियो दिव्य कवच दियो देवतनको संग भेजे जब मैं जाय उनके नगरकौं घेर्‌यो तब उहांतें युद्धको साठि हजार दानव सेना सहित निकसे. तहां उनसों बहुत दिनलों युद्ध भयो तापीछु ब्रह्मास्त्र करिके दग्धकरे फेरि जाइ इंद्रकौं प्रणाम कर्‌यो जब उन विजेको आसीर्वाद दे विदाकियो. तब उहांतें तुह्मारे पास आयो. जातें अब या मातलीको आदर पूर्वक विदाकरो. जब युधिष्ठिर वाको सनमान करि बिदाकर्‌यो फेरि युधिष्ठिरकी आग्यातें अर्जुन अस्त्र विद्या दिषायवेको आरंभ कर्‌यो तब नारद मुनि आइ कही इन अस्त्रनकौं अमानस सत्रुनविना प्रयोग न करणो. ऐसे कहि मनैकियो. तापीछे पांडव गंधमादनतें उतरत भये. तहांतें उतरतें महानवनमैं पर्वत समान भुजंगराजनैं भीमको पकड्यो. वाके बंधनतें भीमहु कहूं हालि सक्यो नहीं. और भाई व्याकुल भये जब राजा युधिष्ठिर

स्तुति करि प्रार्थनाकरी याकौं कैसे छोडोंगे. हम आगैंही दु षितहैं तब नागबोल्यो मेरे प्रष्णको उत्तर दे तब छोडूं जब राजा कह्यो प्रष्ण कीजे. जब नाग कही ब्राह्मण कोण सू द्र कोण मित्र कोण सत्रु कोण पंडित कोण. मूर्ष कोणका इर कोण सत्यकहा असत्य कहा धर्म कहा पापकहा सुष कहा दुष कहा मुक्ति कहा संसार कहा ऐसे नागका दोइ दोइ प्रश्न सुणतही राजा युधिष्ठिर हसतही उत्तरदेत भ यो. जाको निष्कपट तप होइ सो ब्राह्मण जो श्रेष्ठधर्मकौ त्याग करि दुराचारि होइ सो सूद्र उत्तम कर्म करिवेकौं जो उ दिस कहै सो मित्रहै. प्रमाद सोही सत्रुहै बंध मोक्ष जाणै सो पंडित इनको ग्यान नहीं सो मूर्ख मनमें वसिके याको विनास करिवेवालेजे कामादिक सत्रु तिनकोंजी तैसो सू रहै. स्त्रीनके नेत्र कटाक्ष नकरि धीर्ज छोडै सो कायर जामेंजी वनको भलो हित होइ सो सत्यही है. जीमें जीवनकौं बुरोहो इ सोसत्यहू असत्यहै. वेद सास्त्रके अनुकूल जो आचरण सो धर्म और सुपात्रनकौं वा दरिद्रीनको दान और क्षमा यह उत्तम धर्महै उपकारीनसों द्रोह विश्वातघातक आप के पूज्य होइ तिनसौं मनमें प्रभुता राषिवो यह पाप सर्व वस्तुनमें मध्यस्त रहिवो सो सुष इछा विस्तार करिवो सो दुष्ष चित्त अरु आत्मा इनकी एकता करिवो सो मुक्तिहै द्वेष राग युक्त जो बुधि सो संसारहै ऐसे प्रष्णकौं उत्तर दे तही राजा भीमकौ छुटयो देष्यो नाग नजर आयो नहींत्त पीछे विमानमें बैठ्यो कोई देव जयजय शब्द करि पुष्पव र्षा करि राजासौं बोल्यो राजा तूं हमारे वंसको दीपक है मैं नहुष नामा तुह्मारो पूर्व पुरुषहूं तपोबलतें इंद्रासनपायो उहां सब ऋषिनकौं पालकीमें जोये इंद्राणीके भोग ला लसा करीचल्यो तहां आगें जुपेजे अगस्त मुनि तिनकौं

चर्णं सपरस करि सर्पसर्प कह्यो सो अब तासों तब अगस्त
मुनि क्रोध करि श्राप दीयौ तूही सर्प हो तब मै आपके अंत
की प्रार्थना करी तब मुनि बोले तूं भीमकों जब पकडि रा-
जा युधिष्ठिरसों प्रश्ण करैगो तब प्रश्णनको उत्तर सुनत
ही दिव्य देह पावैगो सो हे पुत्र मै तेरे वचनतें दिव्यदेहपा
ई सो अब तुमही जाय विजै को यत्न करो विजय होइगो.
ऐसे कहि स्वर्ग लोककों गयो. नहुषको उद्धार करे पीछे पां
डव औरहू चरित्र करत करत फेरि काम्यक वनकों आये.
तहां श्री कृष्ण नारद मार्कंडेय आय राजाकों अनेक क-
थनकरि समाधानकरि जैसे आयेहे तैसे ही गये.॥ ॥
इति श्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां वनपर्वणि त्रिंसतमो
ऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
द्रौपदीसहित पांडवनको काम्यवनमेसों द्वैत बन आये.
स्रुणि दुर्योधन कर्णकों बुलाय मसलत करी जो आप
त्य सहित आये पांडवनकों देषणे और अपणी राज ल
क्ष्मी दिषावणी ऐसे विचार करि धृतराष्ट्रसों छल करि पू-
छ्यो गाइनके ग्वाल कहेहे. जो गाय बैल पुष्ट बहुत भये
हें तासों आपकी आग्या होइ तो देषि आऊं जब धृतराष्ट्र
आग्यादीनी ऐसे आग्या पाय कर्ण सहित संपूर्ण सेनाले
जनाने सहित द्वैत वनकों गये तहां पांडवनके समीप स-
रोवरके तीर अधिकारीनकों डेरा करिवेकों डेरा करिवेकों
भेजे जब उहां डेरा होतेही चित्रसेन गंधर्व केसेवक निवा
रण करत भये तब यह स्रुणि दुर्योधन युद्धकरिवेकों -
आयो तहां सेना सहित चित्रसेन गंधर्वके अरु कौरवन
कै घोर संग्राम भयो. जब चित्रसेन कर्णादिकनकों वि
रथ करि सर्व भाइन सहित दुर्योधनकों पकडि रथसों बां
धि लेचलेबादीन राजा युधिष्ठिर यग्यदीक्षामें हो सो तहां

अनाथवत कौरवन की स्त्री पुकारत आई. तिनसों सब
वृत्तांत स्रुणि राजा और भाइन सहित भीमसेनकों दुर्यो
धनके छुडायवेकी आग्या करी तब चारों भाई आकास
मेजाते गंधर्वनपै विपरीत बाण धाराकों वर्षाते भये.जब
गंधर्वनकों व्याकुल देषि चित्रसेन पांडवनपें बाण वर्षाक
रि मायासों अस्त्रनकरि अंधकार कस्यो. तब अर्जुन-
आन्यास्त्र करि वाकों दूर कस्यो तापीछे दसलाष गंधर्व
मारे जब चित्रसेन गदायुद्धमें चित्र विचित्र गति कर्तस
नमुष आयो तब अर्जुन वाको मित्र जाणि कोमल बाण
न करि व्याकुल कस्यो जब चित्रसेन बोल्यो हे अर्जुन तूं
स्वार्थ में कैसे मोह पावै है यह दुर्योधन तुमकों लक्ष्मी-
हीन जाणि तिरस्कार करिवेकों आयोहो ताकों इंद्रकी
आग्यासों मै बांधिले जातहों जाको छुडायवेकों तू क्यों
करतब करै है और तुह्मारे दुष्ष देवेको मूलकर्ण भागि
गयो ताकों हेरतहोंसो पायो नहीं ऐसे स्रुणि अर्जुनबो
ल्यो जाकों आपजी तिवे विचारै तावेरीकों और मारिवे-
विचारे यह समर्थ होइ तासों सह्यो जाय नहीं आपुसकी
लडाई मे तो हमपांचवे वेरी सोहै और दूजे सो लडाई हो
तामै एकसों पांचहै जासों और विसेस वार्तामै कहाहै
महाराज युधिष्ठिरकी आग्या छुडायवेकी भई सोमें अं
गिकार करी ऐसे स्रुणि चित्रसेन दुर्योधनादिक भाईनकों
षोलि षोलि युधिष्ठिरकी यग्यभूमि में पटाके दिये. तापी
छे इंद्रलोकमें जाय इंद्रसों वृत्तांत कह्यो जब इंद्रहू अ-
र्जुनके वीरहे तिनकों अमृत दृष्टि करि जिवाये उहां युधि
ष्ठिरहू दुर्योधनको नीचि दृष्टि किये देषि कही हे भाई ऐ
से कुकर्म फेरि माति करियो यह स्रुणि दुर्योधन लज्जाक
रि हृदय विदीर्ण होइ गंगातीरमे आय विचारत भयो

बैरीननें छुडायो याजीवतें तो मरणही श्रेष्ठहै यह निश्चे करि दर्भासन विछाय अनसन व्रतलैके बैठ्यो तहां कोई-क समै छिप्यो हुवोजो कर्ण दुःसासन सकुन सहित आय समझायो पैं दुर्योधन मान्यों नहीं तब पाताल वासी दानवन कृत्या हाथ दर्भासनपें बैठेकों पकडि मंगाय बोलेकि हे दुर्योधन तूं उदासीनता मतिल्यावै युधकी तयारी करि हमतेरी सहाइ करैंगे. ऐसे कहि युद्धमें दृढ चित्त होकरवाइ दानवननें हस्तनापुरकों भेज्यो उहां आइ सभाकरि बैठे भीष्म बोले हे राजा दुर्योधन तेरी कुसल सों बडी षुसीहुई औरतें कर्ण अर्जुनको पराक्रमहू नेत्रनसों देष्यो तासों अबहू पांडवनको विभाग दे कुलकी रक्षा योग्य है अन्यथा कीयें नास होइगो ऐसें कह्यो भीष्मकों सुणि अंगिकार कियो नहीं जबवे उठि आपने स्थान गये तापीछे दैत्यनको बचन यादिकरि दुर्योधन कर्णसों बोल्यो जुवाकरि युधिष्ठिरसों जीत्यो अब राजसूयके धर्मसों युधिष्ठिरकों जीतणों जामें भीम अर्जुन कीसी वाहां दिगविजै करिवेकूं तू समर्थ है सो तूं राजसूय कराय ऐसें कहि राजसूय करावो जब प्रोहित बोल्यो एक सम्राट रहतें दूसरो सम्राट होय नहीं तातें राजसूयकी तुल्य और यग्य करो ऐसे पुरोहितको वचन सुणि राज सूय समानही और यग्य कीयो ता यग्यके समास समै कर्ण बोल्यो हे दुर्योधन रणमें युधिष्ठिरकों मारि तोकों राजसूय कराऊं जब मैं आनंद पाऊं अर्जुनके मारेविना पावहू नहीं धुवाऊंगो ऐसें कर्णकी प्रतग्या सुणि मूढ दुर्योधन आपकी विजैही मानत भयो.
॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायांवनपर्वणिएकत्रिंशतमोऽध्यायः ॥ समाप्तम् ॥ ३१ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥

तापीछे क्रमेमें मृगननें विनती करी हे राजन् शिकारतें हमा
रो वंस क्षीण भयो यह स्रुणि दयाल युधिष्ठिर काम्यकवन
तें अरण्यंध सर आयौ. तहां अरण्यंधके आश्रममें द्रौपदी
कों राषि आप सिकारकों गये. उहां मार्गमें जयद्रथ सेना
सहित साल्व देस विवाहकों जायहो सो द्रौपदीकों एकाकी
देषि रथमें धरि चलत भयो जब द्रौपदी कोलाहल कियोसो
स्रुणि पांचौं पांडव आये तिनसों जयद्रथहू सेना सहित
जुद्ध करिवेकों तयार भयो तब अर्जुनकी बाणवर्षा करिकि
तनेक तो मारेगये कितनेक भागिगये. और भीम गदापात क-
रि जयद्रथकों विरथ करि बांधि युधिष्ठिर पास ल्यायो जब यु
धिष्ठिरसों जयद्रथ कही मैं तुह्मारो दासहों तब भीमसों म
हाराज कही यहहै तो बधलायक पें दुरबल कों देषि याकों
जीव दान द्यो ऐसें युधिष्ठिरकी आग्या स्रुणि भीम छोड्यो
पतिनकी जयतें हर्षित द्रौपदी तासहित पांडव अपने आ-
श्रमकूं आये. तापीछे जयद्रथहू गंगातीर तपतें महादेव
कों प्रसन्न करि सब पांडवनकों जीतो यहवर मागत भयो
जब महादेव कही च्यारि पांडवनकों एकदीन जीते गो औ
र श्रीकृष्णको मित्र अर्जुन जानें मोहिकों जीत्यो तासों औ
र कौन जीतें ऐसें शिव वरदान दे अंतर ध्यान भये. जब
जयद्रथहू वर पाय हर्षित पुरकों आयो और वनमें रहते
पांडव तिनसों एकब्राह्मण आय बोल्यो एक मृग मेरी
अरणीकों सींगमें अटकाय लिये जातहे ताहि तुम ल्याय
द्यो तब पांडव धनुष बाणले वा मृगके पीछे लगे. सोमृग
कों देष्यो नहीं तृषालगी तब कोइ पर्वतके तटमें नकुलज
ललेवेकों गयो सो आयो नहीं जब औरहू गये तिन सब
नके पीछे राजा युधिष्ठिर गये सो चारोनकों जलकी तीर
अचेत गिरे देषे. तब राजा विचार्यो यह कहा जबहीआ

काश वाणी भई. हे राजा मैं जक्ष हौं सो मेरे प्रश्नको उत्त
र दिये विना जलपीवै ताकी मृत्यु होइ जासी तूं उत्तरदे.
पीछे जलपी. यह सुणि युधिष्ठिर कही बांधवनकौं मरेदे
षि जल पीवेकौं कहा कामहै तौ भी तुह्मारे प्रश्नको उत्तर
द्योंगो. ऐसे कहतही प्रश्न वाणी भई. तिनको उत्तरहू
राजा देत भयो देवकोण सद्गुरुके वचनतें जाण्यौ आ
त्मा सोदेव देवकहा प्राचीन कर्मसो देवताकौं सुर असुर
उलंघि सके नहीं. धन्यकोण बरोबरके जाकी सेवाकरै.
सो धन्य. सुचिकौण सत्यवचन रूपी गंगाजल जो न्हाय
सो सुचि मोक्षकहा. सर्व वासना रहित जो चित्त सोही
मोक्ष. लक्ष्मीकहा सर्व संतोष सोही लक्ष्मी. विपति कहा.
विपुल ऋण सोही विपति ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ को मोद
तेकिमाश्चर्य कावार्तकिः पथस्मृतः ॥ ब्रूहित्वं धर्मराजेंद्र मृ
ताजीवंतिबांधवाः ॥ ११ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे शाकंपच
तिस्वगृहे ॥ अनृणीचा प्रवासीच सवारीचरमोदते ॥२॥
अहर्निशंच भूतानि गच्छंतिचयमालये ॥ शेषास्थावर मि
च्छंति किमाश्चर्य मतःपरम् ॥३॥ अस्मिन् महामोह म-
येकटाहे सूर्याग्निनारात्रिदिवेंधनेन ॥ मासस्यदर्वीपरि
घट्टनेन भूतानिकालः पचतीतिवार्ता ॥४॥ श्रुतिर्विभि-
न्नास्मृतयोपिभिन्नाः नैको मुनिर्यस्यवचः प्रमाणम् ॥
धर्मस्य तत्वंनिहितंगुहायां महाजनोयेनगतः संपथा ॥५॥
॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ हे राजा युधिष्ठिर आनंदकौं कौ
न पावैहै आश्चर्यकहा वार्ताकौनकौं कहिये मार्गकहा ऐ
से प्रश्नसुणि राजा बोल्यौ जा पुरसके रिण नहीं परदेस-
गवन नहीं करै अरु च्यार घडी दिन रहेहू आपके घरमैं सा
कहू पचायके षाय सो हर्षित है ॥ १ ॥ राति दिन प्राणी
नकौं यमके ग्रह जातदेषि आपकौं थिर मानै याशिवाय-

आश्चिर्य कहा ॥२॥ यासंसारमै महामोहहै सोही लोक डाहहै सूर्यअग्निहै रात्रिदिन इंधन है महीनाहै सोहीकों चाहे ता करि काल पुरष प्राणीनकों पचावेहै. यासिवाइ वार्ता कहा ॥३॥ श्रुतिमैहू मार्ग जुदे जुदे स्मृतिहूमें जुदेमुनिहूके अनेक वचन अरु धर्मको तत्व गुफामै थापित कियो तासो बडेजन जामार्ग सोचले सोही मार्ग ॥५॥ फेरि आकास वाणी भई राजा. मैं उत्तरतें प्रसन्न भयो सो मेरे वरतें तेरे इन भ्रातानमेंते एक जीवो. जब राजा कही नकुल बहुत प्यारोहै सोजीवो. सहोदर भ्रातानतें दुमात भ्रातामें अधिक प्रीति देषी धर्म प्रसन्नतासों साक्षात होइ बोल्यो हे राजा मै धर्महों तूं मेरो पुत्र है सो तेरे मुषरूपी चंद्रमाके वचनामृत ते मेरो हृदय अति सीतल भयो मैंही तोकों देषिवेकों हिरण होइ अरणी हरी भ्रातानमे प्रीति देषिवेकों जलपान करते इनकों हरे. अब तेरी दया धर्म सत्यतें संतुष्ट होइ वर देतहों तूं विजैकों पावेगो धर्म ब्रद्धि रहो सर्व भ्राता जीवो और मेरी कृपातें अलक्षित होइ एक वर्ष विराट नगरमें वास करो. ऐसे कहि अरणी देय धर्म अंतर ध्यान भयो. तापीछे जीये हुये भ्रातानकों संग लेइ युधिष्ठिर आश्रम आय ब्राह्मणको प्राण समान अरणी देय विदाकियो ताउपरांत राजा बारह वर्ष पूरे भयेजाणि धौम्य मुनिकों अग्निहोत्र सहित एकवर्ष वास करिवेकों द्रुपद नगरकों भेजत भये. इंद्रसेन आदिवीरनकों रथादिक परिवार सहित द्वारिकाकों भेजे. आपगुप्त विहारकरिवेकों तयार भये. ॥

॥ दोहा ॥

॥ भाषाभारतसारयहहै वनपर्वस्फुऐन ॥ रावचांद सिंघकोहुकम पायकियोकविचैन ॥१॥ इतिश्रीभा०भा०सा०चं० वनप० द्वात्रिंशत्तमो०३२

इति भाषाभारतसार वनपर्व समाप्तम्

बल्लभ
राजा विराट
कंकभट

कीचकवध.
भीम.
कीचक
भीमकीचक बन्धु
वध कर
ते हैं.
भीम.
द्रौप.
कीचक बं
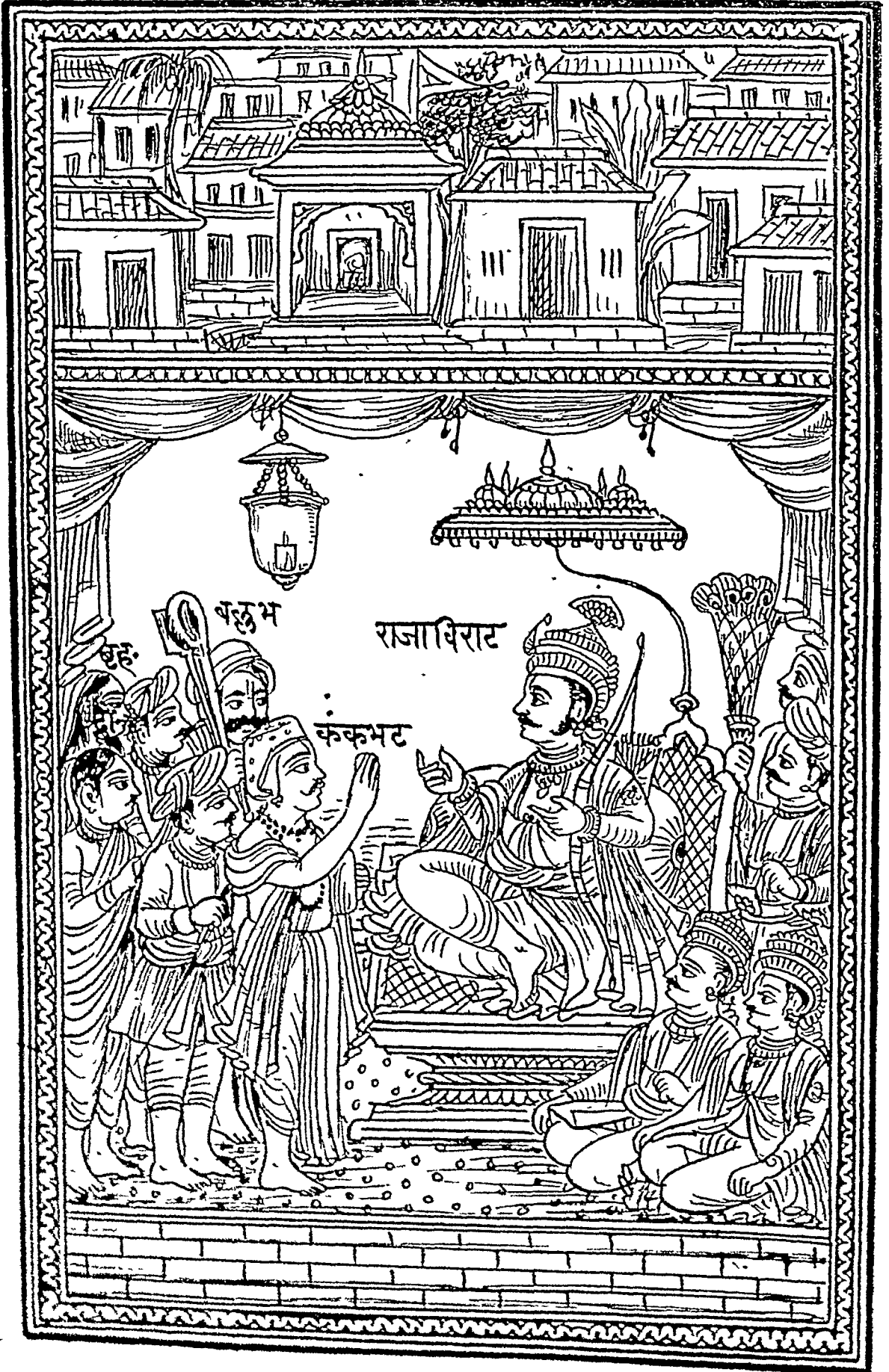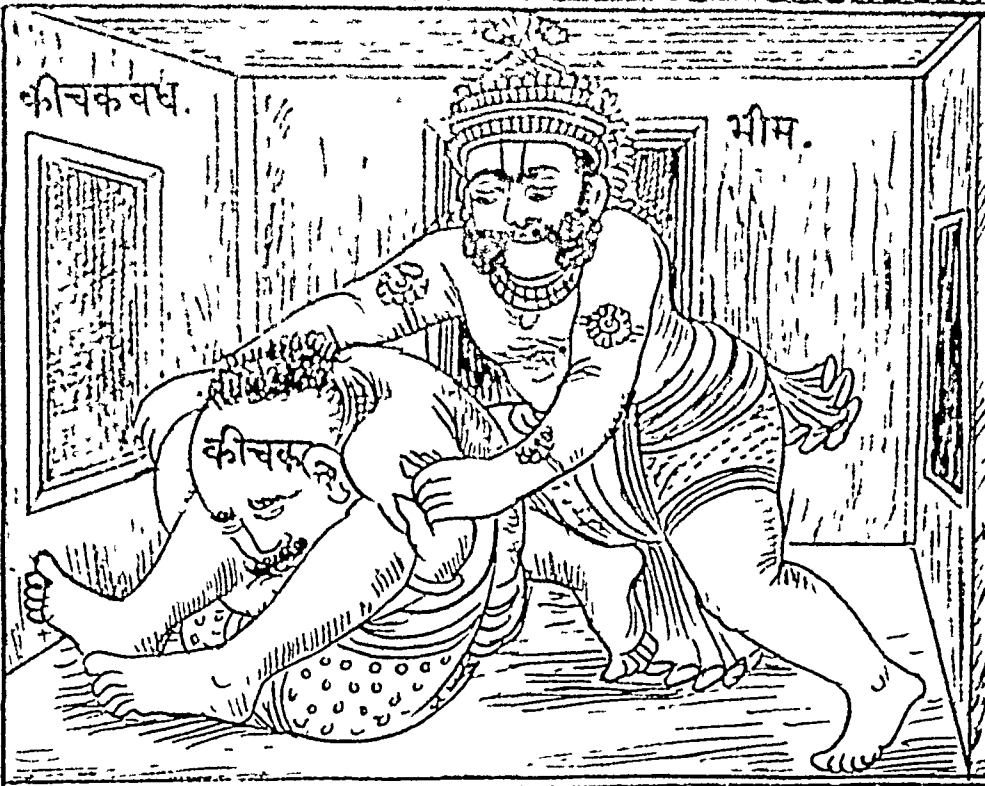
विराटपर्वचित्र ३
गोहरण.
उत्तरकुमार
अर्जुन
कौरवसैन्या.
उत्तर
कु

अथभाषाभारतसारविराटपर्व आरंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
ताउपरांत पांचो भ्राता द्रौपदी सहित विराट नगरके समीप गये उहां अर्जुन बोल्यो आपां विराटके पास गुप्त भयेको ए विधि करि रहेंगे. तब युधिष्टिर बोले मैंतो विराटकों चोपड़ि षिलायवेवालो कंक नामा ब्राह्मणहों ऐसें कहिके रहुंगो भीम बोल्यो मैं बल्लव नाम रसोईदार रहोंगो अर्जुन बोल्यो मै ब्रहन्नटा नाम धरि राज पुत्रीनको नृत्यगानसिषाइवे वालो होइ रहोंगों सहदेव बोल्यो मै तंत्रपाल नाम करि गायन बैलनको गवाल होइ रहोंगो नकुल बोल्यो ग्रंथक नाम करि अश्व परिछा वालो होइ रहोंगो. द्रौपदीबोली मालनी नाम धरि सैरंध्री होइ विराट पतनी पास रहोंगी. ऐसे मंत्र हुवे पीछे धौम्य प्रोहित राजाकों राजसेवाकरिवो कहि अग्नि होत्रले द्रुपद नगरकों गयो. और इंद्रसेनादि सकल परिवार द्वारकाकूं गये तापीछे पांडव समी वृक्षके विवरमें आपके सस्त्रनकों धरि एक मुरदा उहांलटकाय ऐसे गुप्तकरि परस्पर संकेत नाम सबनके धरे जय १ जयंत २ विजय ३ जयसेन ४ जयद्बल ५ ऐसै गुप्त संग्या करि युधिष्टिर ब्राह्मणको वेस करि रत्नके पासाले विराटके पास सभामें गये तिन्हे देषि राजा पूंछ्यो तुमकोणहो तबयुधिष्टिर बोल्यो धर्मपुत्र राजाकी सभा चतुर कंक नामा ब्राह्मणहों वे राज्य भ्रष्ट भये पीछे कहा जाणिये कहांगये. जासों तुह्मारे पास जीवका निमित्त आयोहों जब विराट बोले राजा युधिष्टिर मेरो

मित्रहो सो वाकों चौपड़ि षिलावो होतेसे मोकों चौपडि षि लाई आनंद पूर्वक रहो ऐसे कहि उनकों रहिवेको स्थान जीवका वतावत भये. तापीछे दूसरे दिन भीमसेन कौंचाकुर छीले रसोईदारको रूप करि गयो ताको राजा पूंछ्यो तू कौणहै जब कह्योमें बल्लव नाम पाक विद्यामें निपुन हौं और बाहुबल मल्ल युद्धमेंहूं निपुन हों तब राजा सनमान करि वा माफिक बाहूकों राष्यो तापीछे द्रौपदी विराटकी राणी पास सैरंध्री वेस करि गई तासो सैरंध्री अधिकार माग्यो जब सुदेस नाम हाराणी याको अद्भुत रूप देषिकै बोली हे सुंदरी अति रमणीय तेरी मूर्तिहै तातें सैरंध्रीके कर्म जोग्य नहीं. तूं सर्वके नेत्रनकी भाग्यकी अवधिहै ब्रह्माकी रचनाकी अवधि है तेरे अंगनकी कांतिसर्व उपमाननको हंसतहै और सामुद्रिक चिन्ह तोको चक्रवर्तीकी भार्या कहत हैं तोकों देषि पुर्षनको धीर्ज जात रहैहै सोतूं मेरे भरतारके आगे अथवा और पुर्षनआगे कैसे रहैगी. जब सैरंध्री बोली मोको राजा विराट और पुर्षको उस्पर्स नकरि सकैगे. मेरेपति पांच गंधर्वहै सो अलक्षित रछा करैहै. जोकोई वक्र दृष्टि करि देषे ताहीकों मारे औरमे कोउके पांव धोउनहीं उच्छिष्ट छीवोंनहीं ऐसे कहि सुदेष्णा वाकों सुगंध अधिकारपे राषी मालनी नाम धर्यो तापीछे सहदेव तंत्रपाल नाम धरि गोपाल वेष करि विराट पास आयो ताकी परिच्छा करि राजा वृषभनको अधिकार दियो तापीछे केसपास बांधि कंचुकी पहरि स्त्रीजन वेष अलंकार पहरि किरीटकों छिपाय अर्जुन संडवेस करि विराट पास आयो जब राजा पूंछ्यो तुमको णहै जब बोल्यो बृहन्भट नामधारी देवगंधर्व शिष्य संगीत विद्या निपुणहों ऐसे सुणि विराट उत्तराकौं संगीत सिछ्या

गुरू करि राख्यो तापीछे नकुलहू ग्रंथिक नाम धरि सालि
होत्री वणि आयो ताकों राजा अश्वाधिकार दियो ऐसैंक्ष
ष पूर्वक वसत सवनकों च्यारि मास भये जव ब्रह्म नामउ
त्सव भयो तामें चारो दिसानके. मल्ल आयो ताकी मल्ललीः
ला देषि कोईही युध करिवेकों समर्थ भयो नहीं .जव विरा
टपुत्र लज्जित होइ वल्लवसों कही या मल्लकी गर्जना निवा
रण करो तव राजाकी आग्या आपको कौतुक भुजानकी
षाजि करि भेस्यो हुवो वल्लव वाके सनमुष जाय षंव ठोके‑
ताके सब्द करि पर्वत विदीर्ण भये प्रथवी कंपायमान भई
जीमूतको गर्व जात रह्यो तापीछे वह मल्ल गर्जना करत आव
त भयो ताको भीम उठाय फिराय प्रथीमें पटकि मर्दन कः
र्‍यो वाको पिताजीमूत जाल मल्ल अनेकनकों एकही काल
में उडाय षंड षंड करि देसो जीमूत नाम मल्ल वल्लवकी स्तु
ति क्षणि लजित भयो राजा विराटहू प्रसन्न होई वापे सुव
र्णकी वर्षाकरी देवता पुष्पनकी वृष्टि करी ऐसे सिंघनकों हा
थीनकों युद्धमे जीति राजाकों प्रसन्नकीयो ऐसे नित प्रति रा
जाकों हरष वधावत दसमास वितीतभये. ॥ ॥इति
श्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायां विराटपर्वणि प्रथमोध्यायः ॥
॥१॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
तापुरीमें स्तदेष्णाराणीको वडो भ्राता कीचक नामा एकसौ
छह १०६ भ्राता सहित रहे ताने द्रौपदीको देषी अतिरूपः
वती स्तदेष्णाकी सैरंध्री जाणि वाहू कामातुर भयो जवभ
गनीसों नम्र होइ वोल्यो हे स्तदेष्णा तेरी मालनी नाम सैरं
ध्री मोकों भोगके निमित्त दीजे तव स्तदेष्णा वोली हे भ्राता
ऐसे मति वोलो याके पांच पति गंधर्वहै सो गुप्त रक्षा करें
हे जो पाप दृष्टि देषे ताकों मारे औंर धर्महू देषि परस्त्रीमें
चिंतन करणो रावणके दस सीसकटे अरु सीता हाथ न

आई ऐसे सुणि कीचक मौन होइ पीछे कोईक समेमें सै रंध्रीकों एकांत पाय बोल्यो हे सैरंध्री तूं दासी पणो मेरी भार्या होहु तोसों मेरो मन आसक्तहै ऐसे सुणि सैरंध्री बोली हे कीचक मोमें पापदृष्टि करि मति देषै मेरे पांच पति गंधर्व हैं सो मारेंगे. जब कीचक बोल्यो मैं गंधर्वनतेंहू नमरों अरु जमहूतें नडरों ऐसे सुणि सैरंध्री मौन गहि. तब फेरि कीचक सुदेष्णासों बहुत प्रार्थना करी. जब सुदेष्णा कही तूं कछु कउछव करि मैं याकों मदिरादेय तेरे भौन भेजूंगी. ऐसे सुणि कीचक आपके घर जाय उछव रचना करि तब सुदेष्णा छल करि मद्यपात्रदे सैरंध्री बहुत नटी तोहू भेजी. जब सैरंध्री संध्यासमें सूर्य देवसों प्रार्थना करी कीचक भौनकों गई तब सूर्यहू याकी रक्षा करिवेकों एक राक्षस संग भेज्यो तहां कीचकहू याकों आवत देषि सनमुष आय हंसिकै बोल्यो हे सुंदरी आवो इहां लज्जाछोडि मोसों आलिंगन करि यह सब संपति दास दासी भवन सहित अंगिकार करि मोकों प्रसन्न करि ऐसे कहतें कीचककों सील लता द्रौपदी दावानल समान होत भई. तोहू बलात्कार करि वस्त्रषेंचिवे लग्यो. जब द्रौपदी वाकों पटकि राज मंदिरकों चली तब कीचक पछाडिसों जाय वाके केस पकडि लात मारी जब द्रौपदीकी देहतें सूर्यको भेज्यो राक्षस निकसि कीचककों मूर्छित करि प्रथवीमें पटक्यो तहां राज सभामें बैठ्यो भीम द्रौपदीकी यह दसा देषि क्रोध कर्यो ताकों युधिष्ठिर संग्या करि रोक्यो तापीछे द्रौपदी उठी रजसों लिपटि भई राजसभा पतिन सहितही तहां जाय बोली हे विराट राज तुमारी नीतिकों देषतहों तुह्मारे देषत मोकों नीच लात मारी जब विराट बोल्यो हे मालनी तेरे कीचकके कलह एकांतमें कौन कारणतें भयो तब द्रौपदी बोली दे-

व रूपी पांच गुप्त वल्लभनमें वडो क्षमावान महोइ तो ऐसे
कौणकरे ऐसे सुणि युधिष्ठिर बोले जो तेरे पांचों पति गंधर्व
नमें जयंतकों बलवंत मानेहै सोही तेरी वांछा सिधिकरेगो.
अब स्वस्थानकोंजा महाराजको द्यूत क्रिडामें विघ्न मतीकरे
ऐसे सुणि द्रौपदी क्रोध गुप्तकरि सुदेष्णा राणीपें जायकी
चककी दुच्चेष्टा कही अरु पर पुरुष स्परस दूषित वस्त्रहे ति
नकों धोइ स्नान करि रात्रि समें पाक साला में जाइ भीम
सों आलिंगन करित भई तब भीमहू जागियासों द्रढ आलिं
गन करि याके हृदयकी दुष्प दूरि कीयो तब द्रौपदी बोली
तुम प्रथम अपराधी दुःसासनकों मार्यों नही तातें राजा
विराटके चंदनके घसि बेतें मेरे हस्त चिन्ह युक्त कठोर भये
है अरु कीचकहूके संगहि पाद प्रहार कर्यौ तोहू तुम याकों
शीघ्र दंडद्यो नहीसो तुह्मारो हृदय क्यों विदी र्ण नही होत
है यह सुणि बांधवनकों दुष्य स्मर्ण करत निस्वास नाषत
निज भुजानकों देषत भीम बोल्यो हे प्रिये, महाराजके क्षमा
मंत्रतें बंधेहै तातें सस्त्र धारि शिलामय देवताकी नाही.
निष्फल पराक्रमी हैं सो अब तुम पुर बाहर नृत्य मंडपहै ता
में कीचकसों विहारको संकेत करो तहांमें वाको मारि पिंड
की नाही करि जमके मुषमें ग्रास धरोंगो. ऐसे कहि द्रौपदी
कों सीष देय आप नृत्य मंडपमें जाइ सूतो तब द्रौपदीहू
भीमके ऐसे वचनतें संतोष पाय सुदेष्णाके मंदिर गईता
पीछे कीचकहू दुसरे दिन सुदेष्णाके मंदिर आयो ताकों
द्रौपदी सनेह द्दष्टिसों देषि मधुर वचन बोली हे सुंदर तुम
जन समूहमें मोकों काम वार्ता कही तातें कोप कीयो अबतुम
रात्र समें पुर बाहर नृत्य मंडपमें आवो तहां मैंहू आउगी ऐ
से वचन सुणि कीचक हर्ष पाय बोल्यो आजमेरो पुन्य उदे
भयो जो तुम प्रसन्न होइ बोलत हो ऐसे द्रौपदीसों कहि

कीचक हर्ष सहित निज भवन जाइ सुंदर भेष धारि संध्या समय नृत्य मंडपकों चलत भयो तहां मार्गमें अपसकुनहू कौं नहि गिणत भयो तापीछें सैरंध्रीको रूप धारें भीमसेन सोवत हो ऐसें नृत्य मंडपके द्वारतें संगके जनहें तिनको विदा करि भीतरि जाय सुंदरी कहां है कहि अंधलो भीमको सपरस करि बोल्यो मैंतो तेरे कोमल अंग संगके लोभतें भूषणहू धारै नहीं अरु तेरो अंग कठोर कैसे है ऐसे वाके वचन सुणि अरु द्रौपदीके अनादरतें भीम क्रोधाग्निसों प्रज्वलित भयोही हो अरु वाको रूप अद्भुत देषि ऐश्वर्यजाणि आपको पराक्रम प्रकट करि वाके स्कंधनपें हाथधरि जुधको आरंभ कियो परस्पर जुध करतें चरण प्रहार तें प्रथवी कंपित भई अरु कर प्रहारतें गगन गर्जत भयो ऐसें जुद्धको देषि निसाचर चकित भये तहां भीमसेन जुध करतें वाके हृदयमें मुष्ट प्रहार करि पटकि वाको हृदय विदीर्ण करवाके भीतर हाथ पांव सिर सबही अंग धसाइ पिंडाकार करि रंगमंदिरके द्वारें भरि ताके आभूषण विराटके भवनमें नाषि द्रौपदीसों कहि पाकस्थानमें जाय सयन करत भयो तापीछें वाके आभूषण देषि राणी सुदेष्णा रुदन करत एकसों पांच १०५ भाइन सहित नृत्य मंडप जाइ कीचककों मृतक देषि वाकी भार्या सहित अति विलाप करत भई तहां संपूरन कीचकके भ्राता थवके लगे मालनीको हर्षित देषि कही यह निज पतिनसों मरायो दग्ध करिवेकों सैरंध्रीकों षेंचत भये तब वानें विलाप कियो सो सुणि बुधिवान भीम कोट कूदि कालो कंबल ओढि रजसों अंधिकार करि गर्जना करत वृक्ष उपाडि धावत भयो. ताकों जमतुल्य आवत देषि गंधर्व भयतें बचायवेकों द्रौपदीकों छोडत भये. जब भीमसकल कीचक भ्रातानकों वृक्षसों मारि द्रौपदीकों समाध

करि जा मार्ग होइ गयोहो ताहि मार्ग होइ पाकसालामैं आयो मालनीको आवत देषि पुरवासी पुरष गंधर्व भयतें आषि मूंदत भये. अरु सकलकीचक भ्रातानको गंधर्व हत सुणिराजाहू भय पाइ मालनीसो कछू कह्यो नहीं वह अंतःपुरमैं गई जब राजाकी आग्यातें राणी सुदेष्णा वाको सीष दीनी. सो सुनि मालनी कही हे महाराणी आप तेरह दिन और कु क्षमाकरो तापीछे मेरे पति आइ हर्ष सहित मोकों निज भवन लेजाइगे. अरु विराट महाराजहू उन सहित विजय पावैगे. ऐसे सुणि महाराणिहू क्रोध तजि क्षमा धरि मौन गही. ॥　　॥ इतिश्री भाषाभारतसारचंद्रिकायां विराटपर्वणि द्वितियोऽध्याय ॥ २ ॥　　॥ वैशंपायनउवाच ॥　॥ तापीछे पांडव कहूहूं न देषै ऐसे दूतनके मुषसों सुणिराजा दुर्योधन चिंता करि सभामें भीष्मादिकनसों बोल्यो अब पांडव कहां पावैंगे. मोकों बडी चिंताहै ऐसे कहतही मत्स्यदेसतें आयेजे दुत ते बोले रात्रिमें गंधर्वननें एकसौं छह १०६ कीचकनकों मारे सो सुणि द्रोणाचार्य बोले. कीचक बध भीमतैंही जोतिसी कहेहै. हिडिंब बक वध वाहीतें कहेहै सो भयोही. ऐसें सुणि सकुनी बोल्यो द्रोणादिक भोजन तो तुह्मारे करेहै कथा पांडवनकी करतहै. राज्य भ्रष्ट नष्ट पांडवनकी परिक्षा करवेतें आपके दोषकों नहीं जाणतहै तब भीष्मबोले जहां पांडव रहे तहां विप्र मंडली वेद धुनि करतहै. अनेक अग्नि होत्र अषंड रहतहै समय समयमें मेघ अषंड वांछित दृष्टि करतहै. सूर्य सीत गरम समानही करतहै गाइनके अपार दूध होत हैं. लता वृक्ष वनस्पती स्वादिष्ट असंख्या फल फलतहै. वापी कूप तडागादिकनमैं अमृत तुल्य जल रहत है प्रजा धर्ममें रत रहत है राजाहू पुत्रकिसी नाईं प्रजाकों पालन करतहै ऐसे सुणि त्रिग

र्त नाथ सुसर्मा नाम राजा कर जोडि कुरुराज दुर्योधनसौं
बोल्यो मेरे दूत ऐसे समस्त लक्षण युक्त मत्स्य देसको क
हतहै ताते धर्म पुत्र तहांही निश्चै वसतहै परंतु कौण उ-
पायतें जाणेजाय अब एक सल्लाह है. मत्स्यराज नगर
तैं गो हरण करै जो तुह्मारे सत्रु तहां होइंगेतो गोहरण
मैं रोसतें प्रगट होइंगे. और सब नहीं होइगे तो अर्जुन तो
अवस्यही प्रगट होइगो. अरु उहांहू प्रगट न भयेतो जगतमें
पांडव नहींहै यातें अपार संपत्ती सहित मत्स्य देसको हर-
ण क्यों न करिये. बलवंत कीचकही मत्स्य राजाको प्रधान
सेनापतिहो सोतो भ्रातान सहित गंधर्वनकी कोपाग्निमें
पतंगज्यों भस्मगये. ताते मत्सनाथ इकलोही है तातें बांध
वसहित ताता युधकरि एक तरफतें गोहरण करोंगो वा
के ऐश्वर्य मत बलही नगरक्यों उद्यमतें तुम अंगिकारक
रौ ऐसै सुसर्माके वचन सुणि कर्ण दुस्सासन सकुनी पा
पबुधितें दुष्ट सुसर्माके विचारकों अंगिकार कियो. ताहि
सुणि भीष्मादिकननें निवारण कियो सो दुर्योधन मानी
नहीं. सुसर्माकों बुलाय कही. आजि दक्षिण दिसाकोजा
य तुम गो हरण करो. प्रभातकालमेंहूं सकल सेनासहि
त उत्तर दिसाकी गोहरण करोंगो. ऐसै दुर्योधनकी आ
ग्यातें त्रिगर्तनाथ विराट नगरतें दक्षिण दिसाकी सकल
गोहरण करि फिर्यो वाही दिन धर्म नंदनकों अग्यात व
र्स समाप्त भयो तादिनही. सकलग्वालकोलाहल करत
विराटसौं आइबोले कीचकनसौं पराजय पायौहो सोही
त्रिगर्तनाथ आइ अपार सेना सहित गोहरण करजातहै
ऐसै सुणि विराटराज अष्ट सहस्र रथ ८००० एक लक्ष
अश्व १००००० दशसहस्र सुवर्णघंटा १०००० करिमंडित
त गज असंख्यात पैदल सहित राजा युद्धकों चलत कंककों

धुज पताका सहित रथ दियो तब कंक बोल्यो हे महाराजब
लुवहू अनेक वीर जीते है तातें याहूकों युध जोग्य रथ दीजे
ऐसें सुणि वल्लवहू कों दिव्यरथ दियो. अरु संब सूर मदरा
श्व पुत्रनकरि युक्त विराट राजा सेना सहित सुसर्माकों गो
हरण करि जात देख्यो तब सुसर्माहू गाइनकी रक्षा करि
विराटसों जुध करिवेकों फिर्यो जब दोउ सेना सहित जुध
करत भये. तहां दोउ सेनाकों रुधिर लिप्त देषि संग्राममें अ
संख्यात अश्व रथ गज पयादेनकों षंड षंड करि अनेक रु-
धिर नदी प्रगट करी तहां सुसर्मा विराटकों विरथ करि मूर्छित
कों रथपें बांधि ले चल्यो अरु गोधनकों आगे करि विजयके
वाजा वजाये इतै विराट राजाकी सेना भंजित देषि धर्म
नंदन भीमसों कही हे भ्रात मत्स्य राज आपने देषत सत्रु
नके वस्य भयो यह जोग्य नहीं. ऐसे कहि युधिष्ठिर बाणन
तें सहस्त्र वीर मारे भीम सातसों रथी मारे नकुल सहदेव
सहस्त्र रथी मारे अरु भीमहू तेरहवरससों छह दिन-
सिवाइ गये जाणि रथसों कूदि सरल वृक्ष उपाडि तातें अ
संख्यात वीरनकों मारे. तब वृक्षकों छिन्न देषि गजसों गज
अश्वनसों अश्व चूरण करत सुसर्मापास पहुंचि ताकी
बाणधारा सहित विरथ करि केस पकडि बांधि लियो अरु
विराटको छुडाय त्रिगर्त राजकों युधिष्ठिर पास ल्याय शिर
छेदन करिवे लग्यो तब सुसर्मा कही हे धर्म नंदन मैं तेरो
अमोल्य दास हों भीमतें मेरे प्राण वचावो ऐसें कहतही
सुसर्माको शिर मुंडितकरि युधिष्ठिरकी आग्यातें छोड्यो
जब सुसर्मा जीव वचाय नगरकों गयो भीमसेन मुर्छित
विराट राजाकों रथपें चढाय चेत कराय बोल्यो हे महाराज
तुम्हारो सत्रु त्रिगर्त राज जीव बचाय भाजि नगरकों गयो.
तुम्हारो विजय भयो अब हर्षित गोधन नगरकों जात है सो

देषौ ऐसे कहि विराट भूप कंक बल्लवकौ सरवस्व दे करि च-
रण प्रणाम करि तिनकौं नगरसें भेजि विजय कहाइ रात्रकौं
तहांही वास कियौ ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रि
काध्यां विराटपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥
॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ तापीछे प्रभातही
गो पालनको नायक जननीपास उत्तर कुमारकौं देषि गद
गद वाणीसौं बोल्यौ हे राज कुमार राजा दुर्योधन सकल
सेना सहित आय उत्तर दिसातें गोहरण कियो महाराज
तो दक्षिण दिसा वोर गोधन छुडायवेकौं गयेहैं तातें तु
मही रक्षा करो. ऐसे कहि भुज दंडनकौं निरषत हसि
माताके समीप बोल्यौ जबलौं मेरे बाण चलत नहीं तबलौं
हे गोपाल सत्रु हर्षित हैं जो मेरे जोग्य सारथी होइ तो मैंहूं
दुर्योधनकौं अर्जुनलौं भयभीत करौं ऐसे कहि सुदेष्णा
बोली हेपुत्र उत्तराके पास ब्रह्नलाहै सो षंडबदाहकेस
मै अर्जुनको सारथी भयो हो सो तेरे सारथी होवे जोग्य है
जोवह मेरो कह्यो नही मानें तौ उत्तराकौं भेजो याको क
ह्यौ मानेगो. ऐसे कहि उत्तराकौं भेजि ब्रह्नलाकौं बुला
य वहुत जतनतें सारथीपणो कबूल कराय कुमारिकान
के हाथ सुवर्णमय कवच पहराय उत्तराबोली हे ब्रह्नला
उत्तर कुमारको सारथी होई कौरवनकौं जीति मेरी पूतलि
का निमित्त चित्र विचित्र वलपाइयो ऐसे कहि सारथी
होइ ब्रह्नला उत्तरकौं रथपैं चढाय तुरंगनको वेगतें चलाये
अरु सत्रुनकी सेना देषि समसान समीप समीवृक्ष निक-
ट जाय विराट नंदन ब्रह्नलासौं बोल्यौ हे ब्रह्नला असंख्या
त रथ तुरंग गज पैदलन सहित भयानक भीष्म द्रोणाच
पाचार्य अश्वत्थामा कर्ण दुर्योधन सकुन दुःसासन इन वीर
नतें भयंकर सैन्य सागर देषि हृदय कंपित है तातें जम-

पुरीके मार्गतें रथकों फेरो ऐसे सुणि भयभीत उत्तर कुमार
तें ब्रहन्नटा बोल्यो हे राज पुत्र संग्रामसें कायरता करि याज
न्म पर्यंत शूर वीरनकी सभामें लज्जायमान होइगो कीर्ति
तो युगांत पर्यंत स्थिरहे देहतो क्षण भंगुरहे यातें धैर्य धरो
निज कुलकों कलंक नलगावो सरीरकों सस्त्र प्रहारसों जर्जर
करे विना नंदन वनमें देवांगनाको विहार दुर्लभहे माता भ.
गनी स्त्री जनके आगे ऐसी प्रतंग्या कही मैं दुर्योधनकोंजी
तोंगो. सो अब भाजिके लज्जायमान होय जी वेकों धिक्कार
है ऐसे सुणि धनुष छोडि व्याकुल विराट पुत्र बोल्यो मेरेपी
छे कीर्ति कहां सुष देय स्त्रीजनके निकट निज भुजबलवर्ण
न कौंण नहीं करतहे अनेक सस्त्र प्रहार करि प्राण हरवेवा
रो जुद्ध कौण करे द्रोण भीष्म कृपकर्ण अश्वत्थामा दुर्योध
नादिक कौरव बाण वर्षा करत इंद्रहूकों सभय करे ऐसे क
हि सुष्क मुष होइ त्रास पाय रथतें कूदि भज्यो ताकों ब्रहन्न
टा पकडिवे कों दौड्यो तिनकों देषि कौरव वीर अट्टाट्टहास
करत बोले भाजते राजकुमारकों अरुण वर्ण स्त्री भेष धरे
विषरे केंस देषि कही यह नटसो कौणहे सो सुणि द्रोणकृ
प भीष्म परस्पर बोले स्त्रीवेस धारि गुप्त मूर्ति गजेंद्र गति
महा भुज यह अर्जुनहीहे बाण वर्षा समयमें वेष छोडे
गो. ऐसोंही अन्यवीरहू कौतिक देषिवेकों निश्चल भये केस
गहे षेंचती ब्रहन्नटा सों उत्तर दीन होयबोल्यो मैं तोकों रथ
अश्व गज मणि माणक्य भूषण यथेच्छि द्यूंगो जैसे जीवतों
जननीपें पहुंचों तैसें करि मोकों गोधनसों प्रयोजन नहीं ऐ
सें सुणी ब्रहन्नटा बोल्यो हे राजकुमार जो क्षत्री शत्रुकी ह
री गाइनकों छुडायेविना प्राणनकी रक्षा करे तोकोंधिक्कारहै
जीवत अपकीर्ति होइ मरे नर्कमें पडे सत्रुनको नास करि
गायनकों छुडाय जीवें तो ताहीकों जीवो सफलहे नहींतो

रणमैं मरण पाइ सूर्य मंडल भेदि ब्रह्मलोक जाय ऐसौ म
रण श्रेष्ठ है ऐसै सुणि उत्तर कुमार बोल्यो गीत वाद्य नृत्य
मैं निपुण ऐसै नपुंसकके संगतौ रणमैं प्राणही जाय अरु
गोधन आवे नहीं. ऐसो नीति विरुद्ध कर्म कौण करै तब
ब्रहन्नटा बोल्यौ हे राजपुत्र मैं अर्जुन हौं जब उत्तर कही मैं
अर्जुनके दस नाम सुणे है सो कहो तब ब्रहन्नटा बोल्यौ बि
भत्स फाल्गुन किरीटि जिष्णु कृष्ण अर्जुन विजय सव्य
साची धनंजय श्वेतवाजी ऐसै मेरे दसनामहै तब उत्तर
कही इन दसौं नामको कारण कहो जब अर्जुन कही सब
देसनकौ जीति धनलायो तातैं धनंजय कहायो संग्राम
मैं महावीरनकौ जीत्यो यातैं विजय नामहै. अरु मेरे घो
डा रथके स्वेतहैं यासौं स्वेतवाजी. फाल्गुन नक्षत्रमैं मेरो
जन्म भयो तासौं फाल्गुन नामहै . दानव तैं जुध करतैं इं
द्र किरीट दियो यातैं किरीटि . संग्राममैं निंदित कर्म करौ
नहीं तासौं विभत्स. दुहूं हातनतैं बाण चलाऊं यासौं सव्य
साची कहै है. सब प्रथ्वीमैं मेरोजस उजल कर्म करौ जासौं
अर्जुन. इंद्रको सुत तासौं जिष्णु. मेरो स्याम रंग देषि पि
ताने कृष्ण नाम धर्यो अरु युधिष्ठिर कंक है बल्लव भी
म है अश्वपाल नकुलहै. गोपाल सहदेवहै सैरंध्री द्रोप
दी है अरु हमारे सस्त्र सर्व समी वृक्षमैं धरेहै देवदत्त सं
षहै अक्षयबाण पूर्णतर्कसहै गांडीव धनुषहै तातैं अब
तूं मेरो सारथी होय मेरी बाण वर्षातैं कौरवनकौं भाजते
देषैगो ऐसै सुणि हर्षित उत्तर कुमार अर्जुनकी आग्या प्र
माण सारथी होय अश्वनकौं चलाये. अर्जुनकौं रथपैं अ
सवार होतेंही भूतनकी पंक्ति सहित हणूमान अर्जुनकी
धुजामैं आय प्राप्त भये तिनके दर्सनतैं अर्जुन हर्षित हो
इ पर्वतनकी गुहानकौं विदारत दिग्गजनके कर्ण ताल न.

कौ निश्चल करत सर्पनिके नेत्रनकौं मुद्रित करत देवदत्त संषको वजावत भयौ ताकौ सुणि भयपाय कौरव राजस कुनीसौं बोले स्त्रीतो रथीहै. बालक सारथीहै संषकी धुनि अति भयंकर कैसें होतहै. ऐसे सुणि सकुन बोल्यो गोध नकी हानी भयतें विराट राजा संधिकरिवेकौं कन्या भेजीहै ताकौं अंगिकार करिये. यथेच्छ विहार करिये. ऐसे वाकी नसौं हर्षित भये दुर्योधनसौं द्रोणाचार्य बोले हे दुर्योधन होणहार दारुण युधके कारण ऐसे अपसकुन होतहैं. उ ज्जल. सस्त्रतो मलिन भये उल्का परत है दिग्दाह निर्घात होतहै अश्वनके अश्रुपात होइहै वीरनके हृदयमें कंप आ कासतें रजोवृष्टीहोत सूर्ज निस्तेज होतहै तातें अर्जुन वि ना या सेन सागरके सन्मुष कोण आवे. यह क्रोध रूपीअ ग्निमें कुरुसेनाकौं पतंग करि डारेगो. किरात रूपी शिवकौ रव देषिवे बारे मदोन्मत्त निवांत कवचनके मारिवेवारे हिर ण्य पुरवासी अठ्यासीं हजार कालिकेय मतदैत्यनकौं वि दीर्ण करन वारे ऐसे अर्जुननके बाण युद्ध निमित्त नृत्यक रतहै ऐसे सुणि दुर्योधन भीष्मसौं बोले हे पितामह वि राटसौं युद्ध करतें आपन सौं युद्ध करिवेकौ अर्जुनके सैआ वैगो अरु आवैतो आपुनेकहा हानिहै फेरि बनवास करै गे. अरु रणके प्रारंभमें परकी स्तुति करे ऐसे गुरु द्रोणकू कहाकहै ऐसे सुणि भीष्म बोले हे दुर्योधन प्रतंग्याके वर्ष नतें एकमास अधिक वितीत भयौहै ऐसे संवाद होतेहीअ र्जुन देवदत्त संषकी धुनि किये पीछे मूर्छितउत्तरको समा धान करि दिव्यासनकौं ध्यानकरि धनुषको टंकारकीये सो सुणि भीष्म बोले यह अर्जुन युद्ध निमित्त गांडिव धनुष्य कौं सज्ज करि टंकार कियो है याकी धुजामें हनुमान बीरा जेहै सो सहाइ कहै तातें संधिकरि जगतकौं निर्भय करो

ऐसे स्रुणि दुर्योधन बोले यासौं संधितौ मै कदाचितही न
हीं करौं ऐसे वचन स्रुणि भीष्मदेव बलवान मानि बोले हे
स्रुभट हो तुम सावधान हो अर्जुनसौं युद्ध करेंगे. चतुर्थांस
सेना गोधनले पुरकौं पहुंचावो अरु तैसेही दुर्योधनहू चतु
र्थांस सेनाले जावो. सेवकनकों जैसे तैसे स्वामीकौं बचानि
मित्य युद्ध होय तावस्तुकौ रक्षणही रणमै विजय है अरुद्रो
णादिक वीरन सहित मै अर्जुनकौं रोकौंगो. यह स्रुणिदु
र्योधन भयभीत होइ तैसेही करत भयो. ताकौं वेगतें जात
देषि अर्जुन बोल्यो हे उत्तर भयपाय दुर्योधन गोधनले ह-
स्तनापुर जातहे इनके गये पीछे युद्ध व्रथा होइगो. तातैं या
कौं मार्ग रोकिवेकौं अश्वनकौं शीघ्र चलावो. ऐसे स्रुणिउ
त्तर कुमार अश्वनकौं शीघ्र चलाय दुर्योधनको मार्ग रो
क्यो तब अर्जुन दुर्योधनको भयभीत देषि बोल्यो हे दुर्यो
धन रणकौं तजि चंद्रवंसकौं कलंकित क्यौं करतहे. प्रथ
मतो गोहरण कियो अब जुद्धमै मोसौं भाजैहै सो जोग्य न
हीं मै धनुषधारी इकेलो तूं सतभ्राता बहु वीरन सहित तो
कौं ऐसो समय दुर्लभ है. ऐसेहू वचननकौं अनादर करि भा
जते दुर्योधनको मार्ग रोकि जुधकौं तयार अर्जुनकौं देषि
भीष्मादिक सकलवीर रक्षाकौं आये. तहां सकल कौरवन
कौ सामिल देषि हर्षित अर्जुन देव दैत्यनकौ कंप करि देव
दत्त संषकी धुनि करी. ब्रह्मांड मंडल विदीर्ण करतसो भा
सत भयो परवार सहित हनुमानकी गर्जनातें लोक प्रलय
ही मानत भयो तासमै अर्जुन धनुष टंकार कियो सो स्रु-
णि गोधन उर्द्ध पुच्छ करि अर्जुन सनमुष होइ विराट पुर-
कौं गयो अरु अर्जुन दुर्योधनकौं देषि द्रौपदीके केंस पै-
चिवेके रोसतें अपार बाण धारा वर्षत इंद्र नंदन इंद्रतुल्य
[illegible] दीख्यौ एकलौ अर्जुन सूर्य मंडलकूं ढांपिदे इननें

एानकौं वर्षै तिन वाएानकौ सकल कौरव वीरकाटिन सकै
वह इकलौ सकल कौरवनके बाएानकौं काटि वीरनके रथ अ
श्व गज योधानके अंगनमें ऐसैं कोऊन रह्यौ जाकौ अर्जुन
के बाएा व्यथानकरी अरु जैसें एकहीके शरीजो सिंघ अ
पार गज घंटानके मदकौ दूर करै तैसें एकही अर्जुन सक
ल वीरनकौ मदहीन करि भीष्मके मुखकौं देषि दोय बाएा
चरएानमें दीये पांच बाएा द्रोएााचार्यके चरएानमें दीये. ती
न बाएा कृपाचार्यके चरएानमें दीये. सोबाएा नहीं करि उन
कौं दंडोत करी और सकल वीरनकौं बाएानकरि व्याकुलक
रि गजनके कुंभस्थल विदीर्एा करि समर भूमिकौं मुक्ताम
य करि बाएा वर्षातें दुःसासना दिकनकौं बाएा प्रहारतें चि
त्रलिषेसे किये जैसे सूर्योदयतें तारा मंडल दुती हीन होइ
तैसें सबही वीर भये ऐसें पराजय देषि जयद्रथ आदि सर्व
ही वीर सामिल होइ अर्जुनसों जुध करत भये. इकलो
अर्जुन सकल वीरनकौं अनेक रूपधारि युध करत दीस
त भयो सबनकौ मरएामें निश्चै देषि अर्जुन करुएाा करि
संमोहनास्त्रसों सब वीरनकौं निद्रावसि किये तातें सकल
वीर वाहन तजि अधो मुष होइ पृथ्वीमें गिरे तब अर्जुनउ
त्तराकोवचन स्मरएा करि उत्तरकुमार सौं बोल्यौ हे राजपु
त्र, दुर्योधनके कदली रंग कर्एाके स्वर्एा रंग और वीरनके
अनेक रंगकी पागहैं ते उतारिल्यौ और भीषम सोवे नहीं
हैं द्रोएााचार्य कृपाचार्यहूको तैसेंही जाएिा नमस्कार करि-
यौ ऐसें सुनि उत्तरा कुमार रथतें उतरि सत्रु सेनामें जाय
वस्त्रहरएा करि फेरि आप सारथी होइ पुरके सनमुष चल्यौ
तापीछे सकल सेना सचेत भई जब भीष्म बाएा चलायेसो
देषी अर्जुन तिनके रथके अश्वमारि दुर्योधनके किरीटकौं
षंड षंड करि सस्त्रनकौं फेरि समी वृक्षमें धरि विराटपुर-

आये. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायांविराटपर्वणिचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ राजाविराटविजयकरि निज नगर आये तहां ब्रह्नटाकों सारथी करि उत्तराकुमार भीष्मादिक वीरनसों जुद्ध करिवेकों गयो सुणि दुष्यंत भये अरु कंक हर्षीत भयो तब राजा विराट पुत्रकी सहाइ करिवेकों सेना तयारकरे हो जितनेंही हलकारानें आयउत्तरा कुमारके विजयकी षवरदीनी तब राजा हर्षपाय नगरमें उत्सव कराय कंकसों चोपड षेलिवे लग्यो. तहां विराट बोले हे कंक सेनाविनाही उत्तर कुमार भीष्मादिकनकोंजीति गोधनकों ल्यायो सकल कौरवनसों विजय पायवे वारो उत्तर समान और वीरहैही नहीं. ऐसे सुणि कंकबोल्यो महावल पराक्रम जहांजाय तहां विजयमें संदेह कहा. ऐसे सुणि विराट कंकके लिलाटमें पासानकी दई तहांतें रुधिर धारा चली तब युधिष्ठिर विचारी मेरो रुधिर पातक प्रथ्वीमें देषि भीम वा अर्जुन याके कुलको नास करेंगे सो जाके घरमें एक वरसवसे ताके कुल नास नकरणो ऐसो विचारि हाथनमें रुधिरको धार्यो तहां मालनी शीघ्र आइ सुवर्ण पात्रमें कंकको रुधिर लीनो ताही देषि राजा विराट क्रोध करि मालनीसों बोले हे मालनी कंकको रुधिर सुवर्ण पात्रमें धारिवो जोग्यनहीं. तब मालनी वोली हे राजेंद्र वृथाक्रोध नकरणो याको कारण सुणो कंकको रुधिर जादेसमें गिरै तहां दुर्भिक्ष अनावृष्टि अकाल मरणभय होइ ऐसेकहि निजस्थान गई तापीछे नगरमें आवत अर्जुन उत्तरसों कही हमकों तीन दिन औरभी प्रगट होणो नहीं ऐसे दृढ शिक्षा देय उत्तरको रथीकरि आपसारथी होइ राजद्वार आवत भयो तापीछें द्वारपालके मुषसों

विजय करि वृहन्नटा सहित उत्तर कुमार कौं आयो सुणि दोउनकौं शीघ्र निकट बुलाये तब कंक कही मेरे सरीरतें रुधिर काढीवे वारेकौं कुटंब सहित जम लोक पठावे है याकार णतें ब्रहन्नटाकौं मतिल्यावो उत्तर कुमारहीकौं ल्यावो ऐसें सुणि द्वारपाल इकलेइ उत्तरकुमारकों सभामें ल्यायो तब कंकके लिलाटमें रुधिर देषि उत्तर कुमार पितातें पूछी. यह कर्म कोणनें कस्यो जब राजाके मुषतें पूर्व वृत्तांत सुणि बोल्यो हे राजेंद्र ब्राह्मणनको क्रोध करायवो जोग्य नहीं इनकों प्रणाम करि प्रसन्न करो ऐसे पुत्रवचनतें राजा कंककों प्रणाम कर प्रसन्न करत भयो. सकल लोकनकौ कोप करि भस्म करिवे समर्थ ऐसों कंकहू लिलाट मै पाटी बांधि क्षमावाननमें शिरोमणि भयो तब राजा कंकको रुधिरगुप्त कियो देषि वृहन्नटाहूकों बुलायो अरु पुत्रसों कही तीन्यो लोकनकों जीतिवेवारे ऐसे भीष्मादिक बीरनकौं तुम एकलेही कैसे जीते तब उत्तर कुमार कही हे महाराज कोई दिव्य पुरुष मेरे पुन्यके प्रभावतें सहाय करि सकल सत्रुनकोंजीते सो दिनतीन पीछे प्रगट होइगे सो सुणि राजा प्रसन्न भयो. ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सारचंद्रीकायां विराटपर्वणि पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तीसरे दीन प्रभातही स्नानादिक कर्मकरि निर्मल वस्त्र धारि राजा युधिष्ठिरकौं अग्यकरि भीमादिक चारों भ्राता विराटकि सभामें आय सिंघासनपें युधिष्ठिरकौंबैठाय आप आपकी ठौर सकल भ्राता बैठे यह सुणि राजा चक्रत भये जब उत्तर कुमारके मुषसों संपूरण व्रत्तांत सुणि सीघ्र आइ महाराज युधिष्ठिरके चरणनमै प्रणामकरि बोल्यो हे महाराज मेरे स्वामी माता पिता ईश्वर तुमही मो मूढ दोसके सकल.

अपराध क्षमाकरोगे. ऐसे कहि चरणनमें पत्यो ताविराटकों
भीमादिक चारों भ्राता उठाइ आसनपें बैठायो जब विराट
कही मेदसपुरी परवार सहित आपके संगतें पवित्र भयो
अरु अपराध क्षमा करायवेकों अर्जुनके निमित्य उत्तराक
न्याकों देतहों सौत्यो तब अर्जुन कहि आपकी पढाई कुमा
रीकों पुत्री समान मानतहों अरु तुमकों अतिही आग्रह-
होइतो यह कन्या मेरे पुत्र अभिमन्युकों दीजे ऐसे स्रुणि
ब्राह्मणतें विवाह लग्नको निश्चैकरि अभिमन्युके बुलाइवे
कों दूत द्वारीका भेज्यो सो शीघ्र श्रीकृष्णके द्वारजाइ पहुं
च्यो तब दूतको द्वारपालके मुषतें आयो स्रुणि श्रीकृष्णस
भामें बुलाय सकल वृत्तांत पूछत भये. जब दूत प्रणाम क
रि बोल्यो महाराज युधिष्ठिर भ्रातान सहितगौप्य वरस स-
मासकरि गोहरण समे दुर्योधनकों आदि दे सकल कौरव
नकों जीते जब विराट राजा उत्तराको व्याह अर्जुनसों क
ह्यो तब अर्जुन कही मे पढाई तातें कन्या समहे तब अ-
भिमन्युसो ठहराय तुह्मारे मोकों भेज्योहे यातें हे जगदी
श्वर स्रुभद्रा सहित अभिमन्युको भेजिये आप याके
मामाहो तातें विवाहको निमंत्रण पत्र तुमहूकों पठायोहे.
जासों आपहू परिवार सहित चलो उत्तराके विवाहमें प्रसन्न
अभिमन्युकों सौभाग्यमान देषो ऐसे स्रुणि श्रीकृष्ण सव
अंगिकार करि दूतको निजवस्त्र आभूषण उतारि दीनेंपी
छु विदाकियो अरु अभिमन्युको उद्धवतें नीति सीक्षा दि
वाय निपुणजाणि दिव्यास्त्र विद्या पढाय असंख्य अश्व ग
ज रथ पयादेन सहितसेना संग देय विराट पुरकों पठावत
भये सो अभिमन्यु आगमनि स्रुणि हर्षित होय विराट पां
डव सहित सकल सेना संगलेय कुमारके सनमुष गये. जव
अभिमन्यु महाराज युधिष्ठिरकों देषि तुरंगतें उतरिसाष्टांग

प्रणाम करि पीछै भीमादिकनकौं प्रणाम करी विराटकौंप्र
णाम करत भयो फेरि उत्तरसौं आलिंगन करि मिलत भयो
फेरि युधिष्ठिरकी आग्यातैं तुरंगपैं असवार होइ परमहर्षि-
त उत्सव सहित विराटको नगरतामैं प्रवेस करि पांडव सहि
त राज मंदिरमैं वास करत भये. तैसैही द्रूत सुषतैं स्रुणिपर
वार सहित सिषंडी धृष्टद्युम्न अरु सकल सेना संगलेय रा
जा द्रुपदहू आयो ताहूकों सनकारकरि राख्यो तापीछै भा
णेजके विवाहमैं अपार द्रव्य गज रथ तुरंग वस्त्र अलंकार
सामग्री देवेकों बलदेव उद्धव सात्यकी अक्रुरादिक मंडली-
सहित श्रीकृष्णहू आये तिनके सनमुष युधिष्ठिरादिक सर्व
राजाजाय परम आदरतैं मिलि राजायुधिष्ठिर सर्व वृत्तांतनि
वेदन करि नगरमै ल्याय विवाहको उत्सव करत भये. राजा
विराट गणपति पूजनादिक सकल कर्म करि स्रुभ मुहूर्तमैं
वस्त्र अलंकारसौं मंडित करि उत्तराको वर पूजन करि पा
णि ग्रहण करवायो तापीछै राजा विराट वस्त्र अलंकार गज
अश्व रथ धन रत्न दास दासी देय अरु वरकी साथि आये
श्रीकृष्ण बलदेव उद्धव सात्यकी द्रुपदादिकनकौं पूजि असं
ष्य भक्ष भोज्यादिकनसौ तृप्त करि स्रुंदर वर कन्याकौ संजो
ग देषि राजा विराट आत्माको कृतार्थ मानत भयो. तापीछै
अभिमन्यु सकल गुरु जननकों प्रणाम करि ब्राह्मणतैं आ
सीर्वाद पाय निजभवनमै आय स्रुभद्राकौ प्रणाम करतभयौ
स्रुभद्राहू बधू सहित पुत्रकौ हृदय मैंल गाय आनंद मान्यौ
द्रौपदीहू स्रुदेष्णा राणीतैं सनमान पाय द्रुपदके दियेवस्त्र
अलंकारनसों मंडित होइ पुत्रको वधूसहित देषि आनंद
सहित होय विप्रनकों अनेक दानदेत भई अरु नगरीमैं
गीत वाद्य उत्सव अपार होतभये. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
भाषा भारतसार यह पर्व विराट प्रमान ॥ रावचांद सिंघके

हुकम किये सुक विसुषदान ॥ ४ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां विराट पर्व णि षष्ठमोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥

इति भाषाभारतसार विराटपर्व समाप्तम्.

भाषाभारतसार उद्योगपर्व. चित्र १.

अथ भाषाभारतसारउद्योगपर्व प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथउद्योग पर्व लिख्यते ॥ ॥
वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ऐसै अभिमन्युको विवाह करि पांचों
पांडव कृष्ण बलदेव. द्रुपद द्रौपदी मंत्र करिवे कों बेठे. तहां
युधिष्ठिर बोले हे कृष्ण तुम हमारे नाथहो हम बारह बरस
वनवास कियो एकवरस विराट नगरमें अग्यात वास करि.
प्रतंग्या पालन करी यह चौदहों वरसहै अब कहा करतव्यहै
बांधवकेसाथ विरोधसों जय पराजय में यह चंद्रवंस सूरवीर
नसों रहित होइगो. अरु उनकों जीते गेतो अपकीर्ती होइगी
जो धृतराष्ट्र हमकों पांच गांव भी देतो जुधमे कलेस काहेकों क
रै अरु यह प्रथवीकों तो बहुत भोगेहै यातों गणिका समान
है अरु भाग्य हीन पतिकों छोडि भाग्यवानसों रत होइहै ता
तै यामै प्रीति करि पातक क्यों करणों वेसो बांधव सुषी रहो
हम पांच दुषीही रहेंगे. ऐसे सुणि द्रुपद बोले. अचेतन काष्ट
हुमें अति घर सणतें अग्नि प्रगटहोतहै. अरु ऐसे अपमा
ने पाइ क्षमाकरे तिनकों नीतिको उपदेस कहा कहिये. अरु
नीतिके जाणवे वारेतो अपराधी गुरुनहूकों मारेहै. जैसे अ
ग्निहोत्री घरकों जलावतेहै. अग्निकों बुझावै यातें एक भी
महीकी गदा प्रहार करिवेतें वासि होइ ऐसे वैरीनपै तुमसरी
से धर्मात्मा विना क्षमा कोण करै ऐसे सुणि श्रीकृष्ण बोले
धर्मके सार वचनतो राजा युधिष्ठिर कहे सूरवीर ताके सारऐ
से वचन द्रुपद कहे. अबमें कहा कहो तोही सुणो पराक्रम
विनातो नीति रंडाहै अरु नीति विनापराक्रम निरर्थक है
ये दोउ कीर्ति रूपी भार्याकों प्रगट करैहै सूर वीर ता सहित

नीति सकल राजानके वस करिवेको कारण है तातें यहांनी
तिही करिये जो अंधके पुत्र नीतिकों अंगिकार करैतो ऐसे
श्रीकृष्णके वचन सुणि नेत्रलाल करि द्रौपदी बोली नीति
तुमारे सिरपैं पड़ौ बुधि नष्टहो मंत्र तुह्मारो पातालकों जावो
अरु सस्त्र तुह्मारे नासकों पावो अरु मेरे केंस वस्त्र सभामें
षैंचतें देषि क्षमा करी तातें तुह्मारो बलतो गयो पैं हृदय क्यों
नही फट्यौ तातें मानहीन राजा वैरीनसों संधि करि मैं तो
प्राणत्याग करिवेकों अगनिमें परोंगी ऐसे बोलती द्रौपदीके
निःस्वास पवनतें भीमकों क्रोधरूपी अग्नि प्रज्वलित भयो
तब भीम भ्रकुटिकों चढाइ होठनकों डंसत बोल्यो बाललीला
में मोकों उनने विस दियौ अरु लाक्षा ग्रहमें अगनि लगायो
सो मेरे हृदयकों अबलों दहैहै अरु द्रौपदीके केंस पकडे दे
षे पीछे अबलों निद्रा नहीं आवैहै जोलों दुःसासनके हृदय
के रुधिर नहीं पीवोहों अरु दुर्योधनकी जंघाकों गदासों
चूर्ण नहीं करोहों तोलों मोकों धिक्कार है. अरु क्षत्र कर्म-
करि मंदराजा जीतने संधि करै तितने गदासों मैं वैरीनके षं
ड षंड करि प्रथीमें पटकोंगो ऐसे कहि प्रथीपें हाथनकों पटकि
भीम गदाले उठ्यो तब बलदेव दोउ भुजानतें पकरि बोले हे
भीम तूं बल बुद्धि करि जगतकों जीतें तोहू वे छलिबली ऐसे
हैं सो जीते नहीं जांय अरु बडेनकी आग्याहू उल्लंघन करिवो
जोग्य नहीं तातें युधिष्ठिरके वचन मानिवो योग्य ही है अरु
वेहू तोही सरीसे गर्वितहैं संधिकों न मानैं हैं तातें रोसके वस
होणो योग्य नहीं रणके निमित्य सेना इकठी करणीं अरु
वैरीनके पास यथार्थवादी भृत -भेजणो. ऐसे सुणि सवही
विचारि करि संधि वा युध इन दोउ निमित्य द्रुपद पुरोहितकों
धृतराष्ट्र पास पठायौ अरु सेना संचय करिवेकी आग्या देक
रि श्रीकृष्ण द्वारिका गये. तब पांडवहू रण निमित्य राजानकों

बुलावत भये. तहां पांच पुत्रन सहित पांचौं जवाईनकीस
हाइता करिवेकों राजा द्रुपद एक अक्षौहिणी सहित आयो
अरु विराट राजाहू परवार सहित एक अक्षौहिणी संग
ले आयो. अरु सात्यकी यादव पहली दोय अक्षौहिणी
आईही तिनमें आपकी अक्षौहिणी मिलाय त्रिवेणीक
री. और धृष्टकेतु सिसुपाल पुत्र जरासिंधु पुत्र सहदेव
एक अक्षौहिणी लैके सामिल भये. और माहिष्मतीपति
राजानील केकय देसके राजा पांचो भ्राता दृढक्षेम पुत्र
अरु कुंतभोज श्रेणीमान सिविपौरव आदिले औरहूअ
नेकदेसनके राजा मिलि युधिष्ठिरकों सप्त अक्षौहिणीप
ति कियो अरु श्रीकृष्णके ल्यावेकों दुर्योधन अरु अर्जुन
दोउ एकही समैमें पहोंचे. तहां अंतः पुरमें श्रीकृष्ण
कों सोवत देषि दुर्योधनतो नकिया पास बैठ्यो अरु अ
र्जुन पांवनके पास बैठ्यो जब श्रीकृष्ण जागि बैठे भये त
ब पहले अर्जुनकों देषि तासों कुसल पूंछि पीछे तकी याके
कांधो लगाये. दुर्योधनकों देष्यो तहां दोउही जुधमें सहाय
करिवो मांग्यो जब श्रीकृष्ण दुर्योधनसों बोले हे कौरवेंद्र
तू पहले आयो पीछे अर्जुन आयो परंतु पहले दृष्टिमें आ
य अर्जुन सहायता मांगी. पीछे तुम मांगी. सो एकतरफ
तो जुद्ध विनामें अरु एक तरफ मेरी एक १ अक्षौहिणी से·
नासों दोउनमें सों एकल्यो ऐसें सुणि कृतवर्मा सहित
एक अक्षौहिणी सेनालेय दुर्योधन हर्षयुक्त हस्तनापुरआ
यो. अरु कृष्णने सारथी पणो कबुल कार्यो तब वैरीनकों
जीते मानि अर्जुन युधिष्ठिर पास आयो सैल्य पांडवनके
पास आवै हो ताकों दुर्योधन सनमान करि आपको पक्षपा
ती कीयो यह वृत्तांत कहिवेकों सल्य युधिष्ठिर पास आय
समाचार कहे. जुधिष्ठिर बोले तुह्मारी इच्छा होयजहांही

जावौ कौरवन पक्ष करतहू तुमनिंदा वचननकरि कर्णको तेजो नासकरो ऐसे अंगिकार करि सल्य दुर्योधन पासआयो अरु दुर्योधन पास औरहू राजा आये भीमासुरकोपुत्र भगदत्त. सिंधुराज जयद्रथ. अवंतीपति विंद १ अनुविंद १ दोउभ्राता सल्य मद्रपति कृतवर्मा कांबोजराज स्रुदक्षिण सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा ये सातो बांधव संबंधीन सहित सात ७ अक्षौहिणी सेनाले करि आये और सब राजामिली चारि ४ अक्षौहिणी सेनालेकरि आये ऐसे दुर्योधनके ग्यारह ११ अक्षौहिणी सेना भई तब सभामें बैठे धृतराष्ट्र ताको पास पांडवनको भेज्यो प्रोहित आय वचन बोल्यो हे धृतराष्ट्र राजा युधिष्ठिर यह कहीहै मैं द्यूतके करारके दिन वितीत किये. अब पृथ्वीको विभाग हमहूकों दीजे यह पृथ्वी मंडलको एकसो चारि १०४ भाईनसहित पालन कियो चाहतहो पृथ्वी एकसों भोगी जायनहीं कुलके होते और कौन भोगे ताते तुम बांधवनसों पूछि मनमें विचारि उत्तरद्यो ऐसे कहि प्रोहित सबनकी तरफदेख्यो तहां कोउ बोल्यो नहीं तब भीष्म बोले भुजबल करि सब विभजीति. विपति समुद्रको पार पांडवनने पायो यह आनंद भयो अरु महादेवकों भुजबलसों संतुष्टकरि वीर अर्जुन आयो ऐसे महापराक्रमी पांडव है तोहू वे संधिहूकों चाहतहे तातें उनके क्रोधाग्निमें पृथ्वीपति पतंगव्हेके नहीपडे तितनेही कुसलहे ऐसे भीष्मके कहतही कर्ण भृकुटी चढाइ बोल्यौ रणतें डरपे भीष मांगे ऐसे पांडवहे तिनते भय तुम हमकों क्यों करि कहोहो पृथ्वीमें औरहू अनंत वीर हे तोहू उन भिक्षुकनकी स्तुति करत लज्जा नहीं पावतहो असमर्थ पुत्र पिताको वा पितामहकों प्यारे होतहे तातें समर्थ कौरवनकी निंदाकरि पांडवनकी स्तुति करोहो ऐसे कर्ण.

बुलावत भये. तहां पांच पुत्रन सहित पांचों जवाई नकीस
हाइता करिवेकों राजा द्रुपद एक अक्षौहिणी सहित आयो
अरु विराट राजाहू परवार सहित एक अक्षौहिणी संग
ले आयो. अरु सात्यकी यादव पहली दोय अक्षौहिणी
आईही तिनमें आपकी अक्षौहिणी मिलाय त्रिवेणीक
री. और धृष्टकेतु सिसुपाल पुत्र जरासिंधु पुत्र सहदेव
एक अक्षौहिणी लैके सामिल भये. और माहिष्मतीपति
राजानील केकय देसके राजा पांचों भ्राता वृद्ध क्षेम पुत्र
अरु कुंत भोज श्रेणीमान सिविपौरव आदिले औरहू अ
नेकदेसनके राजा मिलि युधिष्ठिरकों सप्त अक्षौहिणीप
ति कियो अरु श्रीकृष्णके ल्यावेकों दुर्योधन अरु अर्जुन
दोउ एकही समैमें पहोंचे. तहां अंतःपुरमें श्रीकृष्ण
कों सोवत देषि दुर्योधनतो नकिया पास बैठ्यो अरु अ
र्जुन पांवनके पास बैठ्यो जब श्रीकृष्ण जागि बैठे भये त
ब पहले अर्जुनकों देषि तासों कुसल पूंछि पीछे तकी याके
कांधो लगाये. दुर्योधनकों देष्यो तहां दोउही जुधमें सहाय
करिवो मांग्यो जब श्रीकृष्ण दुर्योधनसों बोले हे कौरवेंद्र
तू पहले आयो पीछे अर्जुन आयो परंतु पहले दृष्टिमें आ
य अर्जुन सहायता मांगी. पीछे तुम मांगी. सो एक तरफ
तो जुद्ध विनामें अरु एक तरफ मेरी एक १ अक्षौहिणीसे-
नासों दोउनमें सों एकल्यो ऐसें स्रुणि कृतवर्मा सहित
एक अक्षौहिणी सेनालेय दुर्योधन हर्षयुक्त हस्तनापुरआ
यो. अरु कृष्णने सारथी पणो कबुल कार्यो तब वैरीनकों
जीते मानि अर्जुन युधिष्ठिर पास आयो सैल्य पांडवनके
पास आवे हो ताकों दुर्योधन सनमान करि आपको पक्षपा
ती कीयो यह वृत्तांत कहिवेकों सल्य युधिष्ठिर पास आय
समाचार कहे. जुधिष्ठिर बोले तुह्मारी इंच्छा होय जहांही

जावो कौरवन पक्षकरतहू तुमनिंदा वचनन करि कर्णको
तेजो नासकरो ऐसे अंगिकार करि सल्य दुर्योधन पासआ
यो अरु दुर्योधन पास औरहू राजा आये भौमासुरकोपु
त्र भगदत्त. सिंधुराज जयद्रथ. अवंतीपति विंद १ अनु
विंद १ दोउभ्राता सल्य मद्रपति कृतवर्मा कांबोजराज सु
दक्षिण सोमदत्त पुत्र भूरिश्रवा ये सातो बांधव संबंधीन
सहित सात ७ अक्षौहिणी सेनाले करि आये और सब
राजामिली चारि ४ अक्षौहिणी सेनाले करि आये ऐसे दु
र्योधनके ग्यारह ११ अक्षौहिणी सेना भई तब सभामें
बैठो धृतराष्ट्र ताको पास पांडवनको भेज्यो प्रोहित आय
वचन बोल्यो हे धृतराष्ट्र राजा युधिष्ठिर यह कहीहै मै द्यू
तके करारके दिन वितीते किये. अब पृथ्वीको विभाग हमे
हूकों दीजे यह पृथ्वी मंडलको एकसोचारि १०४ भाईनस
हित पालन कियो चाहतहो पृथ्वी एकसों भोगीजायनहीं
कुलके होते और कौन भोगे तातें तुम बांधवनसों पूंछि म
नमे विचारि उत्तरद्यो ऐसेकहि प्रोहित सबनकी तरफदेख्यो
तहां कोउ बोल्यो नहीं तब भीष्म बोले भुजबल करि सब वि
ध्नजीति विपति समुद्रको पार पांडवननें पायो यह आनंद
भयो अरु महादेवकों भुजबलसों संतुष्टकरि वीर अर्जुन
आयो ऐसे महापराक्रमी पांडव है तोहू वे संधिहूकों चाह
तहै तातें उनके क्रोधाग्निमें पृथ्वीपाति पतंग व्हैके नहीपडे
तितनेही कुसलहै ऐसे भीष्मके कहतेही कर्ण भृकुटी च
ढाइ बोल्यो रणतें डरपे भीष मांगे ऐसे पांडवहै तिनते भय
तुम हमकों क्यों करि कहोहो पृथ्वीमें औरहू अनंत वीर है
तोहू उनाभिक्षुकनकी स्तुति करत लज्जा नहीं पावतहै अ-
समर्थ पुत्रपिताको वापितामहकों प्यारे होतहै तातें समर्थ
कौरवनकी निंदाकरि पांडवनकी स्तुति करोहो ऐसे कर्ण.

भीष्म बोले हे राधेय कर्ण पांडवनकी स्तुति सुणि तूं संतापक रैहै राजाविराटके गोहरणमें अरु घोष जात्रामें युद्ध अर्जुनसों भयो तहां तेरो पराक्रम देष्यो तोहू तेरी निर्भयता धन्यहै ऐसे भीष्मके वचन सुणि सभासद सबहीहंसे तातें कर्णको मुष मलीन भयो जब धृतराष्ट्र बोले भीष्मपितामह जोवचन बोले है सो बंसाग्नि बुजायवे कोजलहै. पांडवनको तेज जगतको संघार करिवेको समर्थ है तोहू वेक्षमाकरै है सो योग्यहीहै अब याकों उत्तर देवेकों संजय जावो उनकों प्रसन्न करो ऐसे कहि पुरोहितके संग संजयकों पठायो तब संजय उपलव्य नामकपुरमें मंत्री मित्रन सहित राजा युधिष्ठिर ताके पास जाय आपको नाम कहि प्रणाम कीनो जब युधिष्ठिर कुसल पूंछी तब संजय बोल्यो जिनकी तुम कुसल चाहो ताकुलमें कैसे कुसल नहीं होय अब महाराज धृतराष्ट्र संदेस कह्योहै सो सुणो धूलिमई भूमिकी इच्छा करिबांधवनकों मारे ताकी कीर्ति कैसे रहे तातें तुम लक्ष्मी की वांछा करि कलह मति करो तुम धर्मात्माहो ऐसे सुणि युधिष्ठिर बोले मैं धृतराष्ट्रतें कबहू कलहकी वातहूनही करि तोहू मोसों ऐसो क्यों कहै है हालतो जुद्धकोमसंग हैही नहीं पहले वचन कहेहै ताधर्मतें बंध्यो ऐसो मेरो पिता धृतराष्ट्र पृथ्वी देहीगो अरुजो पुत्रनके ममततें परवस होय न देयतो या कार्यमें श्रीकृष्ण कहेंगे सो होइगो. ऐसे सुणि श्रीकृष्ण बोले जो धृतराष्ट्र राजायुधिष्ठिरकों पृथ्वीको विभाग देतो द्रौपदीके केसषैंचिवे आदि औरहू अपराधनको सहैगे. अथवा इंद्रप्रस्थ १ यत्रप्रस्थ २ माकंदी ३ बारबाणवत ४ येक और कोईगाम ये पांच द्यो इनको नद्योतो भीमकीगदा अर्जुनकेबा

ए करैंगे सो होइगो. ऐसे श्रीकृष्ण पांडवनको वचन सुणि संजय वेग करि धृतराष्ट्र पास आय सब वृत्तांत कह्यो जब धृतराष्ट्र संजयके वचनतें पांडवनको धर्म विवेक युत विचारि चिंता युक्त होय विदुरकों बुलाय समाचार कहे सो सुणि विदुर बोले हे महाराज, चिंता करि व्याकुल मतिहो संपति अनित्य है आत्मा नित्यहै वैरिकों दूरितें आयो देषि सनमुष जुद्धकों होड वेही शूर कहावतहै यह आत्मा कोईको हैनहीं मैं मेरो यह अग्यानिनको हठहै तातें पांडु पुत्र तुह्मारे पुत्रनकों सम द्रष्टि करि देषो जब धृतराष्ट्र कह्यो जो समदृष्टि करि देषो जब धृतराष्ट्र कह्यो जो समदृष्टि-ग्यानविना होय नहीं तातें ग्यानको उपदेस करो. ऐसेंसुणि विदुर सनत्सुजात मुनिको ध्यान कर्यो तब सनत्सुजात आय राजाको ग्यानको उपदेस कियो प्रभात सभाकरि दुर्योधनकों बुलाय संजयकों धृतराष्ट्र कह्यो पांडवनके समाचार सबही कहो तब संजय बोल्यो दुर्योधनसों राजा युधिष्ठिर तुमकों संदेस कह्योहै तुम पृथ्वी को भार धर्यो हम तीर्थनमे भ्रमें अब इतने कालतें तुमकों षेद भयो सो अब या भारकों छोडो हम पांच लेवेकों हाजिर हों. भीमकह्योहै जो तुम पृथ्वी नद्योगे तो मेरी गदाको भार सहो तुह्मारे पर छोडूंगो. अरु अर्जुन कही जो तुम राज्य भाग्य न देवोगेतो मैं कर्णको मारि तेरे पास आउंगो. ऐसे सुणि शिर धुनाय भीष्म धृतराष्ट्र सों कही द्यूतमें पांडवनको अपमान करि वनवास दियो तोहू तोकों लज्जा न भई ऐसे मर्यादा हीन तेरे पुत्रहैं तोहू पांडव तेरो मान राषिवेकों मर्यादा नहीं छोडत है. उनकेतो पांडवसो तूं अरु तूंसों पांडव ऐसे आपमें अरु तुममें भेदनहीं मानतहै. अबलों नीतिहीमें रत ऐसे पांडवनसों संधिही करिवो योग्य है अरु उनकों कौन जीति स-

कै जब भीम तेरे पुत्रनकौं मारेगो तब कर्णादिक कैसे राषेंगे. ऐसे भीष्मकेवचन स्रुणि कर्ण बोल्यौ ऐसें नसों मोनैं रक्षा नहीं यगी तौ तुमही कौरवनकी रक्षाकरौ. तुम अर्जुनके सरस ज्या मैं सोवैंगे. तबमैं जुध करौंगो. ऐसे कहि दुर्षतें धनुष धरि दी यौ. ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां उद्योगपर्वणि प्रथमो ऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥

संजय गये पीछै राजा युधिष्ठिर कलह न होय जैसे तैसे संधि होय यानिमित्य दयायुक्त होइ श्रीकृष्णकौं कौरवनके पास प्रार्थना करि पठाये जबश्री कृष्ण चलतें द्रौपदीसौं कह्यौ राजा मोकौं संधिके निमित्य पठावैहै सो जाऊंहूं तब द्रौपदीबोली हाथमै केस गहि श्रीकृष्णकौं दिषाय बोली जब संधि करो तब इनकौं यादि करिलीज्यो ऐसै कह्यौ सो अंगिकार करि सैन्य सहित श्रीकृष्ण वृहत् स्थल पुरमै एक राति बसि हस्तनापुर पहुंचे तहां सैनाको बाहिर राषि हस्तना पुरमैं प्रथम विदुरके मंदिर गये. विदुर श्रीकृष्णको आये देषि हर्ष समुद्रमें मग्न होय बोल्यौ हे देवदेवेस दास पालनके निमित्य भलेही आये. योगेश्वर वा तपस्वी जाके दर्सनके निमित्य जत्न करैहै तोहू दर्सन नही पावैहै सो तुम मेरे घर आये. पुष्करादि तीर्थ. गंगादि नदीजाके नामतें पवित्र होय सोदेव तुम मेरे घर आये. इनचर्णनिके सपर्सतें मेरो घर पवित्र भयो. जन्मसफलभयो. आजि मेरे घर गोविंद आये तें पितर पितामह तृप्त भये. ऐसे विदुर विनती करि अर्घ देय पांव धोय चरणोदक सिरपैं धार्यो फेरि भगवानको स्नान कराय चंदनलगाय मिष्टान्न भोजन कराय तांबूल देय प्रणाम करि बोल्यौ हे श्रीकृष्ण आपतो जगतके नाथहो मैं निरधनहों आपकीप्रसन्नता लाइक कहां आतिथ्य करौं साकपत्र स्वाद अस्वाद जोहै सो अंगिकार करि क्षमाकीजे जब श्रीकृष्णबोले.

हे वीर मै तेरी भक्तितें बहुत प्रसन्नहौं साधूनके दर्सनतें सा
धु संतुष्ट होतहे. साधूनको दर्सन महा पुनीतहे साधू ती
र्थनहूतें अधिक है तेरे दर्सनतें मैं कृतार्थ भयो ऐसें स्रुणि
विदुर बोल्यो हे स्वामी मोकों ऐसे कहिवो जोग्य नहीं ब्रह्मा
दिक देव तुह्मारे चरण सेवेहे मै कीटक तुल्य जीव कहोज
ब श्रीकृष्ण बोले हे विदुर मै तेरी भक्तितें प्रसन्नहों जो चा
हे सोवर मोतें मागि तब विदुर बोले हे स्वामी मेरो चित्त आ
पके चर्ननमे जैसे अबहे तैसे सदा रहो. कदाचितहू न्यारो
मतिहो आपके चरणार विंदनमें अचल भक्ति सदा रहो
आपकी कृपाते और वांछाहेही नहीं जब श्रीकृष्ण प्रसन्न
होय तथास्तु ऐसे कह्यो तापीछे एक रात्रि विदुरके घर वा-
स करि प्रभातही विदुर सहित श्रीकृष्ण धृतराष्ट्रकी सभा
कूं गये. तहां पांडवनके पठाये विदुरके घर रहि आवत श्री
कृष्णकों जाणि दुर्योधन सनमुष नहिगयो. और भीष्म
द्रोणादिक सबही सनमुष आय समाधान करि श्रीकृष्ण
कों सभामे ल्याये. तहां श्रीकृष्ण सिंघासनपर बैठे विदुरपा
स बैठ्यो तब दुर्योधन बोल्यो हे कृष्ण तुम कहांतें आये रा
त्रकोनके घररहे अरु कहा काम आये सोसत्य कहो. तब
श्रीकृष्णबोले मै विराट नगरतें आयो विदुरके घर रह्यो
व्हांही भोजन कीयो. पांडवनको पठायो यह जानो जब दु-
र्योधन बोल्यो हे कृष्ण भीष्म दुर्योधनकों छोडि दासीपुत्र
विदुरके घर रहि कैसे भोजन कियो तब श्रीकृष्णबोले हे दु
र्योधन तूं भोजन पूंछेहे सो भोजनतो प्रीतिसों होतहे अरु
आदर अजर अमर होतहे और प्राण त्यागवोतो भ-
लो अरु मान षंडन बुरो प्राण त्यागिवेको दुषतो क्षणमा
त्रहे अरु मान षंडनको दुष्व जीवे तोलों रहे आदरतें
ल्याये साक पत्रतो अमृत समानहे अरु अनादरतें ल्या-

यो अमृतहू विषतें अधिक है और विना बुलाये घरजाय
विना पूंछे बोलै विना दिये आसनपें बैठे ते पुरस अधम
हिये. तातें अनादरके भोजनतें मृत्यु श्रेष्ठहै और हला
हल पानतें प्राण नास होइसोहू श्रेष्ठहै. परंतु कुटिल वि
मुष धनाढ्यके घर भोजन श्रेष्ठ नहीं. भोजनतें ब्राह्मण
संतुष्ट होतहै मयूर मेघ गर्जनातें साधु परकल्याणतें नी
च पर विपतितें संतुष्ट होतहै. अधमतो केवल धन चा
हतहै. मध्यम पुरुष धनमान दोउ चाहतहै अरु उत्तम
मानहीकों चाहतहै तातें उत्तम पुरुषनके मानही धनहै
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र इनहीमें विवेकही सारहै. कुल
करि धनकरि कहा कुलीन मूर्षहू निंदीहीहै. कुलहीन
डितहू पूज्यहै. कमलतें पैदा भयो ब्रह्मा तपतें उत्तम
तातें जाति कारण नहीं विश्वामित्र क्षत्रीके जन्मपाय तप
तें ब्राह्मण भयो ऋष्य शृंग हिरणीतें जन्म पाय तपतेंब्रा
ह्मण भये. मांडिक्य मुनि मिडुकीतें जन्म पाय तपतेंब्राह्म
ण भये. अगस्त वसिष्ठ कुंभतें जन्म पाय तपतें ब्राह्मणभये
ये. द्रोणाचार्य स्रुवर्णकुंभतें जन्मपाय तपतें ब्राह्मणभये
तातें जाति कारण नहीं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनकों आ
चारही प्रथम धर्महै. अनाचारहै सोही अधर्म है औ
सत्य धर्मपरायणजे शूद्रहूहै तिनके घर भोजन करणे
तातें विदुर बहुश्रुतहै. याके घर भोजनको दोस नहीं जा
दिन दिनप्रति पतिके संग विहार करि अग्नि प्रवेस करे.
तास्त्रीकोभी पुन्य पापको लेपनहीं अरु यह पतिव्रता द्रौ
पदी पतिके संग विहार करि नित प्रति अग्नि स्नानकरै
है और परनिंदा नजाणे. विष्णु भक्तिमें परायण वि
मैथुन पैदा भये. ऐसे पांडुपुत्रहू पवित्र है. सत्यवादी
नवान इष्टव्रत सर्वशास्त्र वक्ता विदुरकों कोण उल्लंघन

करै जब दुर्योधन बोल्यो मान रहित राज्यवा जीवन वा धन आदि सब निरर्थक है घोरवनमें वास भिक्षाकरि भोजन पर ग्रह सेवा तातेहू मानहीन जीवन निंदितहै तब श्रीकृष्णबो ले हे दुर्योधन तू राज्यकों बहुत काल भोग्यो चाहै है तो मे रो कह्यो करि पांडव पांच ग्राम मांगै है सो उनकों दिये सं- धि होइगी. जो पांच ग्रामहू नदेगो तो यम लोकमें जायगो जब दुर्योधन बोल्यो ऐसें वचनसों मै डरों नहीं मेरेहू भीष्म द्रोण कर्ण सल्य दुःसासन आदि महाबली जोधाहै पांडव- नको बल द्रौपदीके वस्त्र हरणमें देषि लीयो तब श्रीकृष्णबो ले वे धर्मपर वसहोय क्षमाकरी तातें तुं जीयो अब राज्य भा ग नदेगो तो पांडव क्षमा न करैंगे. ऐसै सुणि दुर्योधन बो ल्यो इंद्रप्रस्थ गुरुकों दियो यवप्रस्थ कृपाचार्यकों दियो.वा रणावत भीष्मकों दियो. माकंदी कर्णकों दियो और हस्त ना पुरमें मै रहहूं तातें प्रथ्वीमें सूनो ग्राम एकही नहीं औ र तीषी सूईके अग्र भाग करि जितनी पृथ्वी विधे तितनी हू जुधविना द्योंनहीं. पांचों पांडववे एक भार्या रतहै सोम्लें छे तुल्य है उनकी वार्ता मोसों मति कहो. तब श्रीकृष्णबोले अंधको बेटा तूं अंधहीहै समीप आइ मृत्युको न देषत है. जिनको विनास आवै तिनकी विपरीत बुधि ऐसेही होतहै रामचंद्र स्वर्णको मृगरूपी राक्षस जाणि लीयो तोहू सि कार गये. राजा नहुष ब्राह्मणनको जाणि लिये. तोहू पा लखीमें जोये युधिष्ठिरहू द्यूत क्रीडामें छलकोंजाणि लि- यो तोहू भाइनकों हार्यो सो विपति आवणो हारहोइ तब सत पुरुषनहूकी बुद्धि विपरीत होइहै. तातें हे दुर्योधन रणमें बाणवर्षा करतें अर्जुनकों, गदा भ्रमावतें भीमकों देषैगो तब सर्व पृथ्वीकाकों देगो. ऐसै श्रीकृष्णके कठोर वचन सुणि दुर्योधन कही याकों बांधिल्यो यह अनर्थको-

मूलहै ऐसे सुणि श्रीकृष्णके मारिवेकों दुःसासनादिकस स्त्र लैके उठे तब श्रीकृष्ण विराटरूप दिषायो ताकों देषिकि तेक मूर्छित भये. कितेक गिरे कितेक के शिर फुटे कितेकनके प्राणछुटे जब भीष्म द्रोणादिक दुर्योधनसों बोले हे अंध पुत्र श्रीकृष्ण कहे हे सो सत्यहीहै. श्रीकृष्ण कालात्मा है. सोतूं नजाणेहे सुर असुर याके चरण पूजेहै लक्ष्मीया की भार्याहै पृथ्वीको भार उतारिवेकों असुरनकोनासक रिवेकों साधुनके पालवे निमित्य औतार धार्योहै श्रीकृष्ण जाकार्य आये सो नकरेगोतो सर्वकोनास होइगो. सर्वनास जाणि विवेकी आधो छोडतहै. आधेमें राज्यहूक है और जीवहू रहे सर्वनास भये राज्यहू जाय अरु प्राणहू नहीं रहै ऐसे भीष्मादिकनको वचन सुणि विदुर बोले यह राजा दुर्योधन पीले नेत्रनकोहै सो केवल कुलनासही नहीं करेंगो. सर्व क्षत्रीनको नासकरेंगो. ऐसे कहि विदुर द्रोण भीष्म संजय हर्षकरि श्री कृष्णकों देषत भये. और जे वैरभाव राषतहे जे मूर्छित भये देवता पुष्पनकी वृष्टी करी स्तुति करी कोप सांति कियो अरु श्रीकृष्ण उठि चले तब द्रोण भीष्म कृपाचार्य कर्ण विदुर सभाद्वार ताईं पहुंचायवेकों आये. जब श्रीकृष्ण औरनको सीष देय कर्णको हाथ पकडि रथमें बैठाय कुंतीके पास आय सीष मागि पुरके बाहिर कर्ण सहित डेरानकों गये उहां एकांतमें कुंतीतें जैसो कर्णको जन्म भयो सो सबही कह्यो सो सुणि कर्ण कष्ट युक्त होय बोल्यो मैं सहोदरनको जाणे विनादुष्ष दियो तातें मोकों धिक्कार है जो मैं पुत्रवधू तुल्य द्रोपदी की दुर्दसा देषि हर्ष पायो ताहूतें धिक्कार है अरु सहोदर बांधवनको छोडि उनके वैरीनको बांधवकरे. याहूतें धिक्कार है ऐसे कष्ट सहित कर्णकों देषि श्रीकृष्ण बोले हेकर्ण

हालहू आपेकी निंदा मति करे. बांधवनसों चलि मिलो युधि ष्ठिरादिक तेरी सेवा करेंगे. तूं बडो भ्राता राज्यासनपें बै ठेगो तब तेरी माता कुंती छहे पुत्रन सहित परम आनंद पावेगी. अरु तूं पांडवनमें मिलेगो तब दुर्योधनादिकक लह नहीं करेंगे जब सकल छत्री वंस जीवेगो यह पु न्य तोकों होइगो ऐसे सुणि निश्वास नाषि अंगराज क र्ण बोल्यो हे श्रीकृष्ण जुद्ध समय प्राप्त भयो भ्रातान सों कैसे मिलों. दुर्योधन एक मेरे भरोसेही उन बलीन सों वैरि कियोहै सो वाके रणको धोरी मैंही हों बालक पणको मित्र दुर्योधन है वाकों छोडते मेरो हृदय फटत है और दुर्योधन कों छोडि युधिष्ठिरसों मिले जगत भ्रष्ट मि त्र कहैंगे मोकों भ्रातानमें प्रीतिवान जाणि नीतिवंत स राहेंगे. परंतु मित्र विश्वास कहां रहैगो. बांधवतो लक्ष्मी के निमित्त विरोधहू करेहे अरु मित्र परम विपत्तिमेंआ लंबन होतहै जो मैं दुर्योधनको छोडों तो जगत मित्र विमु ष होइगो तब कौनको दुष्ष कौन दूरि करेगो ऐसे कर्णके वचन सुणि श्रीकृष्ण सराहि पीठि ठोकि विदा करि यु धिष्ठिरके पास आय जुद्ध जात्राको प्रस्थान करायो. ॥

॥ इतिश्री भाषाभारत सार चंद्रिकायां उद्योग पर्वणिद्वि तीयोऽध्यायः ॥ ॥२॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥वैशंपायनउवाच॥ ॥श्रीकृष्ण युधिष्ठि रसों बोले मैं अनेक युक्ति करि दुर्योधनकों समझायो प रंतु कहीं सूईके अग्रसों विधे इततीहू पृथ्वी विनाजुध्ध द्यो नहीं तातें जुधके निमित्त तयार हो ऐसे सुणि जुद्ध के लिये भूमिविचारत भये. तब श्रीकृष्ण अर्जुन दुर्योधनये तीन्यों जुधि भूमि देषिवेकों पृथ्वीमें फिरत हैं तहां एकदेस देष्यो तहां क्रूरजीव कठोरहृदय दया धर्म वर्जित अनाचारी

नुष्य न करि संजुक्त देसहौ तहां पितापुत्र हल फिरावत
तव पुत्रकों सर्प काट्यौ जव पिता हलके अग्र भागसौं पु
त्रकों पैंचिषेतके बाहर नाष्यो अर फेरी हल वाहिवे लगि
गयो यह कठोरता देषि तीन्यो आगे चले तहां सनमुष भो
जन लिये वा पुत्रकी स्त्री आवत देषी जब वासों तीन्योंही
पूछ्यो भयेतूं कोणहै कहां जायगी. तब वह स्त्री बोली मेरा
श्वसुर अरु भर्ता दोउ षेतीकरैहै तिनके लिये भोजनजलले
जाऊंहूं जब श्रीकृष्ण बोले तेरे भर्त्ताकोतो सर्पकाट्यो सो
रि गयो. जाको षेत वाहिर हलसों उठाइ तेरे श्वसुरने फें
दियो फेरिआप हलजोतिवेलगि गयो ऐसे वह स्त्री सुण
तहांही बैठिगई भर्तकि बंटकी सामग्री षाय जलपान क
वाकी सामग्रीही श्वसुरकोंदेय आपजेसे आईही तैसे
गई यह वृत्तांत देषि तीन्यो ही यह महा कठोर भूमि जुद्ध
ग्यहै ऐसे विचार जुध करिवो उहां निश्च्ये कियो तापीछे
रां आये तहां युधिष्ठिरके संग सेनामैं परवार सहित राज
राट सात्विकी यादव युधामन्यु, उत्तमौजा, पुत्र पौत्रादि
क सहित द्रुपद हिडिंबाके पुत्र, बर्बरीक और घटोत्कच
येसर्वही युधिष्ठिर महाराजाकी सेनामें मिलि कुरुक्षेत्रमे
आये अरु दुर्योधनहू सकल सेना सहित आयो तबतहां
युधिष्ठिर आयके सब जोधानसों बोल्यो कोन कोन कहाप
राक्रम करोगे सो कहो जबभीम कही दुर्योधन आदिसों
१०० भ्रातानकोतो मैं मारोंगो. अरु दुःशासनकों हृदय वि
दीर्ण करि वाको रुधिर पिऊंगो. तब अर्जुन बोल्यो जो छत्री
मेरे सनमुष लडेंगे तिनकों मैं निश्चेही मारोंगो तब सहदे
व बोल्यो जुध आरंभ होयगो ताके अठारवे दिन दुर्योधनम
रैगो. यह सुणि गुप्त हलकारा हेसोजाय दुर्योधनको सब
समाचार कहे. सो सुणि दुर्योधन भीष्मके पासजाय हा

थ जोडि बोल्यो मोको तुम पाल्यो है अरु पांडवनके अब यह सलाह भई है तासों तुम मेरी रक्षा करो जब भीष्म बोले हे राजा. दस दिनतो मै तेरी रक्षा करोंगो मै जितने धनुष धारी तितनै कालहू न मारि सकैगो ऐसे सुणि दुर्योधन द्रोणाच्यार्चके पास जाय पांडव भीष्म वचन बोले तिन सहित सब समंचार कहे जब द्रोणाचार्य कही मैभी चारि दिनलौं तेरी रक्षा करोंगो ऐसे सुणि कर्णके पास जाय द्रोणाचार्यके वचन आदि पीछले सब समंचार कहे तब कर्ण बोल्यो हे राजन् मैभी दोयदिन तेरी रक्षा करोंगो. ऐसे सुणि सल्यके पास जाय कर्णवचन कहे तिने आदि दे सब समंचार कहे तब सल्य कही एक दिन मैहूं रक्षा करोंगो जब दुर्योधन अगरवै दिनका रक्षा करिवेवालो जाण्यो भीनही तब मनमे व्याकुल होइ आपही जुध करिवो निश्चै कियो. सात अक्षोहिणी पतितो राजा युधिष्ठिर भयो और ग्यारह ११ अक्षोहिणीपति दुर्योधन भयो ऐसे मिलि जुधकी तयारी करत भये. ॥

॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां उद्योग पर्वणि कुरुक्षेत्र सैन्य समागमनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ॥

दुर्योधन हस्तीना पुरते कुरुक्षेत्रकों चल्यो तब अपसगुन भये सो देषि सबने मनै कियो तोहु मानी नही.. तब विदुर कुंती सों कही कुरुक्षेत्रमे जुध होयगो तहां कौरव पांडवनके रुधिरकों पृथ्वी पान करेगी. ऐसे विदुरकी वाणी सुणि गंगा तीर सूर्यके ध्यानमै मग्न हुवो सो कर्णहो ताके पास कुंती गई जब वाको जप समास जानि कुंती बोली तूं मेरो कन्या समैको पुत्रहै अरु यह सूर्यही तेरो पिताहै ऐसै कहतेही सूर्यहु साक्षी भरी तब कर्ण आपकी माताजाणि प्रणाम करि बोल्यो हे माता तेरो स्तनपान करि मेरो सहो-

दर राजा युधिष्ठिर विश्व विजयी भयो ताते पैहूं धन्यहूं जो तूं स्तनके दूध करि मोकों सिंचेहै तब कुंती ऐसे बोलते कर्ण कों दोऊ हाथनसों गहि हृदयमें लगाय बोली हे पुत्र युधिष्ठिरादिक पांचों तेरे दासहै तातें तूं पांडवनसों मिलि. तोकों मिल्यो जाणि दुर्योधनहू जुध नहीं करेगो. तासों पांचो पांडव सोऊ १०० कौरव तेरे अनुग्रहसों जीवेंगे. ऐसे सुणिक र्ण बोल्यो हे माता मेरे विश्वाससों जुधकों तयार भयो जो दुर्योधन ताकों छोडि युधिष्ठिरसों मिलों तो सूर्यदेव कलंकित होइ और पांडवनके भयतें कर्ण दुर्योधनकों छोडि उनतेंमिल्यो ऐसे जगतमे उपहांस सुणि तूं वीर जननी है सो अवीर जननी मति होय में पांडवनकों जीति दुर्योधनकों विजय द्योंगो ऐसी प्रतग्या करी अब नाही कैसे छोडों और महा अभिमानी कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, भीष्म ये महावीर जाकी सहाय कर्त्ता और क्रोध पुंज दुर्योधनहू हैसो विना जुध कैसे नाहीं करेगो. और हम तेरे छह पुत्र हों तैसेही दुर्योधनादिक १०० सोऊ तेरेही पुत्रहै तातें सों बांधवनकों छोडि पांचमे मिलों यह कौण विवेक ऐसे सुणि कुंती बोली तेरे धैर्यसे कर्म साक्षी सूर्य देव संतुष्ट होवो. तूं सत्यवादी वीर्यवान् मित्रनमे थिरहो तोहू तूं कनिष्ठ भ्रातानकों अभयदानदे. मैयह मांगों हों. तब कर्ण बोल्यो हे माता वृथा मोकों क्यूं जाचना करेहै. मेरे सहोदरनकों अभय हमकों भय यहतो श्रीकृष्णनें पहलेही दियोहै. हमारे पुरमें क्षणक्षणमें मृत्यु सूचक उतपात बहुत होतहै. चंद्रमातापकरेहै सूर्यसीतल लगेहै. भूकंप होत है मंदिरनिमें प्रतिमा चलेहै हसेहै. पसीना होतहै. रुधिर वमन करेहै उल्कापात होयहै. स्त्री गर्भिणीनके पसु आदि संतान होतहै. येक स्त्री में बहुत कन्या पैदा होय त-

तकाल हंसेहैं गावेहै नाचैहै च्यारों दिसानमैं दिग्दाह होत है ओर पांचौ छोटे भ्रातानको स्कप्नमें ऊंचे महलपैं चढे ज यलक्ष्मी सहित देषे अरु दुर्योधनादिकनकू ऊंटपे चढे दक्षिण दिसाकों जाते रक्त पुष्प आभरण सहित स्कप्नमें देषे युधिष्ठिरकों पर्वतपैं चढ्यो राज्यकरत देख्यो ओरभीम अर्जुन तहांही घृतषीर भोजन करत देषे. अरु नकुलसहदेव कौं स्वेत हाथीपैं चढे देषे ओरश्रीकृष्ण सात्यकीकों पालरवीमें चढे देषे ऐसे तेरी सेनामे सातनकों स्वेत माला स्वेत वस्त्र स्वेत चंदन लगाये देषे अरु दुर्योधनकी सेनामैं अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा ए तीन्यो तो पांडवनज्यौं ही देषे तातें सातता वे तीनये दसतो मृत्युके भयहीन होयंगे ओर सब मृत्युके ग्रास होइगे. ऐसे स्कणि कुंती बोली हे पुत्र ऐसे हैं तोहू तूतो भ्रातानको अभयदानदे तब कर्ण बोल्यो अर्जुनके मारिवेकी मे प्रतंग्या करीहै ताते अर्जुन विना चारोनकों अभय दान मे दीयो परंतु अर्जुन हूकों मरण भय मति करे याको कारण स्कणि पहले अस्त्रविद्या पढेता समयमे अर्जुनकी इर्षासो मे द्रोणाचार्यतें ब्रह्मास्त्र मांग्यो तब द्रोणाचार्य अर्जुन पक्ष करि मोतें बोले तेरे कुलको निर्णय नहीं तातें नहीं देंगे. यांअनादरतें महिंद्राचल पर्वत पै परसरामके पास मे गयो. तब मैं विचारि क्षत्रि वंसके वैरी परस रामहैं सो क्षत्री जाणि मोकों ब्रह्मास्त्र नदेंगे. याभयतें मायारूप ब्राह्मण होय भक्तितें संपूर्ण अस्त्र विद्या पाई तापीछे मदोन्मत्त होय वनमें भ्रमतें मेरे बाणतें कोई एक ब्राह्मणकी गाय मरी ताको स्वामी ब्राह्मण मोकों श्राप दियो जाकोतूं जीतिवेकी इच्छा करैहै तासो जुद्धमे तेरे रथके चक्रनको पृथ्वी गिलैगी. तब मैं वा ब्राह्मणसों बहुत विनती करी तोहूं वाको

क्रोध मिट्यो नहीं एकतो यह कारणहै दूसरे मेरीगोदमें शिर धरि गुरु निद्रा करतहे तासमें मेरी जंघामें अति पीडा भई अरु गुरुनकी निद्रा भयके भंगभयतें में सरीर कं पायो नहीं विद्याकों मानीनहीं तितनेही वज्रमुष अ ष्टापद कीट मेरी जंघाकों विदीर्णकरि निकस्यो तबही गुरु जागि मेरी जंघा रुधिर भईदेषि पूंछ्यों जबमें कीट दिषायो तब गुरुनके देषतेंही कीट भस्म होय दिव्य देह धारि प्रणाम करि बोल्यो मैं दैत्यहों भृगु ऋषिके श्रापतें कीटकी देह पाईही सो अब आपके दर्शनतें श्राप मुक्त होइ दिव्य देहपाई मैं जातहों ऐसेकहि अंतर ध्यान भयो तब गुरु कही अरे तूं ऐसेही प्रहारतें कांप्यो नहीं तासों क्षत्रीहै अ रु तैं कपटतें विद्या पढीसो निष्फल होयगी अरु कपट तैं ब्रह्मास्त्रकों सीष्यो सोहू तेरे मृत्यके दिवस वाकों सन्मुष उन करैगो. हे माता औरहू कारण स्रुणि मेरे कवच कुंड ल स्रुभावहीसों अभेद्यहै अरु इंद्र ब्राह्मणको रूप धारि तिनकी जाचना करीतब पिता सूर्य स्वप्नमें आय मनें कि यो तोहू ताहूनें कवच कुंडल दिये अब अर्जुनहूं कैसे जी तूं और जुधसे रुद्रकोंभी जीत्यौ अरु मे कवच काढि इं द्रको दियो जब इंद्र मेरे सत्वतें संतुष्ट होय एकवीर घा तिनी सक्ति दीनी. सोहू कृष्णके मंत्रतें निष्फलही दीसे है मै स्वभबलतें मेरी जुद्धमे मृत्युही जानोहों पैवचन अ न्यथा कैसे करों और अब जुद्ध यात्रा समें मे हे माता सर्व तीर्थरूप तेरे दर्सन पाये यातें मैं धन्यहों ऐसे बोलि प्रणा म करि यात्रा कुरुक्षेत्रकों करी जब चलतेही करणको कि रीट पृथ्वीमें गिस्यो औरहू अपस्रुकन अनेक भये तिन्हें देषि धीर्ज धरि कर्ण कुरु क्षेत्रमें दुर्योधन पास गयो तहां स कलवीर मंडली सहित दुर्योधनहौं तबजयद्रथमे सकल पांड

वनकों जीतोंगो. ऐसें रूणि जयद्रथकों सेनापतिकी अभि
षेक कियो जब पांडवनमें सात्यकी जादव सहदेव मगध
राज धृष्टद्युम्न विराट सिषंडी धृष्टकेतु चेदीश्वर ऐसांतन
कों युधिष्ठिरहू सेनापतिको अभिषेक कियौ ऐसे जुधरच
ना देषि मध्यस्थ बलदेव युधिष्ठिर सौं पूछि तीर्थ यात्राकों
गये तब तहां तुम मेरे सरण आवो मैं तुमकों विजय द्यूंगो
ऐसे बोलतो अक्षोहणी पति रुक्मी आयो ताकों युधिष्ठि
र दुर्योधन दोउनमें अंगीकार नकर्यो सो आपके पुरकों
गयो जब दुर्योधन जोद्धानसों बोल्यो ये पांडवनके सात
अक्षोहिणी सेनानकों कोणवीर कितेक दिनमें मारै तब
भीष्म द्रोणतो दिन ३० तीस कहे. कृपाचार्य ६० साठि
कहे. अश्वत्थामा दिन १० दस कहे. कर्ण दिन ५ पांच
कहे तब ऐसें रूणि दुर्योधन भीष्मसों रथी महारथी अ
तिरथीनकी संख्या पूछी जब भीष्म पितामह औरनकोंक
हतें कहतें कर्णकों अधरथी कह्यो तब कर्ण रूणि पूर्वप्र
तंग्या तुम सरसज्या सोवोगे जब जुध करों यह हठ करी.
जब ऐसें रूणि राजा दुर्योधनहू पांडवनकों भयभीत करि
वेको राजा उलूककों दूतकर्म करिवेकों पठायो. सो सभा
में विराजमान राजा युधिष्ठिरसों बोल्यो हे राजा युधिष्ठि
र तुम कोनके बलतें कुरु राजतें जुध कर्यौं चाहतहो यह-
द्यूतको षेल नही है जामें हारे पीछे भी स्त्री बांधवन सहित
जीवन जाइ जुधमैं तो सबके प्राण रहेंगे नहीं तातें जीवते
जाइ विराट भूपके घर रसोई दार भ्राता भीमके प्रसादतें
सर्वदा मिष्ट भोजन करो अर्जुनके धनुषकी प्रत्यंचाकी धु
णी रुई द्रोपदी कातवस्त्र वणवाय. विप्ररूपधारि तो कोप
हरावो ऐसेंहू निश्चिंत गादी तकिया तोकों हे ही मृत्युकी दूती
राजचिंताहै ताकों छोडो यह सात्यकी कृष्णादिकनकों का

लके कलेऊ मति करो अरु जो रथ पालकी हाथी घोडाच ढिवेकी वांछाहैतो सेवक नकौं कल्य हस राजा दुर्योधनहै ताकी दासता अंगीकार करि रहो ऐसे सुणि पांडवनके औ सकल योधानके लालनेत्र होय भृकुटी चढि शस्त्रा स्त्रउठिवे लगे. तब युधिष्ठिरकी भृकुटीकी संग्या करि उ लूक प्राण बचायवेके निमित्य भयभीत होय भागि दुर्यो धनके पास जाय सर्व समाचार कहे.

॥ दोहा. ॥

प्रगटपर्वउद्योगयह भाषाभारतसार ॥ रावसिंभुस्त केहुकम कीनो स्रकवि विचार ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां उद्योगपर्व णि उलूका गमनं नाम चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

इति श्रीभाषाभारतसार उद्योगपर्वसमाप्त

पांडवसेना
अर्जुन
कौरवसेना
पांडवसेना
अर्जुन

भीष्मपर्व चित्र २
भीष्मअर्जुनयुद्ध
भीष्म
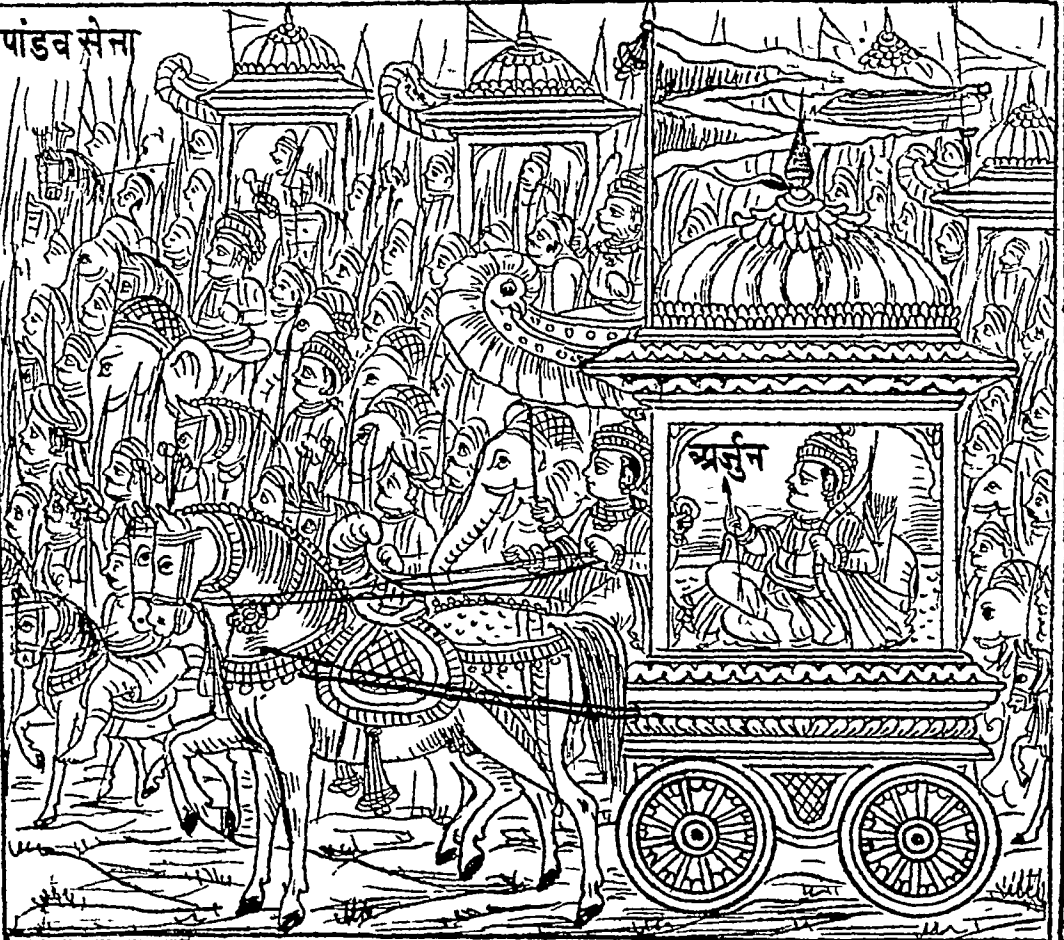
अथ भाषाभारतसार भीष्मपर्व लिख्यते.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्त मम् ॥ देवींसरस्वतिंव्यासंततोजय मुदीरयेत् ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ ऐसे कुरुक्षेत्रमें जुद्ध स्रुणि भरतषंडसें बालक वृद्धहीतो घरनमें रहे और सर्व वीर दोउ सेनामें पक्षपाती बणि बणि आये तब वेदव्या स मुनि धृतराष्ट्रसों आय बोले तोकों मैं दिव्य मंत्र दृष्टिसों तूया जुधकों देषि तब धृतराष्ट्र बोल्यो मैं आजलूं जन्म प्रजंत कछु देख्यो नही अब कुलको क्षयकैसे देषूं तातें सं जयकों दिव्य दृष्टि दीजिये यह सब देषि जुधकी वार्ता मोसों कहेगो. जब वेदव्यास संजयकों दिव्य दृष्टि देके गये. जब संजय जुध देषि राजाके महलनमें रहतही सब वृत्तांत क हत भयो हे राजा धृतराष्ट्र स्रुणो जो रणमें सिटावे ताकों मारणों नहीं ऐसे प्रतंग्या करि दोउ सेनाके वीर जुधकों त यार होयके चढे मातापिता गुरु ब्राह्मणनकों प्रमाणी न कों प्रणाम करि तिलक अक्षत पाय वीर कंकण धारि च लिवेकों तयार भये तहां स्रुभद्रा अभिमन्युसों बोली हे पु त्र मैं वीरकी पुत्री अरुवीर भार्यातोहूं पैंतु अब मोकोंवी रजननी हूकरि ऐसैंही औरहु माता पुत्रनकों आशीर्वा द देकरि विदाकरे तहां कौरवनकीसेनामें अग्रेस्रुरभी ष्म भये चांदीको रथ श्वेतवस्त्र कवच तिनकरि शोभाय मान स्रुवर्णमय पांच साषा संजुक्त तालवृक्षजुध करि प्रकासमान सेनापति भये तिनके आसपास द्रोणाचा र्य अश्वत्थामा कृपाचार्य ऐसैंच्यारित्तो अतिरथी भये क

र्ण, सल्य, सकुनी, शिव, उलूक, सोमदत्त, भूरिश्रवा, कलिंग राज, अग्निकेत, भगदत्त, विकर्ण, दुःसासन, जयद्रथ, दुर्योधन और हू महारथी भये. पांडवनकी सेनामें श्वेत अश्व सहित हनुमंत ध्वजामें जाकै ऐसे बडे रथमें महा अति रथी अर्जुन श्रीकृष्ण सहित असवार होय सबके आगे भयो ताके आस पास सात्यकी, विराट, द्रुपद, अभिमन्यु, भीमसेन, बर्बरीक, घटोत्कच, नकुल, सहदेव राजा युधिष्ठिर ऐतो अति रथी और पांचों द्रौपदीके पुत्र इरावान, अर्जुनको पुत्र, शिषंडी, धृष्टद्युम्न, संषस्वेत आदि लेर विराटके पुत्र ए महारथी भये सबनिके शिरोमणि श्रीकृष्ण जिनके प्रभावतें सर्व अतुल बल पराक्रमी भये और भीष्म द्रोणाचार्यके प्रभावतें कौरवनके हू जोधा अति बली भये तहां श्री कृष्ण बर्बरीकके हाथमें तीन बाण देषि हसते ही बोले. हे भीम हे अर्जुन या बर्बरीकको पराक्रम देषो. ऐसे जुधमें तीन बाण लेके आयो है इनकों छूटे पीछे काहेतें जुध करैगो. और सबतो अनंत बाण धारे है ऐसे सुणी बर्बरीक बोल्यो मैं एक बाणकरि सबनकूं घायल करि मृत्यु स्थानमें चिन्ह करोंगो. द्वितीयबाण करि सबनिके जीव हरण करूंगो. मैं एक बाण राषि निर्भय रहूंगो. ऐसो वचन सुणि श्रीकृष्ण बोले हम कों परिक्षा दिषावो तब बर्बरीक एकबाण सिंदूर रंजित करि धनुषपें धारि कान पर्यंत षेंचि आकासमें चलायो सो बाण सप्त लोकनिमें भ्रमि सबनिके मृत्युस्थानमें सिंदूर चिन्ह करि कृष्णके चरणमें प्रहार कियो तातें सबनिके प्राणनकों व्यथा भई दूसरो बाण संधान करिवे लग्यो तब श्री कृष्ण हँसिकरी बोले हे बर्बरीक तेरो पराक्रम अनूप देषि हम प्रसंन्न भये अब बाण संधान मति करै ऐसें.

कह बर्बरीककों प्रश्नकियो. तापीछे दूसरे दिन अंशफ नाषत श्रीकृष्ण पांडवनसों बर्बरीकके देषत बोले यह जुध भूमिअ ति बलवान पुरुष पस्फको बलिदान करि पूजणाहै और जो न पूजैंगे तो यह रण भूमि सब पांडवनकों षायगी. ऐसे स्फ णि पांडव बोले हमारे हितकर्ता तो तुमबिना औरहै ही नही तातो जाकों बलिदान किये बिजे होयसो तुमही बतावो. तब श्रीकृष्ण बोले जो बत्तीस लक्षण सहितजो धा निर्भय होय सोबलदान योग्यहै. तब पांडव बोले या सेनामे ऐसो होय ताकों तुमही बतावो ऐसे स्फणि श्रीकृ ष्ण रुदन करतही बोले. एकतो मैं दूजो बर्बरीक तीसरो अर्जुन इनतीननमें जो इच्छा होय ताकूं बलिदान करो. एक के मरेतें और सब जीवेगे. वैरी मात्र मरेगे ऐसे स्फ णि बर्बरीक हर्षित होय बोल्यो श्रीकृष्ण अर्जुन विनातो सब मरेही है तातें मेरोही बलदान करो. मेरे मरेते सब कों जीवन होयतो मैं धन्यहों तुम सब राज्य करोगे या. तै मेरो अधिक भाग्यकहा है. ऐसे कहि एक हस्तसों आपकी शिषा गहि दूसरे हाथतें शिरकाटि श्रीकृष्णसों हे कृष्ण हे कृष्ण पृथ्वीके भार दूरिकरिवेकों मनुष्य रूप धार्योहै मैं आपको आग्याकारी दासहों तातें मोको सर्व जुद्ध दिषाय मुक्ति परासकरो. ऐसे भक्त बर्बरीकको वच न स्फणि श्रीकृष्ण तथास्तु कही आपके चरननिमे पडेते बर्बरीकके मस्तककों दोउ हाथतें उठाई पर्वतके शिषर पै धारि बोले हे महावीर बर्बरीक जो जुध होयगो सोतूं देषि ऐसे कहि पांडवनको सोक दूरि करि जुधको आरं भ करावत भये. मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी भौम वारमें कौरव पांडवनकों जुध आरंभ भयो. जुध समयमै दोउ सेनाकों तयार देषि अर्जुन श्रीकृष्ण सों वचन बोल्यो

मेरे रथकों दोउ सेनाके बीच स्थापन करो दुर्बुद्धि दुर्योधन
को हित करिवेकों जुधमें आये तिनकूं देषूंगो ऐसे अर्जुन
को वचन स्रुणि अर्जुनके रथको श्रीकृष्ण भीष्म द्रोणादि
कनके सनमुष स्थापन करि बोले हे अर्जुन इन कौरवनकों
देषि तब अर्जुन सेना देषी तामे पितृव्य, पितामह, आ-
चार्य, मित्र, स्रुहृदय, पुत्रपौत्र, सषा, श्वश्रुर, गुरु ऐ-
से दोउ सेनामे सर्व बांधवनकों देषि कृपा सहित दुष्वकरत
बोल्यो हे श्रीकृष्ण जुद्ध करिवेकों आये स्वजनकों देषि श
रीर दुष्व पावतहे सुष सूकत हे. रोमांच कंपादिक होत हे.
गांडीव धनुष हाथतें गिरे हे त्वचा जलेहे दाढौर हुदि सकू
नहीं मन भ्रमे हे. सकुन षोटे दीषेहे. तातें स्रुजनकों
मारि विजय स्रुष राज्य नचाहूंहों जिनके अर्थ राज्यभो
ग स्रुषचाहियेवे प्राणधन छोडि जुद्धमे आये आचार्य.
पितर पुत्र पितामह मामा श्वसुर साला संबंधी एमोकों-
मारै तोऊ मै त्रैलोक्यके राज्य निमितहू इनको नही मारौं
यह पृथ्वीको राज्य कहाहे धृतराष्ट्रके बेटानको मारेतें ह
मकों कहां स्रुष होय इन आतताईनके मारेतें पातकही
होय. तातें धृतराष्ट्रके पुत्रनकों मारणो जोग्य नहीं स्वजनके
मारे कहां स्रुष होय. यह लोभके मारे पुरुष कुलक्षय दोस
को मित्र द्रोहके पातककों नदेषेहे. पे हमतो या पातककों
नकरेंगे. यापातकते कुलको नास होइ कुल नास भये
कुल धर्म नष्ट होइ कुलनष्टभये अधर्म वधे अधर्मकीवृ
द्धितें कुलस्त्री भ्रष्ट होइ तव वर्ण संकर संतान होय वह
वर्ण संकर संतान होय पितरनकों पिंडदानदेके नर्कनमें
पटके ऐसे वर्ण संकरकी वृद्धितें जाति कुल धर्म नष्ट होय
धर्मनष्ट भये. मनुष्य नर्कहीमें पडै सोहम राज्यके स्रुष
लोभतें महापातक करिवेकों तयार होय स्रुजन हत्या

करिवे लगे अरु धृतराष्ट्रके बेटा सस्त्र चलावे तोहू थहू आडे न करैगें. अरु सस्त्रहू धारण करूंगो. जो धृतराष्ट्र के बेटा रणमैं मारि डारे तोहू कुसल होय ऐसे कहि अर्जुन धनुषबाण धारि सोकसौं व्याकुल होय रथमै बैठि गयौ. ॥ ॥ इति श्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां भीष्मपर्वाणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ संजय उवाच ॥ ॥ ऐसै करुणातैं रुदन करत विषाद सहित अर्जुनकों देषि हसतेही श्रीकृष्ण वचन बोले हे अर्जुन ऐसे रणमैं कायरतातोकों कहांतै आई कायरतातो नीचकौ धर्म है ऐसे कीये यालोकमैं अपकीर्त्ति होय. परलोकमै नर्क प्राप्त होय अरु तेरे मात्र वंस पित्र वंस दोउ सूर वीर है तातै तोकों नपूंसक पणों योग्य नही क्षुद्र जीवनकीसी कायरता छोडि उठिकै सस्त्र धारि जुद्ध करि तब अर्जुन बोल्यौ मैं कायरतासों जुधसौंन टौ नही जिन हमकों बालक पणे तैं पाले विद्या पढाई ऐसे भीष्म पितामह गुरु द्रोणाचार्य जिनसौं वाणीहीतैं जुध जोग्य नही तिनतैं बाणनसौं कैसे जुध करौं येतो पूजा करिवेकों जोग्यहैं. गुरूनकौं पितामहनकों मारि करि भोग भोगनो सोतो रुधिर पान है इनकों मारे विना भीक्षा करि जीवणो सोही श्रेष्ठ है राज संपति जिनके वास्ते चाहिये सो तो सवही प्राणधन छोडि जुधकरिवेको तयार भये या धर्म संकटमैं जुध करैसो अथवा भीक्षाकरि जीवेसो धर्म होय सो निश्चै करि आग्याकरो. मै आपको सरणागत शिष्य हौं तुमविना मेरो उद्धार करिवे वालो औरहै नहीं. ॥ ॥ संजयउवाच ॥ ॥ ऐसे दोउ सेनाके विचि विषाद करते अर्जुनसौं श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन सोच जोग्य नहीं तिनकों तूं सोचतहै पंडित नही अरु पंडितन कीसी बो-

ली बोलतहै पंडितत्तो मरेनकौ वाजीवतेनकौं नहीं सोचत
रूधर्म देषिके कायर पणो जोग्य नहीं अरु क्षत्रीनकों धर्म
करि प्राप्त भयो जो जुध तातें अधिक कल्याणको करिवेवा
लो दूसरो साधनहै नहीं ताते इश्वरकी इच्छाते मिल्यो बु
ल्यो हुवो स्वर्गको द्वारतो जुधहीहै सो अति पुन्यवंत क्षत्रि
य पावतहै. अब धर्मसो प्राप्त हुवो जुध नकरै गोतो स
धर्म वाकिर्ति छोडि नर्कनमें पडैगो चंद्र सूर रहैगे तब तेरी
अकिर्ति जगतमें रहेगी. प्रातिष्ठितकी अपकीर्ति मरणते
भी अधिकहै दयातें रणविमुष तूं भयो यह कोई नकहे गो
जे तोको बहुत माने है वे सत्रु तोकों तुच्छ जाणेंगे षोटे व
चन कहेगे. तेरे सामर्थताकी निंदा करेंगे. यातें अधिक
दुष्य कहाहै. जुधमें मरेगो तो स्वर्ग पावेगो जीते गोतो भू
मि भोगेगो. तातें जुधके निमित्त उठि रूष दुष लाभ अलाभ
जय पराजय येसब समान मानिजुध करि ऐसे किये पा
न लगेगो यह में बुद्धि दईहै सो करि मैकीयो मै भोग्यो ऐ
से कदाचितहू मत कहै ज्यो कर्म करेवा भोजन करै ज्यो
होमें ज्यो देवै ज्यो तपकरै सो मेरे अर्पणकरि कर्मतो करि
परंतु फलकी कामना मतिकरै सिधि समान जाणि फलका
मना छोडि क्षत्रीयको धर्म यहहीहै. ऐसो जाणि जुधकरि
पापतें लिपैगोनहीं ऐसो श्रीकृष्णको वचन रूणि अर्जुन
मोह छोडि जुध करिवेको उठ्यो सस्त्र धारण किये तास-
मयमे सर्ववीर सस्त्रास्त्र प्रहार करिवे लगे. वीरनके परस्प
र कोलाहल भेरी तुरी डमरू नगारे संष बाजा बजे तासम
यमें युधिष्टिर सस्त्र छोडि रथतें उतरि चल्यो ताकूं देषि क
ही राजा कहां जातहै ताके पीछे भीमादिक भ्रातादू पया
दे संग भये तिन सहित राजा भीष्म पास गयो ताकों दे
षि सर्व कौरव दुर्योधनादिक ऐसे विचारत भये यह युधि

ष्ठिर भयभीतव्हैके सरण आयो तापीछे युधिष्ठिर भीष्मके चरणनमैं प्रणाम करि बोल्यो हे पितामह हम तुमतें जुधकरैं विजयके निमित्त यह आग्याद्यो. ऐसें सुणि भीष्मबोले हे युधिष्ठिर तुमजुधकरो हमकों जीतो जो आग्या लेवेकों न आवतो तो तोकों शाप देतों तातें आयो यह तोकोयोग्यही है अब कहा वरद्यूं जब युधिष्ठिर बोलेजो आप प्रसन्न हो तो आपके मरिवेको उपाय बतावो तब भीष्मबोले सर्व देव जुधकरें तोहूं न मरों फेरि कभी आवैगो तब निज मरणकों उपाय कहौंगो. ऐसे भीष्मसों मिलि द्रोणाचार्य पास गयो उहांही भीष्मकोसो सिष्टाचार कियो जबद्रोणाचार्यहू भीष्मलौ वरदान देयबोले जब राजा उनहूकों उनके मरिवेकों उपाय पूंछ्यो जब द्रोण बोले मैं सस्त्रत्यागकरौं तब मरों. जब युधिष्ठिर कही सस्त्रत्याग कैसे करो तब द्रोण बोले तोसरीसे सत्यावादीके मुषसों अति अप्रिय सुणों तब सस्त्र त्यागकरूं तातें अब तुम जावो जुधकरि वैरिनकों जीतो. ऐसी द्रोणकी आग्या पाई कृपाचार्यके पास जाय प्रणाम करि दोउनको संवाद कहि जयको आशीर्वाद पाय शल्य पासगयो ताको प्रणाम करि प्रश्नकियो जब वह वरदान देवे लग्यो तब पहली प्रतग्या कर्णको उत्साह भंग वचनकी करीही सोही दृढ कराई तापीछे श्रीकृष्णचंद्र करणकेपास जाय बोले भीष्म जीवतें तूं जुध करैगो नहीं तातें हमारे सामिल हो भीष्म मरे पीछे इनमैं फेरि आय मिलियो सोवचन कर्ण मान्यो नहीं तब श्रीकृष्ण युधिष्ठिर दोउ सेनाके बीच भुजा उठायके बोले जो अबहू हमारे सामिल आवै ताको अंगिकार करें. ऐसें सुणि हे राजा धृतराष्ट्र तेरे सों १०० कुपुत्रनतें जुदो होय युयुत्सु पुत्र पांडवनमैं मिल्यो ताकों संगले निज से-

नामै आय राजा युधिष्ठिर रथपें सवार भयो औरहू भीमादिक भ्राता रथनिपें चाढि जुधके निमित्य तयार भयेसबनिके रथ चक्रनके सबद अश्वनिके शब्द गजनके गर्जित शब्द वीरनके सिंहनाद सकल वादित्र सद्द तिनकरि दसों दिसा शब्दायमान भई तहां संग्राममें सवार सवारतें पयादे पयादेनतें रथी रथीनतें हाथीनके सवार हाथिनकेसवारनतें परस्पर द्वंद्व जुध करत भये. एकवेर तोरजके अंधकारनतें दिनकी रात्रि भई पीछे सस्त्रास्त्र प्रहार न करि रुधिरकी वर्षा तें रजदवी. तापीछे वीर परस्पर घोर जुद्धकरत भये तिनमें कित्तनेनके सिर हाथ भुजा पाउ कटिकटि रणमें पडे तिनकरि भूमि छाइगई तासमैमें अभिमन्यु बाण वर्षा करत सत्रुनके व्यूहमें प्रवेस करी वैरीनको मथन कियो ताके रोकवेकों राजा वृहद्बल कृपाचार्य द्रोउ आये. तब अभिमन्यु वृहद्बलसों घोर जुध करत भयो. चारों जोधानकों सब जोधा देषत भये. दुर्मुष धृतराष्ट्रपुत्र. वृहद्बलकी सहायताकों आयो. ताके सारथीकों सहदेव मार्यो वृहद्बल बाण निकरि अभिमन्युके सारथीकों और धुजाकों छेदन कर्यो सो देषि कोपयुक्त होयअभिमन्यु सकल सेनाकों मर्दनकरि बाणवृष्टि तें दसों दिसा आच्छादित करी. सर्व सेनाकों व्याकुल करि भगाई सेना भागी देषि भीष्म पितामह धनुष टंकार करि बाणनिकी वर्षा करत आये तावर्षातें पांडवनकी सेना व्याकुल भई. ताकी रक्षा करिवेकों एक अभिमन्यु भीष्मके सन्मुष आय भीष्मके हृदयमें बाण मारे. प्रपौत्रके बाण हृदयमें लगे तिनकों पुष्प वृष्टि तुल्य मानि आनंदतें नेत्रमीचे ताकौं सब कौरवननें व्याकुल मानि सहाय ताके निमित्त कृपाचार्य कृतवर्मा दुर्मुष. विविंसति सल्य आय अभिम-

न्युसौं जुधकरत भये. अभिमन्यु छऊ महारथीनके बाण
नकी व्यथाकौं नगणि भीष्मकी धुजा काटी दुर्मुषके सार
थीकौं मार्यौ कृपाचार्यकौ धनुष काट्यौ ध्वाजा छेदतें भीष्म
क्रोध करि यम दंड तुल्य बाण चलाये तिनकौं देषि पांडुवनकी
सेनातें सहायता निमित्त दस महारथी आये तिनकौं देषि
भीष्म ऐसौ जुध कर्यौ सो सबननै भीष्मकौं मूरतीमंतवी
र रसही मान्यौ तहां विराट पुत्र उत्तर भीष्मके सारथी और
अश्वनकौं मारे तब सल्य देषि उत्तरके मारिवेकौं शक्ति च
लाई ताके प्रहारतें हाथीतें गिरिके उत्तर मर्यौ जब उत्तरकौ
भ्राता संष सल्यके सारथी और घोडा मारे सल्य व्याकुल हो
य कृत वर्माके रथपें चढ्यौ ताकौं संष बाणनतें व्याकुल
कियौ तासंषकौं सृंजय जयद्रथ आप जुध करि रोक्यौ तब
संषके मारिवेकौं आवते भीष्मकौं अर्जुन आय रोके. तब
भीष्म अर्जुनकौ जुध अनेक वीरनकौ संघार कियौ. अरु
संष सल्यकौ पयादौ कर्यौ तब सल्य गदा प्रहार करि संषकौ
रथ तोडि आपहो तैसोही कियौ. जब संष षड्ग प्रहार करि
ता वैरीनकौं मारि अर्जुनके रथपें चढ्यौ जयद्रथ अर्जुन वि-
ना सब पांडवनकौं व्याकुल किये भीष्म गज घंटानकौं षंड
षंड करत भट समूहकौं संहार करत रथीनके समूहकौं छिन्न
भिन्न करत संवारनकौ मारत भयौ साक्षात जमरूपही देषै
बाणनतें आकास छायगयौ. ता अंधकारकौं देषि सूर्य
अस्ताचलकौं गयौ जब भीष्म जुधकौ अवहार कर्यौ. तब
चंद्रमाके प्रकासतें सर्ववीर आप आपके स्थान गये. ॥ ॥
॥ ॥ इति श्रीभाषाभारतसारचंद्रिकायां भीष्मपर्व-
णि प्रथम दिवस जुधवरणनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥
॥२॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ ॥
रात्रमैं राजा युधिष्ठिर भीष्मकौ पराक्रम देषि व्याकुल भयौ

नामै आय राजा युधिष्ठिर रथपैं सवार भयो औरहू भी
मादिक भ्राता रथनिपैं चाढि जुधके निमित्य तयार भयेस
बनिके रथ चक्रनके सबद अश्वनिके शब्द गजनके गर्जि
त शब्द वीरनके सिंहनाद सकल वादित्र सद्द तिनकरि
दसों दिसा शद्बाय मान भई तहां संग्राममै सवार सवारतें
पयादे पयादेनतें रथी रथीनतें हाथीनके सवार हाथिनकेस
वारनतें परस्पर द्वंद्व जुध करत भये. एकवेर तोरजके अं
धकारनतें दिनकी रात्रि भई पीछै सस्त्रास्त्र प्रहार न करि
रुधिरकी वर्षातें रजदवी. तापीछै वीर परस्पर घोर जुद्धक
रत भये तिनमें कितनेनके सिर हाथ भुजा पाउ कटिकटि
रणमे पडे तिनकरि भूमि छाइगई तासमैमें अभिमन्यु
बाण वर्षा करत सत्रुनके व्यूहमें प्रवेस करी वैरीनको म
थन कियो ताके रोकवेकों राजा वृहद्बल कृपाचार्य दोउ
आये. तब अभिमन्यु वृहद्बलसों घोर जुध करत भयो
चारों जोधानकों सब जोधा देषत भये. दुर्मुष धृतराष्ट्र
पुत्र. वृहद्बलकी सहायताकों आयो. ताके सारथीकों से
हदेव मार्यो वृहद्बल बाण निकरि अभिमन्युके सारथी
कों और धुजाकों छेदन कर्यो सो देषि कोपयुक्त होय अ
भिमन्यु सकल सेनाकों मर्दनकरि बाणवृष्टितें दसों दि
सा आच्छादित करी. सर्व सेनाकों व्याकुल करि
सेना भागी देषि भीष्म पितामह धनुष टंकार
निकी वर्षा करत आये तावर्षातें पांडवनकी
भई. ताकी रक्षा करिवेकों एक अभिमन्यु
आय भीष्मके हृदयमें बाण मारे. प्रथ
लगे तिनकों पुष्प वृष्टि तुल्य मानि अ
कौं सब कौरवननें व्याकुल मानि
पाचार्य कृतवर्मा दुर्मुष. विविं

विछायत करी भीष्मकों भक्ति और सक्ति दोउ दिषाई भीष्महूबाण धारनकरि श्रीकृष्ण अर्जुनकों सरपंजर मैं देय प्रहार कियो तिन करि दोउ रुधिरमयभये इनकीद सा देषि पांडवनकी सेना भगी. अर्जुन भीष्मके गौरव तैं सिथल जुध करत भयो तब श्री कृष्ण बोले तूं याटद्ध कों मारे नहीं है सो मै मारोंगो ऐसेकही रथतें उतरि चक्र ले भीष्मके सनमुष दौडे तब श्रीकृष्णकों आवत देषि भीष्म बोले हे नाथ आइये आइये आपके प्रसन्न करिवे कों तप वृथाही करेहे मैं अपराधीहों धन्यहूं अब मेरो सिर चक्रतें काटिये. ऐसे कहि शिरनवायो सो देषि अर्जुन रथतें उतरी श्रीकृष्णकों दोउ भुजान वीचि पकडे अरु वचन बोले हे श्रीकृष्ण प्रतंग्या भूलि यह क्रोध करिवो अ समयमें जोग्य नहीं आपकोही पराक्रम मोमैहै सोदेषो. ऐसे कहि प्रणाम करि रथपें लेगयो. फेरि धनुष धारि बाणनकी वर्षा करी अनेक रथी महानकों मारि रणभूमि कों रुधिर मईकरी ताकों देषी सर्ववीर प्रलय कालमें कुपित जो रुद्र ताकी तुल्यही अर्जुनकों मानत भये. ऐसे अर्जुनकों विजय देषि सर्वसेना व्याकुल भई सूर्यास्त जाणि सर्ववीर आपने स्थान गये. ॥ ॥ इतितृतीय दिन जुध ॥ ॥ सबही वीर रात्रि वितीतकरि प्रभातही कौरव कूर्म व्यूह करि जुधकों आये पांडव अर्धचंद्र व्यूह रचि जुधकों आये भीष्म अभिमन्युकों मुष्य करि दोउसेना जुध करतभई कितनेक काल ताई भीष्मके अभिमन्युके समान जुधभयो धृष्टद्युम्न पौरव्य को पुत्र मदन सायमीइन दोउनसों जुध करि दोउनकोंमारे भीमसेन मगधेंद्रकी सेनाके हाथीनकों मारि पयादो गदागहि वीरनकों ऐसे मारत भयो जैसे तृण मंडलमैंवि

ताकौ श्रीकृष्ण समाधान करत भये. प्रभात सूर्योदय समै क्रौंचव्यूह रचि कौरव पांडव जुध करत भये. भीष्म बाणन करि राजानके सिर काटे सो पृथ्वीमै पडत्त भये. तिनकौं देषि अर्जुन लडवेको दौड्यो तिन दोउनकौं द्वंद जुध भयो. और वीर परस्पर यथेच्छ जुध करत भये. भीमसेन कलिंग राजकी सेनामैं जाय हाथीके शिर गदासूं विदीरण करे. तिनतें सोतीरनकी वर्षा भई हाथीनकौं पकडि पकडिके आकासमै फैके तिनके रुधिरकी वर्षातैं व्याकुल क्षत्रदेव भानुमंत ये दोऊ भये तबइन दोउनकौं भीममारे ऐसे भीमको पराक्रम देषि सेना भगी ताकौ समाधान करत भीष्म भीमसौं जुध आय कियो. जब दुर्योधनादिक भीष्मकी सहायताकौं अभिमन्यु आयो तिनके परस्पर अति घोर जुध भयो. तामैं अनेक वीर मरे. रणभूमि मृत्युकी क्रीडा भूमि समान भई सूर्यकौं अस्त भयो देषि जुधकौ अवहार भयो : ॥ ॥ इति द्वितीय दिन युद्धः ॥ ॥ फेरि प्रभात भीष्म गरुडव्यूह रचना करी. पांडव अर्ध चंद्र व्यूह करि जुध करिवे लगे. परस्पर प्रहारनतें रुधिर वृष्टि भई. तातै सब रक्तवर्ण भये. तासमयमैं भीम घटोत्कच दोउ कौरव सेनामै प्रवेस कियो सर्व कौरव दोउनपै बाण वृष्टि करी. जब भीमसेन दुर्योधनकौं विरथ करि उरमै बाण मार्यो तासै मूर्छित होयगिर्यो तब सारथी दुर्योधनकौं लेगयो फेरि चेतपाय भीष्मपैं आय दुर्योधन बोल्यो तुम पांडवनतें मिलेहो सो स्वधमनसौं जुध नहीं करतहौ. ऐसे सुणि भीष्म क्रोधकरि बाण वर्षाय पांडवनकी सेना अति व्याकुल करी सोदेषि श्रीकृष्ण अर्जुनके रथकौं भीष्मके सनमुष ल्याये अर्जुन बाणवृष्टि करि भीष्मके बाणनकौं छेदि अनेक राजानके सिर काटे और राजानके सिरकाटि काटि पृथ्वीमैं

त मूर्छित भये. तब भीमसेन दुर्योधन आप आपके रथ म
मैं धरि दोउ मूर्छितनकों लेगये. चेतपाय दोउही जीवनकों
मरनतें अधिक मानत भये तासमयमें सात्यकीके पुत्रनकों
मरण सुणि अर्जुन क्रोधतें कौरव सेनाकौ अग्नि रूप ब
णि नासकरत भयो पचीस हजार महारथी मारि यमलो
क पठाये सर्व सेना रुधिर मई नदी नमें रक्त वर्ण होय होय
व्याकुल भई ताके समाधानके निमित्त भीष्मके जुधकरतें
करतें ही सूर्य अस्त भयो तव जुध समाप्त भयो ॥ ॥
इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां भीष्मपर्वणि पंचम दि
वस जुधनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ फेरि प्रभातही कौरवतो क्रौंच व्यूह रचि
पांडव मकर व्यूह रचि दोउ जुद्ध करत भये सो भीष्मके बा
णनकरि पांडवनकी सेना व्याकुल भई ताकों देषि भीम धृ
ष्टद्युम्न कौरवनकी सेनाको क्षय करत भये तहां भीमसों
दुर्योधन दुंद युधकियो तब भीम दुर्योधनके प्रहार सहि
रथतें उतरि सैंकडांन हाथीनकों पकडि पकडि आकास
मैं फेंके और धृष्टद्युम्न बाणनकी वर्षा करि कौरवनकों
व्याकुल करे. धृष्टद्युम्नके बाणतें दुर्योधन मूर्छित भयो
ताकों कृपाचार्य रथपै धरिलेगये. तब पांडवनकी सेनाकौ
सिंहनाद सुणि भीष्मबाण वर्षाकरी तहां द्रौपदीके पां-
चौं पुत्र भागि निज सेनाकों थांबि कौरवनकी सेनाकौ क्षय
कर्यौ इनकों जुध होतें होतेंही सूर्यअस्त भयो तब युध
समाप्त भयो. ॥ ॥ इतिषष्ठ दिवस जुधनाम चतु
र्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥
प्रभातही भीष्म मंडल व्यूह रचि पांडवनके वज्र व्यूह स
न्मुख आये. तहां अर्जुन भीष्मके घोर जुध भयो तब रा
जा विराट और द्रोणाचार्यके जुध भयो सो जुधमैं विरा

करत अग्निनास करे जब दुर्योधन भातान सहित आय भीमके हृदयमें बाण मार्यो सो व्यथा सहि भीम क्रोध करि एक बाण दुर्योधनकी छातीमें मार्यो तासों मूर्छित भयो. ता अवकासमें सेनापति सुषेण, जलसंध, सुलोचन, भीम, उग्ररथ, भीमबाहु, अलोलुप, सम, विवित्सु, विकट, दुर्मुष, दुर्षण, दुर्मर्ष इन चौद हनकों भीम यमलोक पहुंचाय सिंह नाद कियो तासमैमें भगदत्त हाथीपें चढ्यो आय भीमकों बाणनतें व्याकुल कियो तहां घटोत्कच आय हाथीनकी सेनाकों मारि सस्त्र वृष्टितें भगदत्तकों हाथीन सहित छाय अरु बहुत हाथीनकों राजानकों मारि घोर अंधकार करि दिन हीमें रात्र करी. ता रात्रमें आपुने परायेकों ग्यान रह्यो नहीं वीर बहुत मरे तिनकों देषि भीष्म दिनहीमें जुध समास कियो सो सुणि कौरव आजितोन मरे ऐसें विचारत डेरानकों गये. ऐसें विचारि आपके डेरानकों गये. ॥ ॥ ॥ इतिचतुर्थ दिवसजुद्धम् ॥ ॥ तापीछें दुर्योधन रात्रमें भीष्म पास जाय पूछी हे पितामह नित्य पांडवही जीतेहें अरु आपनो विजय नहीं ताको कारण कहा. जब भीष्म बोले हे दुर्योधन देवतानकी विनतीतें नरनारायण अर्जुन श्रीकृष्ण भये. सो उनकी सहायतें युधिष्ठिर जीतेहे. तासों तूं जीयो चाहे है तो संधि करि ऐसें सुणि दुर्योधन डेरामें आय चिंता करते रात्रि वितीत करी. प्रभात भीष्म सेन व्यूह रची. पांडवनकी मकर व्यूहकी सन्मुष आये. भीम भीष्म ये दोउ सेनामें प्रवेस करि घोर जुध करत भये. तहां सात्यकी यादव दसहजार रथीनकों यमलोक पहुंचाये. ऐसो सात्यकीको पराक्रम देषि भूरिश्रवा सात्यकीके दस पुत्र मारे तापीछें सात्यकी अरु भूरिश्रवा घोर जुद्ध करत भये क्रोधसों दोउ बिरथ होयकें षड्ग जुध कर

रिके राक्षसनकौं और नागनकौ बहुत क्षय भयो जब अलं
बुष राक्षसनकौ क्षय देषि धनुष धारि बाणनिकी वर्षा करीत
ब इरावान राक्षसनको धनुष षड्गसों काटि अरु वीरनकों
मारि अलंबुषके दोयटूक करे तोहू राक्षस अलंबुष दोय
टूकके एक होय फेरि जुध करत भयो तब इरावान वाकेमा
रिवेकों सैकडन सर्पनकी वृष्टि करी जब अलंबुष सर्प ब-
णि सर्व सर्पनकों भक्षण करि षड्गसौं इरावानको सिरका
ट्यो तब इरावानकों मर्यो देषि घटोत्कच राक्षस अलंबुष
की सेनाकों मथन कर्यो. अनेक वीरनकों मारि आपके प-
रिवारके राक्षसनकों मांस रुधिरसौं तृप्त करे ऐसे घटोत्क
चकों पराक्रम देषि राजा भगदत्त हाथी परचढ्यो होसोआ
य घटोत्कचके रक्षक च्यारि राक्षसनकों मारि गर्जना करी
जब घटोत्कचहू बरछीके प्रहार करि अनेक हाथिनकों
मारि भगदत्त सौं जुध करत भयो. तहां अर्जुनहू पुत्र
इरावानको मरण सुणि क्रोधतें राजानके मस्तकन करि
पृथ्वी छाय दई और भीमसेनहू क्रोधतें अनाधृष्ट, कुंड
ली व्यूढोरस्क, दीर्घलोचन, कुंडभेद, दीर्घबाहु, सुबाहु,
कनक ध्वज, विरज येनव दुर्योधनके भ्राता हैं तिनकों
मारे और राजानको पांडवन मारे ऐसे जुधकरते सूर्या-
स्तदेषी युधावहार भयो. ॥ ॥ इति अष्टम दिव
स युधोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ तापीछे रात्रि
मे कर्णकौं बुलाय दुर्योधन अर्जुनके पराभवकौ उपाय पूं-
छ्यो तबकर्ण बोल्यो भीष्म शस्त्र छोडे तौमै सब शत्रुनकौसं
हार करौं ऐसे सुणि दुर्योधन भीष्म पास गयो तहां भीष्म
तैं सत्कार पाय बोल्यो आपके भुजबलतें इकईस २१ वेर
पृथ्वी निछत्री करिवेवाले परसुरामहू पराभव पायो ऐसे
सामर्थ वानहू तुम पांडवनकों कृपाकरि मारो नहीं तातेतुम

ट विरथ होइ संषके रथमें. सवार भयो जब पिता पुत्र दोऊ द्रोणसों जुध करत भये. तब द्रोणाचार्य संषको मारि विराटको व्याकुल कियो तहां सात्यकी यादव आय विराटकों छुडाय द्रोणाचार्यसों जुद्ध कियो तहां अलंबुष राक्षस विंद अनुविंद उजेणके राजा आय द्रोणाचार्यकी सहायताकरी तहां अर्जुनको पुत्र इरावान आय विंद अनु विंदकों भगाये सात्यकी अलंबुषकों ऐंद्र अस्त्रते भगायो ता अवकासमें भगदत्त घटोत्कच दोउ सेनानमें प्रवेस करि अति जुधकरत भये. सल्य नकुलसों जुधकरत भयो. श्रुतायके युधिष्टिरके जुध भयो ऐसे जुधमें अनेक वीर मरि जमलोक गये. तहां सूर्यास्त देषि जुधसमास कियो. ॥ ॥ इतिभीष्मपर्वणि सप्तम दिवस जुधोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥
॥ ॥ तापीछे प्रभातही भीष्म सागर व्यूह रचि पांडवनके शृंगाट व्यूहसों जुध करत भये. तहां धृष्टद्युम्न आदि अनेक वीरनकों भगाये तहां सर्व सेनामें एक भीमही सन्मुष आय भीष्मके सारथीकों मार्यो जब रथ घोडा इतउत भ्रमत भये. ता अवकासमें बल्हाप्सी, कुंडधार विसाल, अपराजित, पंडित, कमहोदर, स्फनाभ एसात धृतराष्ट्रके पुत्रनकों भीम मारे. तब तहां सातनकों मरे देषि आदित्यकेत नामा भ्राता जुधकों आयो ताहूकों भीम यमलोक पठायो ऐसें भीमकौरव वीरनकों मारि गर्जना करि सबनिकों बहरे करे ता समयमें उलूपीको पुत्र इरावान सकुनीके सात ७ पुत्रनकों मारि रणमें विष ज्वालानकी वर्षा करत भयो. तब दुर्योधनकी आग्यातें अलंबुष मायामय घोडापैचढि राक्षसनकी सेना सहित जुधकों आयो तब याके अरु इरावानके जुध भयो. तहां राक्षस अलंबुषके मुषतें अग्निज्वाला निकसी. इरावानके मुषतें विषज्वाला निकसी तिनक

जुधकी समाप्ति बोले.॥ ॥ इति श्री नमम दिवस युधं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥ ॥ ॥
ऐसे नवें दिन भीष्मको घोर जुधदेषि रात्रिमें युधिष्ठिर श्रीकृष्णसों बोले जो तीन लोक सामिल होइ जुध करें तोहू भीष्मतें जीते नहीं हमनें मूर्ष पएतें युधको आरंभ कियो. जैसे पतंग चाहे जिततो इ पराक्रम करौ पै अग्निकों तो बुझाय सकै नहीं. ऐसे सुणि श्रीकृष्ण बोले हे राजन् प्रभातमें भीष्मकों मारोंगो. अर्जुनमें अरु मोमें भेद कहा है जब युधिष्ठिर बोले में तुमको मिथ्यावादी नहीं करोंगो. भीष्महीं पास जाय विजयको उपाय पूछोंगो. ऐसे निश्चैकरि श्रीकृष्णकों और युधिष्ठिर भ्रातान सहित भीष्मके पास जुधिष्ठिर गये. तहां जाय प्रणाम कियो जब भीष्महू श्रीकृष्णकों आये देषि प्रणाम करि प्रार्थना करी. तुम ऐसे मोसें अपराधीकों दर्सन देय कृतार्थ कियो तब श्रीकृष्ण बोले तुह्मारे तुल्य और वीर है हीनहीं. तातें युधिष्ठिर की विनती सुणौ. जब युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुह्मारे तुल्य और पराक्रमी है नहीं तुम इच्छा मृत्यु हो हमारी सब सेना मारी अब हम कोरवनसों कैसे जीतेंगे. हम बालक पिता है नहीं हमारे पिता अरु रक्षक तुमहीहो जो तुह्मै हमकों मारणोंहीहै तो हमसों पहली ही क्योंन कह्यो जाते हम बनकों जाते जुधको आरंभ नही करते औ र हमहू कौरवहू तुह्मारे बालक है सो कौरव तो प्रबल अरु राज्य वंत है और तुमहू उनहीकी रक्षा करत हो तातें उनतें अधिक दूसरो या पृथ्वीमें है नहीं. अरु हम निर्बल है राज्य नष्ट है तिनकों तुमहू मारो हो तातें हमकों आज्ञा दीजे जो हम वनवासकों जाय अथवा षड्गतें हमारे सिर काटिये. अथवा हमकों जयको उपाव वताइये.

कर्णकों आग्याहोतो यह मारैगो. ऐसें सुणि भीष्म बोले जुधमें अर्जुनकों कौन जीतवे वालो है तोहू प्रभात मेरे वाण देषैगो. ऐसें सुणि प्रसंन्न होय दुर्योधन गयो तापीछें प्रभातही भीष्म सर्वतो भद्र व्यूहकरि पांडवनकी व्यूहरचना सों जुध करिवे गयो तहां वाणवर्षा करि पांडवनकी सेना कों व्याकुल करी. ताहि देषि अभिमन्यु वाण धारानकी वर्षा करत कौरवनकी सेनामें घोर जुधकरयौ सोदेषि राजादुर्योधन आग्याकरी तातें अलंबुष राक्षस बाण धारानकरि अभिमन्युकों छायो ताकी सहाय करिवेकों द्रौपदीके पांचोपुत्र आये. तिन अलंबुषके सर्वबाण छेदन करि मूर्छित कियो तापीछें राक्षसचेत पाय तमोमयी माया करि ताके अंधकारकों देषि सूर्यास्तके प्रभावतें अभिमन्यु राक्षसनकों बाणनतें छिन्न भिन्न करि भगायो तब भीष्मको आदिदे महावीर मिलि अभिमन्युकों चारयूं तरफसें घेरि बाणनकी वर्षा करि जब अभिमन्युहू सबनि तें जुधकरयो तब तहां अर्जुन आय पवनास्त्र करि वीरनकों उडाये. तब द्रोणाचार्य पर्वतास्त्रकरि पवनकों बंधकरि अरु पांडवनकी सेनाकों चूर्णकरत भये जब अर्जुन वज्रास्त्रतें पर्वतनके षंड षंड करि वीरनकों मारि रुधिरकी सैंकडान नदी करी तब भीष्महू क्रोध करिपांडवनकी सेनाके बहुत बीर मारि बाणनके प्रहारतें कृष्ण अर्जुनकों व्याकुल किये. तब अर्जुनकों जुधमें मंद देषि श्रीकृष्ण रथकों छोडि भीष्मके सनमुष दौडे. जब भीष्म श्रीकृष्ण कों आवत देषि बोले हेनाथ हे गोविंद आइये अरु मोकों कोरडातें मारिये ऐसें भीष्मकी बोली सुणि अर्जुन रथतें उतरि प्रणाम करि श्रीकृष्णकों रथपें लेगयो तापीछें अर्जुन बहुत बाणन करि वीरनकों मारि जुधमें कबंध नृत्य देषत भयो. अरु भीष्महू बहुत वीरनकों संघार करत सूर्यास्तदेषि

वनकों संगलेय भीष्मकी रक्षा निमत च्यारों तर्फ योद्धा न-
कों कोट करत भये. तहां अर्जुन आय वीर मंडली सहित
वा कोटकों षंडन करि असंख्यात वीरनकों मारत युधिष्टि
र सहित भीष्म पितामहकों प्रणाम करत भयो तब भीष्म
युधिष्टिर सों बोले हे पुत्र इतने वीरनकों मरण देषि करुणा
तैं मोकों षेद होतहै. तातैं मोहूकू निपातन करो. ऐसैं.
आग्या सुणि राजा युधिष्टिर आपके सकल वीरनकों भी
ष्मके मारिवेकों पठाये. तब घोर जुध होत भयो. तहां रु
धिर नदीनमैं असंख्यात गजनकों आदिले वहत भये.तहां
भीष्मके दिव्यास्त्र बलतैं सर्व वीरनकों विमुष देषि सिषं-
डी सनमुष आय बाण वर्षा करी. तहां हसते भीष्मकों
देषि वसु आय बोले हे भीष्म अब तुमकों या समय मैं
सस्त्र त्याग करिवो योग्यहै. ऐसी हमारी वांछाहै. ऐसैव
सूनकों वचन सुणि भीष्म जुधतैं शिथल भये. अरु सिषं
डी बाणनकों प्रहार करत रह्यो तिनकों भीष्म पुष्प समान
मानत भये. तब अर्जुन और वीरनकों बाण वर्षातैं भजा
य भीष्मकी असंख्यात बाणनतैं मर्मस्थल वेधत भये.त
व भीष्महू मर्मछेद अर्जुन के बाण जाणि अर्जुन पैं.
बाण चलाये सो सब अर्जुन छेदन करि रोम रोममैं भी
ष्मके बाण प्रवेस किये. भीष्महू उन बाणनकों मर्मस्थान
मैं प्रवेस देषि हांस्य करि पास ठाढो जो दुस्सासन तासों
बोले अरे देषि सर्प जैसे विलमैं. सूर्यके किरण जैसे ज
लमैं तैसे एबाण मेरे मर्मनमैं प्रवेस करे हैं. तातै अर्जुनके
हीहैं. सिषंडीके नहीं अरु ऐसे जाणियेहै पुत्रके प्रेम
तैं इंद्रही वज्रधारा वर्षै है कहा अथवा किरातकौ रूप
धारि रुद्रतै युध कियो ताहूके ऐसे बाण संभवै. ऐसे दुः
सासनसों वोली अर्जुनके प्रहारनतैं आपकों व्याकुलता

कर्णकौं आज्ञा होतौ यह मारैगो
जुधमें अर्जुनकौं कौन जीतवे
णा देपेगो. ऐसे सुणि प्रसन्न
प्रभातही भीष्म सर्वतो भद्र
हसौं जुध करिवे गयो तहां वा
कौ व्याकुल करी. ताहि देषि आ
करत कौरवनकी सेनामें घोर जु
न आग्याकरी तातें अलंवुष रा
मैं वाकच्छकौं छायो ताकी सहाय कारव
सिषंडीके पीछे रहेषके सर्वबाण छेदन
वावौ. ऐसे सुणि पांडव भाजेसची माया का
ये. तापीछे दोउ सेनाके योद्धा अभिमन्यु राक्षस
ध करत भये. तहां पांडव सिषंडीकों आगे कार
सनमुष आये. तिनकों देषि भीष्म बाण वर्षतें अनेक
रनके सिर काटि पृथ्वीकौं आच्छादित करि तासमें भीष्म
कौं बाणवर्षा करतें मध्याह्नके सूर्यलौं कोइही देषि सके
नहीं तब बाणधारा वर्षत सिषंडीही सनमुष आयो
देषि भीष्मबोले हे सिषंडी तूं तेरी इच्छा पूर्वक मोपे प्रहा
र करि मेरे बाण तोपै ऐसे नहीं आवेगे. जैसे स्त्रीकौं धन
अपात्रपैं नहीं जाय. तब सिषंडी बोल्यो हे भीष्म तुम मोपैं श
स्त्र चलावौ. अथवा नही चलावौ परंतु तुम आज जीवतें जा
वोगे नहीं अरु जो भाजोगे तोही जीवोगे. ऐसे कहि असं
ख्यात बाण भीष्मपै चलाये. जब भीष्महू रोमनके अग्र
भागनतें सिषंडीके प्रचंड बाणनकौं षंडन करि आपकी बा
णवर्षातें श्रीकृष्ण अर्जुनकौं आच्छादितकरि अनेकवी
रनके सिरकाटत भये. तासमयमैं पृथ्वी रुधिर मई भई
ऐसो उतपात देषि द्रोणाचार्य भयभीत होइ सकल कौर

कर्ण आय हाथ जोडि भीष्मसों अपराध क्षमा करायो ज
ब भीष्म कर्णसों बोले है कुंतीके पुत्र पांडव तेरे सहोद
रहैं तातें पुत्र तूं उनसों वैर त्याग करि तब कर्ण बोल्यो
मेरो वैर जिनसों है तिनसों तो हैही और प्रेमतो दुर्योध
नमें है अथवा युधमें है ऐसें बोलि रथमें सवार होइ ग-
यो तापीछेवा रात्रिमें अर्जुनके बाण भयतें व्याकुल दु-
र्योधनकी सेना ताकों कर्ण बीरके वचनही समाधानकर
त भये. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भीष्मपर्वभा
षा यहै भारतसार प्रधान ॥ रावचांदसिंघके हुकुम कीः
नी सुकवी सुजान ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत
सार चंद्रिकायां भीष्म पर्वणि नाम अष्टमोऽध्यायः समाप्तः
॥ ८ ॥ ॥ श्रीकृष्णोजयति ॥ ॥

इति भीष्मपर्व समाप्तम्

नही देषि कही. अरे अर्जुन तेरे बाण सिथलही है तातें दृढ प्रहार करि ऐसी सिक्षा करतही सक्ति चलाई तब अर्जुन वा सक्तिके तीन षंड करे. ता समयमैं श्रीकृष्ण आेष्ट पीसि तीव्र बाण चलावेकी ताकीद करी. जब अर्जुन क्रोध करि असंषिबाण निकरि भीष्मके रोम रोम वेधि मर्म छेदन किये. तब भीष्म सायंकालमैं सूर्यलौं पृथ्वीमें पडे. पृष्ट भागमे निकसे असंषिसर तिनकी सय्यामैं सोये ताकौं देषि सकलवीर हाहाकार करत भये. दुष सोक भयतें सकल राजानके नेत्रनतें अश्रुपात भये. सर्ववीर मुर्च्छा कंपयुक्त भये. अरु भीष्मकौं तौ दिव्य ग्यानही रह्यो. ता समयमै आकासवाणी भई. हे योगेंद्र भीष्म उत्तरायणकाल पर्यंत प्राणनकौं सरीरमैं धारण करो. और गंगाके पठाये हंस रूप धारि मुनिननें हू ऐसैही कह्यो. सो सुणि भीष्म योगेंद्र हू बोले उत्तरायण पर्यंत ऐसैही रहौंगो. तापीछे तहां रूदन करते कौरव पांडवनकौं भीष्म समाधान करिकै बोले हे पुत्रहो मेरो सिर लटके है याकै तकिया लगाय मेरो कष्ट दूर करो. तब दुर्योधनकौं आदि दे राजा अनेक तरहके तकिया लाये. तिन सबनकौं अनादर करि अर्जुनसौं बोले हे अर्जुन तकिया लगाय. सो सुणि अर्जुन तीन बाण गुदीमैं मारि सिर ऊंचो कियो तब भीष्म अर्जुनकौं सराहि गांधारि पुत्रनसौं बोले सपत्नीनके वैर प्रति जीवत रहै तब तांई रहै जैसे तुह्मारोहू वैर मेरे मरण तांई ही रहो तासौं अब वैर छोडि सो दुर्योधन मानी नहीं तापीछे रात्रिमैं जल मांग्यो जब राजा सुवर्ण पात्रमैं जल लेके आये. तिनकौ अनादर कियौ ताहि देषि अर्जुन दिव्यास्त्र बलतें दिव्य जल धारा निकासि तिनकौं तृप्ति किये. जब भीष्महू अर्जुनकी बहुत सराह करी तब और राजानकौं गये पीछे

कर्ण आय हाथ जोडि भीष्मसौं अपराध क्षमा करायौ जब भीष्म कर्णसौं बोले हे कुंतीके पुत्र पांडव तेरे सहोदर हैं तातें पुत्र तूं उनसौं वैर त्याग करि तब कर्ण बोल्यौ मेरो वैर जिनसौं है तिनसौं तो हैही और प्रेमतो दुर्योधनमें है अथवा युधमें है ऐसें बोलि रथमें सवार होइ गयो तापीछेवा रात्रिमें अर्जुनके बाण भयतें व्याकुल दुर्योधनकी सेना ताकौं कर्ण वीरके वचनही समाधान करत भये. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भीष्मपर्वभाषा यहै भारतसार प्रधान ॥ रावचांदसिंघके हुकुम कीनी सुकवी सुजान ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां भीष्म पर्वणि नाम अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीकृष्णोजयति ॥ ॥

इति भीष्मपर्व समाप्तम्

द्रोणाभिषेचन. सेनापती
पांडवसेना
कौरवसेना
सूर्य
जयद्रथशिरच्छेद
जयद्रथवध

द्रोणपर्वचित्र २.
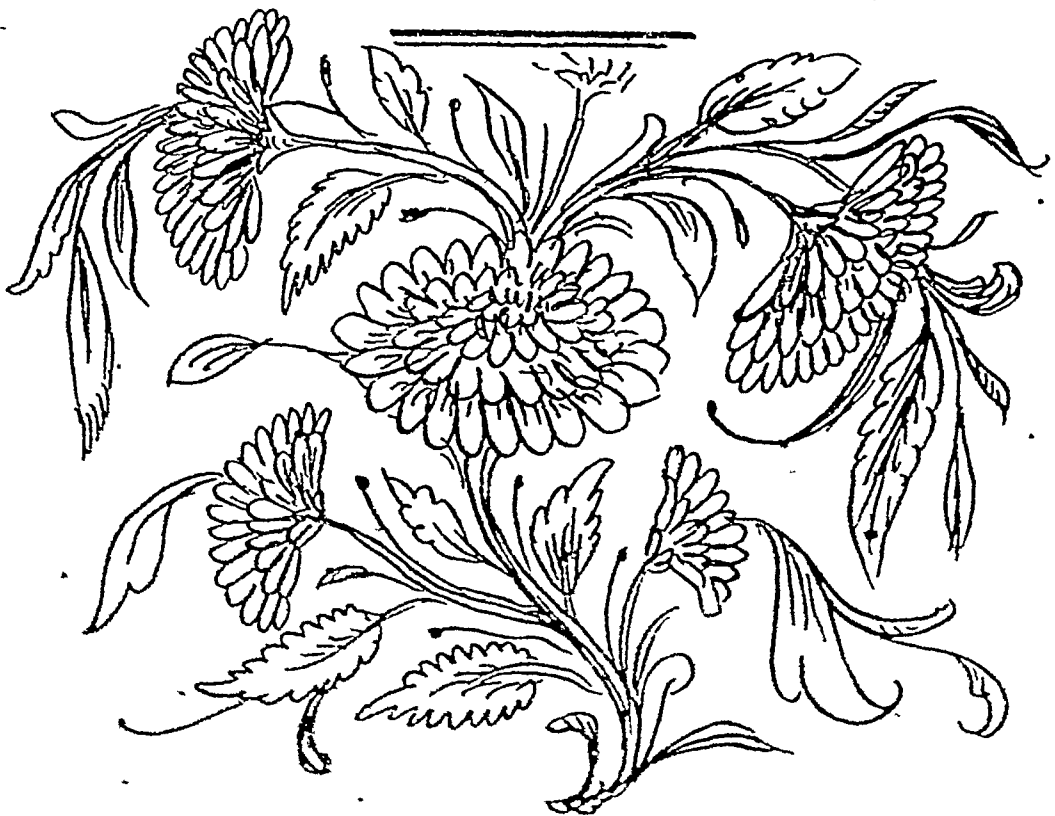
अथ भाषाभारतसार द्रोणपर्व प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथद्रोणपर्ववचनीका भाषाभारतसारकी लिख्यते. ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥

भीष्म रूपी सूर्यके अस्त भये पीछे कर्ण रूपी दीपकौंप्रकास पाय दुर्योधन कर्णकी सलाहतें द्रोणाचार्यकूं सेनापतिको अभिषेक कियो तब द्रोणाचार्य दुर्योधनसूं कही वर मांगि तब दुर्योधन कही युधिष्ठिरकौंजीवतेकौं पकडिद्यो तबद्रोणबोले जो वाके निकट अर्जुन रक्षा न करै तो युधिष्ठिरकौं पकडिद्यौं सोसुनि कौरवनकी सेनामै बडो हर्षनाद भयो यह व्रत्तांत सुणि युधिष्ठिर अर्जुनकूं आपरक्षा निमित्त राषि क्रौंच व्यूहरचत भयो तब दुर्योधन सकट व्यूहरचि जुधकौं तयार भयो जब द्रोणाचार्यहू रक्तवर्णके अश्वयुक्त सुवर्ण रथपै सवार होयके व्यूहके आगै भये. सुवर्णकौं कमंडल वेदी एहै ध्वजामै चिन्ह जाके श्वेतकेस श्वेतकेस श्वेत वस्त्र श्याम वर्ण ऐसे द्रोणाचार्यकूं देषि पांडवनके वीर जुधकरिवेकौं सनमुष आये तिनकौं द्रोणाचर्य बाणनकी वृष्टिकरि व्याकुल किये. अरु अभिमन्युके अरु कर्णके घोर जुधभयो अरु भीमसेन शल्य ये दोउ रणमैं मंडल करते गदा युधकरत भये. दोउ मूर्छापाय भूमिमै परे. तब सल्यकौ कृतवर्मारथमै धरिले गयो. तापीछै भीमसेन उठि गदातै अनेकवीर मंडलकौं षंडन करत भयो तब कर्णको पुत्र वृषसेन पांचौं द्रौपदीके पुत्रनकौं जुधमैं व्याकुल करत भयो तहां द्रोणाचार्य प्रतंग्या पालन करिवेकौं युधिष्ठि-

रकी रक्षा करवेवारे सिंध सुष, युगंधर व्याघ्र सुषकों आदि लेर राजानकों मारे. ता जुधमें अनेक वीरनके रुधिरकी नदी भई ताके प्रवाहमें पिसाच गज रूंडनसों रुधिर भरि भरि पान करि मदोन्मत्त भये अरु मांस भक्षणतें तृप्त होय अर्जुनके धनुषकी टंकार सुनि सुनि नाचत भये. तापीछे अर्जुन कौरवनके सेनाके वीरनकों मारि ब्रह्मलोक पठाये. ऐसें युध होते सूर्य अस्त भयो.॥ ॥ इति भाषा भारतसार चंद्रिकायां द्रोण पर्वणि प्रथम दिवस युधनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥

तापीछे रात्रिके समयमें दुर्योधन द्रोणाचार्यसूं पूंछयो आप युधिष्ठिरकों पकड्यो नहीं ताको कारण कहा तब द्रोण बोले अर्जुनकों निकट रहतें युधिष्ठिर पकडवामें आवें नहीं. ऐसे सुणि त्रिगर्त राज सुसर्मा बोल्यो हे द्रोण प्रभातमें अर्जुनकों जुधके निमित्त बुलाऊंगो तुम युधिष्ठिरकों पकडो ऐसें कहि सुसर्मा प्रभात अर्ध चंद्र व्यूह रचना करि दस हजार महारथीनकों संगलेय अर्जुनकों जुधके निमित्त बुलायो तब अर्जुन युधिष्ठिरकी आग्या पाइ राजाकी रक्षा करिवेकों सैन्य जित्तराजाकों राषि सुसर्माकी सेनाको संहार करिवेकों चल्यो. तब आवते अर्जुनकों त्रिगर्त राज सुसर्माके सर्व योधा येकही समयमें असंख्यात बाण धारानतें आच्छादित करत भये. तापीछे अर्जुन देवदत्त शंखकों वजावतो भयो ताके श्रवणतें सकल योधा संतप्त भये. जैसें आग्निकरि त्रण होय तापीछे अर्जुन त्वाष्ट्र अस्त्रके प्रयोगतें ज्वाला वर्षत वीरनकों ऐसो दीष्यो जैसें मध्यान्हके सूर्य अरु अर्जुनतो त्रिगर्तनसों जुध करत रह्यो ताअवसरमें द्रोणाचार्य बाणनतें वीरनकों संघार करत करत युधिष्ठिरके पकडिवेकों आये. तिनकों

पांचाल वीर सत्यजित रोके अरु सत्य जितके अनेक बाण द्रोणाचार्यके पडे. तोहू तिनकों अनादर करि द्रोणाचार्य क्रोधतें सतानीक अरु विराटको कनिष्ठ भ्राता इटसेन अरु क्षत्रदेव वस्कदान इन चारुनकूं सेना सहित मारे. तब जुधिष्ठिर संग्राम छोडि भागत भयो ता पीछे पांडवनके योधा द्रोणाचार्यके प्रहारतें व्याकुल होय भीमके सरण आये. तब भीमसेन सरन आये राजानके समाधान करि द्रोणाचार्यकी सेनाके अनेक वीर मारे. तापीछे अर्जुन स्कबाहु कृतबाहु दोउ राजानकों सपरिवार मारत भयो तब भीमसेन गजराजपैं चढि बंगदेसके राजाकों मारि वाके अनेक वीरनकों मारत भयो. ताकों देषि प्राग्ज्योतिष पुरको राजा भगदत्त इयोजनपाद गजेंद्रपैं चढि भीमसों जुध करिवेकों आयो ताकों देषि सकल वीर चकित भये जाकी मदकी गंधतें दिग्गजहू मद हीन भये. अरु जाके चंचल काननकी पवनतें अनेक वीर वाहन सहित उडत भये अरु जाके सुंडादंडके प्रहारतें मेघ षंड षंड भये. अरु काल मृत्यके समान रूप दोऊ नेत्रनतें वीरनको तेज नष्ट करत भयो यो जुध कहा है ऐसे मंद मंद देषत भयो. अरु कछूक सुंडके श्रमायवेतें कालज्यों असंषित वीरनके प्राण हरत भयो. एक योजन प्रमाण पृथ्वीकों च्यारों पांवनतें दाबि षडोरहे ऐसे गजेंद्रकों देषि सकलवीर विचार करत भये एह एकही गज च्यारि पांव दोय दंत एक सुंड करि सातों अक्षोहणी मारवेकों समर्थ है ता गज उपर चढ्यो भगदत्त भीमपैं गजकों चलायो सो गज राज दीर्घ सुंडासूं कुंडलाकार करि भीमसेनपै दौड्यो- ताके चलते रजोमय अंधकार होत भयो अरु भीमहू बाण वृष्टिमय अंधकार करि भगदत्तसों घोर जुध कर-

त भयो. तायुधकों देषि युधिष्ठिरकों आदिदे महारथी क्रोधतै सनमुख आये तिनकों देषि गजराज भीमकों छोडि युधिष्ठिरादिक महारथीनके सनमुष आवत भयो तब भगदत्त बाणनके प्रहारतें सात्वकी यादवकों व्याकुल करि अनेक वीरनकों मारत भयो तिनवीरनिकों रुधिर पानकरि अनेक पिशाच तृप्त होय गान निर्त करत भये अरु गजराज कितेक वीरनकों सूंडतें पकडि आकास मैं फेंकत भयो ताके भयतें भीमादिक वीर निकट आय सकेनहीं अरु भगदत्तके बाणन करि वीर व्याकुल होय हाहाकार करतभये. ताकों सुणि अर्जुन त्रिगर्त सेनाकूं पवनास्त्रसों नष्ट करि पवनके वेग समान रथतें भगदत्तके सनमुष आयो आवतही बाणनतें बीरनकों मारि पृथ्वीकों रुधिर मई करी. अरु प्रतंचाके टंकारतें सेनाकों बधिर करि गजराजपें बाणनको प्रहार करत भयो अरु भगदत्तहू अर्जुनपें श्रीकृष्णपें असंख्यात बाणवृष्टिकरि अर्जुनके प्राण हरवेकों नारायणास्त्र चलायो ताकों अमोघ जाणि श्रीकृष्ण वक्षस्थलमें हार तुलितधारण कियो सो देषि अर्जुन श्रीकृष्णसों कह्यो हे कृष्ण या अस्त्रकों आप वक्षस्थलमें धार्यो सो जुधमें या अस्त्रकों में धारवेजोग्य नहीं कहा तब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन मैं पृथ्वीकी प्रार्थनातें यह अस्त्र पृथ्वीके पुत्र नरकासुरकों दियोहो अरु ताने आपके पुत्र भगदत्तकों दियो. सो अबमें मेरोअस्त्र लीयो यातें हे अर्जुन तूं षेद मति करो ऐसें कृष्णको वाक्य सुणि अर्जुन ऊर्ध्व मुष असंख्य बाणन करि भगदत्तको और गज राजको विदीर्ण करि देववासी देवनकोंहू व्याकुल किये. और बाणन करि गजेंद्रकी घंटा काटि असंषि बाणनके प्रहारतें गजेंद्रको और भगदत्तकोंचा

रौं वोर विंधत भयौ सोविंधे भयेहू दोऊ पांडवनकी सेना को मथन करत भये तापीछे अर्जुन गजराजके कुंभस्थ लमै मार्‍यौ सोवाण ललाटकौं भेद प्रष्टिभाग होय. निकस्यौ जव गजराज प्राणहीन होय पृथ्वीमै पडिवेल ग्यौ ताकौ पावनतैं दावि भगदत्त अर्जुन पैं असंख्यवा ण प्रहारकरे. जव अर्जुनहू जुधकरतहीं अर्धचंद्राका र वाणकरि भगदतको सिर काटि पृथ्वीमें नाषत भयौ ऐसै कामरूपी राजा भगदत्तकों मारि अर्जुन बाण धा रानकरि कौरवनकी सेनाकौं व्याकुल करी सो भयभीतसे नाकौं कोई सरण मिल्यौ नहीं जैसे ओलानकी वृष्टि तैं मरुस्थलके पशूनकौं वृक्षादिकहू सरण नहीं मिले औ र गांधारके वीर वृषक अचल ये दोउ युधकौं आये. ति नकौं अर्जुन एकबाणप्रहारतें मारे. तब सकुनी भ्राता मरणके रोषतें युधकौं आयो. सो मायामय अनेक दुष्ट अस्त्रनके प्रयोगतें अंधकार कियो ताकौं अर्जुनसौंश स्त्रबलतें व्याकुल करि भजायो. तव द्रोणाचार्य युधिष्ठि रके पकडवेकौं पांचाल राजाकी सेनामें प्रवेस करि वीरन केसिरनतैं च्यारौं दिसा आच्छादित करि पांडव सेनाकौं व्याकुल करी. तब नीले वस्त्र रथ सारथी अश्वजाके ऐसो माहिष्मतीको पति राजानील आग्नेय अस्त्रतें द्रोण से- नाकौं व्याकुल करी तब ऐसे देषि अश्वत्थामा आय ध्व- जा छत्र धनुष, रथ छेदन करि षडग धारि आवते नील कौं मार्‍यौ. नीलकौं मर्‍यौ जाणि कौरव हर्षतें सिंघना ज कर्‍यौ सो सुणि अर्जुन त्रिगर्त संसप्तकनकौं मारि राज देषआय. द्रोणाचार्यकी सेनाको विध्वंस कियौ तबक- ताके चल आग्नेय्यास्त्रसौं अर्जुनकी सेनाकौं दग्धकरी. वृष्टिम मेघास्त्रतैं अग्निकौं सांति करि कर्णसौंजु

ध करत भयो तब कर्ण अर्जुनकी घोर जुधमें वीरनके स
रीरतें अनेक रुधिर मई नदी वहत भई जब अर्जुन वायु
धमें कर्णके विपाट, सत्रुंजय, वीर, इनतीन्यों भ्रातानकों
मारे जा जुधमें निसाचर पिसाच तृप्त होय हर्षतें सब्द कर
त भये रुधिरकी नदीमें अनेकवीर वहे तहां भीम अनेक
वीरनके सिर काटि वैरीनकी सेना विध्वंस करि गाजत भयो
और अर्जुनके बाणतें घायल भये जे वीर तिनमें अतिको
लाहलकर्यो तहां ताकी धुजामें बैठे जे हनुमान सो वाको
लाहलकों रूणि आपकी पूंछके अग्नितें दग्ध होते लंका
वासीननें कोलाहल कर्योहो ताको स्मरण करत भये ऐसें
अर्जुनके पराक्रमतें सकल राजा भयभीत होइ सूर्यको
अस्त जाणि युधकों समाप्त कर्यो. ॥ ॥ इतिश्री
भाषाभारतसारचंद्रिकायां द्रोणपर्वणि द्वितीय दिवस यु
धनाम द्वितीयोध्यायः ॥ समाप्त ॥ २ ॥ ॥ ॥
तापीछे प्रभातही द्रोणाचार्यसों दुर्योधन बोल्यो हे गुरु तुम
युधिष्ठिरके पकडवेकी प्रतंग्या करीही सो पकड्यो नहीं. ता
तें उनमें तुह्मारो पक्षपात है अरु मोकों मिथ्या स्नेह दिषा
वोहो तासों अब सत्य कहो जब द्रोणाचार्य बोल्यो हेराजन्
जितने अर्जुन राजाकी रक्षा करें तितनें मोसों पकड्यो
जाय नहीं तासों संसप्तकगण अर्जुनकों दूरिले जावो. ता
पीछे मै जुध करों सो तुम देषो ऐसें कहि दुर्योधनकों प्रस
न्नकरि द्रोणाचार्य चक्रव्यूह रच्यो तहां दस हजार महा
रथीनकों संगदेय कृपाचार्य कर्ण दुःसासन सहित दुर्यो
धनके भ्राता सहित द्रोणाचार्य अग्र भागमें रहे. अरु स
कुनी सल्य भूरिश्रवा इन सहित जयद्रथकों आपके समीप
राषे. ता व्यूहमें समर्थहो सो अब श्रीकृष्ण अर्जुन तो जुध
कों दूरिगये. अरु ह्यांतो तूंहीहै वासों यह भारकों तूंही धरै.

गो. यह कहिवो जोग्यनहीं. परंतु समै कहावैहै. तव अभि
मन्यु बोल्यो हे तात मै माताके गर्भमैहो तव श्रीकृष्णके मु
खतैं चक्रव्यूहकों भेदनकरि प्रवेसतो सुण्यो हो अरु निक
सिवो सुण्यो नहीं तातें याकों भेद प्रवेस करोंगो परंतु निक
सिवेकी सामर्थ्य नहीं. ऐसे सुणि युधिष्टिर बोले हे पुत्र हम
हूं तेरे पीछे लगे. आवेंगे. सो तोकों निकासिल्यावेंगे.
ऐसे सुणि अभिमन्यु व्यूह भेदन अंगीकार करि कुंतीपैंजाय
प्रणाम करि विजयकों आसीर्वाद पाय जुधकों चलतैही सन
मुषठाढी उत्तराकों देषि तव उत्तराहू स्वामीको जुध निमित
जातदेषि नेत्र अश्रुयुक्त करे ताकों द्रष्टहीतें गर्भवती करी
अरु समाधान करि फेरि युधिष्टिरके पास आयो ताकों
अग्रेसर करि पांडव युधकों चले. पीत अश्वयुक्त रथपैंस
वार होय सुवर्णमय सारंग पक्षी युक्त ध्वजा सहित रथ-
पैं कुंडलाकार धनुषतैं बाणवर्षा करि वैरिनकों संहारकर
तही चल्यो जैसे ढेलेके प्रहारतें काक कुल भगे. तैसैं सत्रु
सेनाकों भगावत रणमंडलमैं गर्जना करत जयद्रथ द्रोणा
चार्यसों जुधकरत व्यूहकों मुष भेदन करि वेगतैं प्रवेसकर
त भयो. ताके पीछे प्रवेस करते पांडवनकों रुद्रके वरप्रभा
वतैं जयद्रथ जुधकरत रोके एकलो अभिमन्युही व्यूहम-
ध्यमै जाय बाणवर्षा अपार करी अभिमन्यु व्यूहके मध्य
अनेक राजानकूं संहार करि गज अश्व नरनके रुधिर
प्रवाहनमैं अनेक रुंड मुंड वहाये. ऐसें जुधमैं सल्य अरु
कर्णके दोऊ कनिष्ठ भ्राता इनकों मारि कर्ण सकुनी दु-
र्योधन आदिवीरनकों बाणनतें छिन्न भिन्न करि भजा
तहां पिसाचनके बालक हाथीनके काननकों पात्र करि.
रुधिर पान करतभये. ऐसें विजय पाय अभिमन्यु संष
धुनि कियो ता नादतें दिसानकों सब्दाय मान करिवीर

नकों व्याकुल करे. तहां कर्ण पुत्र वृषसेन वसाति राज स
त्यश्रवा युधकों आये. तिनकों मारि सल्यके पुत्र रुक्मरथ
कों मार्यो ताकी रक्षा करिवेकों सत १०० राजपुत्र आये
तिनहूकों मारे ऐसो पराक्रम देषि सकलवीर सिरकोंकं
पायमान करतभये. तब दुर्योधनको पुत्र लक्ष्मण युधकों
आयो तब तासों घोर जुध करि वाहूकों मार्यो तापीछे पु
त्रके सोकतें दुर्योधन दुषित होय क्रोधकरि अनेक राज
मंडली सहित जुधकों आये तहां अभिमन्यु सकल सेना
सों युधकरत वृंदारक राजाकों मारि वाके कंठके रुधिरसों
लक्ष्मणकों जलांजलि दई अरु अयोध्याके राजा वृहद्बल
कों शिरकाटि दुर्योधनके पुत्रको शिरकाटि सल्यको रथ
तोडि मेघवेग विधुकेत रुवर्चासत्रुंजय इतने राजानकों
मारि सकुनीकी सेनाहूकों मारत भयो. तापीछे दुर्योधन
कों भगाय प्रलय कालके अग्निकी नाई रणमंडलमें
दैदीप्यमान होत भयो. ताकों देषि अनेकवीर हाहाकार
करत भये. जब दुर्योधन निःस्वास नाषि द्रोणाचार्यसों
बोलत भयो. हेगुरु यह अभिमन्यु धनुष मंडलतें बाणव
र्षा करित्ते युधमें सकल वीरनकों संहार करेहै अरु गज
अश्व रथ रथीनपें याके बाण वज्रसमान परतहै. सोय
ह मृत्यहीहै अथवा यमहीहै. वा प्रलय कालको अग्निही
है याके सनमुष गये पीछे कोऊ वचैनहीं तातें तुह्मारी
सेनामें यह क्षयरूप रोगहोय आयोहै जासों अवतोया
की रक्षा करिवो योग्यनहीं. अरु जुधमें याकों जीतिवे
को उपाय करणो तब द्रोणाचार्य बोले यह कुमार जुधमें
श्रीकृष्ण अर्जुनके समानहै. याके बलकेसोमें वांटहूकों
अपनी सेना नहीं अरु या इंद्र पौत्रकों रुगासरहीजी
ति सकैनहीं तासों यथाशक्ति उपाय करैंहींगे ऐसेंकही

द्रोणाचार्य कर्णकों संगलेय जुधकों गये. तहां अभिमन्यु-
हू बाणनकी वर्षा करि दोउनकों जीति संग्रामतें विमुष
करत भयो. तब कर्ण द्रोण दोउननें विचार कियो यहअ
भिमन्यु ऐसो पराक्रमीहै जोयासों एक एक जुध करे तौस
बनकों मारें तातें सब मिलि यासों जुध करेंगे जब यहम
रैगो यह विचारकरि सब सामिल होय युधको आये.त
हां कृतवर्मा याके सनमुषको मार्ग छोडि पार्श्व भागमें-
आय. रथकों काटि वाहन मारि . अरु कृपाचार्य सारथीकों
मारि चक्र रक्षक मारे कर्ण धनुष काट्यो तब षडग चर्म
धारि अभिमन्यु रणमंडलमें वीरनके शिर काटत विचरत
भयो आकासमें उछलत वीरनकेसिर कटिवेकों पडतपा
द प्रहारनतें पृथ्वीकों कंपावत अनेक गजनके कुंभस्थल
विदारत ऐसे रणमें अति भयंकर अभिमन्युकों देषि
द्रोणाचार्य बाण प्रहारतें षडगकों मूठि षंडन कियो.ज-
ब अभिमन्यु चक्र धारि चक्रपाणि लों दानवरूप वैरिन
कों नासकरत भयों तब ऐसे देषि द्रोणाचार्य अश्वत्था
मा कर्ण कृपाचार्य सकुनी दुःसासनको पुत्र इन सातों
७ मिलि ताको चक्र काट्यो जब अभिमन्यु गदाधारि ग
दा धरलों अनेक वीरनकों मारत शकुनीके कनिष्ठ भ्राता
कालसेनकुं मारि असंष्यात गज घंटानकों षंड षंड करि
दस राजानेकों मारिके काय राजानकों रथतोड्यो तब दुः
सासनको पुत्र गदा लेके आयो. जब दोउनके घोरजुध
भयो ते दोउ लडत लडत पृथ्वीमें पडे तब तहांपडेअ
भिमन्युकों देषि सकल योधा सामिल होय एक समय
में अनेक सस्त्र प्रहारतें मार्यो जब दुःसासनको पुत्र
उठि करि अभिमन्युको धिक्कार करि मस्तकमें गदाप्र
हार कर्यो ऐसें ताकों मार्यो देषि आकास वासी देवबो-

ले याएकले रथहीन अभिमन्युकों अनेक महारथीमिलि-
अन्याय करि मार्यो यह आकास वाणी सुणि कौरवनकों
सकल योधासिंहनाद करि पांडवनकी सेनाकों भजावत भये
तबही सूर्य अस्त भयो जब दोउ सेनाके वीरननें युधस-
मासकियो. ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ मातुलो यस्य
गोविंदः पितायस्य धनंजयः ॥ सोभिमन्युर्हतोयुद्धे कालोहि
दुरतिक्रमः ॥ १ ॥ ॥ तापीछे अर्जुनसंससक गणनकों
मारि अपसगुन देषि उदास होय निजसेनामें आवत भयो
तहां सब बांधवनकों सोकतें आतुर अधोमुष देषि बोलत
भयो हे योधाहो औरतो मेरे सनमुष सबही आवेहै अ
रु अभिमन्यु नही आवेहै याको कारण कहा अथवा नि
कसिवो जाणें विना चक्रव्यूहमें प्रवेस कियो ऐसे अभि
मन्युकों सकल वैरीननें बलकरी अधर्मतें मार्यो कहा ऐ
से चिंता करत युधिष्ठिरके मुषतें अभिमन्यु बधको वृत्तां
त सुणि अर्जुन मूर्छित भयो तब ताको समाधान करि श्री
कृष्ण बोले हे अर्जुन वीर सत्रुनकों संहार करि दिव्य ग
तिकों पहुंचे तावीरकों नसोचिये ऐसे सुणि अर्जुन वि-
लाप करत भयो हे पुत्र चिंतामणि तुल्य तेरे मुषकों मैं कब
देषोंगो. अरु भीम आदि अस्त्र धारिनैकोहू तेरी रक्षान
करी तबतू मातुलकोही स्मर्ण नाकियो ताते सर्वव्यापी स
मर्थ मातुल श्रीकृष्णहू ताकों नराष्यो ऐसे बोली पृथ्वीमें
पडि संग्या पाय उठ्यो तब अभिमन्युके पीछे चलते महा
रथीनकों जयद्रथ रोके ऐसे सुणि अर्जुन क्रोधतें बोल्यो
जो प्रातकाल सूर्यास्त पहले रुद्रके राषेहू जयद्रथको न
मारों तो महापातकीनके पातकनतें लिसहू और अ-
ग्निमें प्रवेस करूं ऐसी अर्जुनकी प्रतंग्या दूतनके मुषतें
सुणि जयद्रथ कंपित होय दुर्योधनसों कही हे दुर्योधन

जोतुम मेरी रक्षाकरी सकौतो मैरहूं नहीतौ यहांतै भजि-
जाऊं पुत्रके सोक करिकै आतुर ऐसौ अर्जुन मोकौ मारै
ड्गौ ऐसे स्त्राणि दुर्योधन जयद्रथकौ ले जाय द्रोणाचार्य-
सौं कही आप याकी रक्षा करो जब द्रोणाचार्य याकौ समा
धानकिरि राख्यौ तापीछे सुभद्रा पुत्रके सोकतै विलापकरि
बोली हे पुत्र तूं दयावंत ब्रह्मवेत्ता दातार सत्यवादी सुशी
ल नीतिवर्ती अश्वमेधादिक अनेक यग्य करता जाग-
तिकौं पहुंचे तागतिकूं तूंहूजा ऐसे कहत भई तापीछेश्री
कृष्णकी आग्यातैं अर्जुन सयन करत भयौ तहां स्वप्नमैं
अर्जुन श्रीकृष्ण सहित कैलासजाय शिवकौं प्रणामकरि
स्तुति करतभयौ. ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ नमःशि
वाय रुद्राय महेशाय कपालिने ॥ ग्यानिने पशुनाथाय भवा
य भवमाथिने. ॥ १ ॥ कामदायास्तु कामाय धर्मदायमख
च्छिदे ॥ सुधाकर किरीटाय नीलग्रीवायतेनमः ॥ २ ॥
ऐसी स्तुतितैं प्रसन्न महादेव धनुष पाशुपतास्त्र विजय-
मंत्र अर्जुनकौं दियौ सोपाय कृतकृत्य होई अर्जुनजा
ग्यौ प्रभातही समुद्र तुल्य प्रतंग्याही ताकौं गोखुर जल
समान मानि युधिष्ठिर कौं स्वप्नकौ वृत्तांत कहि आनं
दित करतभयौ. ॥ ॥ इतिद्रोणपर्वणितृतीयदि
वस युधंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥
तापीछे प्रभातही आन्हिक करि सर्वही सस्त्र अस्त्र
धारि वीर रण भूमिमैं आये अरु रात्रिके समै अर्जुनके
भयतैं निद्राहीन कौरव अरु गुरु द्रोणाचार्य वीरन सहि
त सकटव्यूह रच्यौ ताव्यूहके चोतरफ जथाजोग्य वीर
नकौं राखि ताके वीच पद्मव्यूह करि ताकै कृतवर्मादि
क वीरनकौ आवर्ण कियौ ताकै वीचि सूचि व्यूह रचत
भयौ. ताकै मध्य अनेकवीरन सहित जयद्रथकौं राखि

वैरीनके मारिवेकौं अरु जयद्रथकी रक्षा करिवेकौ आपद्रो
णाचार्य सकटव्यूहके अग्रभागमै रहै इहां कपिध्वज रत्त
न मई रथमें श्रीकृष्ण अर्जुन सवार होय ऐसे सोहे जैसे
सूर्यके अंकमे विराजमान यमसोहै तबश्रीकृष्ण अर्जुन-
निज शंख नाद करत भये. तासंषकों स्रुणि दोउ सेनाके
वीर परस्पर युधकरत भये. तहां जुध करतें एकक्षण मात्र
मैं सबके सरीर रुधिर मई भये. ताको गंध सूंघतही सबही
वीर मदतें अंध होय गये तहां आपणे परायेको ग्यान र
ह्यौ नहीं अति घोर युध भयो तामें रुधिरकी नदी चली
तामें हस्तीनके शरीर पडे तिरतेहैं तिनकों रथके चक्रन-
की धारासों चूर्णकिरत अर्जुन द्रोणाचार्यके सनमुषआ
य बाणनकी प्रहारतें प्रणाम करि द्रोणाचार्यकों दाहिनों
लेय व्यूहमें प्रवेस कियो अरुताके चक्र रक्षक युधामन्यु,
उत्तमौजाये दोउ राजाहू प्रवेसकरत भये. येतीन्यू व्यूहके
मध्यजाय अनेक राजानको संहार करि अनेक हस्तिनकों
मारि रथ अश्वनको नास करि प्रलयके अग्निज्यों देदी
प्यमान होतभये और युधको सनमुष आवै ऐसे कृ
तबर्मा आदि वीरनकों भजाय पवनका वोजनकी सेना-
रूपीवनकों तीन्यो दग्धकरत भये. तहां पीछेतें आय.
द्रोणाचार्य ब्रह्मास्त्र लायो ताकों अर्जुन ब्रह्मास्त्रसोंनि
वारण करि भोजराजाकी सेनाकों विध्वंस करत भयो त-
ब वरुणाको पुत्र श्रुतायुध श्रीकृष्ण अर्जुनकों बाणन
तें वेधत भयो जब अर्जुनहू बाणनतें शस्त्र अरु रथ
कों काटे तब श्रुतायुध गदालेके युधकों आयो सो यह
गदा पितावरुणकी दीनीही तासमें ऐसे कह्यो हो जो यु
धनकरे तापें प्रहार करताही नासकरैगी. तागदाकों धा
रे श्रुतायुध अर्जुनके सनमुष आयो तब श्रीकृष्ण

बोले रे मूढ यहमार्ग छोडि ऐसे कहि जबश्रीकृष्णपै क्रो-
धकरि गदाचलावत भयो सो गदा श्रीकृष्णकों आलिंग
न करि गदा फिरिकै श्रुतायुधकों मारत भई जब अर्जु
नहू जयद्रथपै क्रोध करि आगेचल्यौ ताके सनमुखआ
य कांबोज स्कदक्षिण अद्भुत युध करत भये. तिन दोउ
नकों मारि अर्जुन आगे चलत भयो तब ताके रोकिवे
कों अच्युताय श्रुताय ये दोउ राजा आय घोर युधकरत
भये. जब अर्जुन इन दोउनकों भ्राता सेवकन सहितमा
रि आगेचलि अंगवंग कलिंग राजानकों मारि अरुवी
रनके अलंकार रत्ननकरि संयुक्त रुधिर रूपी जलकरि
परिपूर्ण ऐसे अद्भुत समुद्र करत भयो अरु गज समू
हके कुंभस्थलनकों बाणनतें विदीर्ण करि पृथ्वीकों मु-
क्ता मई करत भयो. तहां राक्षसहू रुधिर पान करतभ
ये. तापीछे अर्जुन मलेछ सेनाकों मारि अंबष्ठाधिपति
के शिर काटि जयद्रथके मारिवेकों आगेचल्यो ता अर्जु
नकों देषि दुर्योधन द्रोणाचार्यकों आय कह्यो हे गुरु-
तुह्मारो प्यारो शिष्य अर्जुनहै सो तुम सनेहसों वाकों
रोक्यो नहीं. तातें तुह्मे उल्लंघनकरि आगे गयो. अरु
रात्रिमें भाजते जयद्रथकों तुम अभयदान देके व्यूहमें रा
ष्यो अरु अर्जुनकों व्यूहमें प्रवेस करते रोक्यो नहींसो
यह तुह्मारो विपरीत चरित्र कैसेहै तब द्रोणाचार्य बोले
हे दुर्योधन श्रीकृष्ण अर्जुनके अश्वनकों वेगवं-
त करि मोकों उल्लंघि व्यूहमें प्रवेस कियो अरु जोमें
वाके पीछुजातो तो भीमकों आदिदे सर्ववीर प्रवेस करते
मेरे मंत्रमय वज्र कवचकों धारितूं अर्जुनसों जुद्ध करिअ
रुमें भीमकों आदिदे वीरनकों रोकोंहों ऐसे कहि रुद्र इंद्र
कों दियो इंद्र परसरामकों दियो. परसराम इनकों दियोहो

सो मंत्रमय वज्र कवच दुर्योधनको पहराय युध करि वेकौं पठायो जब दुर्योधन सेभालके अर्जुनके पीछे च ल्यो तहां दोउनके घोर जुध भयो अरुकौरव पांडवन के युधमे यमराय आपके परिवारकों मनवांछित भोज न करावत भयो तायुधमे हाथीनके सवारतो बाणनकरि हाथी दांतन करि महावत अंकुसन करि परसपर युध करत भये. तहां कोई एक वीरको शिर षडगतें कटिमार मार सब्द करत आकासमें गयो ताको अनुराग करिअ पछरा चूंबन करत भई ताक बंधके कंठपें खडगते क टयो गजको शिर पड्यो तब वह कबंध अधिक नृत्य करिवे लग्यो सो नृत्य करते ऐसो दीष्यो जैसे रुद्रके तां डव नृत्यमे नृत्य करत गजानन दीषे और युध करते वीरनके सस्त्रास्त्र क्षीण भये तब वीर कूदि कूदि हस्ति नके दंत उपाडि उपाडि तिनसों जुध करते वीर मुसल युध करतेसे दीषे कितनेक मुष्टि प्रहारतें कितनेक नष प्रहारतें लडत भये. अरु अर्जुन वीरनकों मारत मारत चल्यो ताके रथको मारग सस्त्र धारी जीवतें वैरीनसों तो नरुक्यो सोही रथकों मारग मरे वैरीनके शिरनने रोक्यो अर्जुन बाण धारा वर्षत वर्षत अनेक वीरनकों मा रत मारत युधमें अनेक सनमुष आये अवंति पति विंद अनुविंद दोउ भ्रातानको वेगते मारे तहां घोर जुधमें अनेक वीरनको संहार करि अर्जुन श्रीकृष्ण सों बोल्यो हे कृष्ण या रथके घोडा सस्त्रनके प्रहारतेंऔ र तृषा करि व्याकुल है सो इनको षेद दूरिकरि जलपानक रावो. ऐसे कहि अर्जुन रथतें उतरि च्यारु तरफ युधकर ते वैरीनकों मारि अरु बाणके प्रहारतें पृथ्वीकों विदीर्णक रि जलको प्रवाह काढत भयो तामे घोडानकों श्रीकृष्ण

जलपान कराय और हाथके सपरसतें सरीरकी विथा
दूर करि द्रूणीवल तिन घोडानमै करि रथकै जोडि अर्जु
न सहित आपसवार भये. तापीछै अर्जुन घोरबाण
नकी वर्षा करत वीरनको कंपावत भयो. तहां मंत्र मय
कवचकों बांधि दुर्योधन युधमें आइ अर्जुनकों रोक्यौ
तब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन यह दुर्योधन अनर्थको मू-
लहै तातें यह मारिवेही योग्यहै ऐसे श्रीकृष्णको वचनसु
णि अर्जुन दुर्योधनको मारिवेकों अनेक सस्त्र अस्त्रच
लाये ते सर्वही ऐसे वृथागये जैसे कृपणतै जाचिक वृथा-
जाय तब सस्त्रास्त्रनकों वृथागये देषि श्रीकृष्ण अर्जुन
सों कही यह कहाहै ऐसे श्रीकृष्णको वचन सुणि अर्जु
न बोल्यो हे कृष्ण मै जाणोहों गुरु द्रोणाचार्यने याके
वज्र मय कवच बांध्योहै सोमै याकों छेदनहू जाणूहूं
ऐसै कहि अर्जुन अस्त्र चलावत भयो ता अस्त्रको द्रो-
णाचार्य आय निवारण करत भयो. अरु दिव्य अस्त्र दूस
रै चलावणो नहीं यह विचारि अर्जुन बाणनतें दुर्योधन-
को धनुष काटि सारथीकों मारि अश्वनकों मारि छत्रकाटि
गज घटानकों षंडन करि अरु द्रोणाचार्यके रथी धुजाकों
दैदीप्यमानही ताकौ कलस काटि पृथ्वीमै नाषि तापीछै दु
र्योधनके नषनकी संधिकों मंत्रमई कवच विनाजाणि बाण
नतै भेदन करत भयो. तब दुर्योधन भयभीत होय भाज्यौ
अरु अर्जुन अश्वत्थामादिकनकों रुधिरसों लिप्त करि स
बनकी सबनकी धुजा काटि छिन्न भिन्न करि आगे चल्यो
तब द्रोणाचार्यहू सिंहनाद करती ऐसी पांडवनकी से-
नाके सनमुष आय युध करत भये. तहां अनेक वीर
नकों मारि युधिष्ठिरकों विरथ कर्यो. तब राजाको पकड्यो
पकड्यो ऐसे योधा पुकारत भये जब युधिष्ठिरहू द्रोणाचा-

यपै बरछी चलाई ताकौं द्रोणाचार्य ब्रह्मास्त्रतै काटितब
युधिष्ठिर सहदेवके रथपै सवार होय आगे तापीछे सेना
हू स्वामीकी भक्तितें संगही भागी. तब पीछेसों आवती
कौरवनकी सेनाकौं देषि पांडवनकी सेनाके वीर फिरिकैजु
ध करत भये. तहां बृहत्क्षेत्र केकयराज क्षेमधूर्तकों मा-
स्यो त्रिगर्तराजवीर धन्वाकूं धृष्टकेतुकौ मास्यो सात्यकीव्या
घ्रदत्तकौं मास्यो अलंबुष भीमपै आय अस्त्र चलायो
जब भीमहू ता अस्त्रकौं त्वष्ट्रास्त्रसों निवारण करि युद्धक
स्यो. अलंबुष भीमपै दबायो सो देषि घटोत्कच अलंबुष-
कौ रथतें पटकि पृथ्वीमें पीसि नाष्यो तब अश्वत्थामाघ
टोत्कचसौं जुध कस्यो तहां दोउ वीरनने दोउ सेनाकों व्या
कुल करि भगाई. अरु युधिष्ठिर भागेहे सो दूरि गये तहां
अर्जुनको शंख धुनि सुण्यौ नही. जब अश्वत्थामाकौं जु
ध करते सात्यकीसौं युधिष्ठिर बोल्यो हे शूर तेरो गुरु स
त्रु सेनामै प्रवेस कियो ताकी सहायताकौं यह समय है.
जासौं तूं अर्जुनकी सहायताके निमित्त जा. धृष्टद्युम्न भी
मसेन रक्षकहै तातें मोकौं द्रोणाचार्यको भयहै नही. ऐ
सें सुणि सात्यकी दान होम आदि मंगल कर्म करि युधि
ष्ठिरकौं प्रणाम करिकै चल्यो सोबाण वृष्टितें वीरनकौं षं
डि रुधिर करि मार्गकौं रंजित करत अरि व्यूहमें गयो. तहां
प्रथमही मार्गमें द्रोणाचार्यसौं अति युध भयो अरु बा
णजालनतें सूर्यहू आच्छादित भयो तहां ऐसो द्रोणाचा
र्यको अस्त्र बल देषि सात्यकी बोल्यो हे गुरु तुह्मारे शि
ष्यके पास जाते मोकौं रोकिवो तुह्मै जोग्य नहीं जब
द्रोणाचार्य कही मैं तो कौं जावे द्योंगो नहीं ऐसें बोलतें द्रो
णाचार्यपैं बाण वृष्टिकरि अंधकारतें छलकरि रथकौं-
दौडाय कृतवर्मा आदि वीरनकौं छिन्न भिन्न करि व्यूहमें

प्रवेस कियो तब पांडवहू सात्यकीकों गयो जाणि व्यूहमें प्रवेस करिवेकों चले. तिनकों कृतवर्मा जादव रोके अरु सात्यकी बाणनतें आकास छाय क्रोधतें वीरनकों मारत भयो ताकों कौरव वीर नेत्रनसों देषिहू सके नहीं अरु सात्यकी गज घंटानकों षंडनकरि लडते मगधेंद्र जलसंध-कों मारि गजराजतें पटक्यो बाणनकों लक्ष वेधनतें तृप्त करत करत अनेक स्रुदर्सनादि वीरनके सिर बाणनतें काटि आकासमें फेंकेते मानों आकास रूपी रुद्रनकों मुंडमाल चढाइहै तापीछे दुःसासनकों बाणतें विदीर्णकरि आगें चल्यो तब दुःसासन द्रोणाचार्यके पास आय आपकी दुर्दसा दिषाय सोच करत भयो ताकों देषि द्रोणा-चार्य बोले हे मूढ सात्यकीसों जुधमें त्रासतें व्याकुल-क्यों होयहै द्रौपदीके केस षैंचिवेमें मद हो सो कहां गयो द्यूतमें पासानकों पात देषि हांस्य करे हो सो अब जुधमें बाण रूपी यम पास पात देषि बहु हांस कहां गयो जो-जुधतें भयहै तो अबहु संधिकरो नहीतो परलोकार्थनि स्संक जुधकरो ऐसो सुणि नीचो मुष कर्यो सो दैत्या वतार दुःसासन पाताल वासी दैत्यनके सरण जावेकी इच्छा करतसों दीष्यो तापीछें म्लेच्छनकों बल संगलेंके-सात्यकीसों जुध करिवेकों फेरि गयो तब द्रोणाचार्यता अवकासमें क्रोधतें देव स्त्रीनसों अनेक वीरनके विवा-ह कराये. और वीरकेतु, चित्ररथ, सुधन्वा, चित्रकेतु एचारि पांचाल सेनाके जयस्थंभहे. तिनकों मारे तब धृ ष्टद्युम्न बाणनकरि द्रोणाचार्य चैतन्य पायवे तस्त्रीक: बाणनतें धृष्टद्युम्नकों व्याकुल करि भगायो. तापीछें द्रोणाचार्य बाण वृष्टीतें युधिष्ठिरकी सेना समुद्रकों चक्र कियो अरु दुःसासन सात्यकीसूं जुधमें म्लेछ सेना

कौं मरवाय युधकरत भयौ तब सात्यकी दुःसासनकौ कवच आयुध काटि विरथ करि भीमके पण भयतें मार्यौ नहीं जब द्रोणाचार्य पांडुसेना रूपी नदीमै प्रवेस करि अनेक वीरनके सिरक मलनकौ वीर श्रीकृष्ण पूजाके निमित्यतो डिकें केकयदेस राजाकौ ज्येष्ठ भ्राता ब्रहत्क्षत्र ताकौं मारि सिसुपालकौ पुत्र धृष्टकेतु ताकौं मारि जरासंधकौ पुत्र सहदेव ताकौ मारि धृष्टद्युम्नकौ पुत्र क्षत्र धर्मा ताकौ मारि तेजतें जाज्वल्यमान द्रोणाचार्य तृणनमै आग्निज्यौं पांडुसेनाकौं दग्धकरत भयौ. इति सात्यकी प्रवेस. तापीछै युधिष्ठिर सूर्यकौ अस्त होतो देषि भयभीत होय भीमसौं बोल्यौ हे भ्राता अब तेरे पराक्रमकौं समयहै तातै सत्रुनकी सेनाके मध्य अर्जुनहै ताके पास जावो. अब श्रीकृष्णके संषकी धुनितौ सुणियेहै अरु अर्जुनके संषकी धुनि नही और वैरी महाविषम है जातें तुमजाय अर्जुनकी रक्षाकरो द्रोणाचार्य तें द्रुपद पुत्र मेरी रक्षा करैगो. ऐसे सुणि भीमसेन राजाकी आग्या शिरपैं धरि रथपै सवार होय बाण धारानकरि वैरीनकौं मारि मारग करत मदोन्मत्त गजराजलौं सकट व्यूह भेदिवेकौं चल्यौ तबताके सनमुष द्रोणाचार्य आयबोले हे भीम मेरे आगे तूं सकट व्यूह भेदिवेकी इच्छाकैसै करैहै ऐसै कहि क्रूर बाणनतें भीमकौं परिपूर्ण करत भये तिन बाणन करि हृदयतें रुधिर झरत भीम ऐसै दीष्यौ जैसै काली केकुचकी के सरितै लिस कालदीषै तब भीमसेन बोलत भयौ. हे द्रोणाचार्य तुममेरे गुरु नहीं मै तुह्मारो शिष्य नहीतातें अबमैं तुमकौं जीति व्यूहमै प्रवेस करि अर्जुनपास जाऊंहूंसो तुमदेषौ ऐसे कहि घंटानाद सहित ऐसीगदाके प्रहारसौं रथतोडि द्रोणाचार्यकौं पीडित किये. तब

हे धृतराष्ट्र तासमयमें भ्रातान सहित दुर्योधन आयौ सो भीमके बाणानकरि ऐसौ दीख्यौ जैसें सर्पन सहित चंदन कौ वनदीषे तापीछे वृंदारक, दीर्घनेत्र, सुषेण, दुर्विमोचन, रौद्रकर्मा, अभय. चित्रकांति, सुदर्शन इनतेरेआठ पुत्रनकौं मारि भीम तिनके सिरनसौं कंदुक क्रीडाकरी. तापीछे और वीरनकौं मारि यमदूतनकौं तृप्त किये. ऐसै भीमकौं देषि द्रोणाचार्य रथपै सवार होय जुधकौं आये जब भीम रथतें उतरि उतरि हाथीकौं पकडि ताके प्रहारनतें द्रोणाचार्यके रथकौं षंड षंड कियो तब द्रोणकौं विरथ देषि वेगतें भीम व्यूहमें प्रवेस करत भये. तापीछे जमदंड तुल्य बाणनते असंख्यात वीरनकौं मारत गजन करि परिपूर्ण ऐसी करणकी सेनामें केंसरीसिंघलौं विचरत भयो तहां सात्यकीके धनुष कौ टंकार सुणि भीम अद्भुत सिंहनाद कियो अरु दोउनकौ शब्द सुणि श्रीकृष्ण अर्जुनहू संषनाद करत भये ताकौं सुणि भीम हर्षतें अनेक वीरनकौं मारत भयो सोदेषि कर्ण अस्त्र वर्षा करत जुधकौं आयो तब दोउनके परस्पर घोर जुध भयो जबभीम बाणनतें कर्णकौं विरथ करि आयुध काटत भयो ऐसी आस पायकै हू कर्ण युधमै स्थिर रह्यौ तासौं भीमआय फेरि घोर जुध करत भयो सोदेषि दुर्योधन मान भंगतें मलिन द्रोणाचार्य पास जाय बोल्यौ हे गुरु तुमकौं अर्जुन प्यारो है ताकी रक्षाकौं सात्यकी भीमकौं पठायो हमतौ मंद भाग्य हैं वज्रलौं दृढ तुह्मारी प्रतंग्याहुसोउ शिथल भई ऐसे सुणि द्रोणाचार्य बोले एकलौं मैं सात अक्षोहिणिनकौं रोकेहूं तूं एकादस अक्षोहणी पति इन तीनहूकौं नहीं रोकिसकै है ऐसैं सुणि दुर्योधन अर्जुनके चक्र रक्षक द्रुपदके पुत्रनकौं मारे तबही ता अवकासमें क-

र्ण भीमकौं तीव्र बाणनतें विदीर्ण कर्‍यौ . जब भीमहू क्रोधतें कर्णके रथ आयुध काटि अनेक राजानके शिरकाटे तब कर्ण और रथपै संवार होय भीमसों जुध करिवेकौं फेरि आयो तहां दोउनके घोर जुध भयौ ताके देषिवेकौं आये. जो देवतासोहू आश्चर्यतें शिर धुनावत भये. जब भीमहू दुर्जयनामा तेरे पुत्रकों मारि गदा प्रहारतै कर्णकौ रथ फेरि तोड्यौ अरु तहां आवते तेरे पुत्र दुर्योधनकौं बाणनतें विंधि व्याकुल कर्‍यौ तब कर्ण और रथपै सवार होय आय भीमके हृदयमें बाण मारे तिनबाणनतैं भीम क्रोध रूपी अग्नि प्रज्वलित भयौ जबकर्ण और राजानसों युधकरत भयो. तब भीमसेन दुर्मर्षण, दुर्मुह, जय, दुःसल, दुःसह इन पांच तेरे पुत्रनकों मारि रणमें गर्जना करते कर्णकों रथ आयुध फेरिकाटत भयो अरु ताकी सहाय करिवेकौं चित्र, उपचित्र, चित्रवर्मा, चित्रधन्वा, चारुचित्र, विचीत्र, बाण एतेरे सात पुत्र आये. तिनकौंहू भीम मारत भयौ तापीछे वारंवार हार्‍योहू कर्ण तेरे पुत्रनको मारे देषि अश्रुपातकरत अनिर्वेद संपत्तिको मूल है यहजाणि रथपै सवार होय फेरि आयो अरु भीमकौं बाण वृष्टि करि रुधिर मय कियो तब भीमहू बाणधारणकरि कर्णकौं मूर्छित कर्‍यौ ताकी रक्षाकौं चित्र, आयुध, चित्रासु, चित्रसेन, विकर्ण, सत्रु, सत्रुंजय, सत्रुंस, ये सात भ्राता फेरि आये तिनकौंहू भीम मारे. तब कर्णचेतपाय बाणनतें भीमकों विरथ कियो जबभीम अस्त्र चलाये तिनहूकौं कर्ण काटत भयो तब अस्त्र सहित भीमसेन अनेक हाथीनकौं भ्रमाय कर्णपें फेंके अरु भीमकौं बाणनतें विदीर्ण करि पृथ्वीमें पटकि धनुष कोटितें बांधत भयो अरु कुंतीके वचन तें मारणो नहीं

ऐसै जाणि अनादर करतही बोल्यौ. हे भीम तूं अस्त्र
विद्यामै निपुण नहीं तातैं बलवान नतैं युध करिवे लाइ
क तूं हैनहीं अर तेरो सरीर पुष्टहै अरु बहु भोजन क
रेहै तातैं रसोईदारको कर्म करिवेही जोग्यहै ऐसैकहि
कर्णवारंवार धनुषकी कोणतें प्रहार करत भयो तहांय
हदसा भीमकी श्रीकृष्णाके कहेतें अर्जुन देषि बाणव
ष्टि करि कर्णकौ व्याकुल कियो तब भीमहू मूर्छा छोडि
सात्यकीके रथमे सवार होइ अनेकवीरनकौं मारत भयो
॥ ॥ इति भीमप्रवेशः ॥ ॥ तापीछे अर्जुनक
र्णपैं बाण चलाये तिनकों अश्वत्थामा बाणनतै काटत.
भयो तब अर्जुनहू बाणनतैं अश्वत्थामाकौ भजाय अने
क वीरनकौ संघार करत जयद्रथके मारिवेकौं अतिशीघ्र
रथकौं चलाय पद्मव्यूहसौं युधकरत भयो तहां पद्मव्यू
हके वीरनकौं मारि तापीछे अनेक महारथीनकरि रक्ष.
त जयद्रथ सूचिव्यूहके एक देसमे गुसहो ताहू व्यूहमें
अर्जुन प्रवेश करि ताके वीरनसौं युधकरत भयो तहां
भीमहू गदाप्रहारतैं अनेक वीरनकौं मारत भयो अरु
सात्यकीहू क्रोधतें कौरवनकी सेनाकौं मारि हाहाकार
शब्द करावत भयो ता सात्यकीकौं देषि अलंबुष युधक
रिवेकौं आयो तासो युधकरि सात्यकी अनेक वीरनकौं
मारि अलंबुषको शिर काटि सिर पृथ्वीमै पटक्यो विष्णु
के चक्रते कट्यो राहुको शिरतैसे अलंबुषकौं देषि रा-
ज.मंडल दूषितभयो तापीछे सात्यकी पांचसें ५०० वीर
और मारे तिनकौ कोलाहल स्रुणि भूरिश्रवा युधकौआ
यो तब दोऊही मेघ समान बाण धारा वर्षतदोउ सेना
कौ व्याकुल करत अनेक सस्त्र अस्त्र मय युध करत भये.
तिनके युधकौं सर्ववीर परस्पर युध छोडि देषत भये.त

ब दोउनके बाण लक्षवेध करि पृथ्वीमें प्रवेस करत भये.
स्वामीकों मनो वांछित काम कस्यौ नहीं तातें कहा मुषदि
षावें ये लज्जातेंही मानो अंतर्धान भये ऐसें दोउनके बा-
ण प्रहारतें सारथी अश्व धनुष ध्वजा कटे तब दोउ षडग
युध करत भये तापीछें भूरिश्रवा सात्यकीकों पृथ्वीमें पटकि
कें सिरगहि षडगतें सिर काटिवे लग्यौ तब श्रीकृष्ण अ-
र्जुनसौं बोले हे अर्जुन तेरो शिष्य सात्यकी तोहकों जीतिवेला
यकसो सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवाके बसपस्यौ है यह कालकी
महिमादेषी ऐसें सुणि अर्जुन बाणतें भूरिश्रवाको भुज-
षडगसहित मूलतें काटत भयो. तब भूरिश्रवाबोल्यौ हे
अर्जुन तूं वीरनमें सिरोमणी होय यहकूट युध कोनपैतें
सीष्यौ सिव इंद्र अग्नि कृप द्रोण इनमें तौयह विद्याहै नहीं
यह श्रीकृष्णकी मित्रताको फलहै कहा ऐसें कहि भूरिश्र-
वा प्राणायाम करि योग धारणा करत भयो ताके सिरतें धू
मसहित अगनि निकस्यौ सो देषि और राजा अर्जुनकी
निंदा करत भये. तिनकों अर्जुन बोल्यौ अभिमन्युकों मा
रतें तो तुम धर्म देष्यौ नहीं. अब तुम धर्म देषोहो अरु मो
कों प्राणहूतें प्यारो शिष्य ताकी रक्षा करत मोहि अधर्मि
जाणि निंदा करौहो. सो तुह्मे जोग्य नहीं. ऐसें अर्जुनके व
चन सुणतही सात्यकी चेतपाय पूर्व वृत्तांत जाणे विनाप्र
थमही योगाभ्यासतें गतप्राणऐसें भूरिश्रवाकों षडगतें
सिर काट्यौ ताको देषि कित्तनेक वीर निंदा करत भये कित
नेक स्तुति करतभये. सूर्यास्त पर्यंत जयद्रथकी रक्षाकों इ
तनेवीर सन्नध्ध भये कर्ण कृप अश्वत्थामा दुर्योधन सल्य
वृषसेन वृषक इतने आय बाणनतें अर्जुनकों छाय लि
यौ. तब अर्जुन कोप करि बाण वृष्टितें सबनकों भगा-
ये तब फेरि आय अर्जुनकों सबननें चारयौं तर्फसें घेस्यौ

जब अर्जुन वृषककौं धनुष काटि सल्यकी पाग छेदनक
रि कृपाचार्य अश्वत्थामाकौ विरथ करि वृषसेनकौ कान
काटि दुर्योधनकौ मुकुट काटि सबनिके उरमैं बाण मारे.त
व सकल राजा अर्जुनके बाणनतैं व्याकुल होय बोले अब
सूर्यदेव आकासमैं विलंब क्यौं करतहै. शीघ्र अस्ताचल
कौं क्यौन जातहै ऐसै बोलि रोषसौं रक्तनेत्र न करि सूर्यकौं
देषत भये. तिनके रक्त नेत्रनतैं ही कहा मानो सूर्यहू रक्त
भयौ है जगतकौ उपकार करताहू सूर्य ताकौं अस्तकामी
उलूक चौरलौं कौरव चाहत भये फेरि सबनकौं बाणनतैं
मूर्छित करि अर्जुन जयद्रथके मारिवेकौ चल्यौ तब दुर्योध
न चारिसै हाथीनकौं वीचिकौं पठाये. तिनकौं भीम पकडि
उछाले ते पौन तैं तूल उडे ज्यौं उडि संवर्त्त वायुचक्रमैं पडे
जे भ्रमैहै तब तहां द्रोणाचार्य आय अर्जुनसौं जुध करत
भये. गुरु शिष्यकौ घोर जुध देषि श्रीकृष्ण उपाय कियौ
जब सुदर्शन चक्रतैं सूर्यकौं आवर्ण करि अस्त दिषायौ
तब जुध करते द्रोणाचार्य अर्जुनसौं बोले हे अर्जुन तू स
त्यवादी होय सूर्य अस्त भये तोहू युधक्यौं करतहै. प्रति
ग्या पालनतैं अधिक सूरनकौ और धर्म है ही नहीं ऐसैं
सुणि अर्जुन जुध तजि रथतै उतरि काष्ठकी रासिकौं अ
ग्नितैं प्रज्वलित करि तामैं प्रवेसकी तयारी करि सो सुणि
पांडव हाहाकार करत भये कौरवनसौं छल करतही श्रीकृ
ष्ण अर्जुनसौं बोले हे अर्जुन तेरो अपराध नहीं होणहा
र माफिक तेरे मुषतैं प्रतंग्या निकसी तातैं अब विलंब
न करो तोसरीषो मित्र मोकौं फेरि मिलेगो नहीं तातै मोसौं
एक वार आय मिल ऐसैं कौरवनकौं छलि रुदन करतही
अर्जुनसौं मिलि कानमैं कही हे अर्जुन तूं अग्निकी प्रद
क्षिणा करि जब जयद्रथ दीषै तबही वाकौ शिर काटि सं

ध्या करतैं वाके पिताकी अंजुलीमै नाषि वानै पुत्रकौं वर
दियौ हो जोतेरे शिरकों पृथ्वीमै नाषै ताको शिर तत्कालही
पृथ्वीमै पडैगो. ऐसै स्रुणि अर्जुन अग्निकी प्रदक्षिणा क
रत भयौ ताके देषिवेकों कौरव सरब आये यह वृत्तांत स्रु
णि जयद्रथहू देषिवेकों ऊंचो सिर निकास्यौ तब अर्जुन
अर्धचंद्रबाणतैं जयद्रथको शिर काटि करुवर्ष सीमामै
संध्योपासन करत याके पिता वृद्ध क्षत्रकी अंजुलीमैना
ष्यौ नेत्र मीचे ही वृद्ध क्षेत्र चकित होय वा सिर कौं पृथ्वी
मै नाष्यो तब ततकाल वाकोहू सिर पृथ्वीमै पड्यौ जब
द्रोणाचार्य सहित कौरव जयद्रथको देषि जितनेक अर्जु
नकी निंदाकरै तितनेही श्रीकृष्ण स्रुदर्सनकों अंतर्धान
करि सूर्यकौं दिषायो तब सबही कौरव आश्चर्य युक्त भ
ये. अरु अर्जुनहू सात अक्षोहणी सहित जयद्रथको
मारि गर्जना करत भयो ता गर्जनाकौ स्रुणि मदोन्मत्त
भीम हर्षतैं अपार नाद कस्यौ ताको स्रुणि युधिष्ठिरकै
आनंद होत भयो. व्यूह भंगतैं व्याकुल कौरवनकी से
ना दावानलतै व्याकुल गज घंटालौं चास्यौ ओर भ्रमत
भई जब अर्जुन कृपाचार्य अश्वत्थामाकौं बाणनतैं भगा
य अनेक वीरनके शिरकमलनतैं संध्याकौं पूजत भयो अ
रुसात्यकीहू युधमैं कर्णकौं जीति दारुक सारथी सहित
श्रीकृष्णके रथमैं सवार होय अनेक वीरनकौं मारत भयो
अरु तब भीमको अपमान कियो तातैं कोपकरि अर्जुन
कर्णके आगे वृषसेनके मारिवेकी प्रतंग्या करी वीरन कौं
मारत सात्यकी भीम सहित युधिष्ठिरकौं आय प्रणाम
कियो अरु युधिष्ठिरके आगै भीम सात्यकी अर्जुनके
रणकी प्रसंसा करत भयो तव राजा युधिष्ठिरतो श्रीकृ
अर्जुनतैं आलिंगन करि जय हेतु श्रीकृष्णहूकी स्तुतिक

त भयो. ॥ इतिश्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां द्रोणपर्वणि चतुर्थ दिवस युधे जयद्रथवध वर्ननो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ संजयउवाच ॥ ॥

तापीछे दुर्योधन अंश्रु पातकरत द्रोणाचार्य पासजायबोल्यो हे गुरु आपजाकों अभय दियो हो सो जयद्रथ तुम्हारे देषतही मर्यो अब कहा करोगे ऐसे सुणि द्रोणाचार्य बोले हे दुर्योधन तेरे वैरीनकों मारे विना आज रात्रिमें कवच नषोलूंगो. ऐसे द्रोणाचार्यको वचन सुणि दुर्योधन सूरज अस्त भये पीछेहू सर्व वीरनकों तयार करि युधकोंचल्यो तहां अर्जुनहू श्रीकृष्ण सहित कौरव सेनाके सनमुष आवत भयो तहां द्रोणाचार्यके धनुषकी टंकारतें मांसभोजी जीवहू जुधके उत्सवमे आये हैते अर्जुनके रथकी धुजामें जो हनुमंत ताकी गर्जनातें त्रास पाय. भाजे हनुमंतके शब्दके प्रतिध्वनि ज्यों भीमं मुष कंदरातें निकसीजो ध्वनि सो सत्रु सेनाकों कंपाय मानकरी. तब दोउ सेनाके वीर परस्पर युधकरत रुधिरसूं रंजित भये. द्रोणाचार्य बाणनतें सहस्त्र गज दसहजार रथ. लक्ष पयादेनकों मारि राजा शिवकों शिरकाटत भये. अरु भीमसेन युधकरते कलिंग राजाके पुत्रकों मुष्टितें मारि अस्त वषेरे ते वाके भोगकरिवेलायक मानों पुन्यहे ऐसे दीषे विराटको रसोईदार जो भीम तानें कालिंगनकों मारि रण भूमिमे पटके ते मानो कालिकाकी व्याल निमित्य विंजनसें दीषे तहां कलिंग कुलकूं मरे देषि ध्रुवजयतर आये तिनकू भीम मुष्टि प्रहारतें मारि अरु कर्णकों युधमें व्याकुलकरि फेरि दुष्कर्ण, दुर्मद येतेरे पुत्रनकों मारि गाजत भयो तापीछे सात्यकी यादव सोमदत्तको पुत्र भूरिश्रवा ताको सहोदर सलजाकों मारि अनेक वीरनकों मारत भयो. तहां अश्वत्थामा आय सात्यकी-

कूं रोकि अनेक वीरनकों नास कीयो ताके सनमुख घटोत्कच घोर शब्द करत आय बाणनकी वर्षा करी तब अश्वत्थामाहू घटोत्कचकूं बाणवर्षातें व्याकुल करि व्याकुल करते घटोत्कचके पुत्र अंजन पर्वाकों मार्यो तापीछे राक्षसनकी सेनाकूं अश्वत्थामा भगाय अरु द्रुपदके आठ पुत्रनकों मारि पीछे कुंती भोजके दस पुत्रनकों मारि अनेक वीरनकों मारत भयो तब भीमहू बाल्हीकी राजाहू मारि प्रमाथी वीर जो नागदत्त दृढरथ, वीरबाहु आयोबाहु सुहस्त सुदृढ ऊर्णनाभ, कुंडसाई, एतेरे दस पुत्रनकूं मारे तबत्ता अवकासमें द्रोणाचार्य युधिष्ठिरके घोर युध होत भयो तब भीम सकुनीके सात भ्रातानके सिरकाटि आकासमें फेंके ते सप्त ऋषीनके हस्ततें पडते कमंडलुसे दीषे तब पांडुवनके पराक्रमतें सकलसेना व्याकुल देषि दुर्योधन कर्णपें जाय दीनवचन बोली विनती करी जब बाण वर्षत ही कर्ण बोल्यो हे दुर्योधन तुम भय मतिकरो इनतेरे वैरीनके पीसिवेको भार मोकों है आजि अर्जुनकों मारि तोकों निष्कंटक करोंगो. ऐसे बोलतेकर्णकों कृपाचार्य बोले हे सूतपुत्र, गोहरणमें अरु घोषयात्रा में तूं दीष्योहू नहीं ता तें अब यथाशक्ति युधकरो अरु वृथा गर्जना मतिकरो ऐसे सुणि कर्ण क्रोध करि षडग धारि कृपाचार्यसों बोल्यो जो तुम फेरि ऐसे बोलोगेतो षडगतें जिव्हा काटोंगो. तब मामाके अनादरतें कोपकरि षडग धरि अश्वत्थामा कर्णके सनमुष आय बोल्यो रेरे नीच तूं कैसे भूसे है तब ऐसे सुणि कर्णहू षडग लेय युद्धकों आयो जब दोउनके वीचि कृपाचार्य दुर्योधन आय निवारण करत भये. तापीछे कर्ण अश्वत्थामा दुर्योधन येतीनों आय पांडवनकी सेनाकों व्याकुल करि अनेक वीरनकों मारत भये. तहां वीरनके मुषतें मरे मरे है अरु नगं

ऐसो शब्द निकर्‌यो तब अर्जुन आयबाण वृष्टिकरि तहांकौ रवनकी सेनाके सरणों कर्णही होत भयो तब कर्ण अर्जुनके बाणनतैं आपकोरथ अरु मनोरथको भग्न भयो देषिद्रु पाचार्यके सरण गयो अरु अश्वत्थामा द्रुपदके पुत्रनकों मारि अनेकवीरनकों मारत भयो तब युधिष्ठिर भीम अर्जुनकों पार्श्चक्र रक्षक करि कौरवनकी सेनाके वीरनकों मारि व्याकुलकरत भयो सात्यकी युधकरि सोमदत्तकोमार्‌यो अरुअर्जुन द्रोणाचार्य दोउनके दिव्यास्त्र प्रकासतैं देदीप्यमानवह रात्रि ऐसी सोही जैसे रुद्रके नेत्राग्नि प्रकासतैं देदीप्यमान कालरात्री सोहै घोर अंधारमें वीर दीपिकानके प्रकासतैं युधकरत भये. दीपकनिके प्रकासतैं कहूं कहूं षंडित अंधकार वीरनके सस्त्र प्रहारनतैं षंडितसो दीष्यौ महावीरनके भल्ल प्रहारनतैं अनेक दीपिका कटि कटि पडी ते अंधकारकी चपेटनतैं मानों षंडि रात्रि ऐसीदीषी अरु बालिष्ठ दैत्यावतार.दुर्योधनकों देवतावतार युधिष्ठिर रातिकोंजीत्यौ यह सबनकों आश्चर्य भयो कर्ण अनेक वीरनकों मार तवशी भूत सहदेवको माताके वचनतैं छोड्यो युधिष्ठिर द्रुमसेन आदि राजानके सिरनतैं पृथ्वी छाय दीनी. तापीछेकर्ण द्रोणाचार्यहू युधिष्ठिरकीसेनाके वीरनकों मारि पृथ्वीकों ढांपि दई. धृष्टद्युम्न आदि वीरनकों भगाय पांडवनकीजय आसा सहित सेनाकों विदीर्णकरि अपारबाण धारावर्षत भये. सो देषिश्रीकृष्ण घटोत्कचसों बोले हे घटोत्कच महावीरहूतूं कऱ्यालों कैसे ठाढोहै अथवा युधनकरिजाणै तातेंही जुधकों बुधिनहीं करैहै कहा ऐसे स्रुणि घटोत्कच बोल्यो हे कृष्ण हे कृष्ण मैंतेरे दासकों दासहों अरु मेरोबल रात्रिहीमें है तातें दिवसमें जुध नकरोंहों अब तुह्मारी आग्यातें कौरव सेनाकों अबही यारात्रिमें अदृष्ट होयप

वैतनतें चूर्ण करोंगो ऐसे वाको वचन सुणि श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसों बोले हे धर्मराज आपहू कौरव सेनाते युध करो ऐसो राजासों कहि घटोत्कच को उत्साह सहित करि युधकों पठायो जब घटोत्कच जठराग्नितें अगनि प्रगट होय नेत्र नासिका कर्ण मुष द्वारातें निकासि सस ज्वालान करि भयकरत पीतवर्ण केस डाढी मूछनकों धारि सिषर नमें दावानल ज्वाल सहित पर्वततलों दीष्यो ताको देषत ही कितनेक कायरतो नष्ट भये अरु सूर वीरनकों दृष्टितें गर्जनातें भगाय कर्णको सरजालतें आच्छादित कर्‍यो तब रत्न विचित्र दीर्घ धनुष धारे इंद्र धनुष सहित अंजन पर्वतसों दीष्यो तहां कर्णको व्याकुल देषि दुर्योधन अलंबुषको पठायो सो कर्णके आगे आय घटोत्कचसों युधकरत भयो जब घटोत्कच चारिसें ४०० हाथ प्रमाण रथमें सवार होय जय सुरके पुत्रसों युध करत भयो तहां दोउ पक्ष सहित पर्वततलों युधकरत भये. तिनके तुल्य जुधकों सर्ववीर देषत भये. तब घटोत्कच वाके रथकों आपके रथतें तोडि अलंबुषको वक्षस्थल धरि भुजानसों निचोड्यो ताके सरीरतें रुधिर धारान सहित प्राण निकसे. तबघटोत्कच वाके शिरकों तोडि दुर्योधनकों दिषाय बोल्यो ऐसे ही कर्णको सिर दिषाउंगो. सोतुम देषैगो. ऐसे कहि कर्णपें शीघ्रआय बाणनतें आच्छादित कियो तब कर्णहू असंष्यि बाणनतें वाको मर्म वेध्यो जब भीम पुत्रहू सहस्रारचक्र धारि कर्णकों आयो तब कर्ण वाचक्रकों बाणनतें काट्यो जब घटोत्कच रथ सहित आकासमें जाय माया युधि करि असंख्यात वीरनकों नास कर्‍यो अरु पृथ्वी अग्निकी ज्वालानतें जरत भई आकासतें बाण वृष्टि भई अरु दिसानकों अनेक राक्षसौनें रोकी जब कौरवनकी सेना भ-

हा संकट पायौ तब कर्ण दिव्यास्त्रतें माया निवारण करि लक्षावधि राक्षसनकों मारत रामचंद्रही तुल्य दीष्यौ जब घटोत्कच रुद्रको बणायो अष्ट चक्रन सहित वज्र ताकौंच लाय कर्णको रथ भंग कर्‍यौ तब कर्णहू बाणनतें वाकोरथ तोड्यो जब घटोत्कच पंजर हीन पक्षीलौं उडि आकासमैं गयो तहां जाय गर्जना करत मायावी अलायुधके सनमुष युधकों ठाढो भयो तब अलायुधहू भूमिमैं ठाढोजो भीम तासौं जुधकरैहै सो ताजि याके सनमुष आयो तव बकराक्षसको मित्र अलायुध भीमको पुत्र घटोत्कच इनके आकासमैं घोर युधभयो तिनकी गर्जनातें पर्वतनके सिषरहूफाटे ऐसे युधकरते अलायुधको शिरकाटि घटोत्कच भूमिमै नाष्यो सो पर्वतके सिषरकी समान कटे शिरकुं सर्ववीर देषि विस्मित भये ताअवकासमे कर्ण पांडुसेनामे प्रवेस करि वीरनकू मारतहो ताहि देषि घटोत्कच वाके रथकुं तोडि आकासमे फैंकि वृक्ष सर्पशिला अग्नि इनकी कौरव सेनामै वर्षा करत भयो तब कौरवसेना ऐसे भाजी जैसे पाजफूटे सरोवरको जल स्रष्क होत च्यारो दिसानमैं जाय तहां कितनेक वीर हाथी घोडानके सरीरमे धसत भये ऐसेजुधकरते घटोत्कचके सनमुष कर्ण बांणचलाये तब घटोत्कचहू कर्णपें बाण चलाये. जब दोउनके बाण संघटतें अग्नि प्रगट होय कौरवनकी सेनामैं दग्ध करत भई अरु तहां राक्षसनको राजा घटोत्कच सर्वजाति सस्त्र वर्षतभयो तातें सबवीर विव्हल होई हाहाकार करत भये तब घटोत्कच आकासमें किलकिला शब्द करत हर्षतें नृत्य करत भयो अरु कूदि कूदि हाथी घोडानको भक्षण करत भयो. अरु रुधिर नदिनतें अंजुली भरि भरि रुधिर पान करत भयो. ऐसे राक्षस रात्रिके जुधमैं दरसन

तैही कितनेकनके प्राणहरे कितनेकनको सस्त्र अस्त्रनकी
वृष्टितें मारे तायुधको देषिकौरव गजनकी घंटानतें शरीर
नकी रक्षा करत भये अरु युधकरते कर्णसौं दीन होयबो
ले हे कर्ण यह घटोत्कच रात्रिमें हम सबनकों मारैगो
तापीछें तूं इंद्रदत्त शक्तिसौं अर्जुनकौं मारि कहा करैगो
ऐसें स्रुणि संकट निमित्त राषि निधिलौं इंद्रकी दीनी एक-
वीर घातिनी सक्तिकौं कर्ण घटोत्कचपै फेंकी सोवह स-
क्ति विजली समान अंधकारकौं दूरि करत घटोत्कचके हृ
दयकौं विदीर्ण करि स्वर्गकौं गई ताके प्रहारतें प्राण रहि
त घटोत्कच पडि एक अक्षोहणी सेनाकौ चूर्ण कर्‍यो तापी
छै सब वीरनको राजा घटोत्कच ताकौं मर्‍यो देषि कौरव
हर्षतें नृत्य करत भये. तबश्रीकृष्णहू सर्वव्यापकता दि
षावत भये. जब अर्जुन श्री कृष्णसौं बोल्यौ हे श्रीकृष्ण
या दुष्षके समयमें तुम नृत्य करते भले नही दीषौहो यानृ
त्यकौ कारण कहाहे सो कहौतब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन
यह तेजोमई मूर्ति कर्ण कौरवनको परम जीवनहे अरु एक
वीर घातिनी इंद्रकी दीनी सक्ति कर्णको परम जीवनही सो
वह सक्ति घटोत्कचकौं मारि किरणन करि हंसत अब तुह्मा
रो पुत्र कर्ण मर्‍यो यह सूर्यसौं कहिवेकौं गई. तातें हे अर्जु
न अब कौरवनको मरेही जाणो. अरु इनके स्वास आवे
है ते पोले वृक्षके पवनलौं जाणौं. अरु या शक्तितें अर्जुनकौं
मारियो ऐसें कौरव नित्य सिषावतहे परंतु मेरी मायाके
प्रभावतें वाकौं याद रही नही अरु एक लव्ध जरासंध
सिसुपाल आदि अस्त्र दुर्जय हे. तिनकौं मैं मारे तब हू-
ऐसौ जुध न देष्यो दुःसाध्य शत्रुनकौंतो मैं मारे. अब मै
किं दीन कर्ण आदि आदि सकल सत्रुनकौं तुम मारोए
से श्रीकृष्णको वचन स्रुणि सर्व युधिष्ठिर भीम अर्जुन

कौं आदिले वीर क्रुद्ध होय युद्धकौं चले. तब चिंता करते यु-
धिष्ठिरकौं वेदव्यास मिलिके बोले हे युधिष्ठिर तुम धर्मतें युध
करि चौथे दिन तेरो विजय होइगो. ऐसे कहि अंतरध्यान
भये. तापीछे घोर अंधकारमें वीर शब्द वेधी बाण प्रहार
नतें वीरनके मुष हृदय तिनकों विंधत भये. अरु अंधका
रमें अपनो परायो जाणें विनाही घोर जुध करत भये. अ
रु पर्वत सहित पृथ्वीकों उठावतेंही तिनकों षेद न होय ऐ-
सेहू वीर युधमें षेद पावत भये. अरु अर्जुनको कछुभी
षेद भयो नहीं तौभी करुणाकरि वीरनसौं कही एक क्षणमा
त्र तुम विश्रामकरो. सो सुणि सकलवीर अर्जुनको सराहत
हाथी घोडा रथनपैं चढेही दुष्ष दूर करवे वाली निंद्राताके
वस होय सोवत भये. सस्त्र अस्त्र सहित युधकौं सन्नध्ध
ऐसी दोउ सेना निद्राकरि निश्चल सोवत भई. तापीछे चंद्र
मा उदे भयो सो अमृत वर्षवे वाली किरणनकरि घायलवी
रनकौं सुषी करत भयो रुधिरकी नदीमें षंड षंड चंद्रमाके
प्रतिबिंब ऐसे दीषे मानो निजकुल नासतें चंद्रमा आपही
षंड षंड भयो. अरु चंद्रमाकी किरण स्परसतें दोउसेनावी
र जागि जुधकों विचार करत भये. तापीछे सूर्योदय भयो.
तब सकल वीर नित्य कर्म करि युधकौं सन्नद्ध भये. तबदु
र्योधन द्रोणाचार्यपैं आय कटुक वचन बोल्यो जब वाके वच-
नतें क्रोध करि द्रोणाचार्य दिव्यास्त्र प्रहारतें अस्त्र वि-
द्याकरि हीनहू. तिनहूकौं मारत भयो अरु द्रोणाचार्य
अषंड धनुष मंडलतें असंष्यात वीरनकौं मारि गज अश्व
नकौं छिन्न भिन्न करि रुधिरके प्रवाह वहाये. तिनमें
अनेक योधा बूडि बूडि मरे तापीछे द्रोणाचार्य जुधमें
आवते द्रुपदके पुत्र तिनकौं मारत भयो तब विराट
द्रुपदहू युधमें थिर ऐसे द्रोणाचार्य पैं बाण वृष्टी करी

जब द्रोणाचार्य नैं दोउनके सिर काटि पृथ्वीमैं डारे त
ब भीम धृष्टद्युम्नकौं आदिलै सब वीर युधकौं द्रोणके स
न मुष आये. तिनकौं कर्ण सकुनी वीर रोके तहां अने
कवीरनके समागममैं अति घोर युध भयौ अरु विदीर्ण
भये हस्तीनके कुंभस्थलतैं असंष्यात मोती पृथ्वीमैं प-
डे. अरु असंष्यात रुधिरकी नदी वही. तब द्रोणाचा
र्य पांडवनकी सात अक्षोहणी सेनाकौ मारत भये.ज
ब श्रीकृष्ण पांडवनसौं बोले हे युधिष्टिर जब तांई शस्त्र
धरैहै तब तांई द्रोणाचार्यकौ जीत्यौ जाय नहीं ता.तैं छल
करि इनके हाथतैं अस्त्र शस्त्र छुडावौ ऐसैं स्रुणि अ
र्जुन कान मूंदि अधोमुष भयौ अरु युधिष्टिर शोकतैं मू
क भयौ तापीछै भीमसेन मालव देसके राजाकौं अ-
श्वत्थामा नाम गज राजकौं मारि ऊंचे स्वरसौं अश्व
त्थामा हतो ऐसैं बोल्यौं तब लज्जा करि नम्र भयौ ऐ
सैं भीमके मुषतैं अति अप्रिय वचन स्रुणि अरु पुत्र
अश्वत्थामाकौं अजेय जाणि असत्य मानि युधही-
करत रहे तापीछै साति हजार पांचाल वीरनकौं मारि
दस लक्ष वीरनकौं ब्रह्मास्त्रतैं दग्ध करि चारिसैं वरषकौ
द्रोणाचार्य तरुणलो युधमैं विचरत भयौ तब अति क्रू
र कर्म करत द्रोणाचार्य भीमके वाक्यतैं संकित होय यु
धिष्टिरसौं पूंछ्यौ हे सत्यवक्ता युधिष्टिर भीम कही सो
सत्यहै कहा ऐसैं द्रोणाचार्यको वचन स्रुणि श्रीकृष्ण
राजा युधिष्टिरसौं प्रार्थना करी हे राजन् जो तुम सत्य-
ही बोलोगे तो पांडवन सहित जगत प्रलय होइगो.य
ह श्रीकृष्णकी प्रार्थनातैं युधिष्टिर अश्वत्थामा हतः य-
ह तो ऊंचे स्वरसौं भीमलौं कहिन रोवा कुंजरोवा यह
धीरे बोले. अरु जबही श्रीकृष्णनैं संष ध्वनि जो करी.

तातें राजा दूसरे कहे जो अक्षरसौं द्रोण सुणेही नहींत
व द्रोणाचार्य पुत्रके सोकतें क्षणमात्र व्याकुल भयौ ता-
पीछे पहले राजा युधिष्ठिरके रथके अश्व पृथ्वीकौं स्परस
करे विनाही चलें हे तेई अश्व राजाके वचन कहतही भू
मिमें कष्टसौं चलत भये. तब द्रोणाचार्यहू धृष्टद्युम्नकौं
जीति एक लक्ष वीरनकौं और मारे. ऐसें युध करतें द्रो
णाचार्यसौं भीम जाय बोल्यौ हे गुरु तुम ब्राह्मण होयरा
क्षसलौं हत्या करौहौ अरु पुत्रके मरणकौ दुष्पहू भूलि-
गयेहौ यातें तुमकौं धिक्कार हे ऐसे भीमको वचन सुणि
द्रोणाचार्य सस्त्र अस्त्र त्याग करि सकल जीवनकौं अ-
भय दान देय योगेंद्र द्रोणाचार्य योग आसन करि बै
ठ्यौ तिनके ब्रह्मांडतें ज्वाला निकसि प्राण मुक्त भये.
तापीछे धृष्टद्युम्न आय पांडवनके वरजत और राजा
नके मुषसौं धिक्कार शब्द सुणतहू केस पकडि गुरु
द्रोणाचार्यकौ शिर छेदन कस्यौ तापीछे सकल कौरवन
कौं भयभीत देषि पूछत भयौ जो अश्वत्थामा तासौं रु
दन करत दुर्योधन सकल वृत्तांत कहत भयौ सो सुणि
पिताके मरणनतें क्रोधजुक्त रुद्रके अंसतें प्रगट भयौ.
जो अश्वत्थामा सो भृकुटी चढाय रौद्र दृष्टितें प्रलय का
ललौं भयंकर रूपधारी हस्ततें हस्त पीसत क्रोधतें बोल्यौ
पिताकौ मरण सुणाय इन क्षत्रीन मोहूकौ मास्यौ मोकौं
जीवतेहीकौं मस्यौ मानि पिताके केंसषेंचे. आजन्मप-
र्यंत सत्यवादी धर्मपुत्रहू गुरुकौं मारि आपके जीवे नि
मित्त मिथ्या बोल्यौ तातें अब क्षत्री जातिकौ कहा वि-
श्वास परंतु पिताकौ दियौ नारायणास्त्र मोपै हे ताकरि
पांचपांडव श्रीकृष्ण हीन विश्व करौंगो. ऐसें कहि पवि
त्रहोय नारायणास्त्र धारि अश्वत्थामा गर्जत भयौ तातें

क्रूर अक्रूर सबही कंपित भये तब अर्जुन वा गर्जनातैं सेनाकौ व्याकुल देषि पश्चात्ताप युक्त होय राजा युधिष्ठिर सौं बोल्यौ हे महाराज आजन्म पर्यंत सत्य वादी तुम हौ यह निश्चै जाणि सस्त्रास्त्र त्याग करि योगाभ्यास में बैठे विनां अस्त्र ऐसे गुरुकौं मार्यौ ता क्रोधतें या द्रोणाचार्यके पुत्रकौं कौण मारे. और राज भोग वांच्छाहूकौंधिक्कार है जो या वृद्ध गुरु अस्त्र योगीकूं साक्षात मार्यौ ऐसे कुधतें अर्जुन कौ प्रलाप स्रुणि क्रोध युक्त होय भीम पृथ्वीकौं सब्दाय मान करत बोल्यौ हे अर्जुन तूं क्षात्रिय होय मुनि तुल्य वचन बोलत भलो दीषे नहीं क्रूर वैरीके मारिवे में न्यायको विचार कौण करे. अरु अब द्रोण पुत्र विकट धुनिकौं क्यौं करे है हम तुम श्रीकृष्ण ये युधकौं तयार ही है ऐसे भीमकौ वचन स्रुणि कोप युक्त धृष्टद्युम्न अर्जुनसौं बोल्यो हे महावीर अर्जन तुम स्रुणौ. यह ब्रह्म बंधु अस्त्रज्ञान हीननकौंहू ब्रह्मास्त्रतैं मारे यातें यह अधर्मी योधास्व छंदचारि है अरु मेरे पिताको वैरी द्रोण ताकौं मैं मार्यौ अरु वृद्ध पितामह तो भीष्म दूसरौ तुह्मारे पिताको मित्र भगदत्त इन धर्म योधानकौं तुमकैसे मारे ऐसे बोलतै धृष्टद्युम्नकौ अर्जुन धिक्कार करि कटाक्षसौं प्रेरणा करि सात्यकीकौं बुलायौ तब सात्यकी बोल्यौ हमकौं धिक्कार है जो गुरुकौं कपटसूं मार्यौ तब ऐसे स्रुणि धृष्टद्युम्न बोल्यौ अनसन व्रत धारि योगाभ्यास करते भूरिश्रवाकौं कौण मार्यौ तब यह स्रुणि सात्यकी बोल्यौ हे निर्दय दुराचार्य धृष्टद्युम्न ऐसे फेरि बोल्यौ तो तोकौं मैं मारौंगो ऐसे बोलि सात्यकी षडग लियो जब धृष्टद्युम्नहू षडग धारि युधकौं आयौ तब दोउनकौं युधकौं सन्नद्ध देषि श्रीकृष्णके वाक्यतें भीमसेन आय

रोके याअवकासमै अश्वत्थामाके चलाये नारायणास्त्रकी ज्वालानको दिसानमैं व्याप्त भई देषि अरुता अश्वत्थामा हीके अनेक सस्त्रनतैं सेनाकौं व्याकुल देषी अर्जुनसौं युधिष्ठिर बोल्यो सत्यजीतकौं आदिलैके महारथ मारे दग्धमुष अभिमन्युकौं छलतै मार्यो अरु दुर्योधनकौ अभेद्य दिव्य कवच दीयो ता गुरुमैं मरणतैं क्रोधकौ रोकि मध्यस्थ होणोही जोग्यहै सात्यकी हम द्युम्नये आपके घर जावौमैं अगनिमैं प्रवेस करौंगो. अरु कालतुल्य कृपा पुत्रकौ अब कोण जीतिसकै ऐसै युधिष्ठिरकै बोलतैही चतुर्भुज भगवान उर्ध्व भुज करि नारायणास्त्रकी ज्वालातै व्याकुल जे राजा तिनसौं बोलै जे सस्त्र अस्त्र रथनकौं छोडैंगे तिनकौं यह अस्त्र दग्ध नकरैंगो ऐसै सुणि सर्व राजा सस्त्र अस्त्र रथनकौं छोडि सिर भूमिमैं धरि प्रणाम करत भये. तब भीम राजानसौं बोल्यो हे राजा हो तुम भय नकरो मैं निर्दय अश्वत्थामाकौं गदातै मारौंगो. ऐसे कहि गर्जनाकरत भीम गदालैकै दौड्यो तब अश्वत्थामा यह मूर्ष है ऐसै हसिकै कहि बाणनसौं पूरत भयो अरु रथ आयुध हीन राजानकौं छोडि नारायणास्त्रकी ज्वाला मंडल भीमकौं छायलियो जब अर्जुन भीमकौं ज्वाला मंडलतैं व्याकुल देषि वरुणास्त्र चलायो सो वरुणास्त्र नारायणास्त्रकी ज्वालानमैं दग्ध भयो अरु अस्त्रके आतापकौं सहि युधकरत भीमकौं देषि देवताहू विस्मित भये. जब श्रीकृष्ण अर्जुनये भीमपास आये जोरावरी भीमकौ रथतैं उतारि अस्त्रहू भीममैं नाषे तब पांडवनके दुःख सहित अश्वत्थामाके मनोरथ सहित सब लोककी ताप सहित नारायणास्त्र सांति भयो सो देषि दुर्योधन अश्वत्थामासौं कही. याही अस्त्रकौ प्रयोग फेरि करौ तब अश्वत्थामा दिव्यास्त्र

दूसरे चलै नहीं ऐसै कहि युध करिवेकों दौड्यौ तहां सात्य की धृष्टद्युम्न दोउनकों सस्त्र वर्षातें जीति स्कदर्सन नामा पौरव राजकों मार्यो तब युधिष्ठिरकी सेनाकों व्याकुल दे षि अर्जुन अश्वत्थामाकों बाण वृष्टिकरि रोक्यौ तब अ- श्वत्थामाकों आग्नेयास्त्र चलायो ताकी ज्वालानतें अनेकवी र दग्ध भये धूम मंडलतें सूर्य मंद भयौ नक्षत्र मंडल दिनमें ही दीष्यौ एक अक्षोहुणी सेनाकों दग्धकरि वह अस्त्र श्री कृष्ण अर्जुनपें दौड्यौ ताकी ज्वालानकरि श्रीकृष्ण अर्जुन छाय गये. तब अर्जुन निज ब्रह्मास्त्रपें अश्वत्थामाके ब्रह्मा- स्त्रकों सांत करि रणमें देदीप्यमान भयौ पृथ्वीकों अपां डवी करे विनाही दिव्यास्त्रकों सांत देषि अश्वत्थामा दिव्या स्त्रकी निंदा करे हो. तब वा अश्वत्थामाकों वेदव्यास आय दर्सन दीयौ जब रथछोडि अश्वत्थामा मुनिकों दंडौत क रि बोल्यौ मेरे दिव्य अस्त्र श्रीकृष्ण अर्जुनमें निष्फल भ ये याको कारण कहाहै सोकहो. तब व्यास बोले हे पुत्र श्री कृष्ण अर्जुन नर नारायणहै यह जाणौ सात हज्जार वर्ष तप करि नारायण रुद्र सेवनतें वाकी तुल्य भये. तूं मूर्तिसे वातें रुद्रांस ताकौ प्राप्त भयौ यह श्री कृष्ण रुद्रस्वरूपहै तूं रुद्रांसहै रुद्र अरु श्रीकृष्ण अर्जुनये एक स्वरूपहै इ नके प्रभावसें संदेह सांति करि ऐसै बोलि व्यास अंतर ध्या न भये. तब अश्वत्थामा रुद्रकों प्रणाम करि श्री कृष्ण अ- र्जुनकों देवरूपजानि क्रोधकों सांति करि युधहू समाप्तकि यो तब सकल राजा सकल निज निज डेरानकों गये. ज- ब अर्जुनहू डेरानसें आवत मार्गमें श्रीकृष्ण द्वैपायन मु निकों देषि प्रणाम करि पूछ्यौ हे महाराज, युधमें शूल धारि विकराल रूप नर भूलकी ज्वालानकरि मेरे बाण प्रहारतें पहली सकल कौरव वीरनकों संहार करत प्रति

दिन दीषैहै सो कौण है? तब वेदव्यास बोले श्रीकृष्णतैं रूपातैं तोपै प्रसन्न भयौ. भक्तनकौं कल्पवृक्ष. पार्वतीपति रुद्रहै आत्मा अनात्मा ईश्वर अनीश्वर ज्ञान अज्ञान प्रिय अप्रिय सर्वरूप अरूप ऐसे रुद्रके ध्यानते तोकौं सर्व सिद्धि होयगी. ऐसे अर्जुनकौ संदेह दूरकरि मुनिअंतर्ध्यान भये वीर डेरानमैं प्रवेस करि अपने अपने यथा योग्य कृतकृत्य करत भये. ॥ ॥ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रोणपर्वकी वचनिका भाषा भारत सार ॥ रावचांद सिंघ के हुकुम भयो सग्रंथ विचार ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां द्रोणपर्वणि पंचमोऽध्यायः समाप्तम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥
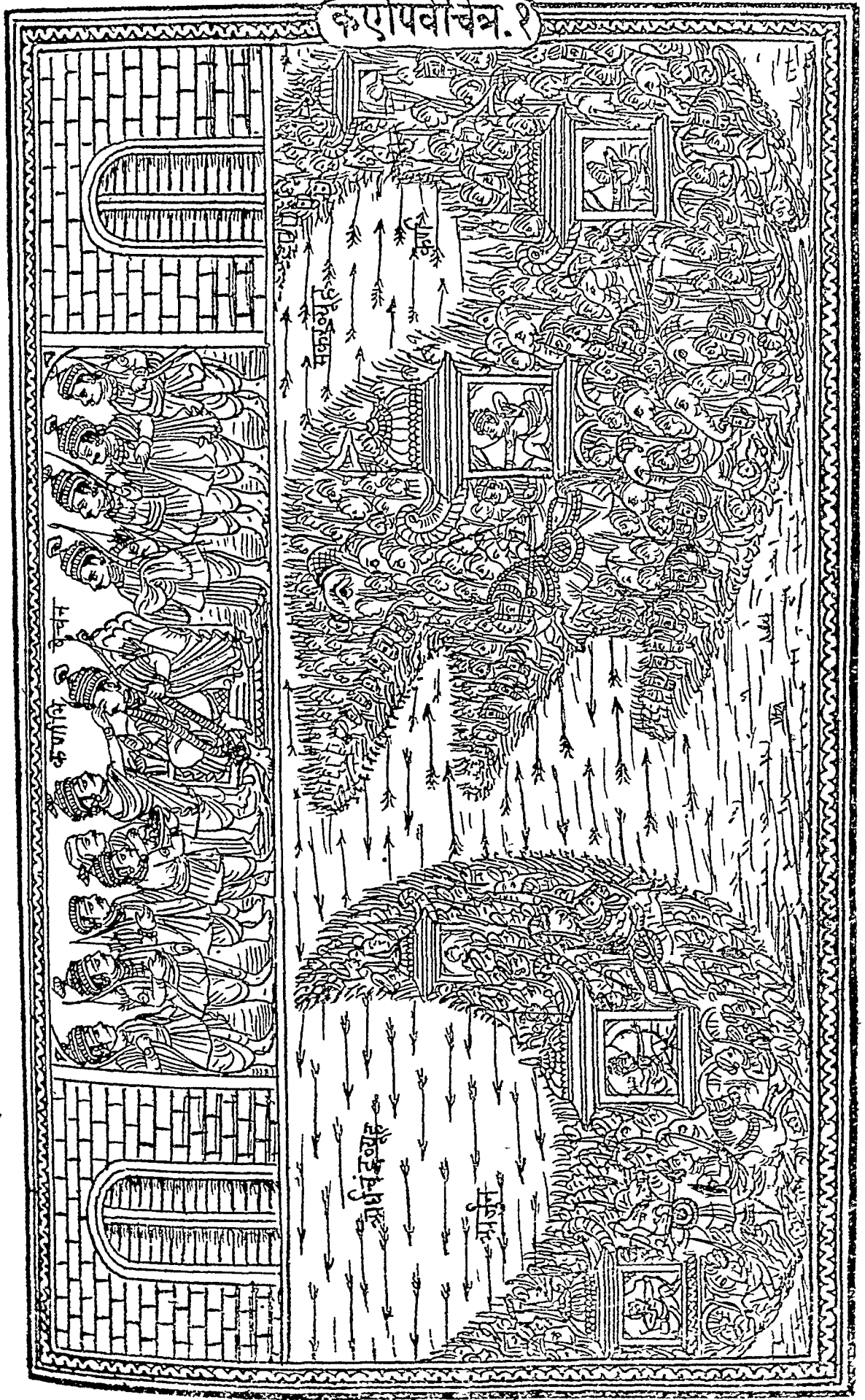
इतिश्रीभाषाभारतसारद्रोणपर्व समाप्तम्

कर्णपर्वचित्र. १

दिन दीषैहै सो कौण है ? तब वेदव्यास बोले श्रीकृष्णतैं रूपातैं तोपै प्रसन्न भयौ. भक्तनकों कल्पवृक्ष. पार्वतीपति रुद्रहै आत्मा अनात्मा ईश्वर अनीश्वर ज्ञान अज्ञान प्रिय अप्रिय सर्वरूप अरूप ऐसै रुद्रके ध्यानतै तोकों सर्व सिद्धि होयगी. ऐसै अर्जुनकों संदेह दूरकरि मुनिअंतर्ध्यान भये वीर डेरानमैं प्रवेस करि अपने अपने यथा योग्य कृतकृत्य करत भये. ॥ ॥ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रोणपर्वकी वचनिका भाषा भारत सार ॥ रावचांद सिंघ के हुकुम भयौ स्रुग्रंथ विचार ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां द्रोणपर्वणि पंचमोऽध्यायः समाप्तम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥

इतिश्री भाषा भारत सार द्रोणपर्व समाप्तम्

कर्णपर्वचित्र. १
कर्णाभिषेचन
अर्धचंद्रव्यूह
अर्जुन
मकरव्यूह
कर्ण

कर्णपर्व-चित्र २
कर्णरथ भूमिप्रवेश
अर्जुन सेना
कर्ण सेना
कर्ण
ब्राह्मण भिक्षुक
श्रीकृष्ण
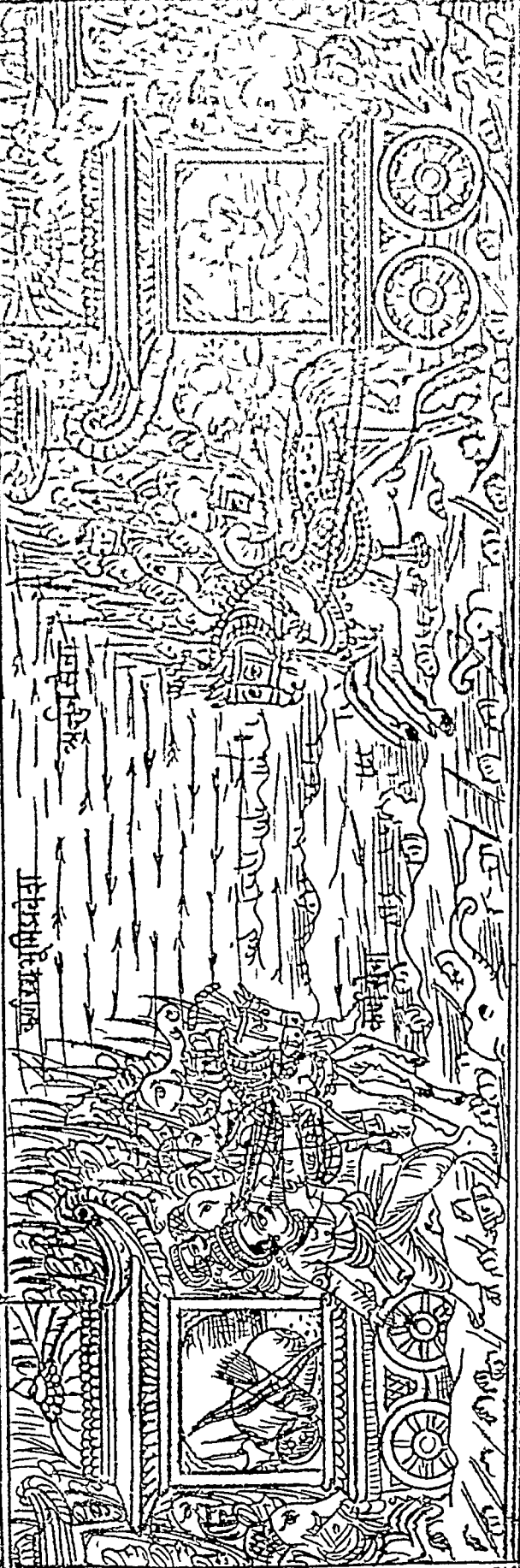
अथभाषाभारतसारकर्णपर्वप्रारंभः

॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे द्रोणाचार्य कौ मरण सुणि व्याकुल भये. धृतराष्ट्रकों कुरु क्षेत्रकों वृत्तांत देषि कहत भयो हे राजन् दुर्योधन राजने अश्वत्थामासों सलाह करि कर्णकों सेनापति कियो सो अंगदेसको राजाकर्ण मकरव्यूह रचि बाणवर्षा करत पांडवनकी सेनाकों कंपित करत भयो सोदेषि अर्जुन अर्धचंद्राकारव्यूह रचि युध करत भयो तहां दोउनके बाण वर्षातें सर्व वीर रुधिर मय होत भये. तब भीम गदाको प्रहार करि हाथीनकूं मारि २ कलूत राजकूं मार्यो अरु अर्जुन अस्त्र वृष्टि करि संसप्तक गणकूं मारि रुधिर मई नदी वहाई. अरु दंडधार दंड इस दोउ राजानकों मारत भयो. अरुपांड्य राजासूं युध करि वाहूकूं मार्यो तापीछे मलेछ राजाकी सेनाकों मारि अरु बाहुकूं मार्यो अरु कर्णहू अनेक वीरनकूं मारि गर्जना करत भयो ऐसे युधहोतें सूर्य अस्तकूं प्राप्त भयो. ॥ ॥ इति प्रथम दिवस युधः ॥ ॥ तापीछे कर्ण प्रभात समें दुर्योधनसों बोल्यो हे दुर्योधन तेरे अर्थ जे वीर प्राण त्यागकरे तिनको रिण उतारिवेकू समर्थहूं अरु अस्त्र सस्त्र पराक्रम इन करि अर्जुनतें अधिकहूं पें सारथी करि अर्जुन मोतें अधिकहै तातें कृष्णतें अधिक ऐसे सल्य राजाकूं मेरो सारथी करि मैं ताकों विजयद्यूंगो. ऐसे सुणि राजा दुर्योधन सल्यपें जाय कर्णके सारथी होवेकी याचना करी. सो सुणि सल्य क्रोध करि बोल्यो हे राजन् त्रिलोकीकूं जीतने वा-

रौ ऐसे मोकूं सूत पुत्र कर्णको सारथी करै है यो धिक्का
र है तब दुर्योधन बोल्यो हे वीर शिरोमणी ऐसै मति क-
है जो रथी तैं अधिक बली होय सोही सारथी होय है
अग्निके पवन जैसैं रुद्रके ब्रह्मा जैसे. कुंती पुत्र अर्जुनके
श्री कृष्ण जैसे तैसैही कर्णके सारथी तुमहौ ऐसै दुर्यो-
धनके मधुर वचनतें सल्य नम्र होय बोल्यो हे दुर्योधन
मैं तेरी आग्यातें सूत पुत्र कर्णकौं स्वच्छंद चारी सारथीहूं
गौ ऐसै कहि सल्य सारथी भयो तारथपै श्वेत वस्त्र धा
री कर्ण चढत भयो तहां कौरवनके योधा गर्जना करत
भये. तब कर्ण धनुष टंकार करि सल्यसौं बोल्यौ हे स-
ल्य अबमै अर्जुनकौं मारौंगौ अरु जहां श्री कृष्ण तहां
विजय यह वाणी मिथ्या होयगी अरु इंद्रहू मेरो प्रभाव
देषि पुत्रके सोकतें अंशुपात करैगो तब सल्य हसिकरि
बोल्यौ हे कर्ण ऐसी उन्मत्त कीसी नाहीं प्रलाप करत मे
रे आगे लज्जा नहीं पावैहै तेरो अरु अर्जुनको पराक्रम
गंधर्व युद्धमें अरु विराटके गो हरणमें कौन कौननें नहीं
देष्यौ कहा तब कर्ण सल्यसूं कही तूं आज मेरो प्रभाव दे
षैगो ऐसै बोलि आपके योधानसौं कहत भयो. हे योधा
हो इंद्र रुद्रके जीतवे वारो अर्जुन कहा है सो तुम देषो मे
रे बाणावासूं युध करिवाके रुधिर पीवेकी लालसा करै है.
जो मोकौं अर्जुन दिषावे ताकौं सत १०० ग्राम हाथी घोडा
दास रथ यथेच्छु द्यो ऐसो स्रुणि सल्य बोल्यो हे कर्ण तोकूं
अर्जुन आपही दर्सन देय अरु प्राण हरैगो. पण सेवा-
तें मिले ग्रासतें सरीर पुष्ट करि अरु राज्य भाग भोगवेवा
रे अर्जुन सूं स्पर्धा माति करै स्रुवर्ण कमलके भक्षिण करिवे
वारे मानस सरोवरके रहने वारे ऐसे हंसनतें उच्छिष्ट भो
जन करिवे वारे काग कैसे समान होय अरु हे अंगराज कर्ण

मृगकीसी नाहीं अंग कीं तब बताई नचायलै जब तांई. सिंह समान अर्जुन नही दीषैहै तबकर्ण क्रोधकरि बोल्यो मै अर्जुनकों जाणौहों अरु अर्जुन मोकों जाणै है हे सल्य तूं वचन बाणनतें मर्मछेदन करैहै तातें तूं मित्र मुष-शत्रु है अरु तेरे देसवासीनको यह स्वभाव है अगम्या गमन अपेयापान अभक्षाभक्षयों करैहै सो तिनको तूं राजा ऐसे कैसे नहि बोले तब सल्य बोल्यौ हे कर्ण तेरे स्त्री पुत्रनकों वेचैहै अरु मुषतें मैथुन करावै है सकल दुष्ट कर्म करिवे वालेहै तिनके राजामे सुबुद्धि कहांते आवै तातें हे मूर्ष मै हितकी कहौहों तूं क्रोध करै है सो अर्जुनतें युधकिये तेरे प्राणही जायंगे. तातें जुधमति करै ऐसै बोलि सल्य अनवनके मनजड करतही चलाये. तबकर्णहू अनेक बाणवर्षाय अनेक वीरनकों मारि दिव्यगतिकों पहुंचाये ऐसे बर्षाकरत हर्षयुक्त कर्णकों देषि मद्रनाथ सैल्य फेरि बोल्यौ हे सूत पुत्र तूं देषि यह अर्जुनके युधकी लीलाकों देष सत्त महारथीनके प्राणनकों नासकरैहै अरु अर्जुनके एक एक बाणन करि सात सात आठ आठ दस दस वीस वीस महारथी देहत्याग करि करि दिव्य देह धारि इंद्रलोककों जातेहैं सकल संसप्तक गणनकों मारि रणमें गर्जतो इंद्र पुत्रकों नके साध्यहै ऐसे सुणि कर्ण बाणवर्षान करि आकासमें बाण मंडलसों सूर्यकों छाय युधिष्ठिरकों विरथकरि दस हजार महारथीनकों मारि अरु युधिष्ठिरकों व्याकुल कियो. तब युधिष्ठिर विरथ सारथीहीन सस्त्रनकरि रहित कर्णके बाणनकरि पीडित कंपाय मान भयो ऐसे राजाकों देषि तहां भीम आय गदाप्रहारनसों अनेक वीरनकी घंटा षंड षंड करि नंद, उपनंद, क्रौंची, सुपर्वा, पासी, धनुग्रही, महा-

भुज, निर्देह, दीर्घात्मक. सन्निषंगी, काथ, जरासंधु येए
क दस दुर्योधनके भ्रातानकों मारि तिनकों देषि सर्व कौर
वनकी सेना कंपाय मान भई फेरि भीमसेन हाथी घोडा-
सितर सितर हजार मारि व्याघ्रदत्त आदि राजानकों मा
रि रण मंडलमें भयंकर यमतुल्य दीप्यौ तब कर्णहू पांड
वनके अनेक वीरनकों मारे ताकों देषि श्रीकृष्ण अर्जु
नसों बोले हे पार्थ वीरनकी भुजानकों छेदन करतो संग्रा
म सागरमें तिरतो कर्ण सिंहतो सरभाविना कौनके वसको
है ताते युधके निमित्त चलो ऐसै कहि श्रीकृष्ण रथकों
कर्णके सनमुष लेचले तहां मार्गमें भीम आय युधिष्टिर
को वृत्तांत कह्यो हे श्रीकृष्ण अर्जुन. अर्जुन राजा युधि
ष्टिर कर्णके युधमें विरथ होय बाणनके प्रहारतें वि-
दीर्ण होय सिबिरमें गयो सो सुणि श्रीकृष्ण अर्जुन यु
धिष्टिरके दर्सनकों गये. तब महाराज युधिष्टिर श्रीकृष्ण
अर्जुनकों आये देषी कर्णकों मारि आये ऐसे जाणि घा
यलहू हर्षतें सय्यातें उठ्यो तब नमस्कार करि दोउ बैठे.
राजाकों घावनतें पूरि देष्यो जब राजा श्रीकृष्ण अर्जुन
सों बोल्यो सेनाको मारिवेवारे परशुरामको शिष्य ऐसै
कर्णकों रणमें कैसे मार्यो तब अर्जुन बोल्यो हे महाराज
अश्वत्थामाके जीतिवेमें विलंब लग्यो तातें कर्णकों मार्यो
नहीं. रणभार भीमकों सोपि तुह्मारो वृत्तांत सुणि दर्सन
कों आयेहों. ऐसै सुणि क्रोध युक्त युधिष्टिर बोले हे
अधम तूं कूंतीके उदरमें क्यों आयो अरु मोकोंहु धिक्का
रहे जो तो कायरमें विजयकी आसा राषी. एक बांधवकों
रणमें छोडि कर्णते भीत होय इहां आयो तातें अब
यह गांडीव धनुष और कौऊ वलिको सोंपि जो वैरीनतें
हमकों राषै ऐसै सुणि अर्जुन क्रोधते षडगकी तर्फ दे

ष्यौ जब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन गांडीव धनुष औरकौं देय हम कहै ताकों मारो यह तेरी प्रतंग्याहै सो षड्गकों विनाषेंचे ही बडेनकी निंदा करिवो है सो विनासस्त्र ही बधहै तातें राजाकी निंदा करि ऐसें स्रुणि अर्जुन युधिष्ठिरसों बोल्यौ. हे राजन् भयभीत पृथ्वी पति तोहिकौं देष्यौ अरु आप ऐसो होय औरनकों दुर्वचन कहै सोहू तोहीकों देष्यो ऐसें युधिष्ठिरकी निंदा किये पीछे ज्येष्ट भ्राता समझि अर्जुन आप मरिवेकों तयार भयो तबश्री कृष्ण फेरि बोले हे अर्जुन तूं तेरीही स्तुति करि सत्पुरुषनकों आपकी स्तुति आप करै सोही मृत्यु तुल्य है ऐसै स्रुणि अर्जुन बोल्यो युद्धमें रुद्रकौंमें संतुष्ट कियो इंद्रादिक निसौं अबध्य ऐसे निवात कवच दानवमें मारे तातें कालि कालके वीरनसें मेरी तुल्य अस्त्र विद्यामें और हैही नहीं जबराजा युधिष्ठिर आपकी निंदा अर्जुनकी स्तुति अर्जुन मुषतें स्रुणि क्रोधयुक्त भयो तासों श्रीकृष्ण बोले हे राजेंद्र क्रोध नकरो तुह्मारीतो निंदा अरु आपकी स्तुति अर्जुन विचारिकें करीहै ताकौंमयोजन पीछेजाणोगे तातें अब प्रणाम करैहै सो याकों विजय आशीर्वाद द्यो तो अर्जुनकों पायनमें प्रणामकरतो देषि राजा युधिष्ठिरहू विजयकों आशीर्वाद देयहृदयसौं लगाय विदा कियो. तब अर्जुन उहांतें चलतोही राजानके सिरनसौं पृथ्वीकों आच्छादित करतोही चल्यो अरु भीम गदा करि वैरीनकौ अरु राजा रथी सारथी हाथी घोडा रथ पयादानकों मारि सबनकों एकाकार करे यह भीमको पराक्रम देषि सब योद्धा भयभीत होइ संग्रामके मुषकों छोडि भागे. तब भीम दुःसासनको सारथी मारि रथकों तोडि हाथसों दुःसासनकों कंठ पकडी.

द्रौपदीके वचनतैं याके अपराधनकौं यादिकरि क्रोधतैं याकौं मारि गोदमै धरि आरक्तनेत्रनसौं च्यारौं तर्फ दे षि उंचे स्वरसौ बोल्यौ हे राजा हो तुम देषौ जो यह दुःसासन सभामे द्रौपदीके केंस वस्त्र षेंचि हर्ष मान्यौ हो. सो अबमे ताके वक्षस्थलकौं विदीर्ण करि रुधिर पान करौं हौं ऐसे कहि दुःसासनके विसाल वक्षस्थलकौं फारि अंजली भरि भरि बार बार रुधिर पानकरत आ स पासके राजानकौं देषत भयो ता पीछे षंभकौं ठोकत रुधिरसौं रंगे होठनकौं चाटत लाल नेत्रनकौं भ्रमावत रोमनकौं नचावत ऐसे भीमकौं देषि सकलवीर मूर्छित भये. वाकोपतें भीम जगतकौं कर्ण दुर्योधन करि कैंही नहीं करतो पें द्रौपदीके केंस बंध षोलिवेकौं यादि कर त रौद्र रसमें श्रृंगार रसयुक्त नहीहो तौ तौ ता अव कासमैं कर्णको पुत्र वृषसेन वीर अर्जुनके सनमुष आ वत मारगमैं अनेक वीरनकौं मारि नकुल सहदेव सात्य की इनकौं रणतैं विमुष कियो तब अर्जुन ऐसे देषिबा ण वर्षाकरत कर्ण पुत्रके हाथ नाक कान काटि शिर हू काट्यो तब कर्ण पुत्रको मरण स्रुणि धीर्ज धरि अ र्जुनसौं युधकौं तयार भयौ ताकौं देषि श्रीकृष्ण अर्जु नसौं बोले हे अर्जुन कर्णकौं देषि अनेक रत्नयुक्तर थमैं सवार है अनेक सस्त्र अस्त्रनकरि सोभित है सो तोसौं युधकरिवेकौं आवत है. अरु सल्य कर्ण सौंबो ल्यौ हे कर्ण अर्जुनके रथकौं देषि श्रीकृष्णतो सारथी है हनुमंत धुजामैं है अरु इंद्रको पुत्र अति बलवान् महारथी ऐसे अर्जुनसौं तूं युध कैसे करेगो. तब कर्णबो ल्यौ हे सल्य जाकी धुजामैं रुद्रावतार हनुमंत अरु सा क्षात नारायण जाकौं सारथी अरु नरावतार विष्णुतुल्य

अर्जुन संग्राममैं अजेयही है परंतु हे राजेंद्र सल्य अ
र्जुनके सनमुष मेरे रथकौं लेचलि अरु मेरो युध देषि ऐ
सैं स्रुणि सल्य कर्णके रथकौं अर्जुनके सनमुष ल्यावत
भयो. तब कर्ण अर्जुनके आजन्म पर्यंत जो मनोरथ हो
ता मनोरथके विचारि माफिकही जुध भयो तायुधके
देषिवेकौं देवता गंधर्व विमाननमैं बैठि बैठि आये अरु
देवता विजयकौ परस्पर विवाद करत करत ब्रह्मासौं
पूछ्यो इनमें दोउनमें कौनकौ विजय होयगो तब ब्रह्मा
शिव बोले जहां श्रीकृष्णहै तहां सदाही जयहै ता पीछे
दोउ वीर सनमुष आय संष नाद कर्यौ ताकौं स्रुणि वी
रनके हृदय कंपायमान भये. अरु ब्रह्मा दैत्यनके मा
रिवेकौं इंद्रकूं दियो. इंद्र राजानके मारिवेकौं परसराम
कौं दियो अरु परसराम कर्णकौ दियो सो विजय ना
म धनुषकौं कर्ण षैंचि टंकार करि बाण वृष्टि करत भ
यो अरु अर्जुनहू गांडीव धनुषकौं षैंचि टंकार करिबा
णवृष्टिकरि दोउनकी बाणवर्षातैं समीपके अनेक वीर
तो मरे अरु अनेक वीर भागे. ता पीछे कर्णके बाण अ
र्जुनके सरीरमै प्रवेस कियो अरु अर्जुनके बाण कर्णके
शरीरकौं भेदि पृथ्वीकौं विदीर्ण करि पातालकौं गये. अ
रु कर्णहू लाघवता करि अर्जुनको हाथमै बाण लेतही
काटे तिन बाणनकौं कटे देषि भीमसेन श्रीकृष्ण अर्जु
नसौं बोल्यो हे वीर अर्जुन षांडव वन दाह कालके यदा
नवसौं युद्ध किरात रूपी शिवके युधहू तें इहां अधिक
सावधान होय युध करो. ऐसे स्रुणि अर्जुन बाण धारा
नतैं आकासकौं छायदियो. अरु कर्णके रथकौं बाण
प्रहारन करि एक जोजनलौं पीछे धकायो. तब कर्णहू फि
र आय भार्गवास्त्रके प्रभावतैं सकल बाण मंडल का[illegible]

श्रीकृष्ण हनुमंत सहित अर्जुनके रथकों तीन पैड पीछै ध
कायौ तब देवता आकासतें करणपें फूलनकी वृष्टि करी.
ताकों देषि अर्जुन श्रीकृष्णसों बोल्यौ हे श्रीकृष्ण मैं क
र्णके रथकूं एक जोजन धकायो अरु कर्ण मेरे रथकौं ती
न पैड धकायौ सो देवता कर्णपें फूलनकी वृष्टि करी. या
कौ कारण कहा. जब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन कर्णतो
सों भारी पराक्रम कर्यो जो तेरे संदेह होय तो मेरे मुषकों
देषि तब अर्जुन श्रीकृष्णके मुषमे सप्त द्वीप समुद्र पर्वत
वृक्षन सहित चराचर विश्व देष्यो तब ताके देषतें ही अर्जु
न मूर्छा पाइ जब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन यह कर्ण सा
धारण सस्त्रतें जीत्यो जाय नहीं तातें दृढ होय युध करौ.
ऐसें सुणि अर्जुन क्रोध करि असंषि बाणनतें कर्णकों
रथ आच्छादित कियो तब कर्णहू आग्नेय अस्त्रतें अ-
र्जुनके बाणनकों दग्ध करि पांडवनकी सेनाकों दग्धकर
त भयो अरु आग्निहू प्रचंड ज्वालान करि पांडवनकेयो
धानके रथसस्त्र छत्र चवर धुजा पताकानकों जलावत भ
यो अरु सर्व सेना आग्निमई भई जब अर्जुन आपकी
सेनाकों व्याकुल देषि वारुणास्त्रतें आग्निकों सांत करि
कौरवनकी सेनाकों जल समूहमे डुबोई तब कर्णहू वा
य्वास्त्रतें मेघनकों उडाय वीरनकों आकासमैं चढावत
भयो सोदेषि अर्जुन वाके रोकिवेकों पर्वतास्त्र चलायो.
तातें पवनतो सांत भयो तब अर्जुन वा अस्त्रकों रुद्रास्त्र
तें षंडन करि अनेक वीरनकों मारि कर्णकी छत्र मुकु
ट पताकाकों काटत भयो. जब कर्ण क्रोधतें अर्जुनपें अ
र्धचंद्राकार बाण चलायो तब अर्जुन वा बाणको बीचिही
मे काट्यो तब कर्ण अर्जुनके हृदयमें पांच बाण मारे.
जब अर्जुनहू क्षणमात्र मूर्छा पाय तापीछै चार बाणनतें

कर्णके घोडा मारि रथकों तोडि सारथीके हृदयमें एक बाण मारि अरु एकबाण कर्णके हृदयमें मारि गर्जना करी. ऐसे कर्ण अर्जुनको युध देषी सर्ववीर आश्चर्यसंयुक्त भये. तब श्रीकृष्णकी आग्यातें पृथ्वी कर्णके रथ चक्रकों गिल्यौ जब कर्ण रथतें उतरि जितने रथकों उकासे तित नेही अर्जुन श्रीकृष्णकी आग्यातें बाण प्रहार करतभयो तब कर्ण बोल्यो हे पार्थ हे महाबाहु जितनेमें पृथ्वीतें चक्र निकासों तितने क्षणमात्र क्षमाकरि सो स्रुणि अर्जुन क्षमाकरि जब श्रीकृष्णबोले हे अर्जुन तितिने याकौ चक्र नही निकसे अरु दृष्टिहू नीचे है तितने तूं निःसंक प्रहार करि अरु छिद्र देषि प्रहार करेहै तेई जीते है. ऐसे श्रीकृष्णको वचन स्रुणि अर्जुन असंषिबाणनकौ प्रहार कर्यो अरु कर्णहू चक्रनिकसत नीचो मुखकिये यह जाणि श्री कृष्णकी आग्यातें मेरे मारिवे निमित्त अर्जुन प्रहार करेहै तबही श्रीकृष्णसों बोल्यो हे कृष्ण मै मृत्युसों डरों नही यह शरीर क्षण विध्वंसीहै तातें रण मै मरे तौ स्वर्गभोग मिले अरु जीवे तो लक्ष्मी पृथ्वी भोग मिले जातें मेरेतें चिंता कहा है तोहू जितनेमे चक्रकों निकासों तीतने क्षमा करो. अरु मे तो पृथ्वीमे स्थितिअर्जुन रथमे स्थिति तातें यह अधर्म युधसों विचारो. ऐसे स्रुणि श्रीकृष्ण क्रोधकरि बोले हे कर्ण यह तेरो वाक्य स्रुणि बडो आनंद भयो. भीमकौं विष मोदक देतें लाक्षाग्रहकों दाह करते अरु द्रौपदीके केस पकडि षेंचतें अभिमन्युको मारितें काहूने धर्म देष्यो नही अब तोकों धर्म यादि आयो. ऐसे श्रीकृष्ण कर्णसौं कहि कटाक्ष दृष्टितें अर्जुनकौं प्रेरणा करी जब अर्जुन बाण वर्षा करत भयो तासमयमें कर्णके मित्र दुर्योधनके घर

मै छोड्यो सोसर्प आय बोल्यो हे कर्ण तेरे तुल्य और.
वीर नहीं अरु मै तेरी सहाय करिवेकौं आयो हौं सो
तूं मोकौं बाणजीम धनुषमें संधान करि चलाय मै
मेरे परवार सहित जाय श्रीकृष्ण अर्जुनकौं बांधौं
गौ. तब कर्ण धनुषमै संधान करि चलायौ सोजाय
श्रीकृष्ण अर्जुनके अंगनपें बांधि मर्ममै डसत भयौ.
सो स्रुणि युधिष्टिर आय दोउनकी दसा देषी रुदनक
रत भयौ तब तहां नारद आय युधिष्ठिरसौं बोले हे रा-
जन् वृथा रुदन क्यौं करै है यहश्रीकृष्ण अर्जुन नरना
रायण है तातें इनकौं मृत्यु है ही नहीं सोअब श्रीकृ-
ष्णकौ वाहन गरुड ताकौ स्मरण करि तब ऋषीके वा
क्यतें राजा युधिष्टिर गरुडकौ स्मरण कियौ जब गरुड
आये ताकी पांषन किपौनतें कौरव पांडवनकी सेनाके
वीर उडि उडि आकासमें गये तेवीर कोलाहल शब्द कर-
त अधोमुष होय आकासतें हाथी घोडा पयादानपें
पडत भये. जब गरुड श्री कृष्ण अर्जुन पास जाय ठाढो
भयौ तितनेंही वाके गंधहीतें सर्व छोडि छोडि भागिपा
ताल कौं गये. अरु कितनेक भागते सर्पनकौं गरुड
भक्षण कियौ जब सर्पके बंधनतें छुटि श्रीकृष्ण अर्जुन
उठे तब गरुड बोल्यौ हे श्रीकृष्ण मोकौं आग्या करौ तो
कौरवनकी सेनाकौं भक्षण करौं अथवा कहौ तौ पक्षन
की पौनतें उडाइ समुद्रमैं पटकौं ऐसे स्रुणि श्री कृष्ण
बोले हे गरुड कौरव पांडवनकी सेनामैं मैही युध न क
रौं तौ तूं मेरो वाहनकैसे युध करैगो. तातैं मेरी आग्या
तैं तूं जा ऐसे श्रीकृष्णकी आग्यातें गरुड जात भयौ. ता
पीछे श्रीकृष्ण अर्जुन तयार होय जितने युधकौं आवै ति
तने कर्णवीरहू चक्र निकासि लीयो अरु रथपे सवार हो

य सब राजानके सुणतें अर्जुनसों बोल्यो हे अर्जुन तेरोबल
श्री कृष्णहीहै अरु देषितूं नागपास बद्ध भये तबमें अध
र्म जाणि एकहू बाण न चेलायो और तुमसेरे रथकोचक्र
गड्यो तब एक क्षण मात्रहू क्षमानकरी तातें तेरो पुरुषा-
र्थ कहा ऐसें सुणि मौन युक्त अर्जुन क्रोधतें बाणही
चलावत भयो तिन बाणनकों छेदत ही कर्ण युध करत-
भयो तासमें षांडव वन दाहमें अर्जुनने जा सर्पकी पूंछ
काटीसो बाण बणि कर्णके तरकसमें आय बोल्यो हे क
र्ण अर्जुनके मेरे वैरहै मोकों बाण करि चलाय सोसुणि
कर्ण धनुषमें धारि चलायो सो अर्जुनको किरीट काटिपृ
थ्वीमें गयो. ता सर्पको अर्जुन षंडषंड करिमार्यो. तबक
र्ण क्रोधतें अर्जुनके कंठछेदवेके निमित्य अर्ध चंद्राकार
बाण चलायो ता बाणकों अर्जुनके कंठ पास आयो देषि
श्री कृष्ण जोर करि एक ताल रथको पृथ्वीमें दाब्यो तब क
र्णको बाण अर्जुनके मुकुटकों काटिगयो ऐसे युद्ध करतें
कर्णके रथचक्रकों फेरि पृथ्वीने गिल्यो. अरु श्रीकृष्ण
की आग्यातें अर्जुन प्रहार करत भयो तब कर्ण अर्जुन
सों कही क्षणमात्र क्षमाकरि सो अर्जुन क्षमानकरीजब
कर्ण भूमिहीमेंते रथपें अर्जुनहो तासों युधकियो तब
अर्जुन आग्नेय अस्त्र करि कर्णकों रण मंडलमें पटक्यो
परंतु इतने कारण भये तब पड्यो सोजनमें जय सुणिपृ
थ्वी चक्र गिल्यो माताबाणहरे इंद्र द्विज ब्राह्मण होय कवच
हर्यो गुरु परसराम श्रापदीयो तातें अस्त्र फुरे नहीं श्री
कृष्ण छलकियो अर्जुन महावीर शत्रुभयो. इन छहका
रणतें एकलो कर्ण कहाकरे तोहू महा घोर युध करत क
र्ण पृथ्वीमें पड्यो. तब मरे पुत्रकोंही मानो सूर्य पश्चिम
समुद्र जलांजुली देवेकोंगयो. तब कितनेक वीरतो प्रसन्न-

भये. अरु कित्तनेक वीर मलिन मुष भये. जब कौरवनकी सेना भयभीत होय भाजी ताकौं दुर्योधन समाधान करतवी रथीकौं धारत भयौ. अरु पांडवनके वीर हर्षसौं गर्जना करत भये. जब अर्जुन श्रीकृष्णसौं बोल्यौ हे श्रीकृष्ण मैं महावी रकर्णकौं मारि धन्य भयौ ऐसौ गर्व सहित वचन अर्जुन कौ स्रुणि श्रीकृष्ण शिर कंपाय हंसिके बोले हे अर्जुन ऐसे गर्वके वाक्य कहिवेतें मै तोकौं मूर्षही जाणोहौं क- र्णके नासके छह कारण है. प्रथमतौ मै अरु तुम कूंती पृथ्वी, इंद्र परसराम इनछह कारणतें कर्ण षेतमें पड्यौ है हे इंद्रपुत्र अर्जुन पूर्वजन्ममें यह कर्ण वाली हो तब- हू ताकौं मै अधर्मतें मार्यौ अरु याजन्ममैंहू यावीरकौं ह म तुम अधर्मतें मार्यौ तातें आपकौ परकौ गुणदोषतें भेदन जाणै सो पुरुष अधमहै ऐसे श्रीकृष्ण अर्जुनसौं वात्त करते दुर्योधन कर्णपै जाय सोच करतही बोल्योहे महावीर तेरे पतनतै मै मर्यौ तातें तूंक्यों सूतो है. उठियु धिकरि मेरे पालनकी प्रतंग्या छोडी कहा. तो विना पांडव मोकौं मारेंगे तातै हे मित्र तूं उठि मो सरनागतको पालन करि हे कर्ण जैसे वेदहीनविप्र, मदहीन गज, जलहीन न- दी तैसे कर्णहीन सेनाहै. अरु जैसे पतिहीन नारी, चं- द्रहीन रात्रि, सूर्यहीन दिन, तैसे हे कर्ण तोहीन यह सेना है. अरु जैसे चंद्रहीनसो तारा मंडल वर्णहीन कुल प्रा णहीन देह नहीशोभै तैसें कर्णहीन सेनाहू नसोभै ऐ से दुर्योधन पडे कर्ण पास विलाप करि डेरानकौं गयो अ रु तहां जाय प्रभात सेनापति कौन होयगो यह चिंता क रत भयो. तापीछे श्रीकृष्ण एकलै कर्णकौं पड्यो देषि अर्जुनसौं बोले हे अर्जुन कर्णके धीर्जकी परिक्षा करिवे कौं मैतो वृद्ध ब्राह्मण वर्णोहौं अरु तूं बालक शिष्यवण

वहां चलिवाको धीर्य देषि मैं बर द्योंगो. यह महा भक्त महावीर सत्य शोच तत्पर जितेंद्रिय, सदा स्फुह ऐसो यह कर्ण मोकों अति प्रियहै ऐसे कहि श्रीकृष्ण वृद्ध ब्राह्मण रूप धारि शिष्य रूप अर्जुनके कांधे हाथ धरि पांवन तैं गिरत पडत कर्ण पास जाय बोले हे कर्ण महाबाहु तूं पृथ्वी तलमें सदा दाता विष्णुके प्रसाद तेनैं अनेक वर पाये अरु तेरो सरीर व्याधी रहित आधि रहित जाचिकनके मनोरथ पूरण करतसें कडन वरष जीवो. तेरो कल्याण हो लक्ष्मी स्थिर हो आयुष्य दीर्घ हो बल हो आरोग्य हो वांछित अर्थनकी सिद्धि हो तुह्मारे वंसमें सदाई हरि भक्ति हो लक्ष्मी गोविंदपें जायगी. पृथ्वी युधिष्ठिरपें जायगी अरु हे कर्ण तोकों स्वर्ग गये पीछें ये जाचिक कोण पास जायगे. ॥ ॥ वरंपक्षीवनेवासो वरं पर्वतमस्तके ॥ वरंचा पुत्रिणीमाता माजन्मयाचके कुले ॥ २७ ॥ तातें वन पर्वत वासी पक्षीनकों तो जन्म भलो नही. तृणाल्लघुतरं तूलं तूलादपिहि याचकः ॥ वायुना किं ननीतोसो मामपि प्रार्थयिष्यति ॥ २८ ॥ अरु हे कर्ण सबतें लघु तो त्रण है त्रणतें लघु तूल है अरु तूलतें लघु जाचक है ऐसें लघु जाचिककों जाचिवेके भयतें पवनहू अंगिकार नही करै है. गात्रभंगस्वरोहीनः प्रस्वेदस्के गलग्रह ॥ मरणेयानि चिन्हानि तानि चिन्हानि याचके ॥ २९ ॥ अरु सरीरमें वक्रता दीनस्वर प्रस्वेद गलग्रह ये जेते मरणके चिन्ह है तेते जाचिकमें नित्य रहते है. ॥ दग्धं पंचशारः पिनाकपतिनाते नाप्ययुक्तं कृतं ॥ दग्धा रावणपालिता हनुमता दिव्याचलंकापुरी ॥ दग्धं खांडवमर्जुनेन बलिना दिव्यैर्द्रुमैर्मंडितं दारिद्रं दुःखकारणं क्षितिपते केनापि दग्धं नवै ॥ ३० ॥ हे कर्ण महादेव कामको दग्ध कियो.

अरु दिव्य वृक्षन सहित अर्जुन षांडव वनकौं दग्धकि यौ रावण करि रक्षित लंकापुरीकौं हनुमान दग्ध करी इन सबननें यह अजोग्य कामही कीयौ अरु जगतकौ संतापकारी ऐसे दरिद्रकौं काहूहीने दग्ध कियो नहीं ताते हे कर्ण मेरे कन्या विवाहजोग्यहै अरु मेरे धन कछूहू है नहीं तातें मै तोपैं बहु स्वर्ण मागौंहौं ऐसें सुणि कर्ण बोल्यौ हे विप्र मै यह अवस्था पाय पृथ्वीमे सूतौंहौं पास कछूहू वित्तहै नहीं तातें तुम कृपा करि मेरी स्त्रीपास जाय जाचना करौ मै पतौ बताऊं हूं सोजाय कहौ तुमकौं बहुत धन देगी. ऐसें सुणि ब्राह्मण बोल्यौ हे कर्ण मेघसमै पाय वर्षै. वृक्षसमैमें फले है. अरु पृथ्वीहू समैहीमे फलदेतहैं गायहू समयहीमे दूद देतहै येतौ सर्व ही समैही पाय फलदेत है अरु हे कर्ण तू सदाही फल देत है. यह तेरी कीर्ति सुणि तोपै आयौहौं तू सर्वदा सवै दाताहै अरु सर्वदाही तेरो समयहै हमारे कर्महीनहै तातें तूंहू पृथ्वीमे पड्यौ है तब कर्ण बोल्यौ हे ब्राह्मण मेरे हीरामय दंत भार प्रमाण स्वर्णसौं बंधेहै सो येदंत उपाडि हीरा अरु स्वर्णल्यौ तब ब्राह्मण बोल्यौ हे कर्ण मै वृद्धहौं तेरे दांत उपाडिवेकी सामर्थ नही जब कर्ण बोल्यौ मोकौं पाषाण ल्यायदे तब ब्राह्मण कही पाषाणल्यायवेकीहू मेरे सामर्थ नहीं जब कर्ण आपही सरकि पाषाण लेय दांत उपाडि स्वर्ण हीरा देवे लग्यौ तब श्रीकृष्ण चतुर्भुज रूपधारि कर्णकौं हाथ पकडि बोले हे कर्ण हे महावीर तो समान पृथ्वीमें दानवीर कोउ है नहीं अरु तेरे याकर्मतें मै प्रसन्न भयो हे महाबुधिवान अबतूं मनवांछित वरमांग. तब कर्ण बोल्यौ हे श्रीकृष्ण जो तुम प्रसन्न भये होतौ यह वरदान द्यौ. ब्राह्मणके अर्थ धन

क्षय आपकी स्त्रीके अर्थ जोबनक्षय स्वामीके काममें प्रा
ण क्षय यहवर दान द्यौ अरु आसन्न तो पुत्रनसों संकीर्ण
मंदिर विप्रन करि संकीर्ण हृदय शास्त्र करि संकीर्ण अ
रु विप्र हस्तनतें तिलक मातके हस्ततें भोजन पुत्रह
स्ततें पिंड यह द्यौ ॥ ॥ दुर्भिक्षेचान्नदातृत्वं हेमदत्तं
स्फभिक्षके ॥ आतुरे अभयदातृत्वं देहिमेमधुसूदन ॥
॥ ४८ ॥ ॥ और दुर्भिक्षमें अन्नदान, स्फभिक्षमें हेम-
दान, आतुरको अभयदान, यह द्यौ ॥ ॥ मामतिः
परदारेषु परद्रोहेषु मामतिः ॥ परापवादिनीजिह्वा माभूदे
व कदाचन ॥ ४९ ॥ ॥ और परस्त्री परद्रोह इनमें बु
द्धि न होय, परनिंदाकों जिह्वा न होय ॥ ॥ सत्यंशौचं
दयादानं भक्तिरेकाजनार्दने ॥ दमनं दक्षताचैव देहि-
मे मधुसूदन ॥ ५० ॥ ॥ सत्य सौच दया दान दुष्ट द
मन साधु पालन यह द्यौ और जो मोपें प्रसन्न भये होतौ
व्याधिरहित देह आधि रहित मन स्थिर लक्ष्मी अरु हे
श्रीकृष्ण तुह्मारी नित्यभक्ति यह द्यौ और सर्व मनोरथ
सीद्धि धनधान्य वस्त्र सस्त्र शास्त्र दान शक्ति भोगसक्ति
भोजन सक्ति यह द्यौ ॥ ॥ यदातुष्टोसिमेदेव अ-
दग्धे दह्यतांमम ॥ इत्येवं प्रार्थितं यच्च विष्णुस्तं प्रददौ मु-
दा ॥ ५४ ॥ अरु हे श्री कृष्ण मोपें प्रसन्न भयो होतो अ
दग्ध भूमिमें मेरो दाह करो. जब श्रीकृष्ण प्रसन्न होय
वाकों मन वांछित वरही वरदान दियो अरु ऐसें वरदा
न दे ॥ उहांतें चले तितनेही कर्ण उनके चरण
स्पर्स करि प्राण तजे तब श्रीकृष्ण हू
सराहत भयो देवता पुष्पनकी वृष्टि करी
अर्जुन कर्णके दाह जोग्य अदग्ध भूमि
फिरे पै कहूं भी देषी. नहीं. सर्वत्र दग्ध.

भूमिश्च अदग्धानैव दृश्यते ॥ एकस्मिन् ऋस्थलेगत्वा भूमि प्रपच्छ केशव ॥ ५७ ॥ ॥ तव एक स्थानमै पवित्र भूमि देषि पृथ्वीसों पूछ्यौ हे पृथ्वी. यहां कोउ और हू दग्ध भयोहै जब पृथ्वी बोली हे श्रीकृष्ण तुम स्रुणौ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अत्र भीष्म शतं दग्धं द्रोणानांच शतत्रयं ॥ दुर्योधन सहस्त्रंच कर्ण संख्यानविद्यते ॥१॥ तदा कृष्णेन कर्णोसौ वाम हस्ते प्रज्वालित ॥ दक्षिणो बलि राजाय पूर्वदत्तस्तु हस्तकः ॥ ६१ ॥ ॥ ऐसैपृथ्वीकौ वचन ऋणिश्रीकृष्ण आपणे दक्षिण हस्तकौं बलके दान लेवेसो दग्ध जाणि कर्णके सरीरकौं वामहस्तमै दग्ध किया. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्णपर्वकी वचनिका, भाषाभारतसार ॥ रावचांदसिंघ के हुकुम कीनी स्रुकवि विचार ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां कर्णपर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ ॥१॥

इति भाषाभारतसार कर्णपर्व

समाप्तम्

शल्याभिषेचन
शल्यसेना
शल्य

भूमिश्च अदग्धानैव दृश्यते ॥ एकास्मिन् स्थलेगत्वा भूमि प्रपच्छ केशव ॥ ५७ ॥ ॥ तब एक स्थानमै पवित्र भूमि देषि पृथ्वीसों पूछ्यो हे पृथ्वी, यहां कोउ और हू दग्ध भयोहै जब पृथ्वी बोली हे श्रीकृष्ण तुम सुणो ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अत्र भीष्मशतं दग्धं द्रोणानांच शतत्रयं ॥ दुर्योधन सहस्त्रंच कर्ण संख्यानविद्यते ॥१॥ तदाकृष्णेन कर्णोसौ वाम हस्ते प्रज्वालित ॥ दक्षिणो बलि राजाय पूर्वदत्तस्तु हस्तकः ॥ ६१ ॥ ॥ ऐसैं पृथ्वीको वचन सुणिश्रीकृष्ण आपणे दक्षिण हस्तकों बलके दान लेवेसों दग्ध जाणि कर्णके सरीरकों वामहस्तमै दग्ध किया. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्णपर्वकी वचनिका, भाषाभारतसार ॥ रावचांदसिंघ के हुकुम कीनी सुकवि विचार ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां कर्णपर्वणिप्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ १ ॥

इति भाषाभारतसार कर्णपर्व

समाप्तम्

शल्याभिषेचन
शल्यसेना.
शल्य

शल्य सेना
युधिष्ठिर सेना.
युधि
शल्यपर्व चित्र. २
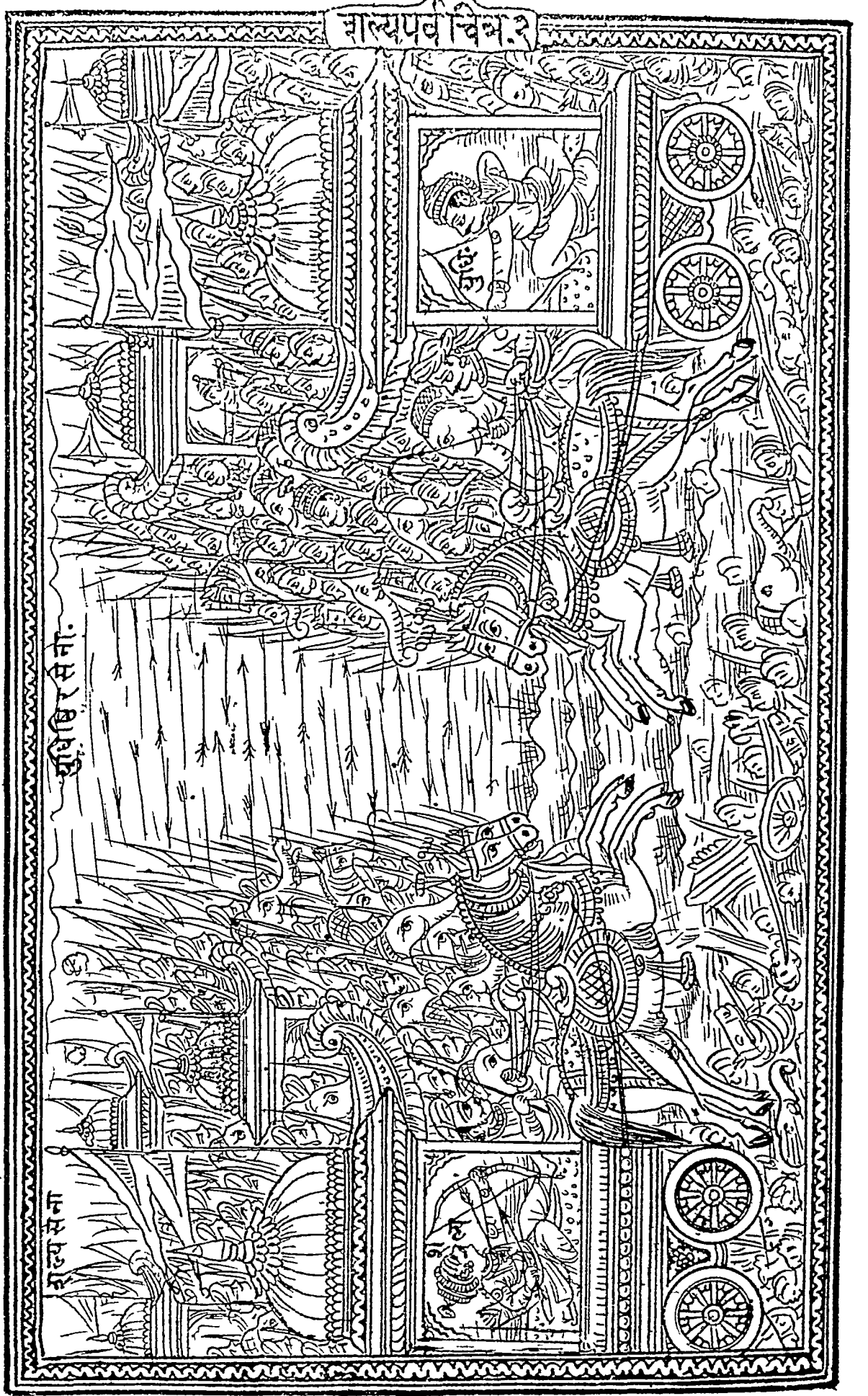
अथ भाषाभारतसारशल्यपर्व प्रारम्भः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं ॥ देवींसरस्वतिंव्यासं ततोजयमुदीरयेत् ॥१॥ हते भीष्मे हते द्रोणे कर्णेच निधनंगते ॥ आशा बलवती राजन् शल्यो जयति पांडवान् ॥ २ ॥ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तापीछे राजा दुर्योधन प्रातःकाल अश्वत्थामा कृपाचार्यके कहेसों सल्यकों सेनापति कियो जब सल्यहू रथपे सवार होय युधकों आयो ताकों देषि श्रीकृष्ण युधिष्ठिर सों बोले हे राजन् यह सल्य भीष्म द्रोण कर्णहूते अधिकहै अर्जुन युधतें श्रमितहै ताते यातें तुम युधकरो. ऐसेसुणि राजायुधिष्ठिर सल्यके मारिवेकी प्रतंग्या करी. जब सात्यकी दृष्टद्युम्न सिषंडी इन सहित राजा युधिष्ठिर युधकोंचल्यो तब सल्यहू ऐसें राजाकों सनमुषआवतो देषि सर्वतो भद्रव्यूह रचि युधकरिवेकों सनमुष आयो तहां परसपर घोर जुध करत भयो तहांसल्यहू अनेक योद्धानकों मारे. तब सल्यकी सेनाके योद्धानकों सात्यकी धृष्टद्युम्न सिषंडी मारत भये. अरु भीमसेनहू गदा प्रहारनतें अनेक हाथीनकों मारि वीरनकों मारि रणभूमि रुधिर मई करी. अरु सत्यसेन ऋसेन कर्णसेन इनतीन्यो कर्णके पुत्रनकों नकुलमारि गर्जना करत भयो ऐसो पांडवनको पराक्रम देषि सल्यबाण धारानकरि पृथ्वी आकासको बाणमई एकाकार कर्यो ऐसो सल्यको प्रभाव देषि दुर्योधन बोल्यो

मे भीष्म द्रोण कर्णादि वीरनकों वृथाही मराये प्रथमही सल्यको सेनापति करते तो निश्चैही विजै होतो ऐसैस्फ णि सल्य गर्वतें भीमपैं अनेक बाण प्रहार कीये. जब भीम क्रोधते सन्मुष आय गदा प्रहारतें सल्यके रथकों चूर्ण करि सल्यकों विरथकरि दोउ गदायुध करत भये. जब युध करत करत दोउ मूर्छित होय पृथ्वीमे पडेतब दोउनके सेनाकेवीर अनेक जलसों सचेत करि रथनपैं धरि आपनी आपनी सेनामेले गये. जब फेरि सल्यसा वधान होय युधकों आयो ताकों देषि राजा युधिष्ठिरस न्मुष आय क्रोधतें अनेक बाण प्रहार किये. तब तहां दोउनके अति घोर युध भयो जब युधिष्ठिर सल्यकों वि रथ कियो अरु सल्यहू युधिष्ठिरकों विरथ कियो. जबदो उ विरथहू घोर जुध करत भये. तब युधिष्ठिर सक्तिल ई सोवह सतघ्नी शक्ति विश्वकर्मा वणाय महादेवको अर्पण करीही सो महादेव मयकों दीनीही मयसो रा जा युधिष्ठिरको दीनी. तासतघ्नी सक्तिकों राजा सल्यके हृदयमें प्रहार कियो. तातें सल्य विदीर्ण हृदय होय पृ थ्वीमे पड्यो ताकों देषि सल्यको कनिष्ट भ्राता विचित्र कवच आयो ताहूकों राजा युधिष्ठिर बाण प्रहारन तेंय मलोक पहुंचायो तापीछे भीमसेन गदा प्रहारन करि अ वसेस वीरनको संघार कियो तापीछे स्कसर्मा कृपाचार्य हारदिक्य अश्वत्थामापें सब मिलि आज युद्ध समाप्त करणो. ऐसे विचार घोर युध करत भये. तहां रजोंध कारकरि सर्ववीर एकाकार भये. आपणो परायेकोंग्या न रह्योनहीं सो ऐसे कहत भये. कहा कृत ब्रह्मा कहां अश्वत्थामा. कहां दुर्योधन कहां शकुनी ऐसे बोलतपां डव अनेक वीरनको मारे और जैसेन महाबाहु घोर

दुर्विषह सह वि विंसति दंडधार समंसह, सुवर्चा सुजात श्रुतवान वातवेग भूरिबल ऐसें त्रयोदस तेरे पुत्रनकों भीम मारि रुधिर स्नान कियो अरु सुसर्मा राजाकों पुत्र भ्राता सहित अर्जुननें मार्यो और भीम तेरे सुदर्शन नामा पुत्रकों मार्यो सकुनीपूठि की तरफ सों प्रहार करै हो ताहि सहदेव मार्यो अरु सकुनीकों पुत्र उलूक सेना सहित होताहूकों मार्यो औरहू वीर जयलेवेकों उपाय करै है तहां सात्यकी मोकों पकडि बोल्यो संजय मेरे हाथ लग्यो है जब धृष्टद्युम्न कहि याहूकों मारो. तब सात्यकी मारिवे लग्यो तहां वेदव्यासें आय प्रतक्ष दर्सन देय मोकों छुडायो तबमें एकादस अक्षोहणी पति दुर्योधनकों सहाय करता विना पयादो देख्यो और तारणमें अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा और एकादस अक्षोहणी सकल वीरन सहित समास भई. पांडव हर्षित भये. ॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां शैल्यपर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

इति भाषाभारतसार शल्यपर्व

समाप्तम् ।

गदापर्वचित्र. १
दुर्योधन
राजाधृतराष्ट्र
पुत्रदुर्योधन
मातागांधारी
दु०
युधि०
श्रीकृष्ण
दुर्योधननग्न
मातागांधारी.

गदापर्वचित्र २
भीम
दुर्योधनजलप्रवेस
सरस्वती
बल
श्रीकृष्ण
पांडव
कौरव
भीम
दुर्योधनवध

अथ भाषाभारतसार गदापर्व प्रारंभः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥

तापीछै दुर्योधन संग्राममै मरे सल्यकौं रुदन करि अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्माकौं भाज्ये जाणि धृतराष्ट्र पास जाय प्रणाम करि बोलत भयो हे पिता इन पांडवन सौं मेरे प्राण वचै सो उपाय कहो. प्रभात पांडवनसौं माकौ युध करणौ पडैगो. जब धृतराष्ट्र रुदन करते दुर्योधनकौ दीनवचन स्रुणि कही हे पुत्र मै उपाय जाणौं नहीं तूं तेरी मातासौं पूछि तब दुर्योधन मातापै जाय प्रणाम करि बोल्यो हे माता तूं पतिव्रतानमें मुख्य है सो मो पुत्रकी पालना करि प्रभातमैं पांडवनसौं युध करौंगो. तामै मेरो प्राणनास नहोय सो उपाव बताव अरु अग्यान षठ मूर्ष दरिद्री वंसनासक पापिष्ट हिंसक ऐसै पुत्रहीकी माता रक्षा करै है ऐसै पुत्रको वचन स्रुणि गांधारी बोली हे पुत्र मेरे वचनतें तूं युधिष्टिर पास जाय वाके चरणनसौं सिर लगाय ऐसै कहि मै सरणागत हौं तूं ज्येष्ठ भ्राताहै तातें मेरी रक्षा करि अरु वह तेरा हितकौ उपदेस कछु नकहै तब ताई वाके पांवनमैंतें सिर मति उठावै अरु वाके कहेकौं अन्यथा मति मानें ऐसे माताको वचन स्रुणि दुर्योधन युधिष्टिर पास जाय प्रणामकरि बोल्यो हे धर्मराज धर्मात्मा मैं सरणागत हौं मेरि रक्षा करि अरु दीन षल मूर्ष इनकौ साधुही पालन करैहै ऐसै दुर्योधनको वचन स्रुणि राजा युधिष्टिर बोल्यो हे दुर्योधन हे महावीर तूं मानी सूर

कौरवनकौं राजा बांधवनको पालक. ऐसो तूं होय इकलो ही कैसे आयो अरु राजा एकलो रणमें विचरे नहीं तातें तूं महाराज होय एकलो ही कैसे आयो अब तूं तेरे घरजा ऐसो युधिष्ठिरको वचन सुणि दुर्योधन बोल्यो हे राजन् अबतो मेरे माता पिता बंधु हितकारी तूं हीहै अरु मर्मकों छेदन करै ऐसैवाक्य अब तुमकों बोलिवो योग्य नहीं तुम धर्मात्माहो शत्रुमित्रनको समान जानते हो अरु तू अजात शत्रु है मैं जात काल युध करौंगो. अर सहदेव मेरी मृत्यु अठार वैदिन कही है वाको वचन अन्यथा नहीं ता भयतें तुमकों रक्षक जाणि मैं सरण आयौ हौं माताहू कही तेरे ज्येष्ट भ्राता पासजा.तासों मेरो मरणान होय ऐसो उपाय बतावो. ऐसे सुणि युधिष्टिर इतउत देषि अश्रु पटकत बोल्यो हे भ्राता जो मेरो कह्यो करैगो तो तेरो मरण नहीं होयगो.जासों अब तूं नग्न होय बालककी सी नाई माताके सनमुष निःसंक ठाढो रहि सर्व अंग दिषाय वाकी दृष्टिमें जो तेरो अंग आवैगोसो सर्वही वज्र तुल्य होयगो. तातें हे दुर्योधन तूं अबशीघ्रजा मेरो कह्यो करि कार्जमें विलंब मतिकरी. ऐसैही करैगो तो तेरोनास कदाचितहू नहीं होयगो. ऐसे सुणि दुर्योधन युधिष्टिरकी परिक्रमा करि हर्षसहित होय वस्त्रसों शरीर ढांकि उहांतें चल्यो जब मार्गमें विश्वात्मा सर्वज्ञ श्रीकृष्ण सनमुष आये. शरीर ढांके मौन करि जाते दुर्योधनकों हे राजेंद्र ऐसे कहि वाकी बुद्धि भ्रष्ट करतही हँसिके श्रीकृष्ण बोले हे दुर्योधन महावीर युधिष्ठिरसों तैं कहाहित पूछ्यो उनतोसों कहा कह्यो. अवरणमें आय वीरनकों देषि युधिष्टिर विकल भयो है अश्वत्थामाहतः ऐसे सत्य वचन बोलि

गुरु द्रोणाचार्यके सम्भुपटकाये. तब वाही समै विप्र द्रोणाचार्य साप दियो हे दुष्टात्मा मेरे प्राण लेवेकों तूं कपटतें असत्य बोल्यो तातें हे पापिष्ठ अबतूं विक्लहो. ऐसे श्रापदिये पीछे युधिष्ठिर मिथ्याही बोलेहै. ऐसो जाणतहू वाके सरणतूं क्यों गयो तोहू वानें तो. कौं निंदत कर्मही बतायो होयगो. सोतूं हमसौं कहि उचित अनुचित विचारिके हमतो सौं कहैंगे. ऐसे नाना प्रकारके वचनतें दुर्योधनकी बुधिकों भ्रमाय शिर कंपाय दांतनवीचि अंगुली दाबि करुणा सहित श्री कृष्ण वचन कह्यो सो स्रुणि दुर्योधन बोल्यो हे श्रीकृष्ण युधिष्टिरको वचन मेरे मन आछ्यो लग्यो नहीं तातें करूं वानकरूं यह संदेहहीहै अरु वे वाक्य औरकौं कहतें भी मैं लज्जितहोतहौं तुमकौं बांधव दयाल जाणि कहौहौं तुमहू मेरो युधिष्ठिरको संवाद औरसौं कहियो मति ऐसे बोलि इत उत देषि दुर्योधन युधिष्ठिरको वाक्य श्रीकृष्णके कानमे कह्यो सो स्रुणिश्री कृष्ण हसतही बोले हे वीर शिरोमणि तोकौं वा विकलकौं वचन करणोही है नहीं. ऐसे कहि कहि हाय युधिष्ठिर तेरी बुधि कैसे भ्रष्ट भई ऐसे पश्चातापकरते श्रीकृष्णसौं दुर्योधन बोल्यो हे महाबाहु श्री कृष्ण अब कहाकरणो. तातें मेरो हितहोय सो तुमही कहो मेरी इच्छातें युधिष्ठिर पें नहीं गयो. माताके पठाये तें गयो. यही मेरो अपराध है नहीं. जब गांधारीको पठायो युधिष्ठिर पास गयो स्रुणि वाके पातिव्रततें संकित होय श्री कृष्णबोले हे महाराज दुर्योधन माताके वचनतें जोतूं युधिष्ठिरपास गयो तो युधिष्ठिरको कह्योही करि परंतु भोलाकारके घरजाय. पुष्पनकी कहनी वणाय वासौं गोप्य.

अंगनकौं ढांकि माताके पासजा अरु मेरोवाक्य मातासौं
नहीं कहएगो. जोतूं जैसेमे कही तैसे करैगोतो माताकौ
वा युधिष्ठिरको वचनहू पालन होयगो. अरु तूंहू कृत
कृत्य होयगो. जोमेरो कह्यो न करैगो तो निर्लज्ज कहा
वैगो. ऐसे श्रीकृष्णके वचनतें गुह्य अंगनकौं ढांकि
माताके आगे गाढो होय बोल्यो हे माता युधिष्ठिरके व
चनतें मै तेरे निकट आयोहौं ऐसे तो कह्यो अरु
मार्गमे श्रीकृष्णसों संवाद भयो सो नहीं कह्यो जबए
से सुणि माता बोली हे पुत्र तें युधिष्ठिरको कह्यो स
र्वही कर्योहे तब दुर्योधन कहीमे सर्वही कर्योहे अब
तूं मोकों देषि ऐसे पुत्रको वचन सुणि गांधारी भर्ताको
चरण स्मरण करि वस्त्रसों बंधे जे नेत्र तिनकों कष्ट
तें षोलि दुर्योधनके अंगनकों देषत भई तब अंगमें पु
ष्पनकी कछनीकूं देषि नेत्रमीचि दुर्योधनसों बोली हे
मतिहीन पुत्र मार्गमे कपटि श्रीकृष्ण मिलि तेरी मति
हरि कहा तब दुर्योधन बोल्यो हे माता तूं सत्यही कहैहे
मार्गमे श्रीकृष्ण मिलि मेरी बुधिको हरलीनी. जब माता
बोली हे महामूढ तें श्रीकृष्णके कहेतें मरणके नि
मित्यतें गुह्य अंगनकों ढके तातें यामें मेरो कहा. वस
भवतव्यहे सोही होयहे अब औरतो तेरे अंग सर्वमे
रे देषिवेतें वज्रमई भये अरु जो फूलनकी कछनीसें
ढके सोही कोमल रहे तातें अबतूं अंतकालमे वीरध
र्म मति षोवै या मर्मस्थानकौं बचाय युध करि ऐसे मा
ताको वचन सुणि उदास होय रणमें आय विचार क
रत भयो. अब मेरो जीवन उपाय पातालवासी दैत्यन
तें स्थंभन विद्या सीषीही सोहीहे नापीछे ऐसे विचार
जलस्तभंन करि द्रहमें प्रवेस कियो अरु तापीछे अयु-

स्थामा, कृतवर्मा, कृपाचार्य ये तीन्यौ महारथी महाराज दुर्योधन कहांहै ऐसे विचारि तलास करत फिरत है. तिन्है देषि संजय दुर्योधनके समाचार कहे तब वेहू वनमें जाय विश्राम करत भये. जब युयुत्सु दुर्योधनादिकनकी स्त्रीनकों युधिष्ठिरकी आग्यातें हस्तनापूरलेगयो. अरु राजा युधिष्ठिर चिंतातें आतुर होय कही वैरको मूल दुर्योधन कहांगयो ऐसे कही दूतनकों तलास करिवेकौं भेजे अरु अश्वत्थामा कृतवर्मा कृपाचार्य येतीन्यो महारथी रात्रवाकी रही तामें दहके तट जाय बोले हे वीर दुर्योधन तूं निकसि अरु हमारे संग होय अर्जुनादिक वैरीनकों जीति ऐसे सुणि दुर्योधन तिनकों सराहि बोल्यो. हे महारथी हो मै श्रमित हों तातें तुमहू जाय एकांतमें विश्रामकरो. प्रभातही वैरीनकों मारेंगे ऐसे सुणि तीन्योही गये. तहा इनको संवाद भयो सो एक भील वनमे छीप्यो सुणतहो सो भीमसों जाय. कही. दुर्योधन जलस्थंभ करि दहमे छीप्यो जब यह वार्ता भीम मुषसो सुणि राजा युधिष्ठिर हर्षित भयो तब सब परिवार श्रीकृष्ण सहित राजा युधिष्ठिर दह. च्यारों तरफसों घेरि श्रीकृष्णके कहेतें युधिष्ठिर बोल्यो हे दुर्योधन तूं दहमें प्रवेस करि जयकों क्यों धोवे है. अरु अभिमानहू सदा तेरे हृदयमे रहै है सोहू दहके प्रवेसतें तोकों छोडि दियो कहा तातें हे राजन् अब दहतें निकसि कर्तरूपी दर्पनको संग्राम रूपी रेणुतें मांजि उजल करी. अरु क्षत्रीनको संग्रामहीचिंतामणि है अथवा चिंतामणिहूतें अधिक है क्षत्रीतो एक पृथ्वीकी वांछा करि युध करै है सोयुध करकेतोपृथ्वी देय अथवा स्वर्गदेय ऐसे भीमबोल्यो अरे दुर्योधन

तूं रणमैं त्रास पाय जलकों प्रवेस कियो अरु भीष्म द्रोण
कर्ण सल्य एकोनसत ९९ भ्राता इनकों मराय अनेक वी
रनकौं नास कराय अब जीवेकी क्यों तृष्णा राषैहै तूं सोम
वंसी क्षत्रीनके वंसमें जन्म पाय ऐसे पामरता करि जलमैं
क्यों बैठि रह्योहै अरु क्षत्रीनके जसही है तातें अबानि
करि जुध करि ऐसें स्रुणि दुर्योधन बोल्यो हे राजा युधिष्ठि
र ऐसे दुर्वचनतें कहा फलहै मेरी उच्छीष्ट पृथ्वीकों भो
गि जब युधिष्ठिर बोल्यो अब पृथ्वी दान करि वेतें प्रयोज
नही कहाहै सूचीकी अणीतें विधे इतनीहू पृथ्वी पांडव
नकों द्यों नहीं ऐसे बोली अब सकल पृथ्वी दान करिवो
कहत है सो प्रतंग्या भंगतें तुह्मे लाज क्यों नहीं आवे
है तातें निकासिके जुध करो. जुधतें पृथ्वी तेरी हो अथवा
मेरी हो. अरु तोकों मोकों जीवते रहे दोउनहीके मनमें
विजयको संदेह रहैगो. सो संदेह मति रहो ऐसे स्रुणि
दुर्योधन क्रोध करि बोल्यो हे राजा युधिष्ठिर मैं एक ए-
क सौं गदा जुध करि तुम सबनकों मारोंगो ऐसे वचन
स्रुणि युधिष्ठिर प्रसन्न होय बोले हे दुर्योदन हममें सों
एकहूकों तेरे वांछित सस्त्रतें जुधमैं जो जीते तो सकल
पृथ्वीको तूं राज्य करि ऐसे स्रुणि गदा धारि दुर्योधन द-
हमैंतें निकस्यो ताको देषि युधिष्ठिर बोल्यो हे राजा अभि
मन्युको तुम बहुत न मिलि मार्यो. तैसे हम तोको नहीं
मारैंगे ऐसे कहि सिरस्त्राण कवच दुर्योधनकों दियों अरु
कही हे दुर्योधन हम पांचोनमें जो सों तोकों जुध रुचै
ताहीसों करि तबश्री कृष्ण क्रोध करि युधिष्ठिरसों बोले
हे मूढ फेरि यह द्यूत क्यों करैहै यह तो सों युध करै तोक
हा गति होय यह त्रयोदश वर्षलौं बलदेवजीतें गदा युध
सीष्योहै तातें भीमहू यातें जीते अथवा नहीं जीते एसें

बोलतेही भीम उठि बोल्यो हे श्रीकृष्ण ऐसे मति कहो.
मै एक क्षणमें गदाकरि याके प्राण हरोंगो. जब दुर्यो-
धन गर्जना करि भीमसों बोल्यो हे भीमसेन तूं जरासंध
भगदत्त कीचक मेघनाद हिडंब बक कर्मीरये मेरे मित्र
ते मारे और दुःसासन आदि भ्रातानकों तें मारे ताते
अब सबनसों अनृणी यहोवेकों मै तोकों मारोंगो अरुमे
रो एकहू गदाप्रहार सहैगो. तब तोको सूरवीर जाणोंगो
ऐसे बोलि सिंहनाद करि दोउवीर परस्पर गदा युध कर-
त भये. ताही समै तहां सरस्वती तीर तीर्थयात्रा करते
बलदेव नारद वाक्यतें दोउ सिष्यनकों युध करते देषि
वेकों आये तिनकों देषि श्री कृष्ण पांडव उठि प्रणाम
कियो सीमंत पंचक सिद्ध क्षेत्रमे भीम दुर्योधनकों युध
देषिवेकों सरस्वतीकें दक्षिणतीर बलदेवको वीचिलेयस
ब बैठे जब भीम दुर्योधन दोउ गरजना करत जुध करतभ
ये. तब दोउनकी वज्र मई देहमे पडती गदानतें स्फुलिंग
उछत भये. जब दुर्योधन गदा फिराय भीमके वक्षस्थल
मै प्रहार कियो तब भीम मूर्छित भयो फिरि क्षण मात्रमे
भीम संग्या पाय दुर्योधनके उरमै गदामारी तबराजाहू
क्रोधते भीमपें गदा प्रहार कियो ऐसे प्रहार करते करते
दुर्योधनकीसों १०० गदा भग्न भई जब फेरि दुर्योधनभी
मकों गदा प्रहार करि पृथ्वीमे पटकि रुधिर मई कियो.
तब भीमहू रुधिरकों पूंछि फेरि युध करत भयो जबफेरि
दुर्योधन गदा फिराय भीमके उरमै मारि ता प्रहारतें भीम
पृथ्वीमे पडि मूर्छित भयो ताकी दसादेषि दुर्योधन गर्वसों
मै जीत्यो हों ऐसें बोल्यो तब भीमकों मृतक जाणि रुदनक
रत पांडव श्रीकृष्णसों हममरे ऐसे बोले तबसोक करि
पीडित पांडवनकों देषि श्रीकृष्ण हसतेही बोले हे पांड-

वहो मेरो वाक्य सुणो यह भीम जीवेहै. उठिके गदाप्र
हार करि वैरीके प्राण हरैगो. ऐसो श्रीकृष्णके बोलते
ही भीम उठि गर्जना करत दुर्योधनसों बोल्यो हे वीर मो
कों पृथ्वीमे नाषि कहां जायहै एक गदा प्रहार मेरोहू तो
सहि ऐसे सुणि दुर्योधन सनमुष आय बोल्यो हे भीम
तुम मोपैं गदा प्रहार करि तब सर्व बलसों भीम गदाभ्र
माय दुर्योधनके कांधे में प्रहार कियो ता प्रहारकों दुर्योध
न पुष्प प्रहार समान मानि कांप्योहू नही अरु भीमके
उरमें गदा प्रहार मार्यो ता प्रहारतें भीम घूमत भयो.
तब ऐसे युध देषि युधिष्ठिर श्रीकृष्णसों पूंछी इन दोउ
नमें कौन बली जब श्रीकृष्ण बोले हे राजन् भीम बली
है दुर्योधनतो शीक्षातें अधिक है. तातें सीक्षामें अधि
कहोय सोही युधमें जीते अरु छलतें युध करि याको
ऊरु भंग करिवेतें भीम जीतेगो. ऐसे श्रीकृष्ण युधिष्ठि
रको संवाद करतेही भीमकों चैतन्य सहित देषि जब
श्रीकृष्ण भीमकों आपकी जंघा दिषाय ताडन करी तब
भीमहू तासंग्याकों जाणि आपकी प्रतंग्या स्मरण करी.
दुर्योधनकी ऊरु भंगके निमित्य नाना प्रकारसों युधकरत
भयो. तोहू जंघा प्रहारको अवकास पायो नहीं जब दु
र्योधनहू भीमके प्रहारनतें आपकी देहकों वचाय भी
मके हृदयमें गदा प्रहार करी. ता प्रहारसों भीमकों मू
र्छित जाणि दुर्योधनने फेरि प्रहार न कर्यो अरु जो प्रहा
र करेतो भीम जीवैही नहीं. परंतु गदा प्रहार करिवेकों
दुर्योधन ठाढो जब मूर्छाके अंतमें उछलि भीम दुर्योधनके
ऊरुमें गदा प्रहार करी. जंघा भंग करी. तब ऊरु भंगहो
तेही दुर्योधन हाहाकार करि पृथ्वीमें पड्यो जब पडन
ही बोल्यो मैं श्रीकृष्णको मार्यो पृथ्वीमें पड्यो हों ऐ

सै बोलत दुर्योधनके मुकुटमै भीमचरण प्रहार करि बोल्यो हमकूं छल करि द्यूतमै जीति जीत द्रौपदीकौंगो कहीही सो धर्म युधतै हम मारि उनकौं गउगउ कहैहै ऐसै बोलते भीमकौं युधिष्ठिर निवारण कर्यो तोहू भीमदुर्योधनके शिरपैं चरण धर्यो जब युधिष्ठिर रुदन करतोही दुर्योधनसौं बोल्यो हे बांधव दैव बलवान है पांडु धृतराष्ट्र दोउ भ्रातानके पुत्रनकौं वैर कुलको नासकारी भयो जब युधिष्ठिरको वचन सुणि बलदेव बोले अरे भीम तूं छलतै राजाकूं पृथ्वीमें पटकि अब चर्णतैं क्यौ स्पर्श करै है ऐसै कहि बली बलदेव क्रोधतैं भीमपैं दौडे तहां श्रीकृष्ण आडे आय बोले हे तात गदा युधमैं कटिके नीचै प्रहार नकरणो पै भीम प्रतंग्या याकौं पालवेकौं सभामै करीही है दुर्योधन तूं द्रौपदीकौं जंघादिषाय बैठिवेकौं कहैहै सो याही जंघामैं गदा मारि तेरे प्राण हरोंगो. ताप्रतंग्या उरू भंग कर्यो है और याकै याकै ऊरू भंगमै मैत्रेयमुनिकौं श्रापहू कारणहै ऐसै बोलि बलदेवको कोप सांति कियो अरु भीमसौं श्रीकृष्ण बोले हे भीम तूं अनिति युधनकरि एकादस अक्षौहिणीके पतिकौ शीर चरणसौं स्परस करणो योग्य नही ऐसै भीमकौं वरजि फेरि बलभद्रसौं बोले हेतात तुम बडेवीरहो तुह्मारे आगे पांडवमैं पृथ्वीतल वासी सर्व नरदेव लोकनके इंद्रादिक देव पातालके सेषादिक नाग विष्णु संकर ब्रह्मा इनकौं आदिदे महाबली तुमसौं रणमैं स्थिर होवेकौं कोऊ समर्थ नहीं एक भीम कहा पदार्थहै ऐसै बोलि पांडव सहित श्रीकृष्ण बलदेवके चरणनमैं पडत भये जब बलदेव हू श्रीकृष्णकौं जगदीश्वर उत्पत्ति स्थिति प्रलय कर्ताजाणि तिनकौं प्रणाम करते देषि लजित भये. तब बलदेव

कौं लज्जित जाणि मानी दुर्योधन बोल्यो हे गुरु बलदे-
व वृथावाद न करणो. काकादिक जैसे पांवतें सिरस्पर्स-
करै है तैसे भीमहू चरणतें सपरस कर्यो याकी मेरेगि
णतीनहीं तब ऐसे दुर्योधनको वचन सुणि बलदेव कही हे
श्रीकृष्ण तुम अरु पांडव बडे धर्मयोद्धाहो ऐसे कहि द्वा
रिकाकौं गये. तब पांडव हर्षित होय श्रीकृष्णके चरणन
मे प्रमाण करि स्तुति करत भये. हे श्रीकृष्ण तुमही ह
मारे स्वामी हो तुह्मारी कृपातें ही अमृत्युजय संपत्तिह
मकों प्रापति भई है. जब धृष्टद्युम्न सिषंडी आदि सब
ही भीमसौं बोले हे भीम आज बडी वधाई है तुमयादु
ष्टके शिरपें चरण धर्यो ऐसे कहि भीमकी बहुत स्तुति
करी जब श्रीकृष्ण बोले यह आपने पापनतेंही मर्यो ता
कौं वचनतें क्यो मारो हो तब दुर्योधन नितंब टेकि भुजा
नतें पृथ्वीकों आश्रय लेय सुषऊंचो करि ललाटमें भृकु
टी चढाय क्रोधतें श्रीकृष्णसौं बोले रे कंसके दास हम
आपके अधर्मतें मरें अरु तेरे वताये अधर्मनतें धर्मयो
द्धा पांडव नमरे कहा भीष्म भूरिश्रवा द्रोण कर्ण अरुमैं
इन सबनकौं तुम पापीननें अधर्मतेंही मारे अरु हम-
तो वैरीनके शिरपें पांव धरि प्रबल राज भोग्यो अब-
पांडव हम विना उच्छिष्ट राज्य भोगो ऐसे बोलते दुर्योधन
पें देवताननें पुष्पनकी वृष्टि करि तापीछे अर्जुनहू रथतें
उतर्यो तवही हनुमानतो अंतर्ध्यान भये. अरु अर्जु
नको रथ अश्व सस्त्र अस्त्रनकी रासीइन सहित सर्व.
दग्ध भयो ऐसे देषि अर्जुन श्रीकृष्णसौं वोल्यो यहक
हा भयो जब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन भीष्म द्रोण कर
ण इनके अस्त्र ज्वालानतें तेरो रथ पहलेंही दग्ध हो
तो पै इतने काल परयंत तोमें राख्यौ हो सो यह अब दग्ध

भयौ ऐसै सुणि श्रीकृष्णकी सबही स्तुति करत डेरानमैं प्रवेस कियो जब श्रीकृष्ण बोले हे राजन् अब सरस्वती नदीकी तीर जयंती देवीहै ताको पूजन करिवेकों चलौ ऐसै कहि डेरानतैं श्रीकृष्ण सात्यकी सहित पांडवनकौं लेगये. तापीछै हे धृतराष्ट्र तेरो पुत्र दुर्योधन परम पीडित होय मोसों बोल्यौ हे संजय तूं देषि पांडव मेरे शिरपैं पांव देय मान षंड कियो अरु अब मेरे वृद्ध माता-पिता भगनी दुःशीला ये अनाथ है सो कहा दसा भोगैंगे ऐसै कहि दुर्योधन रुदनकरत भये ताकों देषि वृक्षहू रुदन करत भये जब और जीवनकी कहा कथा तापीछै दुर्योधनको रुदन सुणि अश्वत्थामा कृतवर्मा कृपाचार्य ये आय रण भूमिमैं रुधिरसों लिप्त रजसों मलिन ऐसे दुर्योधनकों देषि अश्वत्थामा राजाके केंस विषरेहै तिनकौं सवारत अश्रुयुक्त होय बोल्यौ हे राजन् तूं एकादस अक्षोहणीतैं सकल पृथ्वी मंडलकों व्याकुल करि ऐसी दसाकों कैसे प्राप्त भयो अरु तेरे छत्र चामर कहां गये. गजपैं चढे जाको स्त्रीजन हर्षतैं देषतही ताकौं रजमैं पडेकों भोजन करिवेके अर्थ हर्षसों शिवा देषतहैं जो येक क्षण मात्र संगीत गान विना नरहत हो सो अब अमंगल सिवा धुनि सुणैहै अरु जाकौं इत उततैं आय वीर भट जीव जीव कहतहे ताकौं अब मांस भोगी मरि मरि ऐसै कहत है जब ऐसै सुणि दुर्योधन बोल्यौ हे अश्वत्थामा मैं चक्रवर्तीपद भोग्यौ अरु अर्थी और वैरीनतैं विमुष न भयो गोब्राह्मणनकौं पूजन कियौ सज्जन दुर्जननको यथा योग्य सत्कार अपकार कियौ अरु भीमके सनमुष कुरु क्षेत्रमैं देह त्याग कियौ तासौं मेरो राज्य करबो और मरण ये दोऊही उज्वल भये.

युध रुपी महा प्रलयमें ब्रह्मा विष्णु रुद्र तुल्य तुमतीन्यों कौंही जीवते देषेतातें उत्साह नासकसो नकरौ ऐसैबो लि दुर्योधन मौन गही ताकौ देषि अश्वत्थामा लालने- त्र करि हाथ पीसत बोल्यौ हे राजेंद्र मेरे पिताको म- रण अनुचित पांडवन कीयो तबहू मेरे ऐसो क्रोध न भयो तैसो तेरी दुर्दसा देषि मेरो मर्म छेदन होय हैता तें अब पंच पांचाल पंच द्रौपदी पुत्र पंचपांडव इन सबनकों पंचत्व प्राप्त करोंगो. तातें मोकों आग्यादो और सेस सेनाहूको नास करोंगो ऐसैं सुणि दुर्योधन प्र सन्न भयो जब कृपाचार्यकों आग्यादेय सरस्वती जल सूं अश्वत्थामाकौं सेना पत्याभिषेक कियो. तब सूर्या स्त समै राजाकों आसीर्वाद देय अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा सहित येतीन्यों सिवरी समीप रहत भये. ॥

॥ दोहा ॥

गदापर्वकी वचनिका भाषाभारत सार ॥ राव चांद स्यंधके हुकुम कीनो सुकवि विचार ॥१॥ ॥ इतिश्रीभाषा भारत सार चंद्रिकायां गदापर्वाणि प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

भयो ऐसे सुणि श्रीकृष्णकी सबही स्तुति करत डेरानमें प्रवेस कियो जब श्रीकृष्ण बोले हे राजन् अब सरस्वती नदीकी तीर जयंती देवीहै ताको पूजन करिवेकों चलो ऐसें कहि डेरानतें श्रीकृष्ण सात्यकी सहित पांडवनकों लेगये. तापीछे हे धृतराष्ट्र तेरो पुत्र दुर्योधन परमपीडित होय मोसों बोल्यो हे संजय तूं देषि पांडव मेरे शिरपें पांव देय मान षंड कियो अरु अब मेरे वृद्ध माता-पिता भगनी दुःशीला ये अनाथ है सो कहा दसा भोगेंगे ऐसे कहि दुर्योधन रुदनकरत भये ताकों देषि वृक्षहू रुदन करत भये जब और जीवनकी कहा कथा तापीछे दुर्योधनकों रुदन सुणि अश्वत्थामा कृतवर्मा कृपाचार्य ये आय रण भूमिमें रुधिरसों लिप्त रजसों मलिन ऐसे दुर्योधनकों देषि अश्वत्थामा राजाके केंस विषरेहे तिनकों सवारत अश्रुयुक्त होय बोल्यो हे राजन् तूं एकादस अक्षोहणीनें सकल पृथ्वी मंडलकों व्याकुल करि ऐसी दसाकों कैसे प्राप्त भयो अरु तेरे छत्र चामर कहां गये. गजपें चढे जाको स्त्रीजन हर्षतें देषतही ताकों रजमें पडेकों भोजन करिवेके अर्थ हर्षसों शिवा देषतहै जो येक क्षण मात्र संगीत गानविना नरहतहो सो अब अमंगल सिवा धुनि सुणैहै अरु जाकों इतउततें आय वीर भट जीव जीव कहतहे ताकों अब मांस भोगी मरि मरि ऐसे कहत है जब ऐसे सुणि दुर्योधन बोल्यो हे अश्वत्थामा मैं चक्रवर्तीपद भोग्यो अरु अर्थी और वैरीनतें विमुष न भयो गोब्राह्मणनकों पूजन कियो सज्जन दुर्जननको यथा योग्य सत्कार अपकार कियो अरु भीमके सनमुष कुरु क्षेत्रमें देह त्याग कियो तासों मेरो राज्य करबो और मरण ये दोऊही उज्वल भये.

युध रूपी महा प्रलयमें ब्रह्मा विष्णु रुद्र तुल्य तुम तीन्यों कौंही जीवते देषतातें उत्साह नासकरो नकरो ऐसें बोलि दुर्योधन मौन गही ताको देषि अश्वत्थामा लालनेत्र करि हाथ पीसत बोल्यो हे राजेंद्र मेरे पिताको मरण अनुचित पांडवन कीयो तबहू मेरे ऐसो क्रोध न भयो तैसो तेरी दुर्दसा देषि मेरो मर्म छेदन होय है तातें अब पंच पांचाल पंच द्रौपदी पुत्र पंचपांडव इन सबनकों पंचत्व प्रास करोंगो. तातें मोकों आग्यादो और सेस सेनाहूको नास करोंगो ऐसें स्रुणि दुर्योधन प्रसन्न भयो जब कृपाचार्यकों आग्यादेय सरस्वती जल सूं अश्वत्थामाकों सेनापत्याभिषेक कियो. तब सूर्यास्त समें राजाकों आसीर्वाद देय अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा सहित येतीन्यो सिवरी समीप रहत भये. ॥

॥ दोहा ॥

गदापर्वकी वचनिका भाषाभारत सार ॥ राव चांदस्यंधके हुकुम कीनो स्रुकवि विचार ॥१॥ ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां गदापर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥

अश्वस्था
माभिषेच
न
कृपाचार्य
कृतवर्मा
अश्वत्थामा
कागपक्षी
रात्री
महारुद्रप्रसंन

कृपाचार्य
अश्वत्थामाद्रौपदीपुत्रशीरछेद
अश्वत्थामाशीरल्यायाहे
कृतवर्मा
कृपाचार्य
दुर्योधनहरकशोक
श्रीकृष्ण
अर्जुन
मणिहरण अश्वत्थामाकी

अथ भाषाभारतसारसौप्तिकपर्व प्रारंभः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ऐसै संजयतैं वृत्तांत स्रुणि धृतराष्ट्र मूर्छित भयो तब तहां वेदव्यास आय धृतराष्ट्रको समाधान कियो तापीछे धृतराष्ट्रं संजयकों रात्रिको वृत्तांत पूंछत भयो तब संजय बोल्यो हे राजन् अश्वत्थामा सेना पत्याभिषेक पाय तापीछे कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्थामा ये तीन्यो विशाल वट नीचे गयो तहां अश्वत्थामाकों वैरीनके मारिवेके चिंतानतैं निद्रा आई नहीं वे दोउ सोवत भये तहां एक उलूक आय सूते कागलानको मारे. जब तिनको कोलाहल स्रुणि अश्वत्थामा विचार कियो जैसे उलूकनै सूते वैरी काकनकों मारे. तैसेंही सूते वैरीनकों मारणों ऐसे निश्चै करि सूते कृतवर्मा कृपाचार्यकों जगाय कही. अबही उलूक आय सूते कागनकों जैसे मारे तैसेंही सूते वैरीनकों मैंही मारोंगो. तब कृपाचार्य बोले शस्त्रकवच रहित सूते वैरीनकों मारिवे वारो नर्कगामी होय है ताते श्रमदूरि करिवेकों अबतो निद्राही करे प्रभात धृतराष्ट्रकों पूछि वैरीनके सनमुष चलैंगे. ऐसें स्रुणि क्रोधतें रक्तनेत्र करि अश्वत्थामा बोल्यो तुम कहीसो सत्य है परंतु भीष्म भूरिश्रवा कर्ण द्रोणाचार्य दुर्योधन इनसबनकों अधर्मतै मारिवे वारेनकों मारिवेमें कौन धर्म देषैगो. अरु मेरे पिताकों युधमें युधिष्टिर झूठ बोलि मार्यो ताको श्रवण करतें मोकों तुमारी नाई निद्रा कैसे आवे अरु वीरनकों तोजो प्रतंग्या करी ताकों पालनही करिवो धर्म हैजि

नके मारिवेकी मै प्रतंग्या करी ताप्रतंग्याके पालन करिवेमें मै तुमकों नहीं पूंछौगो तातें अबमैतो सूतेही वैरीनकोंमा रौंगो. माकों धर्म अधर्मतें कहाहै. ऐसेबोलि रथपें सवार होय अस्वत्थामा चल्यो ताके पीछे कृपाचार्य कृतवर्माहू चले तहां जाय अस्वत्थामा पांडवनके सिबिर द्वारपें एक विसाल मूर्ति पुरुष देष्यो रुधिर तें रंजित अनेक हस्तनमें अनेक सस्त्र धारें जाके नेत्रनतें मुषतें अग्नि ज्वाला निक षे मुंड माला गजचर्म धारें माणियुक्त अनेक सर्पनकेआ भर्ण धारें सैंकडों सूर्य चंद्रमा समान तेज जाको ताकों दूरि करिवेकों अस्वत्थामा अनेक सस्त्र प्रहार किये. ते सर्व निष्फल गये. तब अस्वत्थामा विचारत भयो वृ द्ध कृपाचार्य कृतवर्माको वचन मान्यों नहीं तातें यहआ पत्य पाई अब महा रुद्रको आश्रय करौं ऐसो विचार करि कुंडमे आग्नि प्रज्वलित करि शिवको ध्यान स्तुति करि अग्नि कुंडमे पडिवेकी तयारी करी. जबही महा रुद्र हासिकेबोले हे अस्वत्थमा श्रीकृष्णकी आग्यातें युधिष्ठिरकी सेनाकी रक्षा करिवेको मै ऐसो रूप दिषा यो. अब तेरी भक्तितें प्रसन्न भयो तातें वर देत हों अरु यह षडग देतहों सोतूं वैरीनकों जीति ऐसे कहि षडग देके शिव अंतर ध्यान भये. जब अस्वत्थामापी छुसों आये कृपाचार्य कृतवर्मा तिनसों बोल्यो तुमया द्वारपें रहो जोकोऊनिकसे ताकों तुम मारो. ऐसें कहि अस्वत्थामा अमार्ग होय शिवरमें प्रवेस कियो तहां जाय शिबिरके मधि रूपसों सूतो जो धृष्टद्युम्न ताकों चरण प्रहार करि जगाय उठतेके केस पकडि मारिवेल ग्यो तब धृष्टद्युम्न बोल्यो हे अस्वत्थामा तूं मोकों शस्त्र ते मारि जब अस्वत्थामा कही मेरे सस्त्र गुरु द्रोहीकों.

स्पर्सनहीकरै ऐसैकहि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नकों यज्ञके पसूकेसी तरह मार्यो तैसेही उत्तमौजाकों मार्यो तापीछे रथमें सवार होय और जागे जेवीर तिनकों अनेक सस्त्रनतें मारि युधामन्युकों और सूते वीरनकों एकही मुहूर्तमें मारत भयो. तापीछे रथतें उतरि षडगतें पांचों द्रौपदीके पुत्रनकों मारि सिषंडीकों मारि द्रुपदके पुत्रपौत्र सुहृदय मत्स्य इनकों मारत भयो और द्वारिपें ठाढेजे कृपाचार्य कृतवर्माते आग्नेय अस्त्रकी ज्वालाकरि निकसते भागतेजे वीर तिनकों दग्ध करत भये. तापीछेअश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा इनके मारेजे सेनाके योधा ते ऐसैं पुकारत भये हमकों कौन मारैहै तब रक्त वस्त्र पहरें रक्त अंग रंगलगायें रक्त माला पहरें रक्ततें रंगी पास हस्तमें तापासतें अनेक वीरनकों नास कर्त्ता कालरात्रि समान कालीकों अश्वत्थामाके आगे विचरतीकों सुपनमें देषीही ताहीको अंत समयमें वीर प्रत्यक्ष देषत भये. ऐसैं सकल वीरनको नास करि अर्धरात्र पीछे तीनौ मिलि कथा करत द्रौपदीके पांचों पुत्रनके शिर लेय. रण भूमिमें पड्यो जो दुर्योधन ताके पास गये. तहां ताकों रक्तमें लिप्त संग्याहीन ऐसे देषि तीनो सोचत रूदन करत बोले हे दुर्योधन श्रीकृष्ण पांडव सात्यकी येतो बचे. और सब तेरे वैरी मारे गये येउनके सिरहै सोतुमे संग्या होयतो सुणौ अरु देषो तब दुर्योधन हर्षतें उठि उनसौं बोल्यो भीष्म द्रोण कर्ण इनजो पराक्रम नकियौ सो पराक्रम तुमकियो तातें मैं प्रसन्न भयो फेरि बालकनके सिर देषि कही ए बालक नकेहै पांडवनके नहीं तातें परलोकमें जल अंजुली भी मिलेगी नहीं यह सोक भयो तातें अबमें प्रसंन्न तासौं प्राण छोडत हौं तुह्मारो ह-

मारो मिलाप अब फेर स्वर्गमै होयगो. ऐसै बोलि दुर्यो
धन प्राण छोडेसो देषि अर्जुनके भयतें तीन्योंही चले
सो कृपाचार्य तो हस्तना पुरगयो कृतवर्मा द्वारिका गयो
अश्वत्थामा व्यासाश्रम जानेकी यह संपूर्ण कथा क
ही तापीछे संजय धृतराष्ट्रसो दुर्योधनकों देहत्याग
कह्यो ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥
तापीछे पांडव जयंती देवीकों पूजन करि मार्गमै आवत
है तिनके सनमुष धृष्टद्युम्नको सारथी दैव जोगतें कृत
वर्माके अस्त्रतें वचोहो सो जाय युधिष्ठिरकूं रात्रिकों च
रित्र सब कह्यो ताकों स्त्राणि राजा युधिष्ठिर मूर्छापाय
पृथ्वीमै पड्यो ताकों भीमको आदिदै भ्राता और श्रीकृ
ष्ण सात्यकी इन सब मिलि चेत कराये जब राजा अश्रु
नाषित बोल्यो हे श्रीकृष्ण हमारो विजयहू हमारे नास
को कारण भयो अरु द्रौपदीकू भ्राता पुत्र इनकेसो
कमैं मग्न भई ही ताको समाधान करिकों नकुलकों
आग्या देय आप युधिष्ठिर सिवरि सोधनकों गये.तहां
राजानको बांधवनकों मरे देषि राजा मूर्छित भयो. तब
फेरि श्रीकृष्ण युधिष्ठिरको समाधान करत भये. अरु
तहांही मरे पुत्र भ्राता तिनके सोकतें विलाप करती
द्रौपदीकों देषि राजा अधिक व्याकुल भयो तब द्रौप
दी बोली अश्वत्थामाकों मारिवाको शिरोमणि दिषावो
जब भोजन करों ऐसे कहि द्रौपदी अनसनव्रत लि
यो तापीछे भीमसेन द्रौपदीकी प्रतंग्या स्त्राणि नकुल
को सारथी करि अश्वत्थामाके सनमुष चल्यो ताको दे
षि श्रीकृष्ण अर्जुनसों बोले हे अर्जुन मैं द्रोणाचा
र्यके पुत्रकों क्रूर जाणि ब्रह्मास्त्र दियो नहीं तुमव
नवासकों गये जब अश्वत्थामा द्वारिका आय मोसों

चक्र माग्यौ तब मैं वाकौं चक्र देवे लग्यो सोचक्र अश्व
त्थामा दोउ हाथनतें उठायवे लग्यौ जब उठ्यौ नहींत
ब वह मोसों बोल्यौ हे श्रीकृष्ण चक्र धारिवेकी मेरीसा
मर्थ नहीं अरु जोचक्र धारिवेकी मेरी सामर्थ होती.
तौ मैं तुमहीसौं जुधकरतौ सोचक्र जुधमे तोमैं तुम
हीसौं जुध करतौ सोचक्र जुधमे तोमें असमर्थ हौं
तातें ब्रह्मास्त्र हीद्यौ जबमैं वाकौं ब्रह्मास्त्र दियौ अरुस
भावहीतें कायर, क्रोधी यह अश्वत्थामा है सो मनुष्य
नमैं नहीं अस्त्र जाणै तापै यह ब्रह्मास्त्र चलावोजोग्य
नहीं. तोहू यह अश्वत्थामा भीमपै अस्त्र चलाय मारै
गो. तातें याके रक्षा निमित्य चलो ऐसें कहाणि युधिष्ठि
र श्रीकृष्ण अर्जुन भीमके पीछे गये. तापीछे भीमसेन
अश्वत्थामाकौं व्यासके आश्रममे व्यासके पास आले
वस्त्र धारें जलकी तीर ठाढौ देषि भीम बोल्यौ रे क्रूर ब्र
ह्म बंधु ठाढौ रहि ऐसें कहाणि अश्वत्थामा रथ सेस्त्र
हीनहू बाम हस्ततें इसीकालेय ब्रह्मास्त्रतें मांत्रि यह वि
श्व अ पांडवहो ऐसैं संकल्प करि चलाई जबश्रीकृष्ण
अर्जुनसौं बोले हे अर्जुन यह अश्वत्थामा तुमारोनास
करिवेकौं ब्रह्मास्त्र चलायोहै तातें तूंहू ब्रह्मास्त्र चलाय
दोउ अस्त्रनको संघार करि तब ऐसें कहाणि अर्जुनहू ब्र
ह्मास्त्र चलायो सो दोउ अस्त्रनकी ज्वाला करि पृथ्वीआ
कास छायो देषि प्रजा प्रलय मानत भई जब अर्जुन श्री
कृष्णकी आग्यातें अस्त्र दोउ समेटि अश्वत्थामाकौं पक
डि द्रोपदीपै ल्याये. तब वाके शिरकी मणि काढी सीष
दीनी. जब श्रीकृष्ण बोले या अश्वत्थामाके अस्त्रतैंउ
त्तराकौं गर्भ दग्ध भयो ताकौं मैंने तप करि जीवायोहै
तातें यह अश्वत्थामा पातकी मलिन तातें राधि लोही

के दुर्गंधतैं सहित भ्रमत रहैगो. कहूं सत्कार पावैगो न
हीं पृथ्वीमैं यह स्रुणि आये. वेदव्यास तिनहू तथास्तु
कह्यो. वह मणि भीम द्रौपदीकौ दीनी. द्रौपदी युधिष्ठिर
कौं दीनी. जब राजा कांतितें सूर्य समान विजय देनवारी
ऐसी वा मणिकौं जाणि मुकुटमैं धरी ता पीछे पांडव कु
टंब नासतैं तो दुषी. अरु अश्वत्थामातैं विजय पाय स्रु
षी भये. ॥ ॥ दोहा ॥
॥ सौसिक पर्वकी वचनिका भाषा भारत सार ॥ रावचांदसिं
हके हुकुम कीनी स्रुकवि विचार ॥ ॥
॥इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां सौप्तिक पर्वणि प्रथ-
मो ऽध्यायः समाप्तः ॥१॥ ॥ इति सौप्तिकपर्वस-
माप्त ॥ ॥ श्रीकृष्णोजयति ॥ ॥

इति भाषा भारतसार सौप्तिकपर्व.

समाप्तम्.

अथ भाषाभारतसारस्त्रीपर्व प्रारंभः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
तापीछे वीरनकों मरे सुणि धृतराष्ट्र गांधारी दुर्योधना-
दिकनकी और राजानकी स्त्री रण भूमिमें आप आपके
भर्ता बांधवनको रणमें पडे देषि विलाप करत भई जब
धृतराष्ट्र गांधारीहू दुर्योधनके सरीरकों देषि रुदन करत
बोले हे पुत्र दुर्बुद्धितैं साधु पांडवनकों वृथा पीडा करि ता
तैं यह दसा पाई अब उठि घर चलि हम बूढे आंधे अ-
नाथनकी पालना तोविनाकौन करेगो. ऐसें विलापक
रतें द्रोउनकों देषि युधिष्ठिरके पठाये श्री कृष्णजायदो
उनकों समाधान करत बोले हे राजा धृतराष्ट्र हे गांधा
री कालकी गति बडी गहन है अरु पांडवहू तुमारे पुत्र
हीहै अरु मैंहू सकल सकल यादवन सहित तुह्यारो
आग्या कारी हौ तातें तुमसोंच माति करो. ऐसें श्रीकृ
ष्णको वचन सुणि गांधारी बोली हे कृष्ण तेरे कपट
तैं मेरे पुत्रनकों अरु कुटुंबको नास भयो तातें तूंहू छ
त्तीस वर्ष पीछे तेरे सर्व कुटुंबको नास देषैगो. ऐसें
श्रापदे मूर्छित होय गांधारि पृथ्वीमे पडी ताकों समा
धान करि श्रीकृष्ण बोले हे गांधारि तुम उठो अरु यु
धिष्ठिरको पुत्रकी नाइ पालन करो शिवरीमे चालि भोज
न करो तोकों भोजन किये विना पांडव भोजन नक
रैगे. तब गांधारी बोली हे कृष्ण मेरे पुत्र मरे तातें मैं
भोजन करौं नहीं अरु सबहीको संग्रह छोडि वायु भ
क्षण करौंगी. ऐसें कहि गांधारी जडी भूत भई ताहि

धृतराष्ट्र
गांधारि
श्रीकृष्ण
दुर्योधन
मरणादुःख
नकु. स. अर्जु.
भीम
युधिष्ठिर
धृतराष्ट्र
गांधारी

श्रीकृष्ण
धृतराष्ट्र
पांडव
लोहमईभीम
स्वस्वपतिसहितदग्ध

देषि श्रीकृष्ण कौतुक निमित्त क्षुधाकौं आग्या करितूं गांधारीके सरीरमै प्रवेस करि जब क्षुधातैं गांधारी विव्हल होय इत उत देषत भई तहां एक आम्रको वृक्ष देष्यौ ताके फल पके हूहै अरु विना पकेहूहै तब गांधारी फल भक्षणकी इच्छा करी. तब उठि एक फल तोडिवे लगी सो फल हाथ आयो नहीं जब पुत्र दुर्योधनकी छातीपैं पावदेय तोडिवे लगी. तोहू दोय आंगुल फल ऊंचो रह्यो तब सब पुत्रनकौं भेले करि उनकी सीढीबनाय ऊंची होय फल लेवेकौं उद्योग कर्यो जबही आम्रको वृक्ष अंतर्ध्यान भयो. तब श्रीकृष्ण आय गांधारिसौंबोले हे गांधारी तूं ऊंचीक्यों भई ऐसे स्रुणि गांधारि लज्जित भई तासौं श्रीकृष्णबोले. ॥ कष्टही पुत्रमरणं कष्टात् कष्टतरं क्षुधाइति ॥ अर्थ. सब कष्टतें अधिक कष्टतो पुत्र मरण. ताकष्टहूतें अधिक क्षुधा तासौं हे गांधारी स्रुणि सत्ययुगमे तो प्राण अस्थनमैं रहेहै. त्रेतामै मांसमै रहेहै द्वापरमे मज्जामै रहेहै अरु कलिजुगमैं केवल अन्नहीमैं रहेहै. तातें अन्नब्रह्मकी नित्यही सेवा करणी. अन्नहीके अर्थ सर्व प्राणी पराई सेवा करैहै. अरु छल छेद्र कपट द्रोह घात पात आदि अनेक अनर्थ प्राणी अन्नके अर्थ करैहै ऐसे श्रीकृष्णके वचन स्रुणि गांधारी मान छोडि धृतराष्ट्र सहित युधिष्ठिरके पास शिवरिमे आई जब राजा युधिष्ठिरहू रणमै मरे शृगालादिकनि करि भक्षित ऐसे वीरनको दाहजलांजलि संस्कार करायो. कितनेक वीरनकी स्त्री पतिनके सरीरकौं आलिंगन करि करि दग्ध भई ऐसे वीरनको संस्कार कराय युधिष्ठिर गांधारि धृतराष्ट्रके चरणनमैं प्रणाम करि बोल्यौ हे तात इतने बांधवनकौ नास भयौ तातैंमैं

हूं दुष्षितहौ अरु तुमहू दुष्षितहौ तातें अब मोसौं आ
ग्या करो सोही करौं तब धृतराष्ट्र बोल्यौ हे युधिष्ठिरजो
भव तव्य हो सो भयो. अबतू राज्याभिषेक अंगीकारकरि
अनाथ प्रजानकौ पालन करि ऐसे आग्या पाइ युधि
ष्ठिर तथास्तु कही चरणनमै प्रणाम करि श्रीकृष्ण सात्य
की और भ्रातानकेहू नामलेले प्रणाम निवेदन करे. अ
रु धृतराष्ट्र आपके पुत्रनकौं मारिवे वारो ऐसो भीमसेन
कौं मनमै कपट राषि बुलायो जबश्रीकृष्ण वाके मनकौक
पटजाणि पहलेही लोहमई भीम बणाय राष्यौहो ताकौं
सनमुष कियौ तब धृतराष्ट्र वाकौ हृदयतें लगाय भीम-
के भ्रमतें वा लोह मईकौ चूर्ण कियौ तापीछे धृतराष्ट्र
रुधिर वमन करत पृथ्वीमै पडि कपटतें रुदन करतबोल्यौ
मोहतें व्याकुल होय मध्यम पांडव भीमसेनकौं मारि चू
र्ण कियौ सो याके मरणको दुष्य मेरे पुत्र मरणतेंहू अ
धिक भयो ऐसे विलाप करते धृतराष्ट्रसौं श्रीकृष्ण बो
ले हे महाराज भीमतो मर्‍यो नहीं तातें तुम चिंता म
ति करो. अरु तुमारो कपट जाणि प्रथमही लोहमईभी
म वणाय राष्यौहौं सो तुमनें वाकौ चूरण कर्‍यौ अरु
तुह्मारो बल अप्रमाण जाणि अयुत गजबली भीम
कौं मिलायो नहीं ऐसे सुणि राजा कपटसौं हर्षित भयौ
जबश्रीकृष्ण बोले हे राजन् इष्ट मित्रको वचन मान्यौ न
हीं तातें तुमारे पुत्रनकौं तुमही मारेहे भीमपे क्रोधक्यौं
करोहो ऐसे श्रीकृष्णके वचन सुणि राजा निज अप
राधसौं पुत्रनकौं मरे जाणि हांसिके श्रीकृष्णसौं बो
ल्यौ हे श्रीकृष्ण पुत्रनके सोक समुद्रमें बुडते मोतें भी
मकौं वचाय तुम मेरो उद्धार कियौ ऐसो कहि धृतराष्ट्रयु
धिष्ठिरकौं आशीर्वाद दीयौ. तब फेरि राजा युधिष्ठिर भी.

म आदि भ्रातान सहित गांधारिकों प्रणाम कियो. जब गांधा
री बोली हे युधिष्ठिर मेरे पुत्र आपही अन्यायतें मरे पैं भीमसे
ननें दुर्योधन दुःशासनकों कुमृत्युतें मारे. यह मोकों महा दुष
है. तब भीमबोल्यो हे माता मैं अकृत्य कियो सो क्षमा करोमा
ता होयसो अपराध भरे पुत्रहूकों मारे नहीं. अरु द्यूत स
भामैं दुर्योधन द्रौपदीकों जंघादिषाय बैठिवेकों कही जबसैं य
ह प्रतंग्या करिही तासों जंघा छेदन करि अरु दुःसासनके रु
धिरकी धारा मेरे होतपारनहीं भई ऐसे स्हाणि गांधारी बोली ध
र्मात्मा धर्मपुत्र कहांहै तब युधिष्ठिर बोले हेमाता तेरे पुत्रनको
मारिवे वारो यह पापी मेंहूं सोतूं अब मोकों आपदेय स्क्रुध-
करि ऐसे स्हाणि गांधारी बोली नहीं अरु अपने कुलको स्व
ल्प जाणि युधिष्ठिरकों आपहू नहीं दियो ऐसे गांधारिको
समाधान करत द्रौपदी सहित पांडव कुंतीकूं प्रणाम करत
भये. जब कुंती पुत्रनकों वा द्रौपदीकों पायनमें प्रणाम कर
ते देषि. समाधान करत भई. तापीछे कुंती द्रौपदी सहित गां
धारीकों प्रणामकरी तिनकों देषि गांधारी बोली हे कुंती
हे द्रौपदी तुम अश्रुपात क्यों करोहो अरु द्रौपदीकों मेरो
बंधु पुत्रहीन भयेकोही समागम विधाता लिष्यो सो भयो. गं
गाके तरणमें रणके मरणमें सोचन करणो. तातें युद्धमें मरे
नकी सद्गति विचारि सोचन करिये ऐसे कुंती द्रौपदीकों समा
धान करि गांधारी वेदव्यासतें दिव्य दृष्टि पाइ रण मंडल दे
षत भई अरु तैसेंही वेदव्यासकी आग्यातें धृतराष्ट्र युधि
ष्ठिरादिकहू देषत भये. तहां अनेक मांस भोजीनकरि पू
र्ण विलाप करती कामिनीनके कोलाहल युक्त ऐसे रण मंडल
कों देषि गांधारी श्रीकृष्णसों बोली हे श्रीकृष्ण रण भूमिमें रु
धिरके सरोवर भरेहैं तिनमें वीरनके मुष करचरण तिरतहैंसो
मानों यमराजके पान निमित्त अरुण मदिराके कमल युक्त

पात्नही भरेहै वीरनके सिरनपैं दंडहीन छत्र पडेहै तेमानों
निज मित्रनके मिलिवेकों अनेक पूरण चंद्रही सोचतें आ-
लिंगन करतहै अरु रुधिर समुद्रनमें वीरनके शीर तिरत है
ते मानो यम किंकरनके वालकनके तिरण सिषायवेकों सजे
भये तुंब फलहीहै. ऊंचे मुषकरे रथपडे ऐसे दीषैहै मानो
स्वर्ग गये. रथीनके संगजावेकों उत्कंठित होय रहेहै मांसभ
क्षणतें तृषित निसाचर नषनतें विदारत मृतकनके नेत्ररू
पी जलधारा पान करेहै राक्षसनकी स्त्री भर्तानके पहिरायेआ
तनके हार धरि रुधिरको अंगरागकरि मांस भक्षणतें तृप्तिहो
य नाचती मुंडनकी गेंदनसों क्रीडा करती अर्जुनके पराक्रम
कों गान करैहै रोम रोममें बाणनसों विंधेजेवीर तिनके अंग
भक्षणकों आयेजे जंबुक जेबाणनतें डरि घ्राण करि करिनि
रास होय गमनकरतहै कितनेक प्रहारनतें सतषंड भयेवीर
नकों सृगाल बांटि बांटि कुटंब सहित भोजन करत है अरु
हे श्रीकृष्ण कितनीक नायका चिन्हनतें निज भर्तानिकों पहिचा
नि ऐसे बोलतहै हे स्वामी तुम मोतें विरक्त भयेकहा. मोकों
देषिके हरण श्रीके कुच तुल्य गज कुंभनतें कर दूरि न करत
हो ऐसै बोलत युध भूमिमें पडे दुर्योधनकों देषि गांधारी मू
र्छित भई फेरीचेतपाय श्रीकृष्ण सों बोली हे श्रीकृष्ण मे-
री तेरो वचन नमान्यो तातें दुर्योधन यादसाकों प्राप्त भयो.
अब रणमें पडे दुर्योधनको रज लिप्त सरीरकों याकी स्त्री भा-
नमती नेत्रजलसों धोवतहै औरहू मेरे पुत्रनकी स्त्री पतिन
के अंगकों आलिंगन करि विलाप करैहै. और यह विराट
पुत्री उत्तरा स्वामी अभिमन्युके सरीरकों गोदमें धरि तेरे मुषकों
देषि ऐसे बोलैहै हे श्रीकृष्ण तुम्हारे भगनीको पुत्र रूपमें वि
नयमें नयमें जयमें तुम्हारे तुल्य सो यह तुम सर्व व्यापीके
देषत अनेक वीरननें छलसों इकेलेकों कैसे मार्यो ऐसैकहि

स्वामीके मुषकों चुंबन करि फेरि बोलै है हे प्रिय तुम युधमैं
जात समैंहू मोकों पूंछ्यो नहीं तातें अपराधवती जाणि अबहू
बोलत नहींहो जातें मैं जानतहौं तुम वक्षस्थल देवांगनाकों
दीनो तोहू विलाप करती मोकों जो क्रोधतें निवारण करोतो
आनंद होय. अथवा मोसौं मधुर वचन बोलतहे ता अ-
भ्यासतें क्रोधकों भूले तानें यह दसा पाई अरु जो क्रोधको
लेसहू राषते तो वैरी कैसे मारि सकते. ऐसे विलाप करतीउ
त्तराकों विराटकी राणी रूदेष्णा हाथ पकडि विराटपास आ
य रूदन करि अचेतन वृक्षादिकनहूकों रूदन करावत भई
ऐसेही द्रुपदकी स्त्री द्रुपदके पास विलाप करेहै. अरु द्रोणाचा
र्यकी चितामें कृपी पडिवेकों तयार भई. ताकों षेचि ब्राह्मण
युधिष्ठिरको अपजस गावत द्रोणाचार्यको संस्कार करि गंगा
को गमन करतहै अरु सत्य जिव्हातें कर्णकों तेजोवध करे
हौ तापातक मिटायवेको मांस भोजी पक्षी जठराग्निमें ता
जिव्हाकों होम करेहै और मेरी पुत्री दुःसिला पतिके शिरकों
हृदयमें लगाय बोलैहै हे प्रीय यह भूमिमें आतपहै तातें
घरकों चलो और भूरिश्रवाकी पंच भार्या रणमें सूते पति-
सों इर्षा छोडि तुल्य बोलै है हे स्वामी तेरो एह हाथ वहहैजो
ब्राह्मणनकों यग्यनमें सहस्रावधि गोदान दीये अरु संग्रा
ममैं वैरीनकों मारे. अरु विहारमे स्त्रीनके नाभि उरजंधनस्प
रस करे. सो अब रणमें यह दसा पाय छिन्न भिन्न पड्योहै
और वृषसेनकी जननी रण भूमिमें आपके स्वामी कर्णकों
आलिंगन करि विलाप करत है यह सकुनी पड्यो है जाकेकु
मंत्रतें मेरे १०० सत पुत्रनकों युधिष्ठिर इंद्र पद लाभके निमित्त
भीमके क्रोधाग्निमें होमे ऐसे पुत्रनके दुष्यनतें व्याकुल गांधा
री श्री कृष्णसौं बोली हे श्रीकृष्ण ऐसैंही छत्तीसवे वर्ष ३६
तुमहु तुह्मारे कुलकी दसा देषोगे. तबश्री कृष्णहू हसतही.

बोले हे गांधारी सर्व जगत जाको निवारण नही करि सकै ऐसी
अषातोकौं बाधा करतहै तो गंगाकौं चलि तूं पुत्रको जलांजलि
तो अश्रुपातनतें देतहै पैं तेरी तृषा गंगाविना मिटैगी नही
ऐसे बोलतें ही श्रीकृष्णकी इच्छातें तृषा गांधारीकौं बाध क
री तब गांधारी लज्जित होय बोली पुत्र सोकतेंहू तृषा दुःसह
है. तातें कहा करौं धृतराष्ट्रको पुत्र युयुत्सु सबनके रूपातें
मेरे वीरनकी संख्या पूछी जब दिव्य दृष्टि युधिष्ठिर बोल्यो अड
षट कोटि एक लाष वीसहजार एतेतो अति दुःसह वीरमरे.
और सात हजार पांचसे राजनके राजा इंद्रहूकौं जीतिवेवा
रे तेमरे. और चौदालाष चौदा हजार एते विकट सुभट मरे.
और जिन रणमें अंग होमें इंद्र तुल्य भये. अरुमरणोही यह
निश्चै विचारि युद्धमें मरेते गंधर्व भये. भाजते मरेते गुह्यकभ
ये. स्वामिभक्ति कीर्ति जय सर्व इनकी वांछा विनावीर धर्मतें
मरेते ब्रह्मपद गये. और वीरत्वतें गर्जना करत युधमें घायल
होय रुधिर समुद्रमें पडि मरेते उत्तर कुरुदेसमें गये. यहतीर्थ
यात्रामें लोमसके अनुग्रहतें दिव्य दृष्टि पाय युधमें मरे तिनकी
यह गति देषी ऐसे कहि युधिष्ठिर विदुर संजय इंद्रसेन इनकौं
मृतक संस्कार की आग्या दीनी तबश्री षंड अगर इनतें चितार
चि दग्ध करे तापीछे राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र जाय सबनकौज
लांजलि दीनी याक्षेत्रमें जे क्षत्रीमरे तिनकौं यह जल अक्षय
तृप्तकारीहौ ऐसे कहत जलांजलि दीनी. जब कुंती युधिष्ठिरकौं
सूर्यतें कर्णकी उत्पत्ति कही. जलांजलि दिवाइ तब आपको
ज्येष्ठ भ्राता जाणि युधिष्ठिर अति पश्चात्ताप करत भयो. ॥
॥ दोहा ॥ ॥ स्त्रीपर्वकी वचनिका भाषाभारतसार ॥ रावचां
द सिंधके हुकुम कियोसुकविविचार ॥ १ ॥ इतिश्री भाषाभार
तसार चंद्रिकायां स्त्रीपर्वणि प्रथमोध्यायः समाप्त ॥ १ ॥ ॥

राज्याभिषेक.
रा.युधि.
शांतिपर्वचित्र २
भी.
धर्म.
श्रीकृष्ण
वेदव्यासादि मुनि

अथ भाषाभारतसारशांतीपर्व प्रारंभ.

श्रीगणेशायनमः ॥ वैशंपायनउवाच ॥ तहांगंगातीर नारदादीक मुनि आये जलांजलि देय संताप युक्त राजा युधिष्ठिर हौ तासौं बोले हे राजा युधिष्ठिर युद्धमे कष्टतें वैरीनकौं मारि राज्यलाभ भयो अब चिंताक्यौं करौहौ जब युधिष्ठिर बोले जिनके सुषके अर्थ राज्य चाहिये ते सर्व बांधव मरे माताके वचनतें युद्धमें मारिवे योग्यभी हमतिनकौं वाने मारे नहीं ऐसे त्रिलोक विजई सहोदर भ्राताकर्ण कौं मैमार्यो लोभ चांडालके योगतें मैंहू चांडाल वतहूं नहीस्प र्स करिवे जोग्य भयो तातें अर्जुनादिके राज्य करो मे कछूहू- चिंतवन करौंगो वनमे जाय जीर्ण पर्ण भक्षण करि एकाकीव सौंगो. ऐसे सुणि अर्जुन बोल्यो जगत जोवस्त मिले नहीं तामें प्रीति राषैहै सब वस्तु समर्थ होय तब तो वैराग्य चाहे सीतमैंता पचाहै ग्रीष्ममें सीत चाहे जैसैहीहे महाराज तुमहू वनमें रहेहे. जबतो राज्यचाहतहे अब राज्य मिल्यो तब वन चाहत हो ऐसे- कियेसे तुमकौं जगत उनमत्त मानि हंसैगो. ऐसे सुणि भीमहू बोल्यो हे महाराज जाचना करै नही जलहीकौं अहार करे जटा वलकल धारै सीत तापसहे ऐसे वृक्षकीसी तरे भयेविना कृता र्थ होतहे कहा. औरतो हममें सर्वही गुणहे. एक तेरे कनिष्ट भ्राता भये तासौं सर्वगुण गये. जब ऐसे सुणि नकुल सहदेव बोले हे महाराज, सुणो ब्रह्मचारी वानप्रस्थ सन्यासी एसब ग्रहस्ततें जीवेहे अरु एतीन्योंही विष्णुकी आराधना करेहे सो विष्णुहू ग्रहस्थतें जग्य भागकी बांछा करतहे तातें हेराजें द्र आये राज्यको पालन करि प्रजानके सुकृतकौ छटो बटभा गो तब ऐसे सुणि द्रौपदी बोली वैरीनकौं मारि तुह्मारी प्रसन्न ता चाहतें ऐसे भ्रातानकौं दुष्य दियेतें तुम कृताघ्नि होहुगे. अरु वज्रलेप पातकतो धुपे म्लेच्छहू पवित्र होयपै कृतघ्नीकी सुद्धता नहीं तातें तुह्मारे राज्यके आनंदतें इन भ्रातानकोअ

मसफल होय. आनंद पावै सोकरो. ऐसै इन सबनके वचनतैंहू युधि
ष्ठिरके मनको दुष्यताप सांत नही भयो. यहजाणि वेदव्यासआ
य बोले हे राजेंद्र जाको मृत्यदेवतें जैसे भावी होय सो तैसैही
होय मरे. अरु गजराजहू अपनी इच्छातें मसकहूकों नमारि
सकै तातें मेरे कुलकेनकों मारे यह संतापन करियै विश्ववजई
भीष्मादिकनकों उनके कर्म विना कौन मारि सकै और स्रुणो
मार्गमैं जलपौके स्थानमें पंथ चलवे वालेनकों जैसे क्षण मात्र स
मागम होय तैसैही कुटुंबीनकों समागमहै उनको वियोग भये
कहा सोक करणौ. यहकालतो इंद्रजाल वालेनकीन्नाई सर्व प
दार्थनकों क्षण क्षणमें और औरही दिषावैहै तातें कौणकौण
को हर्षसोक करियै तासों हे राजा युधिष्ठिर कालके छाये बांधवन
कों वृथाशोक क्यों करै है और देषि त्रिलोकीकी रचना करिवे
वारेनकों भी कालबली निगले है तातें तूं सोच मरेनकों नकरि
अबतो यहसमै प्रजापालन करिवेहीको है राजानको प्रजापाल
न करिवेतें अधिक धर्म वनमें नहींहै. जीवतें बांधवनको रा-
ज्यके विभागतें पालन करि मरेनको ब्राह्मण भोजनतें तृप्त
करि अरु हे राजन् तेरे दुष्यतें इन दुषीनकों अधिक दुषीक्योंक
रैहै ऐसे वेदव्यासके वचन कहे पीछै श्रीकृष्णबोले हे राजा
युधिष्ठिर विवेकी पुरुष होय सोजासों परिवारके दुष्पित होय. ऐ
सौ सोच करै नहीं और सोच करैसो मरे मिलै नहीं अरु मरेपी
छै उनके निमित्त सोक करै सोवे जाणे नहीं दूर गये बांधवनकों
ऐश्वर्य स्रुणतें आनंद होयहै तैसैही देवभोग जोगतें तेरे बांधव
भीष्मादिकनक्यों सोच करैहै अरु देषी यह मृत्युतो गजकीसी
तरैहै श्वास रूपी जीवनकों करमें धरि लडावैहै जब रुचि होय
तबही भक्षण करैहै तातें मरेनकों सोच कोण करै. और स्रुणो
जगतके प्रतिपालक श्रीराम भरतादिक भ्राता भयेहैकै नहीपरं
तु मरेनको ऐसो संदेह यह तुमको कालकरावैहै. तातें यहजीव

नहै सोकल्पवृक्षलौं चतुर्वर्गको दाताहै याकौं कायर सोक करि वि फल करै है. तातैं हे पृथ्वीनाथ सोक छोडि राज्य करि अश्वादिकविला सकरियो. ऐसे श्रीकृष्णके वचन सुणि सोकयुक्त युधिष्ठिरबो ल्यौ हे श्रीकृष्ण सहस्त्र जन्म प्रजंत अग्निमें सरीरकौं होमकरौंतौ हू भीष्म घातको पातक कैसे मिटै. ऐसे सोक करि आतुर विलापकर ते राजासूं वेदव्यास मुनिबोले हे राजन् युधमें सस्त्र प्रहार करते गुरुनकौं हू न मारैसो क्षत्री क्षत्रधर्मतें भ्रष्ट होतहै. जो सनमुष श स्त्र प्रहार करते वैरीनको मारे अथवा मरे वाकौं देवताहू पुष्पवर्षा नतेंपूजेहै यातें हे महाराज. तूं निष्पापहै तातें प्रजापालन करि जो मिथ्या संकाहै तिनको अश्वमेध यज्ञतें दूरि करि नीतिसौं रा ज्य अंगिकार करि प्रजानको संग्रह करि पुनि प्रश्न करवेकौं स रसय्या साई भीष्म गुरुहै तिनकौं पूंछि ऐसे कृष्ण द्वैपायन मुनि और श्रीकृष्ण इनकौं उपदेस सुणि धृतराष्ट्रको आगेकरि हस्त नापुरमें परवार सहित प्रवेस कियो उहां बडे उत्सव करि सभामंडप सोंभित कियो. तहां आये सौम्यादि असंख्य ब्राह्मणनकौं युधिष्ठिर पूजत भयो. जहां दुर्योधनको मित्र त्रिदंडी मुनि वेषधारी राक्षस चार्वाक आय बोल्यो हे पाप मंदिर हे वंसकी अग्नि युधिष्ठिर तोकौं धिक्कार है ऐसे वाक्य सुणि वाकौं चार्वाक जाणि सभाके ब्राह्मणनहू कारन करि दग्ध कर्यो जबश्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरकौं ब्रह्म हत्याको भय जाणि वासौं बोले हे युधिष्ठिर यह राक्षस चार्वाक ब्रह्मकोप वि ना महारुद्रहूको मार्यौ नमरतो भेष मात्रतें ब्राह्मणहै तातें याकी हत्याको संताप नकरो. ऐसे सुणि राजा युधिष्ठिर प्रसन्न भयो. ता पीछे सर्वही ब्राह्मण मिलि राजाकौं प्राचीन राजाके बिराजवेके सिं घासनपै द्रौपदी सहित युधिष्ठिरकौं विराजमान करि चारौं वेदनके मंत्रनकरि सर्व तीर्थनके जलन करि राज्याभिषेक करत भये. तबयु धिष्ठिरहू जैसे सक्ति युक्तशिव तैसेही गांधारि सहित धृतराष्ट्रकौंवि राजमान करि पूजत भयो तापीछे भीमको भीमके जोग्य राज्याभि

षेक करायो. विदुरको मंत्र कर्ममें राख्यो अर्जुनकों जयके उद्योगमें
राख्यो संजयकों लाभ षरचमें राख्यो नकुलकों सेनाकी रक्षामें धौम्य
प्रोहितकों द्विजानिकी पूजामें सहदेवकों समान मित्रनके सनमान
के अधिकारमे राख्यो और मंत्रीनकों जथाजोग्य स्थापन करि राज्य
श्रीकृष्णको निवेदन कस्यो तापीछे भीमकों दुर्योधनकी महलदीयो
अर्जुनकों दुःसासनको महल दियो. और कौरवनके स्थान सर्व बांध
वनकों देत भयो अरु श्रीकृष्णकी आग्यातें यथावत राज्य पालन
करत भयो ऐसे युधिष्ठिरको राज्य करतो देषि सर्व प्रजामे आनंदभयो
तापीछे भीमको आदिदे सर्व भ्राता आपने आपने पराक्रमकों गर्व
करतभये. तासों आपसमे ईर्षावधी कोउकहे मेरे पराक्रमसों युधि
ष्ठिरकों राज्य मिल्यो और सर्व झूंठी गर्जना करतहे. ऐसे भीम अर्जु
न नकुल सहदेव ये सबही परस्पर बोलिवेतें ईर्षावधी युध करिवेकों
सस्त्र धारणकरे. तब तिनको गर्व दूरि करिवेकों श्रीकृष्ण हसतही
बोले हे भीमादिक वीरहो तुमसबही रणमें घोर पराक्रम कियोता
सों अब गर्वतें कलह मति करो अबजो तुमकों पराक्रम जाणिवे
की इच्छाहेतो सत्यवादी युधसाक्षी बर्बरीकको शिर पर्वतके सिष
रपैहै वापें चलों जाकों वह कहे सोही अधिक पराक्रमी अरुआप
के मनतें तो गर्व सर्वही जीवनके होतहे परंतु और कोउ साक्षीहो
य सो सत्य है ऐसे सुणि भीमसेन सर्व भ्राता अरु श्रीकृष्ण स
हित बर्बरीकके शिरपास गये. तहांश्रीकृष्णबोले हे बर्बरीक हेमहावी
र हे पांडवनकों जय देनवारे तेरे देहत्यागन करिवेतें पांडवराज्यपा
यो तातें हम तोसों पूछत हों तूं साक्षीहे सो सत्य कहो अरुजो सा
क्षी होय मिथ्या बोले तो स्त्रीजो महिनाके महिना रुधिर श्रवेहे सो
वाके पितरनकों पान करिवेकों मिले. ऐसे श्रीकृष्णको वचनसुणि
बर्बरीक बोल्यो हे श्रीकृष्ण दुष्ट नासनमें तो युधमें एक कृत्यादेषी
अरुके तुह्मारे हाथतें चलतो एक सुदर्सन चक्र देष्यो सोचक्र नैंतो
सबनके शिरकाटे अरु कृत्याने सबनको रुधिरपान कियो तातें मैंतो

दोउ सेनामें ऐसोहू देख्यौ अरु इनहीकौ पराक्रम देख्यौ और भीमा
दिक द्रोणादिक वीरननें तो वृथाही गर्जना करीहै ऐसै सुणि भीम
नें पुत्र बर्बरीकके शिरकौं समुद्रमें नाषिवे वास्ते चरणसौं ठेकरदी
नी. ताठेकरसों वह शिर तिलमात्रहू हल्यौ नहीं जब श्रीकृष्णहसि
तेही बर्बरीकके शिरकौं उठायो तब तानैं चंचला समान तेज निक
सि श्रीकृष्णके मुषमें फैंकि बोले यहशिर श्री महादेवजीकी रुंडमा
लकौ सुमेरहो ऐसै कहतही नंदीगण आय शिरकौं लेगयो. सोजा
य रुद्रकौं निवेदन कियो जब रुद्रहीने वाकौं रुंडमालाकौं सुमेरकि
यो यह चरित्र देषि भीमकौं आदिदे सर्व भ्राता गर्वतजि इर्षा छोडि
सांत चित्त होय निजस्थानकौं आये. अरु सर्व पराक्रम श्रीकृष्ण
हीकौ मान्यौ ऐसै रहतें कोई समय अर्जुनके मंदिरमें विराजमान
जो श्रीकृष्ण तिनके पास राजा युधिष्ठिर गयो. तहां श्रीकृष्णकौं
ध्यान युक्त देषी राजा युधिष्ठिर बोले हे श्रीकृष्ण सर्व योगीजनतो
तुमकौं ध्यावें है अरु तुम कौणकौ ध्यावौहो सो कहो. जब श्रीकृ-
ष्ण बोले हे युधिष्ठिर जो मोकौं ध्यावैहै ताकौं मैंहू ध्यावौंहौं अरु
अबारतो सर सय्यामें भीष्म मेरो ध्यान धरैहै ताके दरसनकी ला
लसा मोकौं लगि रही है ऐसै सुणि युधिष्ठिर बोले हे श्रीकृष्णय-
इ मनमें है तो परवार सहित चलि भीष्मकौ दरसन दीजे ऐसै सु-
णि श्रीकृष्ण पांडवन सहित वेदव्यास नारदादि मुनि मंडलीयुक्त
सवारि करि भीष्मपास गये. तब भीष्महू परवार सहित श्रीकृष्ण
कौं आये देषि मनसौं पूजन करत भये. हे श्रीकृष्ण तुह्मारी भक्ति
नें संसारमें मग्न जीवहै सोहू मुक्ति होतहै ऐसे तुमकौं मैं प्रणामक
रतहौं ऐसै भीष्मको वचन सुणि श्री कृष्ण सात्यकी युधिष्ठिर भीम
अर्जुन आदिदे रथसौं उतरि भीष्मकौं प्रणाम करि आगे बढे तब
श्रीकृष्ण व्यथातें आतुर भीष्मकौं देषि बोलेहै भीष्म ब्रह्मज्ञान
मय तेरो सरीरहै सो बाणनतें भिन्नतो न भयोहै तब भीष्म बोले हे
श्रीकृष्ण विश्वरूप जो तुह्मारो ध्यान तामें लीनजो चित्त ताकौं अति

कठोर वज्र मई बाणनकी सय्या अथवा अति कोमल हंसनके पक्षमई सय्यापें दोउही ताके समान है ऐसे सुणी श्रीकृष्ण बोले हे भीष्म तोस रीके ब्रह्मवेत्ता वीरकों धारण करती यह पृथ्वी इंद्रके लोककूं कों हसे है ऐसे कहि श्रीकृष्ण भीष्मकों अमृत मई दृष्टि करि विथा रहितकि यौ तहां देवता श्रीकृष्ण भीष्मपें पुष्पनकी वृष्टि करी. जब श्रीकृष्ण बोले हे भीष्म जो तुह्मारे सरीरमें विथा नहीं है तो प्रभातसों युधिष्ठिर कों धर्मोपदेस करोगे. ऐसे सुणि भीष्म बोले हे श्रीकृष्ण तुह्मारे अ नुग्रहतें जो युधिष्ठिर पूंछेगो सोही कहोंगो. ऐसे सुणि श्रीकृष्ण बोले हे भीष्म तुम धन्य हो ऐसे कहि श्रीकृष्ण पांडवन सहित हस्तनापुर आ ये. फेरि प्रभातही पांडवन सहित श्रीकृष्ण पूर्ववत भीम पास गये. त ब भीष्म बोले हे श्रीकृष्ण तुह्मारी कृपातें मैं समर्थ हों जो धर्म धर्म पूंछेगो सोही कहूंगो. पै यह राजा युधिष्ठिर क्षत्रीके करिवे जोग्य कर्म तैं क्यों लज्जित होत है. प्रसन्न चित्त होय पूंछो जब राजा युधिष्ठिर श्री कृष्णकी आग्यातें भीष्मके चरणनमें प्रणाम करि राजधर्म पूंछत भयो. जब भीष्म श्रीकृष्णकों धर्मकों ब्राह्मणकों प्रणाम करि राजधर्म कहत भये. हे राजा युधिष्ठिर राजा जो है सो पुन्यनकी पूजातें दयातें नी तितें सोभा पावत है और कंकण हार बाजू इनतें नट विट सोभा पावत है राजा नहीं अरु जा राजाकों सील हास्यमें अधिक रत होय जाके शिरकों सेवक चूर्णसों स्पर्स करै है जो राजा आपके सरीरकों त्याग करिके भी गोब्राह्मणनको पालन करै सो सर्व धर्म जीते है और रा- जा तेजतें सूर्य तुल्य कीर्तितें चंद्रमातुल्य क्रोधतें काल तुल्य कहूं सां त कहूं क्रोधी कहूं भयंकर इन लक्षन युक्त राजा होय ताकों कोण जी तिसकै अरु यज्ञनमें जो ब्राह्मण श्री पतिकों अग्निकों सेवै है तिनकों क्रोध युक्त न करै और ब्राह्मण प्रसन्न होय तो लक्ष्मीकों देत है. क्रोध करै तो वंसकों दग्ध करै है. अरु आचारतें भ्रष्ट ऐसे एकहू पुरुष पें क्षेमान करणो. ता पुरसको पाप सर्व जगतमें व्याप्त होय है. अरु चारों वर्ण जा राजाकी आग्यामें रहै मर्यादा नहीं छोडै सो राजा ईश्वर ही है.

और राजा यग्या मृत करि देवनकों नहीं वर्षे तो भूषे देव देवलोमें अ-
मृत कूपषोदे कहा अरु जो राजा सत्यवादी दीननकी रक्षा नहीं करेतो
उन दुषीनकी स्वासा अग्नितें राजानके भाग्य आयुष्य दग्ध होतहै.
औरजोराजा आप सदा आचारमें रहै जाको परिवार हू सदा आचा
रमें रहै ऐसे राजाकौ सब संपदा सेवैहै. जारा जाको प्रोहित धर्मजाणिवे
वालो होय मंत्री नितिमें निपुन होय जोद्धा स्वामी धर्मी होय होता सत्य
वादी होय सो राजा सूर्यसमान राजैहै अरु जाको मंत्र गुप्त होय सो
राजा विश्वके जीवायवेमें मारिवेमें समर्थहै अति विश्वासी राजाके ल
क्ष्मी नही अति संकित राजाकों सुष नहीं. तातें अति विश्वास अतिसं
का राजानहीं राषे और दुष्टनकौं दंड दीननको पालन ब्राह्मणनकौ
पूजे दानदे विष्णुको सेवन एच्यारि राजानकौं राज्यलक्ष्मीकों वृद्धिका
रणहै. कोपको कारण होयतोहू प्रगट कोप न करै विपत्तिहूमें निर्लो
भरहै हर्षहूमें निर्विकार रहै ताराजाको लक्ष्मी कदाचितहू छोडै न-
हीहै. और नीति वरती राजा प्रजानकौं पालन करै ताराजाकौ प्रजा
नके छटे बठको धर्म प्राप्त होतहै.॥ ॥ इति भा० शां० प० राजधर्मप्र
करणंनाम प्रथमोऽध्याय. ॥१॥ ॥ ऐसे राजा युधिष्ठिर राजध
र्म सुणि आपत्तिसौं क्षीण ऐसे राजानके धर्म पूछे जब भीष्म बोले
हे युधिष्ठिर आपत्तिसौं क्षीण राजा होय तब वैरीनमें प्रवेस करिक
ला कलासौं वधिके निज लक्ष्मी फेर पावे. आपको मित्र बल अस्त
होय सत्रुको उदय होय जब आपको प्रजाको संकोच करि दुर्गकौ
आश्रय करि कालक्षेप करै औरमित्रबल दुर्बल ये नहोयतो बलवा
न सत्रुसौंहू जुध करै. तामें जीतेसो पृथ्वी भोगे. मरैतो इंद्रलोकजा
य औरहे राजन् राजाज्यौंत्यौं करिदेव ब्राह्मण इनकौ धन छीवे न-
ही नीतिसौं कोस हीको संचित करै वासें सर्व विपत्ति टलै अरु सं
पत्तिवानकौ अरु आपत्तिमें भी सेवक छोडै नहीं निरद्रव्यकौं सह
जहूमें सेवक छोडि देतहै तातें सर्व जगत आसाकी फांसिसौं बं
ध्यौहै सोजातें आसा टूटै ताकौं छोडै और राजा विपत्तिमें देस.

स्थान स्त्री पुत्र लक्ष्मी इन सबनकौं छोडि आपके प्राण राषै प्राण रहैतो ये कोईक समैमें फेरि सर्वही होय. और जो बहुत वैरी आपकौं घेरै तौ बुधिवान होय सो सर्वतें अधिक बली एककौ आश्रय करी सबनकौं मारै जो आपको द्रोषी होय प्रिय वचनहू बोलै तोहू वाकौ विश्वास न करियै जैसै सिकारीनकौ गान मृगनको प्राणहारीहै तैसैही दोषीनको प्रिय वचन जाणो और प्रबल सत्रु होय ता सौं वैर गुप्त करि वैसे जब समय पावै तब वैर प्रगट कर प्रहार करै.और राजामैं वा मंत्रीमें इतनै गुण चाहिये. बुगला सरीसो कपटी सर्प सौं कुटिल सिंह समान पराक्रमी. कागलावत संकित गृध्र कैसीतरै दीर्घदर्शी सदा रहै निर्लोभ गुणी सूर वीरनके गुणकौ ग्रहण करै उज्जल रहै ऐसो राजावामंत्री होयंतो आपत्ति न पावै. ॥ इतिश्रीभा० शां०प० आपत्ति धर्म विवरणोनाम द्वितियोऽध्यायः ॥२॥ ॥

ऐसै सुणि राजा युधिष्ठिर फेरि मोक्ष धर्म पूंछ्यो जब भीष्म बोलेहे युधिष्ठिर अग्यानीजीवहै ते नष्ट होते धनको सोच करत है सो वृथा. और आयुष्य क्षीण होतहै ताकौं नहीं सोचतहै यह आयुष्य कैसी कहै त्रैलोक्यकौ ऐश्वर्य दीयेहू जाकौ एक लव पावै नही अरु अहंता ममताहू दुषकौं मूलहै इनकौं छोडै सोसदा आनंदहीमें रहै. आपकी बांधवनकी आयुष्य घटै ता सालिग्रहको उत्सव करि आनंद पावतहै. अरु जो आयुष्य पदार्थ नहीतो आयुष्य समाप्त भये. सोच करेसो मूर्षहीहै और जो बंधुके देहहीमें स्नेह होयतो मरेक्यो दग्ध करै जो आत्मामें सनेहहै तौ वह सदाहीहै तातै श्व आयुष्यहूकों स्वर्ग मोक्षको उपायकरै सोही फलहै ताउपायकों मूर्षहैसो नहीं करैहै. अरु तृष्णारूपी कनात करि आत्माकों आनंद ढक्योहै ज्यौंज्यौं तृष्णा मिटै त्यौंत्यौं आनंद वधै और जे जोगरूपी दीपक सो मोहरूपी अंधकार दूरि करैहै. ते आत्मतत्व देषैहै तेही कृतार्थ मुक्त होतहै. ॥ इतिश्री भाषा भारत सार चंद्रिकायां शांतिपर्वणि तृतियोऽध्यायः ॥३॥ ॥

अथ भाषाभारतसार अनुसा० पर्व प्रारंभ

॥ वैशंपायनउवाच ॥ ऐसैंसुणिराजा युधिष्ठिर फेरि बोल्यौ हे पितामहरा ज्यके अंतमें नर्क होयहे ऐसे जाणतहूमे कुलघात कर्‍यौ तातें मोकों धिक्कारहे. तिनमाको आभरण पहिराय सोभित करि गोदमे राख्यौमैंता ताकों बाणनतें मार्‍यो और वैरीनको नास करिवेकों जिनमोकूं सस्त्र विद्या पढाई मैंवासस्त्रविद्यातें उनहीकों मारे औरतांबूल रसलेवेकों ने मते जाकी फेंटी पकडि उच्छिष्ट तांबूल षाते तापितामहकों हमानिर्दय ननै मार्‍यौ तिनकी सद्गति कैसी होयगी. ऐसे चिंता करतें राजा युधिष्ठिरसों भीष्मबोले हे पुत्र ऐसे वृथा शोकाग्नितें विवेक वल्लीकों दग्धन करि अरु हमकों तूं मृत्यु काल इननें नहीमारे. इम हमारेकर्मन करिही मरेहे. अरु तें तो तेरे क्षत्रधर्म हीतें युध कर्‍यौ तातेंनिर्दोषहे अबतूं धर्म सेवन करि तेरो कृतार्थ होयगो. इंद्रियनकोंजीति यथोक्त दान श्रद्धाकरि रितुकालमें स्त्रीसेवन करि और श्रीकृष्णको सेवन करि यह साक्षात् परब्रह्म हे. अरु स्वर्गमें देवता मनुष्यलोकमें मनुष्य पातालमें राक्षस दैत्य दानव सर्वही या श्रीकृष्णकों सेवें हे. अरु ब्रह्म विष्णु रुद्र रूप सृष्टि स्थिति प्रलय कर्ता यह श्रीकृष्णहीहे. यातें याहीकों भजो. कार्तिक माघ स्नान करो. एकादशीशुक्ल पक्षकीमें जागरण करो. द्वादसीमे विष्णु पूजन ब्राह्मणनको भोजन करावो. औरहरिकी कथा सदा श्रवण करो वेद पाठ पुराणपाठगीता सहस्रनाम पाठसदा करणो. और कार्तिक शुक्ल एकादशीसों पूर्णमासी पर्यंत श्रीकृष्णको उत्सव करणो. और श्रीकृष्णं राज्यदाता मुक्तिदाता जयदाता. भक्ति प्रति पालक यातें येही मेरो तुह्मारो उद्धार करेगो. ऐसैं बोलतही सूर्यउत्तरायण आयौ सो जाणि भीष्म नेत्रनकों फेरि युधिष्ठिरसों कही हे पुत्र धृतराष्ट्रकी अवग्या मति करियौ ऐसे बोलि श्रीकृष्णको ध्यान करि प्राणायाम पूर्वक श्रीकृष्णकी धारणाकरि बाणनसों विंधे सरीरको त्यागकर्‍यौ ताही समे भीष्मको ब्रह्मांड फोडि तेज निकसी श्रीकृष्णसें लीन भयो तब दिव्य सिबिका बणाय युधिष्ठिर

छत्रधारि भीम अर्जुन चामर धारि चंदनकी चितामें प्रासिकरि दाह कियो भीष्मको शरीर दग्धजाणि युधिष्ठिर परिवार सहित गंगामें स्नानक रि जलांजलि दीनी जब गंगाहू विलाप करत भई हे पुत्र मसक तुल्य सिषं डी पूर्वस्त्री होसो तोकों कैसे मास्यो हाहा यह मोकों बडो षेद है. ऐसे रु दनकरती गंगासों श्रीकृष्ण बोले हे गंगे तेरो पुत्र इंद्रादिकको मास्योहू नमरै. सोस्वेच्छाहीसों मस्यो है. ऐसे स्रुणि गंगा प्रवाह बंधकरि निश्च ल भई तापीछे युधिष्ठिर गंगाको प्रणाम करि परिवार सहित हस्तना पुर आये जहां आय प्रजाकों पुत्रवत पालन करत भयो. अरु श्रीकृष्णहू अष्टादस अक्षोहणीनको संघार कराय युधिष्ठिरको निष्कंटक राज्य देयके प्रसंन्न भये. ॥ जनमेजयउवाच ॥ हे मुनि ऐसे वीर भीष्मादि क आपको मृत्यु बताय बतायकेसे मेरे. अरु दुर्योधन एकादस अक्षो हणीपति सस अक्षोहणी पतीनकों नहीजीत्यो अरु कैसे मस्यो जो दिनमे सोवे नही. सदावीरनके संग रहे रात्रमे दध भोजन करैनही अरु गर्भणी स्त्रीसों संभोग करैनहीं नित्य त्रिकाल संध्योपासन करै रजस्व लासों स्परस करै नही ऐसेहू दुर्योधन भीमतें अनादर पाय कैसे मस्यो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ हे जनमेजय धर्मतें जय होयहै. अधर्मतें पराज य होयहै यह वेद सास्त्र कहै है अरु युधिष्ठिर कुरु क्षेत्रमे युद्धय ज्ञकियो तामे आप दीक्षित यजमान भयो युद्ध भूमिकों बेदी मानी. भी मको आदि दे च्यारो भ्रातानको ऋत्विज माने. अरु श्रीकृष्णकों कर्मको उपदेस कर्ता आचार्य माने और कौरवनकों पशुमाने राजानके रुधिरकों घृतमान्यो अरु द्रौपदीको दुष्य शांति ताको फल मान्यो अ रु दुर्योधनको पूर्णाहुतिको श्रीफल मानि ताकों होमि सकल यग्यकोफ ल श्री कृष्णको अर्पण कियो. ऐसैजो कर्म कियो ताकों धर्मही मान्यो. अरु कौरव लोभतें युधकिये ते अधर्मी भये. तातें विजय पायो नही.

श्लोक. धर्मोजयतिनाधर्मसत्यंजयतिनानृतं ॥ क्षमाजयतिनक्रोधो विष्णु र्जयति नासुरः १ धर्मेणैवास्थितंराज्यंधर्मेणैवास्थितंकुलं ॥ अधर्मनिरता येच तेनश्यंत्याचिरान्नृपाः २ ब्राह्मणेषुचयेक्रूराः स्त्रीषुवालेषुगोष्वथा ॥

फलानिवृततोयुद्धत्तद्धत्तेक्षिपतंतिच ३ पापद्रव्येन पुष्ठानि वाहनान्यायुधानिच युद्धकाले विशीर्यंते वापुनाच धनंयथा ४ नाविषंविषमित्याहुर्ब्रह्मस्वं विषमुच्यते. विषमेकाकिनं हंति ब्रह्मस्वं पुत्रपौत्रकं ५ अुद्धे ईजेकृतमये यजलंसमुद्रे नारायणो पिनिहितः सकलत्रपुत्रः उन्मूलितंस्फरवरस्यरहस्यालिंगं को ब्रह्म शापनिहतोनि धनंनयाति ६ यातें अधर्मीब्रह्म द्रोहीकौरव नष्टभये. ॥ इति भा० भा० अनु० प० प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥ ॥

अश्वमेधपर्व चित्र. १

राजापरीक्षितजन्मोत्सव.
परीक्षित्
ब्राह्मण
अश्वमेध
ऋषि
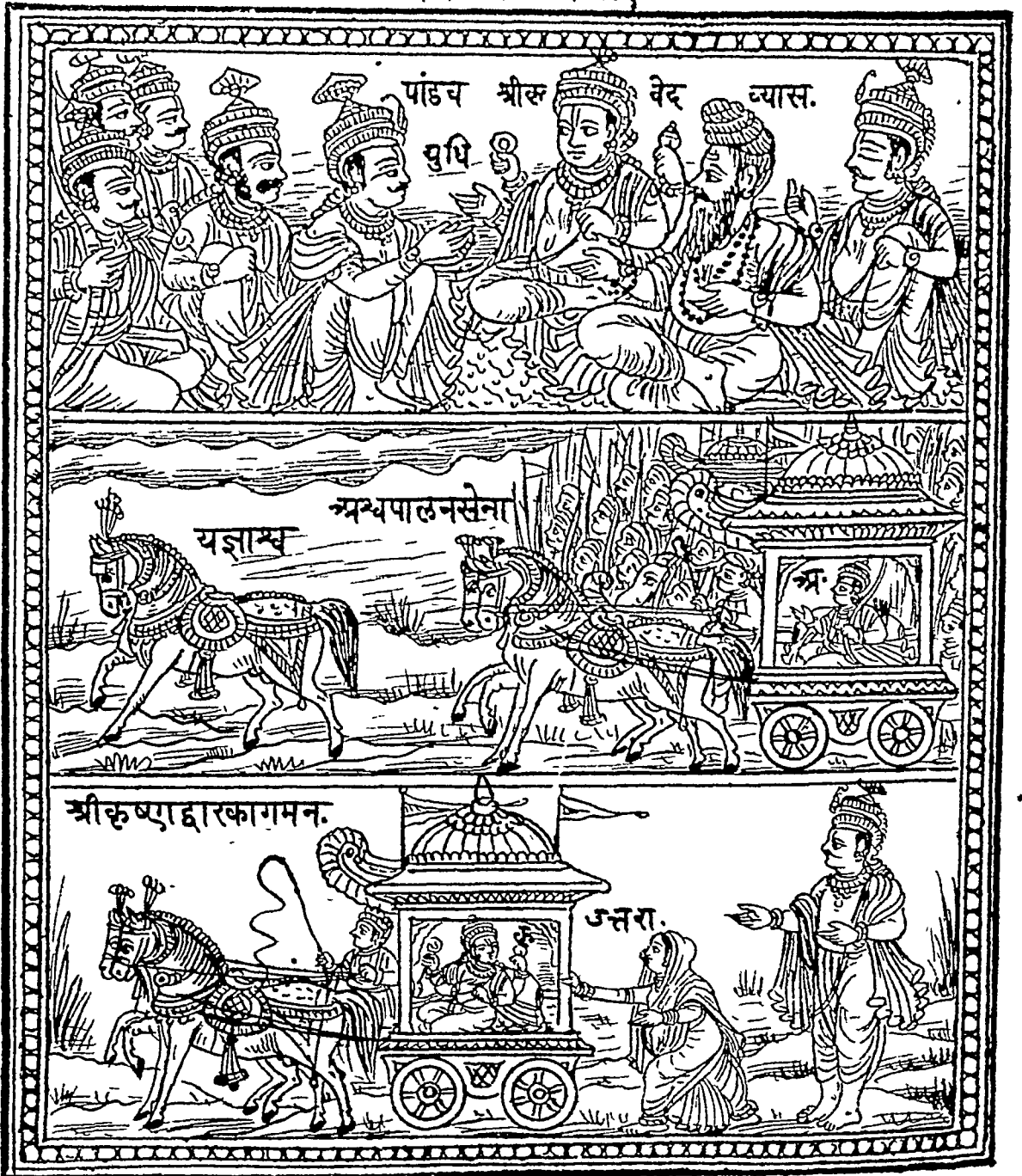
अथ भाषाभारतसार अश्वमेधपर्व प्रारंभ.

वैशंपायन उवाच ॥ राजायुधिष्ठिर राज्य पायेमै भीष्मादिकनकूं अधर्म तै मरायै ऐसै विचार सोक समुद्रमै मग्न भयो तब श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र वेद व्यास नाना प्रकारकी युक्तन करि सोक दूरि करायो तब युधिष्ठिर पूछी हे पूज्य मेरी गोत्रहत्या कैसै मिटै तब श्री कृष्ण वेदव्यास बोले हे राजा अश्वमेध यज्ञतें तेरी हत्या मिटै ऐसै सुणि युधिष्ठिर बोल्यो मेरै धनहू नही और सहायहू नहीं अश्वमेध यज्ञकैसै होय. तब श्रीकृष्णबोले हे राजा मरुत्त राजाके यग्यको सेष धनहीमाचलकी भूमिमै गड्यो है अरु जा धनसूं ब्राह्मण तृप्त होय छोडि गयेहै. सोवह धन भूमिमें है अरु भूमिके धनको धनी राजाही है. सोवह धनल्यो. तब युधिष्ठिर बोल्यो हे श्रीकृष्ण राजा मरुत धन्यहै जाके यज्ञमें ब्राह्मण तृप्त होय इतनो सुवर्ण छोडि गये. अब वो ब्रह्मस्वमै कैसै मंगावूं जा धनतैं दोउ लोकनमें दुषहोय और बंधूहत्यातैं एक लज्जा तो मोकूं हैही अरु ब्रह्मस्वमंगाय ब्राह्मणनकूं देतै दूजी लज्जा और होय ऐसै व्यास बोले हे राजा ब्राह्मण जब धन छोड्यो तबही उनको स्वामित्व गयो जैसै परसुराम पृथ्वी काश्यप ऋषीकूं दीनी काश्यपतैं दैत्यननें लीनी. उनकूं जीति क्षत्री लेत भये. तातै राजा वाधनमै ब्राह्मणनको स्वामित्व नहीं तातें हे युधिष्ठिर वोह धन तेरोही है तब राजाबोल्यो हे गुरु या यग्यमै ब्राह्मण कितने अरु दक्षिणा कितनी अरु अश्वकैसो चाहिये सोकहो. तबवेदव्यास बोले हे राजा ब्राह्मणतो वीस हजार अरु दक्षिणा येक येक ब्राह्मणकूं हाथी १ रथ १ येक अरुसुवर्णके आभरण युक्त अश्व १ गऊ १ हजार अरुयेक प्रस्थ प्रमाण रत्न येक भार सुवर्ण ऐसी दक्षिणा चाहिये. और सर्व दोष रहित चंद्रमा समान जांको वर्ण अरु एक कर्ण जाको स्याम ऐसो अश्व चाहिये. और चैत्रकी पूर्णमासीकूं वाकूं छोडणो अरु वर्ष पर्यंत वीर जाकी रक्षाकरे यजमानको पुत्रवा भ्राता जाकी रक्षाकों जाय अरु यज्ञमान भार्या सहित असीपत्रव्रत करै अरु अश्व जहांमल मूत्र करै तहांब्राह्मण हवन करै राह अगो दान करे अरु अश्वके लला

टमें स्वर्णको पत्रबांधै तामें यजमानकौ नाम लिखेमे अश्वमेधकेनिमित्य यह अश्वछोडयोहै जो बलवान होयसो याकौ पकडौ मेरो भ्राताबा पुत्र या कूं छुडावैगो. ऐसैछोडै अश्वकूं जो ग्रहणकरै तातें छुडावणो. याविधि अश्व पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करि आवे तातें अश्वमेध होय. अरु हे राजा तेरे सहाय श्रीकृष्ण भीम अर्जुनादिकहै तातें यह यग्य तोसूंही बणै ऐसे सुणि राजा युधिष्ठिर सकल यग्य सामग्री सिद्ध कराय शुभदिनशुभ मुहूर्तब्राह्मणनके साथ अश्वको पूजनकरि अश्वके ललाटमे स्वर्ण को पत्र बांधी अरु वाकी रक्षाकूं वीरनकूं लार देय अश्वकौं छोडयौं सो- वह अश्व गमन करत राजा यौवनाश्वकी पुरीमें गयौ. सो दस अक्षौहणी सेनाको स्वामी राजा यौवनाश्व पकरि यत्नसूं पालना करि तब यह षवरि राजा युधिष्ठिर सुणि भीमसेनसौं आग्या दई तब भीम बोल्यौ मैं वा अश्वकौं ल्याऊंगो. अरु यौवनाश्वकूं जीतूंगो. अरुजो- नर वासुदेवको चिंतवन करि कर्म करै है सो सिद्धि होत है. यामें संदेह नहीं अरुजो मनुष्य वासुदेवके ध्यान हीन कर्म करै सो निष्फल होत है. तातें मैंहू अश्वकू ल्याऊंगो. अरुजो नहीं ल्याउंगो. तो घोर दुर्गतिकूं प्रासहूं ऐसे भीमकी प्रतंग्या सुणि युधिष्ठिर बोल्यौ हे भीम इकलो तूं भद्रावती पुरीको कैसे जायगो. अरु यौवनाश्वहू सदाबलीहै ताके सेवकहू तैसेहीहै. तिनकूं जीते विना अश्वकू कैसैं ल्यावेगो. ऐसे सुणि वेदव्यास बोले हे राजन् वासुदेवके वचनतें सर्व कार्य होयगो. ऐसैकहि व्यासतो गये. अरु युधिष्ठिर श्रीकृष्णसौं बोल्यौ हे कृष्ण मे गोत्रहत्यारूपी समुद्रमें मग्नहूं तातें मेरो उद्धार करो. तब श्रीकृष्ण बोले हे राजन् तेरो कायिक वाचिक मानस पातक है सो संकल्यकरि मेरे हस्तमें धरिसे वाको नासकरूंगो. तुम शुद्ध होवोगे. ऐसे सुणि राजा युधिष्ठिर बोलै हे श्रीकृष्ण तुह्मारे हस्तमें कछू स्वल्पहू देहै सो अक्षय होत है. तातें मैं अश्वमेध यज्ञकरिवाकौं फल दीयो. चाहूहू तातें अश्व आवै- तो अश्वमेध यज्ञ संपूर्ण होय ऐसे सुणि श्रीकृष्ण भीमको अगवल्यावेकी आग्यादीनी. तब वृषकेतु मेघवर्ण भीमसेन येतीन्यौ श्रीकृष्णकी

आग्यातें यौवनाश्वकी नगरी भद्रावतीकौं गये. तहां नगरीके बाहरपर्वत पैं बैठे जब भीम सेनबोल्यौ आपुन तीन्यौ या सरोवरमें जबलौं यौवनाश्व- को अश्व जलपान करिवेकौं आवे तबलौं या शिषरपैं रहैं ऐसैं निश्चैक रि तीन्यौही पर्वतकी सिषरमें रहे ताही समें में अनेक वीरनसौं रक्षित अश्व जलपान करिवेकौं तहां आयौ. ताकौ देषी मेघवर्ण बोल्यौ हे भी- म मैं मायाकरि या अश्वकों इहां ल्याऊं हू तुम सेनासौं युध करो. ऐसैक हि मेघवर्ण माया मई अंधकार करि अश्वकौं पकडि पर्वत पैल्यायो जब वा अश्वकी रक्षा करिवे वाले वीरनकौं कोलाहल सुणि वृषकेत भी मसेन युधकों आये. जब तिनकों देषि कितनेक तो युधकौं तयार भये. कित नेक भाजि यौवनाश्वपैं आय बोले हे राजेंद्र कोउ वीर अंधकार करि अ- श्वकौं पर्वतपें लेगयौ. और दोय अपूर्व योद्धा युद्धकौं आयेहें ऐसें से- नाके वीरनको वचन सुणि यौवनाश्व सेना सहित युध्ध करवो निश्चैक रि युधकौं आयौ. ताकौ देषि वृषकेत सनमुष आय बोल्यौ हे राजन् तूं वृद्ध है तातें वृथा प्राण मति छोडे योधान सहित नगरकौंजा. ऐसें सुणि राजा न मानी तब वृषकेत बाणनतें विंधत भयो जब राजाहू वृषकेतपें सेना सहित मिलि बाणनकी वर्षाकरी तब वृषकेतहू तिन बाणनकौं का टि और अनेक बाणन करि राजाके रथ अश्व गज सहित वीरनकों मा रत भयो. अरु वृषकेतके भयतें सर्व सेनाहीन यौवनाश्व बोल्यौ हे वृष- केत तूं धन्य है. पहलें तूं मोपे प्रहार करि अरु तूं बालक है तातें मैं पहलें प्र- हार करौं नहीं. जब वृषकेत कहे राजा तूं वृद्ध है मेरो प्रहार सहे नहीं. तातें तूं प्रहार करि तब राजा वृषकेतके हृदय दसबाण मारे. जब वृष केतहू तिनबाणनकौं बीचहीमें काटि राजाके हृदयमें दसबाण मारत भयो तेबाण राजाके हृदयकौं विदीर्ण करि पातालकौं गये. ता पीछे अर्ध चंद्र बाणतें राजाको धनुष्य काट्यो जब राजा और धनुष ले वृषकेतके साठिबाण मारे ते बाण वाके सरीरकौं बेधि रुधिरपान करत भये. तब वृषकेत क्रोधकरि येक बाण. राजाके हृदयमें मार्यो तातें तूं मूर्छित भयो तहां राजाकौ पुत्र सुवेग अरु भीमये दोऊ गदा

युध करतहै तिनके गदा प्रहारनकों शब्द स्रुणि राजा मूर्छा छोडिउठ्यो जब राजा वृषकेत सों बोल्यो हे वृषकेत तूं मेरो प्राणदाताहै तातें मेरो यह राज्यतूंले तें मो मूर्छितपें प्रहार कर्यो नहीं. तातें यह राज्यतेराही है. अरु तेरो अनुग्रहतें मैं श्रीकृष्णकों देषोगो. अब भीमकों तो पहलीदिषाव ऐसें कहि दोउ चले. तहां जाय देषे तो स्रुवेग अरु भीम ये दोऊ गदाके परस्पर प्रहारनतें मूर्छित है तबही भीम मूर्छा छोडि उठ्यो जब राजा ताकों प्रणामकरि बोल्यो हे भीमसेन यह मेरो राज्य तेरोहीहै तातें तुम मेघवर्ण वृषकेत सहित मेरी पुरीमें प्रवेस करो ऐसें कहि राजा तिनसहित पुरीमें आय परम सतकार करि कितनेक दिन राषि पीछें पुत्र सेना सहित तिनके संग योवनाश्व हस्तनापुर आयो. जबराजायुधिष्टिर अश्व सहित तिनकों आये स्रुणि सेना समेत सनमुष आय योवनाश्वकों सत्कार करि पुरीमें प्रवेस कर्यो तहां योवनाश्व श्रीकृष्णकों दरसनकरि परमहर्षित युधिष्टिर सों बोल्यो हे युधिष्टिर हमतेरे सेवकहैं ऐसें कहि तहां रहे. ॥ इ॰ भा॰ अश्वमेघप॰ प्रथमोऽध्यायः १ ॥ वैशंपायन उवाच ॥

तापीछें श्रीकृष्ण युधिष्टिर सों बोले हे राजेंद्र चैत्री पोर्णमासी गई अब यज्ञको प्रारंभ समय दूरिहै तातें मैं द्वारिका जाऊंहूं तुम योवनाश्वसहित अश्वकी रक्षाकरो. अरु यज्ञ सामग्री संचय करो. तुह्मारे निमंत्रणतें यज्ञके प्रारंभसमयमें आवेंगे. ऐसें स्रुणि श्रीकृष्णकों राजा आग्या दिनी. जब श्रीकृष्ण बिदाहोय रथपें सवार भये. तासमयमें उत्तरा अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रकी ज्यालानतें दग्ध भई विलाप करत आई तब ताके गर्भमें श्रीकृष्ण प्रवेस करि ब्रह्मास्त्रकी ज्वाला शांत करी जब बालककों जन्म भयो ताकों मृतक देषि कूंती स्रुभद्रा विलाप कर्यो. तब तिनकी करुणातें श्रीकृष्ण अमृत वृष्टि करि बालक जिवायो जैसें मेघवृष्टितें भेषकों जीवावें अरु क्षीणकुरु वंसमें जन्मलियो तातें श्रीकृष्ण याकों परिक्षित नाम धरि द्वारिकाकों गये. जब हर्षयुक्त राजा युधिष्टिर वाको जन्मोत्सव कियो अरु वेद व्यासकी आग्यातें यज्ञ सामग्री अज्ञातें संचय करत भयो. तहां स्रुवर्णमय कुंड मंडप

की रचना करी और सर्व सामग्री सिद्ध देषि वेदव्यास युधिष्ठिरसौं बोले हे राजन् अब श्रीकृष्णकौं बुलावौ ऐसे स्रुणि युधिष्ठिर भीमसौं बोले हे भीम तूं द्वारिका जाय श्रीकृष्णकौं कुटुंब सहित ल्यावो सो स्रुणि भीम द्वारिका गयो तब भीमकौ आयो स्रुणि श्रीकृष्ण भोजन करतहे तहां भोजन करतही भीमकौं बुलाय अनेक विधिके कौतुक करत वाकौ हू भोजन करायो . तापीछे तांबूल देय आसनपैं बैठाय कुसलपूछी तब भीम कुसल निवेदन करि बोल्यो हे श्रीकृष्ण युधिष्ठिरके यज्ञमें आप परिवार सहित चलो ऐसे स्रुणि श्रीकृष्ण वस्रुदेव बलदेवकौं द्वारिकाके रक्षाकौं राषि आप दुंदभी बजवाय सकल पुरवासीनकौं हस्तिनापुर चलिवे की आग्या देय प्रस्थान करवायो अरु आपहू सोला हजार एकसौं आठ पटराणी सहित और पुत्र बांधव सेना सहित तहांतें चलत चलत गंगातीर आय डेरा किये . अरु राजा युधिष्ठिरकौं षबरि कराई जबस्रुण तही राजा सर्व वीर मंडली सहित अश्वकौं आगेकरि सनमुष मिलिवेकौं आयो . तहां यादव पांडव सर्वही यथाजोग्यामिले . तब सत्यभामा देवकी सहित उत्साहतें श्रीकृष्णसौं बोली या यग्यके अश्वकौं हमसर्व स्त्रीजन पूजेंगी . सोसत्य भामाको वचन श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसौं कह्यो जब युधिष्ठिर बोले हे सर्व वीर हो तुम तयार होय अश्वके चारों तरफ होय यादवनकी स्त्री अश्वकी पूजन करेंगी . अरु धौम्य मुनि पूजा करावैंगे . तब राजाकी आग्यातें सर्व वीर तैसेही रक्षाकरत भये . तहां सत्यभामाकूं आदिदे . सर्वस्त्रीजन अश्वको पूजन करत भई . तापीछे उच्चस्थानमें बैठि नृत्यकरते अश्वकी शोभा देषतही . ताही समयमें अनुसाल्व पाछिले वैरकौं यादिकरि मायामय अंधकार करि अश्वकौं हरिले गयो . तब श्रीकृष्ण पांडवनकौं चिंतातुर देषी युधिष्ठिरसौं बोले . हे धर्मराज याअनु साल्वकौं मरायतुह्मारे अश्वकौं मंगावौगो . चिंता मतिकरौ . ऐसैकहि श्रीकृष्ण हस्तमें तांबूल लेके बोले हे वीरहो तुममें जोकोई अनुसाल्वकौं मारि अश्वकौ ल्यावे सो यह तांबूल ल्यो . तब ऐसे स्रुणि प्रद्युम्न उठि श्रीकृष्णके हस्ततें तांबूल लेय बोल्यो हे महाराज मैं अनुसाल्वकौं मारि अश्वकौं ल्यावोंगो . मेरो पराक्रम दे-

चौ. फेरी श्रीकृष्ण तांबूल हाथमैं लै बोले. अब जोकोऊ प्रद्युमनकी सहाय करिवेकों समर्थ होय सोयह तांबूल ल्यौ. ऐसे स्रुणि वृषकेत श्रीकृष्णके हस्ततैं तांबूल लेयबोल्यौ हे श्रीकृष्ण जोमैं अनु साल्वकौं पकडि नहिंल्यावौं तौ रुद्र ब्राह्मणी गवन करै जा गतिकौं पावै तागतिकौं मै पावौं. ऐसैकहि वृषकेत प्रद्युम्नके साथ युध करिवेकों अनु साल्वकीसेनामैं प्रवेस कियौ जब अनुशाल्व प्रद्युम्नकौ देषि बोल्यौ हे प्रद्युम्न तपस्वीनमैं जितेंद्रिय पुरुषनमें पतिव्रता स्त्रीनमैं तेरो पुरुषार्थ चलैनहीं. अरु अविवेकी पुरुषनमैं तेरो पुरुषार्थ चलैहै ऐसे स्रुणि प्रद्युम्न पांच बाण चलाये. तब अनुसाल्व तिनबाणनतैं छेदी अरुयेक बाणतैं प्रद्युम्नको ह्रदय विदीर्ण कियो. जब प्रद्युम्न बाण वेगतें भ्रमत श्रीकृष्ण के समीप पडि मूर्छित भयो. ताकों पड्यो देषि श्रीकृष्ण लाज्जित भये. तब श्रीकृष्ण प्रद्युम्नको चरणतें ताडना करि बोले रे मूढउठियह द्वारिका पुरी नहीहै यह महा दारुण स्थानहै यामैं निद्राकरणौ जोग्यनहीं. ऐसे स्रुणि प्रद्युम्न चैतन्य युक्त भयो. जब भीमसेन प्रद्युम्नसहित अनु साल्वसों युद्ध करिवेकों गयो. तहां भीमसेन गदाप्रहारनतैं अनुसाल्वकी सेनाकों मारि रणमें गर्जना करत भयो. तब अनुसाल्व एक बाण प्रहारत्तें भीमकों श्रीकृष्णकेपास पटकत भयो. जब श्रीकृष्ण भीमके पडवेतें क्रोधयुक्त होय युधकों गये. तहां जाय तीनबाण अनुसाल्व पैं चलाये. तब अनुशाल्व तीन्यो बाण छेदि हसिके श्रीकृष्णसोंबोल्योहे श्रीकृष्ण मेरो बाणहू छेदिवेकी तेरी सामर्थ नहीं अरुजो सूरहै सो मेरो एकही प्रहार सहि ऐसैकहि एकहि बाण प्रहारतें श्रीकृष्णकोंमूर्छित कियौ जब दारुक सारथी श्रीकृष्णको रथ दौडाय युधिष्ठिर पासलै गयो. तब श्रीकृष्णको मूर्छित देषी पांडवनकी सेना हाहाकार करि भाजिवेलगी अरु रुकमणीकों आदिदे स्त्री विलाप करत भई. जब सत्यभामा क्रोधसैं श्रीकृष्णसों बोली हे नाथ तुम प्रद्युम्नके चरण प्रहारदै अनुसाल्वके प्रहारतें कैसे व्याकुल भये. अरु तुमको ऐसे देषि सर्ववीर भजेहै तातें मैं चंडीहोय अनुसाल्वके मारिवेकौंजाऊंहों. ॥ इ० भा० अ० द्वि० ॥ २ ॥

॥ वैशंपायनउवाच ॥ ऐसे सत्यभामाके वचन सुणि श्रीकृष्ण मूर्छा छोडि क्रोधकरि अनुसाल्वसौं युध करिवेकौं फेरिगये. तब वृषकेत अनेक प्रकारकौ युध करि केंस पकडि अनु साल्वकौं श्रीकृष्णके चरणमैं पटक्यौ. जब श्रीकृष्ण प्रसंन्न होय वृषकेत सौं बोले हे कर्ण पुत्र तूं धन्यहै तो विना अनु साल्वकौं ऐसै कौण ल्यावै. ऐसै कहि श्रीकृष्ण सरणागत अनु साल्वकौं अभय दान दे पांडवनकौ सेवक काहाय गीत वादित्रधुनि सहित हस्तना पुरमैं प्रवेस कियौ. तापीछै जग्य सामग्री सिधि देषि चैत्र पूर्णमासी निकट जाणी राजानकौ जथा जोग्य अधिकार दियौ अरु युधिष्ठिर द्रौपदी सहित पौर्णमासीके दिन यग्यकी दीक्षा लीनी. तापीछै युधिष्ठिर द्रौपदी सहित असिपत्रव्रत धारि ब्राह्मणनकौ वर्णधारि पौर्णमासीके दिन वेदव्यासकी आग्यासौं अश्वकौं पूजि अलंकृत करि राजा बोल्यौ श्रीकृष्णके प्रसादतें यात्रा निर्विघ्न हो हे अर्जुन युधमैं पित्रहीन बालकनकौं वृद्धनकौं रोगीनकौं भागतेनकौं नहीं मारणौ ऐसे सुणि अर्जुन श्रीकृष्णकौं अरु युधिष्ठिरादिक बडेनकौं प्रणाम करि चल्यौ जब वह अश्व नीलध्वज वीर करि पालित ऐसी माहिष्मती पुरीकौं गयो. तहां नर्मदानैं जल पान करते अश्वकौं नीलध्वज पकड्यौ तब अर्जुन नाना प्रकारके युधकरि पुत्र पौत्र सहित नीलध्वजकौं अरु वाके जामाता अग्नि ता सहितकौं जीत्यौं जब ऐसे सुणि जनमेजय बोले हे मुनि नीलध्वजके कौण कन्या भई अरु अग्नि कैसे जामाता भयौ. तब वैशंपायन बोले हे राजन् नीलध्वजके ज्वाला नाम भार्यासैं स्वाहा नाम कन्या भई ताकौं नीलध्वज पूछ्यौ हे पुत्री तोकौं कौन वर रुचै है जब कन्या बोली हे तात मोकौं अग्निही स्वामी रुचै है ऐसै कहि कन्या अग्नि स्वामी प्राप्ति निमित्त तप करत भई. तब अग्नि संतुष्ट होय विप्ररूप धारि नीलध्वजपैं आयो तब ताकौं नीलध्वज पूंछी हे विप्र तूं कौण कामना निमित्त आयौ जब विप्र बोल्यौ हे राजा मैं सांडिल्य गोत्रकौ ब्राह्मण कन्यार्थी हौं तातें तेरी सुंदरी कन्या है सो मोकौं द्यौ तब राजा बोल्यौ हे विप्र यह कन्या अग्निकौं वरवर्यौ है. जब विप्र बोल्यौ हे राजन् मोकौं विप्र वेष धारे अग्निही जाणौं. तब

मंत्री बोले यह कन्याके लोभतें ब्राह्मण आपकों आग्नि कहेहै ऐसे कहणात-
ही ब्राह्मणके मुषतें ज्वाला निकसी सो मंत्रीनकों दग्धकरे तहां कितनेक
भागिबचे कितनेक मूर्छित भये. ऐसे ता समयमें महा विनोद भयो जबकन्या
की मौसी राजासों बोली हे महाराज याब्राह्मणकों कन्या नही देणी. यह-
कोई ब्राह्मणको वेष धारें इंद्रजालीहै. तब राजा बोल्यो हे कल्याणी या
ब्राह्मणकों तूं तेरे घरले जाय तहां याकी परिक्षाकरि तबब्राह्मणकों संगले
आपके घर गई. तहांजाय ब्राह्मणसों बोली हे ब्राह्मण तुह्मारीपरिक्षामो
कों दिषावो. जब आग्नि क्रोधकरि तत्कालही वाको मंदिर दग्ध कियो अरु
ताके वस्त्रहू दग्धकिये. तबवाने राजासों कही हे महाराज यह निश्चै आग्नि
हीहै जब राजावाकों कन्या व्याह दीनी ऐसे जामात आग्नि भयो. अरु ता
दिनसैंही नीलध्वज राजाकी सहाय करत भयो ऐसे नीलध्वजको सेनावा
सहाय करता आग्नि सहित अर्जुन जीत्यो. तापीछे नीलध्वजकी भार्या
ज्वाला नामही सो अर्जुनपें क्रोध करि गंगातीर जाय दग्धहोय बाणकोरूप
धारिबभ्रुवाहनके तर्कसमें रही. सोइ ज्वाला गंगाके आपतें अर्जुनकेनास
को कारण भई. ॥ इ० भा० अ० तृति० ॥ ३ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥
तापीछे नीलध्वजके पुरतें अश्व आगे चलत एक जोजन प्रमाण महाशि
लादेषि तासों सरीरकों घर्सण करत भयो तासिलाके स्परसतें वह अश्व
जडीभूत भयो. तब अनेक वीर वा अश्वकों षैच्यो तोहू हल्यो नही जब-
अर्जुनसों यह वृत्तांत कह्यो सो सुणि अर्जुन चिंताकरत भयो. तापीछे-
अर्जुन च्यारों तरफ देषत एक आश्रममें विराजमानसो भरि मुनिकोंदेषि
तिनपासजाय प्रणाम करि अश्वकों जडीभूत होवेको कारण पूछ्योतब
सौभरि मुनि बोले हे अर्जुन उदालिक मुनिके बाद्रि नाम भार्या भईसो
वाकों पति आग्याकरतो ताकौं ताजि विपरीतचलती सोएकसमै वा मु-
निके पिताको श्राद्धहो तादिनही तीर्थ यात्राकरते हुवे कौंडिन्य नामा मु-
नि सिष्यन सहित आतिथआये. तबउदालीक मुनि उनको पूजन कर-
वा आपकी स्त्रीकों सर्ववृत्तांत कह्यो जब कौंडिन्य मुनि उद्दालकसौंका-
नमें कहीहे मुनि तुमकोंजाकामकरणोंहोयसो यास्त्रीकों विपरीत कह्यो. जब

तुह्मारे सकल काम सिधि होयंगे. अरु मैं गौतम मुनिसों मिलि प्रभात तुह्मारे पास आउगो. ऐसे कहि कौंडिन्य मुनि गये. जब उद्दालक मुनि चंडिसों विपरीत बोली सकल श्राद्ध सामग्री सिधि कराइ आपहू श्राद्ध करि प्रसन्न भये. तापीछे कौंडिन्य मुनिकों उपदेस भूलि भार्यासों बोले हे चंडी इन पिंडनकों गंगामें प्रवेस करावो. तब चंडि उन पिंडनकों मलमूत्रस्थानमें नाषे. जब उद्दालिक क्रोध करि चंडीसों बोले हे दुष्ट चंडी तूं शिला हो. अरु अर्जुन आय स्पर्स करैगो तब तेरी मुकती होयगी. तातें हे अर्जुन तूं याकों स्पर्स करि यह चंडी तो उद्दालकके सापतें मुक्ति होयगी. अरु तेरो अश्व चलैगो. ऐसे स्रुणि अर्जुन वा सिलाकों उद्धार कियो. तब अश्व उहांतें चलि हंसध्वजकी चंपकपुरीमें गयो. तहां राजा हंसध्वजके स्रुरथ, स्रुबल, स्रुमति, स्रुदर्स, स्रुधन्वा ये पांच पुत्र हे तिन साहित राजा अश्वकों पकरि युद्धकों तयार भयो. अरु एक कडाहकों तेलसों भरि ताकों अग्निसों तस करि राजा यह आग्या करि जो युद्धमें विलंब करि आवैगो ताकों यामें नाषेगे. ऐसे स्रुणि सर्ववीर सीघ्रही आये. तिनमें स्रुधन्वा विलंब करि आयो ताकों जुधमें चलते वाकी भार्या बोली हे पति मैं रति स्नाता हों तातें मोकों रुतुदान दे कै जावो अरु जो रितुदान विना जावोगे तो ब्रह्म हत्याको पाप होयगो. ऐसे स्रुणि रितुदान देयके जुद्धकों आयो. तब हंसध्वज विलंब करि आये पुत्रकों बुलाय संष लिषित हे दोउ धर्मसास्त्री हे तिनकों बुलाय राजा वृत्तांत कह्यो तब ये दोउ स्रुधन्वाकों तस कडाहमें नाषिवेकों लेगये. जब स्रुमति नाम मंत्री राज पुत्रसों बोल्यो हे राजपुत्र मे राजाकी आग्याके आधीन हों तातें मेरो दोस है नहीं. ऐसे स्रुणि स्रुधन्वा स्नान करि दिव्यवस्त्र धारण करि तुलसीदलकी माला पहरि हरि नाम संकीर्तन करतेकों वा कडाहमें नाष्यो. जब वह तेल वाके पडतही सीतल भयो सो स्रुणि राजा हंसध्वज आय पुत्रकों हरिनाम संकीर्तन करत कडाहमें तिरत देषि संष सास्त्रीकों बुलाय कही यह कहा है. तब संष बोल्यो हे राजन् यह तेल अति तस नहीं भयो. अथवा तेरे पुत्रपें मनि मंत्र औषधी है. तातें तेल परिक्षा लेवेकों यामें नारेल नाषो. ऐसे स्रुणि नारेल कडाहमें नाष्यो. तब वाके दोय-

टूक भये. सोएक टूकतो संष सास्त्रीके लिलाटमैं लग्यो. अरु दुतीयटूकलि षत सास्त्रीके लिलाटमैं लग्यो. तातें दोउही मूर्छित होय पृथ्वीमैं पडे.॥
इ० भा० अश्व० पर्व० चतुर्थोऽध्याय॥ ४॥ ॥ वैशंपायनउवाच॥ ॥
तापीछे सुधन्वा स्नानकरि जुधमैं आय अर्जुनकी सेना बाणतें विदीर्णक रि जब दोउ सेनाके घोर जुध भयो तब अर्जुन सुधन्वाकी बहुत सेनामारि धनुषमैं सो बाण संधानकरि तिन्है सुधन्वा हसतही काटि अर्जुनके हृदयमैं दस बाणमारे अरु सत सहस्र अयुत प्रयुत बाणवर्षा करि अर्जुनकों आ च्छादनकर्‍यो जब अर्जुन क्रोधकरि आग्नेय अस्त्र चलायो तो सुधन्वा मे घास्त्र करि सांत कर्‍यो फेरी अर्जुन पवनास्त्र चलायो ताकों सुधन्वा पर्वता स्त्रसौं निवारण कियो तब अर्जुन इंद्रास्त्र चलायोजब सुधन्वातीन बाणन सौं छेदन कर्‍यो तब ता संकटमैं अर्जुन श्रीकृष्णकों स्मरण कियोजब- ही श्रीकृष्ण रथमैं आयस्थित भये. तब सुधन्वा बोल्यो हे अर्जुन तूं श्रीकृ ष्णके आगे प्रतंग्या करि सो सुण अर्जुन बोल्यो हे सुधन्वा तीन बाणतैं ते रे सिरकों नहीं पटकोंतो मेरे पितृ सुरनरकमैं पडो. अरु तूंहू प्रतंग्याकरिज- ब सुधन्वा बोल्यो हे अर्जुन तेरे तीन बाणनकों नकाटोंतो घोर गतिकों पा वों जब श्रीकृष्णबोले हे अर्जुन तै वीर सुधन्वाको पुरुषार्थ देषे विना प्रतिग्या प्रमादतै ही करी. अरु तीनही बाणनतें यह कैसे मरेगो तातें यह साहस ही कियो. ऐसै सुणि अर्जुन धनुषपैं कालाग्नितुल्य बाण धर्‍यो ताकों देषि श्री कृष्ण निजपुण्य बाणमैं धरतबोले गोवर्धन धारणतैं मैं गायनकी रक्षाकरी तापुण्यतें यह बाण अर्जुनको मनोरथ सिद्धि करो अरु तिनको युधदेषिवे कों आकासमैं देवताहू आये. तासमयमैं अर्जुन धनुषकों षैंचि बाण चला यो ताहि सुधन्वा एक बाणही करिकाट्यो. तब दुतीयबाण चलायो सोहूका ट्यो. ताहि देषि अर्जुनकी सेनामैं हाहाकार होत भयो. जब अर्जुन तृतीयवा ण साध्यो तावाणके पाश्चिम भागमैं ब्रह्माअरु अग्र भागमैं रुद्रकों स्थापन कर्‍यो. जब श्रीकृष्णहू जा बाणमैं रामावतारमैं जोपुण्य कर्‍यो सो धर्‍यो. तब ताबाणकों आवतो देषि सुधन्वा बोल्यो हे गोविंद तेरे चरण सरणमैं रहों अरु जन्मजन्ममैं दास्य भावतैं मोकों दूरि न करो ऐसै कही अर्ध चंद्र बा-

एतें अर्जुनको तीसरोहू बाण काट्यो ताकों छिन्न देषि सर्व राजा अरु श्रीकृष्णहू हाहाकार करत भये तब ताछिन्नहू अर्जुनके बाणनें सुधन्वाको सिरकाट्यो जब वह सिर उडलहू अर्जुनके हृदयमें प्रहार करि श्रीकृष्णके चरणनमें पड्यो तब श्रीकृष्णहू तासिरकों हस्ततें उठाय गरुडकों दियो अरु गरुडहू तासिरकों प्रयागमें डारिवेकों लेचल्यो जब शिव मार्गमें आय गरुडसों बोले यह शिर कहां लेजायहै तब गरुड बोल्योहे शिव सुरथके शिरकों प्रयागमें डारिवेकों लेजाऊंहूं सो सुणि शिव मस्तक लेवेको गणनकों आग्यादीनी. जब मार्गमें गरुडसों और शिवके गणनसों जुद्ध भयो तहां गण भाजे तब तिनकों देषि नंदीगण आय फूत्कारसों गरुडकों उडायो. तब उडुतही गरुड प्रयागकों पहुंचि ताशिरकों तहांनाषि दियो. जब पडतेसिरकों नंदीगण ग्रहणकरि शिवकों आय समर्पण कर्यो तब ताकों शिवहू सुंड मालामें मध्य नायक कर्यो ऐसे दोउ पुत्रनकों युधमें मरेजाणि क्रोधतें युधकरिवेकों हंसध्वज आयो. तब श्रीकृष्ण राजापें जाय बोले हे हंसध्वज जो भवतव्य हो सो भयो तातें अब अश्व देके अर्जुनसों मित्रताकरो ऐसे श्रीकृष्णके वाक्यतें हंसध्वज अश्वकों अर्जुनके निवेदनकरि तापीछें अर्जुनको पांचदिन निजनगरीमें राष अश्वकी रक्षा करिवेकों आपहू तिनके संग चल्यो ऐसे अश्व अनेक जगे विचरत एक सरोवरमें जलपानकरिवेकों गयो जहां जलपान करतही घोडी भयो. तहांतें दुतिय तडागमें स्नानकरतही व्याघ्रतें अश्वही भयो. ऐसे भ्रमत स्त्री राजमें गयो. तहां प्रमीलानाम स्त्रीलक्षनारी सहित अर्जुनसों युद्ध करिवेकों आई तहां घोर जुद्ध भयो जब आकासवाणी भई हे अर्जुन युद्धमे स्त्रीहत्यारूप साहस मातिकरे. अरु जोजीवनकी इच्छाहै तो याकों बरो ऐसे सुणि अर्जुन तासों विवाह करी लक्षस्त्री सहित वाकों हस्तनापुर पठाई तहांतें अश्व देसनमें भ्रमत भीषण नाम राक्षसके पुर गयो तहां घोर जुद्ध करि राक्षसनकों जीति हस्ति अश्व धन रथ लेके चलत प्रागज्योतिष पुरकों गयो. तब तहांहूके राजा बज्रदंतकों तीनदिनमें जीत्यो तहांतें अश्व सिंधुदेसमें गयो जहां दुःसिला मरे पुत्रकों छोडि वाके बालक कों लेके आय अर्जुनसों बोली हे भ्राता मेरो पुत्रतेरो

नाम सुणतही मरयो यह तेरे भाणजेको पुत्रहै तातें अब याकों राज्यश्रीदा
नकरि तब अर्जुन दुःसलाके मुषतें भाणजेको मरण सुणी आपकीनिं
दाकरि वाबालककों राज्यदेय दुःसलाकों समाधान करि मणिपुर नगरप
हुंचे तहां बभ्रुवाहन राजकरत हो जहां सर्वजन सत्यवादी, स्त्रीपतिव्रता
अरु प्रजा श्री कृष्ण भक्त ऐसो मणिपुर नगर द्वितीय वैकुंठ समदेषि
अर्जुन हंसध्वजसों पूंछीहे राजन् यह नगर कोणको है सो कहो तब
हंसध्वज बोल्यो हे अर्जुन यह नगरको राजा बभ्रुवाहनहै ताकों मैंसु
वर्णरत्नके भरे ऐसे हजार सकट प्रतिवर्ष करद्यौं हौं अरु सब गुणयु-
क्त यह राजा नारायण तुल्यहै. अरु सुमति नामा धर्मात्मा मंत्रीहै. तातें
यासों युद्धकरि जीतिवो कठिनहै. ऐसे वार्ताकरतही अर्जुनके किरीटप
र मृत्यु सूचक गीध आय बैठ्यो ताकों देषि सर्वही त्रास पाये अरु ताही
अवकासमें बभ्रुवाहनके सेवक अश्वकों पकडि लेगये. तहांजाय स-
भामें सिंघासनपै बैठि बभ्रुवाहनकों दिषायो. तब बभ्रुवाहन वा अश्व-
के पत्रकों बांचि युधिष्ठिर अश्वमेधको अश्व अर्जुनताको रक्षक जाणि
सुमति मंत्रीसों पूंछ्यो हे सुमति मेरीमाता अपने पिताके मंदिरमें नृत्यक
रतही तब तालमें चूकी जाणि याकों श्राप दियो. हे पुत्रीतूं जलमें मकरि होय
रहेगी. अरु जब अर्जुनको चरण स्परस होयगो तबतूं निजरूप पावैगी.
अरु अर्जुनही तेरो भर्ता होयगो. सो वृत्तांत तैसेही भयो. तामें अर्जुनतें
में पुत्र भयो जब अर्जुन मोकों अरु मेरी माताकों छोडि युधिष्ठिरके पास
गयो. तापीछे मैं मेरे मातामहकों बडो राज्य पायो. पै पुत्र अर्जुनकोंहूं सोत्र
वहे सुमति मेरे पिताको अश्व येजोद्धा विना विचारेंही ल्याये. तातें अबक
हा कियें. कुसल होय सो कहो. जब सुमति बोल्यो हे राजन् यह कार्य वि
ना विचारेंही भयो. तातें अब बहु वित्त राज्य सहित अश्वकों अर्जुनकों अ
र्पणकरि प्रसंनकरो. अरु जैसे अर्जुन रक्षाकरेहै तैसेंही वर्षपर्यंत तुमकों
या अश्वकी रक्षाकरिवो जोग्यहै. ॥ इ० भा० अ० अ० ॥ ५ ॥ वैशंपायनउवाच ॥
ऐसे सुमतिकौ वचन सुणि बभ्रुवाहन सेना सहित अश्वकों आगेकरि अने
क प्रकारकी अद्भुत सामग्रीलेय अर्जुनपै जाय प्रणामकरि सनमुख ठाढो.

होय हाथ जोडि बोल्यो. हे तात मै तुह्मारो पुत्रहों चित्रांगदा मेरी जननी है अ
रु उलूपीने मोकों पाल्यौ है. बभ्रुवाहन मेरो नाम है. अरु मेरो आपको यह वृत्तां
त जाणे विना मेरे योद्धाननैं अश्वकौं ग्रहण कियो. तातें अब आप या अश्व
कौं ग्रहण करो. अरु यह राज्य अंगीकार करि मोकौं आग्याकरिये ऐसे स्र
णि प्रद्युम्नकौं आदि दे सबही वीर अर्जुनसौं बोले. यह प्रणाम करत ही तका
री पुत्रकों हृदयसौं लगायकै मिलो. यह अति तेजस्वी बुधिमान है. ऐसे स्र
णि भवतव्यताके बस होय अर्जुन ताके सिरमै लात मारि क्रोधतें बोल्यो हे मू
ढ ऐसो भयभीत तूं मेरो पुत्र नहीं चित्रांगदामें वैश्यतें तूं भयो है. अरु पांड
ववीर्ज तूं नहीं है. प्रथम अश्व कौन बलतें ग्रहण कियो अब मेरे बाणप्र
हार लागे विनाही यह कायरता कैसे आई अरु देषि पुत्र मेरो अभिमन्यु हो
जो युधमें द्रोणादिक वीरनकौं विमुषकरि चक्रव्यूह भेदि युधिष्ठिरकी रक्षाक
री. अरु तेरे बाणप्रहार हृदयमें लागे विना हे दुर्बुद्धि भयभीत कैसे भयो अ
रु गंधर्व राजकी पुत्री तेरी जननी घरघर नृत्यकरी ताके संग तूं मानकरि. ऐ
से स्रणि बभ्रुवाहन क्रोधतें भृकुटी चढायल्याई. वस्तुमात्र सब पाछी पठाय
युद्ध करिवेकौं रथपै सवार होय पितासौं बोल्यो. हे तात युद्धकों तयार हो बाण
नतें तुमकों मारौंगो. तेरो कोण रक्षक है ऐसे कहि युद्धमें अग्रेसर जो अ
नुसाल्व ताकौं बाणप्रहारनतें मूर्छित करि पृथ्वीमें पटक्यो ताको मूर्छित दे
षि प्रद्युम्न युध करिवेकौं आयो. तब ताहूकौं एक बाणनतें मूर्छित कियो ता
पीछे वृषकेतु नीलध्वज अरु पुत्र सहित यौवनाश्व सपुत्र हंसध्वज इनहू
कौं एक एक बाणनतें मूर्छित किये. और अनेक वीरनकौं बाणनतें छि
न्नभिन्न करि भजाये. तहां कोऊ वीर भाजते कटे हुवे गजके सरीरमें प्रवे
स कियो तबही. ताकों कोई पिसाच आय षैंचि वाकी आंषि निकासि हृदय
भक्षण कियो. अरु काहू वीरको कट्यो सिर नेत्रनसौं आपके कबंधकौं ना
चते देषत भयो. ऐसे बभ्रुवाहन अर्जुनकी सेनाकौं छिन्नभिन्न करि रथ हाथी
अश्व धन रत्न दासी दास ये सब आपके नगरमें पहुंचाये. ॥ इति॰ भा॰
अश्व॰ पर्वणि षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥
बभ्रुवाहनके अरु अर्जुनके ऐसो जुध भयो जैसो रामचंद्रके अरु कुसके भ

यौ जब जनमेजय बोल्यौ हे मुनि रामचंद्र के अरु कुसके कौण कारणतें कैसें जुध भयौ सो कहो तब वैशंपायन बोले हे राजन् रामचंद्र रावण कुंभकर्ण इंद्र जिति लंकावासी राक्षसनकों मारि सीता सहित अजोध्यामें राजकरत हे. तहां सीताकों गर्भवती देषी बोले हे सीता तुह्मारी वांछा कहा हे. तब सीता बोली हे नाथ मेरी वांछा यह है बनमें जाय मुनिनकी स्त्रीनकों वस्त्र अलंकार देय उनकी सेवा करौं यह सुणि रामचंद्र तथास्तु कहि बाहिर आये तहां दूतके मुषतें रजककी करी सीताकी निंदा सुणिके बोले. हे लक्ष्मण या सीताकों वालमीकके आश्रम निकट छोडो जब लक्ष्मण रथमें बैठाय सीताकों वालमीकके आश्रम निकट छोडि रामचंद्रपें आये तहां रुदनकरती सीताकों देषि वाल्मीक निजाश्रममें लेगये. जहां सीताकों दोय पुत्र भये. जिनकों जात कर्म नामकर्ण वाल्मीक ही करि कुस लव दोउनके नाम धरे तापीछे रामचंद्र ब्रह्महत्याके भयतें अश्वमेध यज्ञकों प्रारंभ कियौ. तायग्यको अश्व पृथ्वी यात्रा करत वाल्मीक मुनिके आश्रम गयौ. जा अश्वकों लव कुस बांधि रामचंद्रकी सेनाकों मारि भजाई. तब रामचंद्र सेनासहित आये. तिनही कों कुस छिणमात्रहीमें जीते. तैसेही हे राजा जनमेजय बभ्रुवाहन हू अर्जुनकों जीत्यौ अरु औरहू बभ्रुवाहनके पराक्रम सुणो तापीछे युधकरते हंसध्वजके पुत्र सुवेगकों एक बाण प्रहारतें मूर्छितकरि और वीरनके सिर पक्का फललों पृथ्वीमें नाषे तासेनामें कर्णको पुत्र अरु अर्जुन ये दोयही बाकी रहे. औरमरे वीरनकों उलूपी औषधि बलतें राषत भई. जब अर्जुन वृषकेतसों बोल्यौ हे वृषकेत तूं मेरे पासरहे रहैगो तो मरैगो. तातें भीमके पास जाय मेरो मरण कहो. अरु यज्ञदीक्षित युधिष्ठिर यग्य समाप्त नही कर्यौ सो मेरे हियेमें सालै है. तब वृषकेत बोल्यो हे अर्जुन में मृत्युके भयतें तोकों छोडि जाऊं नहीं. अरु जो जाऊं तो मेरो पितामह सूर्य लज्जित होय. ऐसे बोलि पांच बाण बभ्रुवाहनके दिये तब बभ्रुवाहन वृषकेतकौ शिर काटि अर्जुनके पांवनमें पटक्यौ जब भगवन्नामकीर्तन करत ऐसो वृषकेतको शिर अर्जुन उठाय हस्तमें ले विलापकरत भयौ हे पुत्र मे तो बिना युधिष्ठिर पें जाय कहा कहौंगो. मेनें रे पिताकों मारि अरु तोकोंहू राज्यलो मेनें नराषो. ऐसे कहि उच्च स्वरसों रुदनकरत

भयो. हे श्रीकृष्ण तुम कहांगये. याकष्टमें मेरो परित्याग कैसे कियो. ऐसैबो
लि वृषकेतको सिर हृदयमें धरि मूर्छित होय पड्यो जब बभ्रुवाहन अर्जुन
के हृदयमें धनुषकोटिकों प्रहार करि बोल्यो हे पार्थ हम वैस्य है सोतोकौंअ
रु वृषकेतकों तोलिवेकों आये है जो न्यून अधिक होय सो देषो ऐसे सुणि
अर्जुन वृषकेतको सिर भूमिमें धरि धनुष धारि बोल्यो तें मेरे सर्ववीर मारेता
तें अब पर्वत भेदी मेरे बाणकों प्रहार सहो ऐसे बोलि बाणप्रहार कियो तब
बभ्रुवाहनता बाणकों काटि अर्जुनकों मूर्छित करि बोल्यो हे पार्थ द्रोणाचार्य
तें पाई धनुष विद्या तूं कैसे भूल्यो. अरु पतिव्रता मेरी जननीकों वृथादूषि
त करि ताके पातकसों विद्याहु भूल्यो. अरु तेरे स्मरणतें श्रीकृष्णहु आये
नहीं. ऐसे सुणि अर्जुन उठि एक बाण बभ्रुवाहनके हृदयमें मार्यो जब ब
भ्रुवाहन ज्वालारूप अर्ध चंद्राकार बाणनतें अर्जुनको शिर छेदन कियो
तब सर्ववीर हाहाकार करत भये. तहां चित्रांगदा आय पुत्रके मारे पतिकों
मर्यो देषी विलापकरत भई. हाकांत इहां आय सेवक जनसों संभाषणवि
ना पुत्रके आतिथ्यतें रूषित होय सोवेहे कहा. ऐसे विलापकरि सपत्नीउ
लूपीसों आलिंगन करि पृथ्वीमें लूठत भई जब बभ्रुवाहन माताकी यह
दसा देषि दुषतें मरिवेकों तयार भयो तब उलूपी संजीवनि मणिको स्मरण
कियो जब पाताल लोकसों मणिआई तामणिको लेय सिर कबंधसोंलगाय
अर्जुनके हृदयमें मणि धरि जिवायो. औरहु मरे वीरनकों मणितें जिवाये
जब अर्जुन लज्जित होय पृथ्वीकों देषत भयो. तब उलूपी हाथजोडि बोली
हे नाथ तुम धन्यहो. पुत्रतें पराजय पुन्य पुरुषही पावे है. जब तुम भीष्म
कों मारे. तब वसुनको श्राप भयोहो भीष्मकों मारिवेवालो निजपुत्रतें म
रैगो. अरु तेसेही. गंगाकोहु श्राप भयोहो तातें यहदसा भई और अन्यथा
हे रुद्रविजई तोकों कोणजीते अरु मेरो पिता मेरी प्रार्थनातें तुह्मारी करु
णाकरी संजीवक मणि पठाई तातें तुम सहित सर्ववीर जीये. ऐसे सुणि
अर्जुन दोउ भार्यासों पुत्रसों मिलि. प्रसंन्न होय पुत्रकों संगलेय अश्वसहि
त आगे चलिवेमें संकित होय श्रीकृष्णको स्मरण कियो. तहां श्रीकृ
ष्ण सहित भीम आयो. जब श्रीकृष्ण अनेक इतिहास करि अर्जुनकोस

माधान कर्यौ. तब बभ्रुवाहन श्रीकृष्णके भीमके चरणनमें प्रणाम करि अने-
करत्न मणिमाणिक्य भेटकरे जब श्रीकृष्णकी आज्ञातें भीमसेन चित्रांगदाउ
लूपीको धन, अद्भुतगज, अश्व रत्नादि सामग्री सहित हस्तनापुर पहुंचाययु
धिष्ठिर पास जाय सर्व वृत्तांत कह्यो. अरु कुंतीहू आपके चरणमें प्रणाम कर
ती चित्रांगदा उलूपीकों आशीर्वाद देय निज भवनमें राषी. ॥ इ० भा० अ० प०
सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥ ॥ तापीछे श्रीकृष्ण सहित अर्जुन बभ्रुवाहनकों
संगलेय आगे चले. तहां मार्गमें ताम्रध्वज पिता मयुरध्वजके अश्वमेधके अ
श्वकी रक्षा करत मार्गमें अर्जुनके अश्वकूं आपके अश्वतें मिलीत देषि बहुल
ध्वज मंत्रीसों बोल्यो यह अश्व कौणको है. जब मंत्री पत्रबांच निवेदन कर्यो त
ब ताम्रध्वज अश्वकों ग्रहण करि युधकों तयार होय बोल्यो. हे बहुलध्वज म
हाराज, मयुरध्वज सप्तम अश्वमेध करे है. सो या अश्वतें अष्टम अश्वमेधहू
होगयो. ऐसे बोलि अश्वकों रत्नपुर पठायो तापीछे आप आय अर्जुनके सर्ववी
रनकों मूर्छित करे. तब अर्जुन श्रीकृष्णसों बोले हे श्रीकृष्ण यह कौण राजा
है जाके पुत्रने सर्वसेना जीति जब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन यह रत्नपुरपति
मयूरध्वज ताको पुत्र ताम्रध्वज है अब याको साहस मैं तोकों दिषाऊंगो. ता
तें मैं तो वृद्ध ब्राह्मण वणो हो अरु तूं बालक बणि मेरे संग चलि ऐसे कहि श्री
कृष्ण अर्जुन सहित यग्य मंडपमें आय तहां स्त्री सहित दीक्षित राजासों बोले
हे राजेंद्र तेरे स्वास्ति हो. मैं सिष्य सहित आयो हों ताकों देषि जब मयूरध्वज
बोले हे. ब्राह्मण मैं उठो हों नमस्कार करों हों अरु तुमकों नमस्कार करे विना
ही आशीर्वाद मोकों आपहूतें अधिक है. तब ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् कार्यक
रवेके समयमें ब्राह्मण नमस्कार पहलेहू आशीर्वाद देत है. ताते मोकों अर्थी
जाणो जब राजा बोल्यो हे ब्राह्मण तुह्मारो वांछित करोंगो. तब ब्राह्मण बोल्यो
हे राजन् मैं धर्मपुरसों तेरे नगरमें पुत्रके विवाह करिवेकों आवै हों सो मार्ग
में सिंघ मेरे पुत्रकों पकडि दंष्ट्रा नखसों फारिवे लग्यो. तब मैं वासों प्रार्थना करी
जब सिंघ बोल्यो हे ब्राह्मण मेरे ग्रसेकों कालहू छुडाय नहीं सकै तातें तू सिष्य
सहित घरजा और संतान पैदा करि तब मैं सिंघसों कही हे सिंघ पुत्रकों छोडि
मेरो भक्षण करि. जब सिंघ बोल्यो तेरी आयुष्य अधिक है हम आयुष्य हीनकों

मारे है तब मैं फेरि सिंघसों कही तुमकोंण उपायतें याकों छोडो . जब सिंघ बोल्यो सो सुणिये हे राजन् तेरे पास आयो हों पैसो कहतें मागतें मोकों लज्जाहोय है. तब राजा बोल्यो हे विप्रेंद्र मेरे देसमें क्षुद्र सिंघ हैही नहीं. अरु नर सिंह विना तेरे पुत्रकों कोण ग्रहण करै जब ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् सिंघहो अथवा नरसिंघहो . जोजानें माग्योहै सो दिये . मेरो पुत्रबचैतब राजा बोल्यो हे ब्राह्मण सिंघकहामांग्योहै सोतुम कहो . जोतुम कहोगे सोही द्योंगो . जब ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् सिंघकहि मयूरध्वजको छिन्न अर्धसरीर देतो तेरे पुत्रकों छोडों तबमें कही राजा आपको अर्धसरीर कैसे देयगो . जब सिंध बोल्यो दधीचिनें अर्थी कैसें दीये. तातें दाताकों कहा अदेयहै . तासों तूं राजासों जाचनाकरि पुत्रको जिवायोहो. तैसेही ब्रह्मज्ञ जाणि मैं तोकों कह्योहै . जब मयूरध्वजबोल्यो हे विप्र तुमयामंडपमें रहो मैं तुमकों अर्धसरीर द्योंगो . ऐसैकहि राजा पुत्रकों राज्य देवेकी आग्या करिबोल्यो हे ब्राह्मणहो मैया श्रीकृष्णरूप ब्राह्मणकों अर्ध सरीर दानदेय . पूजोंगो . सोतुम सर्वब्राह्मण देषो अरु करोत सहित षातीकों बुलाय दोय स्तंभरोपि तिनके बीच मेरे सरीरकों राषि छेदन करो . अरुजो मेरो हितुहै सो याकार्यकों रोकोमति ऐसें राजाको वचन सुणि सर्वहि व्याकुल भये . तब राजा अनेकदानदेय दोऊ स्तंभनके बीचि आयो . तहांषाती आप राजाके सिरपें करोत धरी. तब राज्या बोल्यो मेरे या अर्ध सरीरदान करिके गोविंद प्रसन्नहों . यहदेहब्राह्मणके अर्थ आयो . तातें मेरे बडो आनंद भयो . जहां राणिकुमुद्वती बोली हे राजेंद्र तुमब्राह्मणनकों अर्धदेह दान देवो कह्योहै . तातें मैं अर्धांगी हों सोमोकों देय सुषी रहो . ऐसें सुणि ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् सिंघ दक्षिण अर्धसरीर मांग्योहै स्त्री वामांगीहै . ताकों कैसे ग्रहण करेगो . तब पुत्र ताम्रध्वजबोल्यो हे ब्राह्मण जोपुत्र सोपिता पितासोही पुत्र इनमें भेदहै नहीं तातें मोकोंलेबलि अरु सिंघ मेरे तरूण पुष्ट सरीरतें संतुष्ट होयगो . जब ब्राह्मण बोल्यो . हे राजन् करोतको एक भागतो राणी ग्रहण करो एक भाग पुत्र ग्रहण करो . ऐसें विदीर्ण किये दक्षिणार्ध सरीरकूं सिंघ अंगिकार करेगो . जब मयूरध्वजस्त्री पुत्रके हस्तमें करोत ग्रहण कराय आपके सरीरपें धर्यो ताकों देव ब्राह्मण, पुरजन देषि विस्मित भये जब राणि और पुत्र करोत पैंचिवे लगे . तब सर्वही-

हाहाकार करत भये. तिनकौं सब्द स्रुणि राजाके वाम नेत्रतें जल पड्यौ ताकौं देषि ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् अश्रद्धाके दिये दानकौं विवेकी नहीं लेतहैं. तातें मैं पुत्रविनाही रहौंगो. अरु अंस्रुपात करते राजातें दानतो नल्यूंगो ऐसै कहि ब्राह्मण चल्यौ. जबराजा हसिकै बोल्यो हे ब्राह्मण मेरो भाव स्रुणिकै जावो दक्षिण अंगतो ब्राह्मणके निमित्त आयौ अरु वामांग वृथाजायगो. जातें वामनेत्रमें अंस्रु आयौ. दक्षिण अंगमें प्रसंन्न होयकै देतहौं ताकौ ल्यो. ऐसे स्रुणि श्रीकृष्ण निजरूप दिषाय राजासौं आलिंगन करि बोले हे राजेंद्र तूं धन्यहै. मेरे अनेक छुलतैंहू तूं धर्मतें नही छोड्यौ अरु या युधिष्ठिरके अश्वतैंहू तूंही यग्यकरि मैं प्रसन्नहौं तब मयुरध्वज बोल्यो हे ब्रह्मरूप गोविंद तुम वंस सहित मोकौं पावनकर्यो. अरु कोटि यग्यनतैंहू नही मिले एसे फलकौं पाय एक यग्यकौं कोणकरे ऐसै कहि श्रीकृष्ण अर्जुनकौं सन्मानकरि आपके अश्व सहित युधिष्ठिरके अश्वकी रक्षाकौं आपहू संगभयो. ॥इति· भा० अ० प० अष्टमोऽध्यायः॥ ८ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ तहांतें चालिकै दोउ अश्ववीरवर्मांके सारस्वत पुर पहुंचे जहां राजाकोजामाता यमराज प्रजा सहित राजाकी रक्षा करतहो तावीर वर्मानें दोउ अश्वकौं ग्रहणकरे. जब अर्जुनके सर्ववीर युद्ध करते हैं तिनकौं यमराजजीते. तब अर्जुन श्रीकृष्णसौं बोल्यो हे नाथ मेरीसर्व सेनाकौं मारि गर्जनाकरेहै. जब श्रीकृष्णबोले हे अर्जुन यहराजाकोजामाता यमराजहैं तब अर्जुनबोल्यो हे श्रीकृष्ण याराजाकी पुत्री यमराज कैसै वर्यो जब श्रीकृष्णबोले हे पार्थ वीर वर्माकी मालनी नाम पुत्रीही जब राजावासौं पूंछी तू कोणकौं वरैगी. तब कन्याबोली हेतात सर्वप्राणी मरिकै जाके वस होय ता देवकौं वरौंगी. ऐसै स्रुणि राजा यमसूक्तकौं ब्राह्मण द्वारा पाठकराय यमकी आराधना करावत भयो तब नारदमुनि यमसौं जायबोले हे यमराज, वीरवर्माराजाकी पुत्री तुमकौं वर्यो चाहैहै तापै कृपा करो ऐसे स्रुणि यमराज मालनीकेवरवेकौं रोग सेनाके अष्टोत्तर नायकनसौं बोल्यो हे रोगनायकहो तुम मेरे संगचलो तब सब रोगनको नायक क्षय रोग बोल्यो हे यमराज मेरो समागम वा देसमें कैसै होय उहांको राजा प्रजा सदाविष्नु भक्तहैं. जब यमराज बोल्यो आपां

तौ उहां सुषवासकौं चलैहै उनकौ पीडा नहीकरैगे. और उनके सत्रुकौं पीडाक रैगे. ऐसै उनसबनकौं सिक्षाकरी. सेनासहित सारस्वत पुरमें आय मालनी नाम राज पुत्रीकौंवरी. ऐसै धमराज या राजाकौ जांमातहै ऐसै सुणि फेरि अ र्जुनके अरुवीर वर्मके घोर युध भयौ जब वीरवर्मा सर्व वीरनकौं मूर्छितकरि श्रीकृष्ण अर्जुन सहित रथकौं घीसि निजपुरमै लेचल्यौ तब श्रीकृष्णबोलेहे वीरवर्मा मै तेरे पराक्रमतैं प्रसन्न भयौ. ऐसे सुणि वीरवर्मा बोल्यो हे अर्जुनच राचर सबनकौं भोविना जीतिसकैहै परंतु मै श्रीकृष्णकी प्रसन्नता चाहतहौं अब मै श्रीकृष्णको दासहौं ऐसैकहि धनुषकौ त्यागकरि श्रीकृष्णके चरण नमै प्रणाम करि रथ गज अश्व सहित असंष्यधन अर्पणकरि आदरपूर्व क पांचरात्रि नगरमैं राषि अश्वकौं छोडि आपहू सेवानिमित्त संगचल्यौ तापीछै उहांतैं चालि दोउ अश्व कुंतल पुरगये. उहां चंद्रहास्य राजा राजकरैहो त- हां ताके नगरमैं अश्वकौं गयेजाणि श्रीकृष्ण अर्जुन सहित सकलवीर चकि तभये. तहां नारद मुनि आय बोलेहे अर्जुन तुह्मारे दोउ अश्व चंद्रहास्यके नगरमै गयेहै सोतुम युद्ध कियौ चाहौतो तुह्मारे सर्व योद्धावाकी षोडसांसकला कौं नहीं पावैगे. तब अर्जुन पूंछी हे मुनि चंद्रहांसकौ ऐसौ प्रभाव कैसे भयौ जब नारद बोले केरल देसको राजा सुधार्मिक नाम भयौ सो युद्धमै मरयौज ब वाकी रानी वाकी संग सती भई तब राजाकी धाय वाके पुत्रकौ मात्रहीनजा णि कुंतल पुरलेजाय पालना कियौ. जबवह बालक तीनवर्षको भयौ धाइहू मृत्युकौं प्राप्त भई तबकोई पुरवासीनैं धर्मतैं बालककौं पालन कियौ जबव- ह बालक पांच बरसको भयौ तब पुरवासी बालकनके संग क्रीडा करत भयौ. ताकौं कोइनारीतौ भोजन करावै. कोई नारी वस्त्र पहरावै. कोई आभूषण पह रावै ऐसै रहतै कोई समै धृष्टबुद्धि नाम मंत्रीके घरगयौ. ताकेघर मुनि भोज नकौं आयेहै. तिनकौं बालकनैं प्रणाम कियौ. तब मुनि आशीर्वाद देत भये. तापीछै बालकसहित वाके मुनि भोजनकरि धृष्टबुद्धि सौं पूंछ्यौ यहबालक कौणकौहै. जब धृष्टबुद्धि बोल्यौ हे मुनि यानगरमैं ऐसै अनाथ बालक अनेक है. मै राज काजमैं रतहौं तातैं याकौं नहीं जाणौ तब मुनि बोले हे धृष्टबुद्धि यह मनोहर सुभ लक्षण युक्त बालक राजकरिवे लायक है तातैं याकौं यत्नतैं पा-

लन करो. योही तेरो संपदानकौं स्वामी होयगो ऐसे बोली मुनिश्वर तोगये. जब धृष्टबुद्धि क्रोधयुक्त होय चंडालनकों बुलाय बोल्यो हे चंडालहो याको वनमें लेजाय मारि कोई शरीरको अंग चिन्ह ल्याय मोकों दिषावो तबमैं दुग्धवती अनेक महिषी तुमकों द्योंगो. ऐसे स्रुणि हर्षित चांडाल सस्त्रलेय मारिवेकौं बालककूं वनमें लेगए. जब बालककूं मार्गमैं सालिग्राम सिला पाई. ताकों मुषमें धरि तिनके संग चलत चलत श्री कृष्णकों स्मरण करत भयौं. जब एकांतमें चांडाल षड्ग प्रहारतें वाको मारिवेको विचार कस्यो तबवे चांडाल हरिकी माया करि मोहित परसपर बोले. यह बालक अति स्रुंदर है धृष्टबुद्धि याकौं क्यूं मरावे है. अरु हम पूर्व पातकतें चांडाल भये. अब ऐसे बालकके वधतें यातेंहू नीच होयंगे. तातें याकौं न मारे अरु याके वाम चरणमें षष्ठी आंगुली है ताकों काटि धृष्टबुद्धिकों दिषावेंगे. ऐसे कहि छठी आंगुलीकों काढि वा बालक कों छोडि धृष्टबुद्धिकौं चिन्ह दिषायो. जब धृष्टबुद्धि हर्षित होय मनमें यह विचारि मैं मुनिनकों वचनहू मिथ्या कस्यो तापीछे चांडालनकों अनेक महिषी दीनी. तब वह बालक अंगुलीके छिद्रमें रुधिर श्रवतो देषि हरिनाम संकीर्तन कस्यो. ता देसको स्वामी कुलिंद नाम राजा रुदन करत बालककों देषि अश्वतें उतरि बालकके अंग पौंछि पूंछत भयो. हे बालक तेरे मातापिता कौण है. अरु तूं क्यों रुदन करे है जब बालक बोल्यो मेरे मातापिता श्रीकृष्ण है. वाके दरसन विना मैं रुदन करों हों. ऐसै स्रुणि राजा विचार कियो जो मेरे पुत्र है नहीं तातें यह विष्णु भक्त बालक मोकों श्रीकृष्णनें दियो. ऐसे विचारि राजा बालककों हृदयमें लगाय अश्वपें चढाय चंदनावती पुरीकों ल्यायो जब मेधावती राणीकों वह बालक निवेदन करि राजा बोल्यो. हे प्रिये पापकरतें मोकों यह पुन्यफल भयो. मृगनके मारिवे गये. मोकौं यह पुत्र प्राप्त भयो. तातें चंद्रहास्य नाम करि याको उत्सव करो जब राजाराणी प्रसंन्न होय पुत्र उत्सव करि याको पालन कस्यो. तब वह चंद्रहास चंद्रमाकी नाई दिनादिन प्रति वृद्धिकों प्राप्त भयो. तापीछे सातवरसकेकौं गुरु विद्या पढावत भयो. जब बालक और सब छोडि हरि ये दोय अक्षर ही पढत भयो. अरु गुरु और अक्षर पढायवे लग्यो तब चंद्रहास्य बोल्यो हे गुरु जामें हरिनाम नहीं सो सास्त्र ब्रह्मा पढावे तो मैं नहीं पढों ऐसे बोलि हरि नामही जपत भयो.

अरु एकादसीके दिन अमृततुल्य हू भोजन नहीं करत भयौ. ऐसै रहतैं अ
ष्टम वरसमैं यग्यो पवीत संस्कार पाय सकल वेद सास्त्र पढि धनु र्विद्यामैं निपु
ण भयो. तापीछै षोडसवै वरसमैं राजासौं बोल्यो. मोकौं दिगविजयकी आ
ग्या होयतो सकल राजनकौं जीति धनल्याऊं जब कुलिंद बोल्योहे पुत्र ए
कलौहीतूं कैसै दिगविजयकरैगो. ओर पृथ्वीमैं राजा दुर्जय बहुतहैं. ह
मारो स्वामी धृष्टबुद्धि कुंतल राजाको मंत्रीहै तातैं सतग्रामकौं देस मोकौंदी
नौ है वाके बलवान अधिकारि तोकौं ऐसो सुणि मेरे देसकौं नित्य पीडाक
रैहै. तौहू तूं वासुदेवके स्मरणतैं सिद्धि पावैगो. ऐसी पिताकी आग्यापाय
वह चंद्रहास्य दिगविजयकौं गयौ. उहांजाय सर्व राजानकौंजीति सुवर्ण
रत्न मुक्तानसौं पूर्ण असंख्य सकट लेय चंदनावती पुरी आय सकल कुलिं
दकौं निवेदन कर्यो. जब कुलिंद हू चंद्रहास्यकूं अभिषेक करंवाय आप-
को राजदीयो. तब चंद्रहास्य राज्य सिंघासन पाय सकल पुरवासीनकौंबोल्यौ
हे पुरवासीहो आजके दिनतैं दसमीके दिन ब्रह्मचर्य रहणो. हविष्यान्न भोजनक
रणो. अरु एकादसीके दिनब्रत करि हरिको उत्सव करणो. ओरजो ऐसै नकरैसो
मेरो सत्रुहै. ओर द्वादसीके दिन सुवर्ण रत्नवस्त्र, ब्राह्मणनकौं भोजन कराय
नदेसो भी मेरो सत्रुहै ऐसै पुरवासीनकौं आग्या करि तापीछै हरि भक्त चंद्र
हास हु वापी कूप तडाग शिव विष्णुके मंदीर योगीश्वरनके स्थान अनेकब
णाय दानकरत भयो. अरुनीततैं प्रजा पालत भयो. ऐसै चंद्रहासको प्रभा
व सुणि देसांतरवासी अनेक लोक चंदनावती पुरीमैं आय बसत भयो. न
गरीमैं अपार समृद्धि देषी कुंलिद चंद्रहाससौं बोल्यो हे पुत्र कुंतल पुरकेरा
जाकौं दस हजार स्वर्ण मुद्रा देणी. तातैं अर्ध धृष्टबुद्धिकौं देणी तातैं अ-
र्ध धृष्टबुद्धिकी स्त्रीकौं देणी तातैं यह द्रव्य धृष्टबुद्धिके प्रसन्न करिवेकौं
सीघ्रही पठावो. इहांतैं छह जोजन कुंतल पुर है तहां कुंतल पालराजा गा
लव पुरोहित धृष्टबुद्धि मंत्री सहित राज्यकरै है. तातैं राजाकौं मंत्रीकौं मं
त्रीकी स्त्रीकौं जो देणो होयसो गालव पुरोहितपैं पठावो. ऐसै पिताको व
चन सुणि चंद्रहास विनतिको पत्रलिष धन सेवकनके हाथ पठायो. तब
चंद्रहास्यके सेवक एकादसीके दिन स्नान पूजन करि कुंतल पुरमैं गये.

तहां चंदन चर्चित आलेवस्त्र लपेटे ऐसे चंद्रहास्यके दूतनकों देषि धृष्टबुद्धि बोल्यो हे दूतहो तुम आले वस्त्र पहरे हो सो तुह्मारो स्वामी सखो कहा जबदूत बोले यह अमंगल कुलिंदके सत्रुनके हो अरु कुलिंद पुत्र चंद्रहास्य दिगविजयकरि अपार धन ल्यायोहै तातें तुमारी प्रसंन्नताके निमित्ति यह धन पठायोहै ऐसे स्रुणि धृष्टबुद्धि आश्चर्यपाय सेवकनकूं भोजनके अर्थ सामग्री दिवावत भयो तब सेवक बोले हे मंत्री आज एकादशीहै तातें भोजन करे नहीं ऐसे स्रुणि धृष्टबुद्धि क्रोधकरि बोल्यो अरे सेवक हो केवल कुलिंदही मदोन्मत्त नहींहै. तुमहू मदोन्मत्तहो मेरे दिवाए अन्नको भोजन नही करोहो तातें अब कुलिंदको निगड बंधन करि मारोंगो. ऐसे बोल दंडलेके उठ्यों तब सेवक भयते भाजि चंद्रहास्यसों आइ व्रतांतकह्यो तापीछे धृष्टबुद्धि विचारकरि मदनपुत्रको निज अधिकार सूंपि कुलिंदके नगरकों गयो तासमें धृष्टबुद्धि की पुत्री विषीया बोली हे पिता तुमकहा जावोहो अरुकहा ल्यावोगे. तब धृष्टबुद्धि बोल्यो हे विषीया तू मंदिरमें जाइ क्रीडाकरि मैं तेरे वास्ते वर लेवेकूं जाऊं हों ऐसे कहि मंत्री कुलिंदके पुरकों गयो तहां कुलिंद अकस्मात धृष्टबुद्धिकों आयो देषी सन्मुषआय पुत्रसहित प्रणाम करि पूजन कियो. जबधृष्टबुद्धि कुलिंदसों पूछी हे कुलिंद यह पुत्र तेरे कब भयो अरु ते पुत्रजन्म हमकों स्रुणायो क्यूं नहीं जब कुलिंद बोल्यो हे धृष्टबुद्धि मेंवनमें शिकारकोंगयोहो तहां यह पुत्र मिल्यो तबमें छठी आंगली कटी रुधिर वहत. ऐसे पांच बरसके कों ल्यायो और सपुत्रतेंहू अधिक मान्यो ऐसो यह विष्णुभक्त चंद्रहास्य नामहै. ऐसे स्रुण धृष्टबुद्धि नेत्रमीच विचार कियो अरुजाणी यहबालक वहीहै. उन चंडालननें षष्टी आंगली काटि मोकों दिषाइ मोकूं ठग्यो तातें अबजो भयो. सो भयो. परंतु में मुनिनको वचन अन्यथा करूंगो ऐसे विचारक्रोधकों छिपाइ धृष्टबुद्धि बोल्यो हे कुलिंद ऐसे पुत्रकी प्राप्त तें तेरा जन्म स्रुफलहै. अरु मेरे चित्तमें बहुत आनंद भयो ऐसे उपरतें मधुर वचन बोलि सहतकी लपटी छुरीलों अपएसे ढके कुपलों ह्रदयमें दुष्टविचार कियो मुनिनको वचन मिथ्या केसे होई. ॥ इ० भा० अ० नवमोध्यायः ॥९॥ नारदउवाच ॥ तापीछे कुबुद्धिनको शिरोमणि धृष्टबुद्धि यह विचार कियो या चंद्रहास्यको

विषखवायमारणौ ऐसे विचार पत्रमंगाइ तामें योंलिख्यो. ॥ श्लोक ॥ स्वस्ति श्रीरस्तु मदनेवक्तुंकारणमीदृशं ॥ चंद्रहासोहितोतीवमयायं संप्रदांप्रभुं १ ज्ञातव्यानात्र संदेहः पुत्रकार्यंत्वयेदृशम् ॥ मारूपंमावयोद्राक्षीकुलंशीलप- राक्रमम् ॥२॥ विद्यावित विलंबेमामित्रस्यैकारायिष्यसि ॥ विषमस्मैप्रदात व्यंत्वया मदनसत्त्वरं ॥ ३ ॥ यावंतीयामिनि ध्यात्वाकृतार्थस्यामयद्वयाः ४ ॥ अर्थ ॥ हे मदन तेरो कल्याण होइ लक्ष्मीहो यह चंद्रहास्य तोकूं कोई कारण कहिवेकूं आवेहै सो यहमेरो अत्यंत हितकारीहै अरु मेरी संपदाको स्वामीहै ऐसे याकौंजाणौ और संदेह नकरो अरु हे पुत्र तोकूं यहकार्य करणोहो- और याको रूपशील पराक्रम अवस्था नदेषणी. याकौ वित विद्याहू नदेषणी अरुया मित्रके कार्यमें विलंबहून करणो तातें यह सत्रुहै सो विषयाकौंदीजो ऐसे पत्रमें लिषि षामकरि तापें आपकी महोर कारि चंद्रहास्यसौं बोल्यो हे चंद्रहास्य यह पत्र लेजाय मदनकौं दीज्यो वहतेरो बहुत कल्याणकरेगो. अ रु महोर षोलेगो तोकौं तेरे पिताकी सपथहै. ऐसेकहि पत्रदेय चंद्रहास्यकौं पुत्रके पास पठायो. जब चंद्रहास्य कुंतल पुरके पास बागमें जाय उतस्यो तहां अश्वतें उतारि दुषित आम्रके वृक्षके नीचे छायामें सयन करत भयो ताही समयमें कुंतल राजाकी पुत्री चंपक मालिनि अरु धृष्टबुद्धिकी पुत्री विषियावे दोऊ अनेक सषिनसहित जलविहार करि पुष्पलेवेकौं बागमें आइ वहांऔ र कन्यातो पुष्पलेय राजपुत्रीसहित निजनिजस्थानकौं गई. अरु विषियाचं द्रहास्यकौ देषिवाके रूपसूं मोहित होय. सषि द्वारा चंद्रहासके सेवकनकूं पूछायो. यह कौनहै. तब तिन सेवकन कही यह कुलिंदको पुत्र चंद्रहास है मदनसैं मिलिवेकौं आयोहो. ऐसे सुणि वृक्षनमें छिपि रही अरु सषीकौं पु ष्पलैवेकौं पठाई तबही तहांतें चंद्रहासके सेवक स्नान जलपान करिवेकौं गये ता अवकासमें विषीया चंद्रहास पें आय वाके हृदयपे पटुकासौं बांध्योपत्र ले यवाच्यो. जामैपिताके अक्षर पहिचानि तामें लिषी. ॥ विषमस्मै प्रदातव्यं ॥ ए अक्षर बांचि विचार करत भई पिता मेरो कहिगयोहो सो यह मोकौंवर पठायो है अरु शीघ्रतामें लिषतें चूकि गयोहै. जातें मदन ऐसोही पत्र बांचेगो तब याकौं मारैगो. तातें याकौं शुद्ध करणो ऐसे विचारि अमृत वृक्षकौ रसलेय नषतैं घसि

विषमसों यास्थानमें विषयास्मै ऐसे अक्षर वणाय फेरि वापत्रकों वैसे ही षामि चंद्रहास्यके हृदयपें धरि घर आई जब चंद्रहास्य जागि मदनपैं जाय पत्र सोंप्यो तब मदन पत्रमें विषयास्मै प्रदातव्यं, ऐसें वांचे प्रसंन्न होय ब्राह्मणकों बुलाय विषया चंद्रहास्यके विवाहकों लग्न पूछ्यो जब ब्राह्मण बोले अबही सुभलग्न है. तब मदन परमउत्सवतें महांमंगल विवाह कियो अरु कन्यादानके समय में चंद्रहास्यसों गोत्र पूछ्यो जब चंद्रहास्य कही. मेरो हरिगोत्र है. हरिपितामह है हरिहि प्रपितामह है ऐसे सुणि मदनहू हरिप्रीतिथके कन्यादान करि अग्निमें होम करि सप्तपदी करवाय तापीछे दायज दियो. तामै, धन, गऊ, अश्व, रथ, गज, उष्ट्र, महिषी, दास, दासी, रत्न, माणिक्य, मौक्तिक, हार, और अनेक आभरण वस्त्र ऐसर्व विषयासहित चंद्रहास्यकौं देयकों बोल्यौ हे चंद्रहास्य मेरो सिरपर्यंत सर्वस्व तेरो ही है. ऐसें बोलि फेरि जाचकनहूकौं बहुतदान दियो. ॥इति० भा० अ० प० दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नारद उवाच ॥ ॥

तापीछे धृष्टबुद्धि चंदनावती पुरीमें जाय कुलिंदकों निगड बंधन करि प्रजानकों बहुत पीडा करि अरु कुलिंदकों अनेक प्रकारताडना करि बोल्यो हे कुलिंद तेरो पुत्र दान पुन्य जलस्थान मठ देवमंदिर आदि करवाय मेरो बहुत धन नास कर्यो ऐसें कहि कुलिंदकों दृढ बंधनतें बांधि उहांतें कुंतलपुरकों आयो तहांमार्गमें जीर्णसर्प आय बोल्यो हे धृष्टबुद्धि तेरे पिताके कोसमें मैं बहुतकालतांई रह्यो अरु तेहू वापजानांकों अधिकही बधायो तातें मै आजिलों तो बहुत प्रसन्न रह्यो अब तेरे पुत्र सर्वकोस चंद्रहास्यकौं देय सूना करि मोकों निकाल्यौ जब धृष्टबुद्धि ऐसे सर्पके वाक्य सुणि क्रोध करि निज मंदिर आयो. तब मदनपिताकों क्रोधवंत जाणि वचन बोल्यो हे पिता मैं आपके लिषे माफिक विषयाकों व्याहकरि. धनरत्न गजअश्व आदि सर्व स्वदेय कछुहू राष्यो नहीं ऐसे पत्र मंगाय वांचि धृष्टबुद्धि बहुत दुषि भयो अरु तापीछे चंद्रहास्यकों कपटसों समाधानकरि आप ऐसी चिंता करत भयो. जो यह चंद्रहास्य जीवत रहेगो तो मेरे कुलको नास करेगो. मै याके पिताकों पीडाकरि प्रजाकों दंडदेय नगरकौं लूटि धन ल्यायो. तो यह वृत्तांत सुणि चंद्रहास्य मोसों वदलो. लियो चाहेगो. याकारणतें चंद्रहास्यकों मारणो कन्याविधवा होय तो भलो ही हो अरु

मोकों मुनिनकों वचनहू मिथ्या करणोंहीहै ऐसे विचारि चांडालनकों एकांत मैं बुलाय वुनसों बोल्यो हे चांडालहो तुमकों पहलेमें वा बालकके मारिवेकों कही ही सो तुम मोसों बंचक ताही करी. वह बालक अवतर्ण होय सब पृथ्वीबस करि. तातें ऐसोहू अपराध तुह्मारो क्षमाकरि मे कहूंहूं सो करो. नगरके बाहर चंडिकाके मंदिरमैं जाय षड्ग धारि सावधान रहो. उहांरात्रमें जोनरआवै ताकों मारो. ऐसे धृष्टबुद्धिको वचन स्रुणि चांडाल श्याम वस्त्र धारण करि आग्या मांफिक चांडिकाके मांदिरमें रहे तापीछे धृष्टबुद्धि चंद्रहास्यसों बोल्यो हे चंद्रहास्य हमारी कुलदेवी चंडिका वनमें है तहांतुम रात्रिमें इकले हीजाय पूजन करि आवो. तहांवाही दिन कुंतलराज गालव पुरोहितकों बुलाय आपने शरीरकी चेष्टा कही. हे गुरो मे सकल पृथ्वीकों राज्य करोंहों. तोहू मोकों स्रुष नहीहै. अरु मेरे शरीरकी छाया सिरहीण दीसैहै सो या उतपातको फलकहो. जब गालव बोले. हे राजा ऐसे शरीरकी छाया सिरही न दीसैतो सीघ्रही मृत्युहै. ऐसो स्रुणि राजा निकट वैठ्यो मंत्रीको पुत्रमदन तासों बोल्यो हे मदन तू घरजाय चंद्रहास्यकों शीघ्रल्यावो. मे वाकोंकन्यादेय राज्य द्योंगो. ऐसैस्रुणि मदन प्रसन्नतासों घरआवत हो ताकों मार्गमें चंद्रहास्य पूजा सामग्री लिये चंडिकाके मंदिर जात मिल्यो तासों मदन बोल्यो हे चंद्रहास्य तुमकों राजा बुलावैहै तहांतुमजावो अरुमें तुह्मारी येवजे देवीकों पूजनकरूंगो. ऐसें कहि हाथतें पूजनकी सामग्री लेय मदनतो चंडिकाके मंदिरमें गयो. तहांजातही चांडाल सिरकाट्यो. तब मरते समय मदन ऐसे बोल्यो यह शरीर मेरो चंद्रहास्यकों दीज्यो. जबमें सत्यवक्ताहोहूंगो अरु मदनको पूजा सामग्री देय चंद्रहास्य राजापासि गयो हो ताकों राजा कन्यादान देय राज्यको मालक करि आपबनमें गयो जब पुरवासी आय धृष्टबुद्धिसों कहि. हे मंत्री तुह्मारो जामंत चंद्रहास्य राज्यपाय राजपुत्री सहित गजराजपें चढ्यो आवैहै ताकों तुमदेषो ऐसे स्रुणि मंत्री क्रोधतें बोल्यो हे पापिष्टहो तुममिथ्या बोल्यो. तातें तुह्मारी जिव्हाकों काटोंगो. ऐसैकहि व्याकुल भयोतापीछे नगरके मध्य गजराजतें चढ्यो अनेक दिपकाननें प्रकाश सहित आवत अरु गीत वाद्य छत्रचामर आदि राज चिन्हयुक्त चंद्रहास्यकों देषिअ

रु चंडिकाके मंदिर पुत्रकों गयोजाणि व्याकुलहोय आपहू अर्धरात्रि समैं चंडिकाके मंदिर गयो. तहां मंदिरके निकट पुत्रकों मर्योदेषि विलाप करिआ पहू सस्त्रतें उदर विदीर्णकरि मर्यो तापीछे प्रभातही चंद्रहास्य मदन अथवा धृष्टबुद्धिकों मरण सुणि चंडिकाके मंदिर जाय कुंड रचि होम करिनिज शरीरतें मांस काटि होमि तापीछे शिर काटिवे लागो जब चंडिका प्रसन्न होय बोली हे राजा चंद्रहास्यतूं मोतें मन वांछित वर मागि तब चंद्र हास्य बोल्यो हे माता तूं प्रसन्न होय तो ए दोनो जीवो अरु मोकों राज्य सुष अखंड अचल हरि भक्ति द्यो मैं तुमकों नमस्कार करोहों तब देवी तथास्तुकहि अंतर ध्यान भई तापीछे मदन धृष्टबुद्धि सरजीवण होय सुध पाय चंद्रहास्य सहित नगरमें आये. जब धृष्टबुद्धि कुलिंदके बंधन कटाय कुंतलपुरमें बुलाय सर्व हर्षित होय बसत भये. तापीछे चंद्रहास्य प्रतिदिन पुरवासिन सहित हरि सेवा परायण तीनसैं वर्ष पर्यंत राज्य करत भयो ता चंद्रहास्य के विषयास्त्रीसें मकरध्वज नाम पुत्र भयो अरु राज पुत्री चंपक मालिनी कों पद्माक्ष नाम पुत्र भयो. यह प्रताप सब चंद्रहास्यको सालिग्राम सेवन तैं भयो. अरु सब संकटहू ताहितें कट्यो अरुजो औरहू नर प्रतिदिन सालिग्राम द्वारकासंख चक्र पूजनतें सर्व सिद्धि पावे. तातें कलि कालमें सालिग्राम प्रत्यक्षही हरिहै ऐसें कहि नारद मुनिगये. ॥ इति॰ भा॰ अश्वपर्वणिचंद्रहास्योपाख्यानएकादशमोऽध्यायः ११ ॥ जन्मेजयउवाच ॥ ॥ हे मुनि नगरसें गये जे दोऊ अश्व अर्जुनके तिनकों चंद्रहास्य ग्रहणकरेके नहीं जब वैशंपायनबोले. ॥ वैशंपायनउवाच ॥ हे जन्मेजय चंद्रहास्य अश्व ग्रहण करे जब अर्जुन सहित श्रीकृष्णकों आयेदेषि चर्णनमें प्रणामकरि मिल्यो तापीछे चंद्रहास्य पुत्रकों राज्यदेय तीन दिवस सनमान पूर्वक श्रीकृष्णकों राषि तापीछे आपहू सेवा निमित्य संग भयो. जिनजिन देशनसें अश्व गये तिनतिन देशनके राजा भयभीत होय धन अर्पणकरिकरि संग भये. ऐसे चलत चलत अश्व उत्तर समुद्र पहुंचि अगाधजलमें प्रवेस करत भये. तब अर्जुन श्रीकृष्णसों बोल्यो हे श्रीकृष्ण येजलमें गये अश्व अब कैसे मिलेंगे. तब श्रीकृष्णबोले हे अर्जुन मेरे तेरे हंसध्वजके मयूर

मोकौं मुनिनकौं वचनहू मिथ्या करणो हीहै ऐसै विचारि चांडालनकौं एकांत मै बुलाय वुनसौं बोल्यौ हे चांडालहो तुमकौं पहलेमें वा बालकके मारिवेकौं कही ही सोतुम मोसौं बंचक ताही करी. वहबालक अवतर्ण होय सब पृथ्वीवस करि. तातें ऐसौहू अपराध तुह्मारो क्षमाकरि मे कहूं हूं सो करो. नगरके बाहर चंडिकाके मंदिरमें जाय षड्ग धारि सावधान रहो. उहांरात्रमें जोनरआवै ताकौं मारो. ऐसे धृष्ट बुद्धिको वचन स्रुणि चांडाल श्याम वस्त्र धारण करि आग्या मांफिक चंडिकाके मंदिरमें रहे तापीछे धृष्टबुद्धि चंद्रहास्यसौं बोल्यौ हे चंद्रहास्य हमारी कुलदेवी चंडिका वनमें है तहांतुम रात्रिमें इकले हीजाय पूजन करि आवो. तहांवाही दिन कुंतलराज गालव पुरोहितकौं बुलाय आपने शरीरकी चेष्टा कही. हे गुरो मैं सकल पृथ्वीकौं राज्य करौंहौं. तोहू मोकौं स्रुष नहीहै. अरु मेरे शरीरकी छाया सिरहीण दीसैहै सोया उतपातको फलकहो. जब गालव बोले. हे राजा ऐसे शरीर की छाया सिरही न दीसैतौ सीघ्रही मृत्युहै. ऐसो स्रुणि राजा निकट बैठ्यौ मंत्रीकौ पुत्रमदन तासौं बोल्यौ हे मदन तूं घरजाय चंद्रहास्यकौं शीघ्रल्यावो. मैं वाकौंकन्यादेय राज्य द्योंगो. ऐसैं स्रुणि मदन प्रसन्नतासौं घरआवत हो ताकौं मार्गमें चंद्रहास्य पूंजा सामग्रीलिये चंडिकाके मंदिर जात मिल्यौ तासौं मदन बोल्यौ हे चंद्रहास्य तुमकौं राजा बुलावैहै तहांतुमजावो अरुमें तुह्मारी येवजे देवीकौं पूजनकरूंगो. ऐसें कहि हाथतें पूजनकी सामग्री लेय मदनतौ चंडिकाके मंदिरमें गयो. तहांजातही चांडाल सिरकाट्यौ. तब मरते समय मदन ऐसे बोल्यौ यह शरीर मेरो चंद्रहास्यकौं दीज्यौ. जबमें सत्य वक्ताहो हूंगो अरु मदनकौ पूजा सामग्री देय चंद्रहास्य राजापासि गयौ हो ताकौं राजा कन्यादान देय राज्यको मालक करि आपबनमें गयौ जब पुरवासी आय धृष्टबुद्धिसौं कहि. हे मंत्री तुह्मारो जामंत चंद्रहास्य राज्यपाय राजपुत्री सहित गजराजपें चढ्यौ आवैहै ताकौं तुमदेषो ऐसे स्रुणि मंत्री क्रोधतें बोल्यौ हे पापिष्ठहो तुममिथ्या बोल्यौ. तातें तुह्मारी जिह्वाकौं काटौंगो. ऐसैं कहि व्याकुल भयौ तापीछे नगरके मध्य गजराजतें चढ्यौ अनेक दिपकाननें प्रकाशसहित आवत अरु गीत वाद्य छत्रचामर आदि राज चिन्ह युक्त चंद्र हास्यकौं देषिअ

रु चंडिकाके मंदिर पुत्रको गयोजाणि व्याकुलहोय आपहू अर्धरात्रि समैं चंडिकाके मंदिर गयो. तहां मंदिरके निकट पुत्रकों मर्यो देषि विलाप करिआ पहू सस्त्रतैं उदर विदीर्णकरि मर्यो तापीछे प्रभातही चंद्रहास्य मदन अथ वा धृष्टबुद्धिकों मरण सुणि चंडिकाके मंदिर जाय कुंड रचि होम करिनि ज शरीरतैं मांस काटि होमि तापीछे शीर काटिवे लागो जब चंडिका प्रस न्न होय बोली हे राजा चंद्रहास्यतूं मोतैं मन वांछित वर मागि तब चंद्र हा स्य बोल्यो हे माता तूं प्रसन्न होय तौ ए दोनो जीवो अरु मोकों राज्य सुष अ खंड अचल हरि भक्ति द्यो मै तुमकोंनमस्कार करोहों तब देवी तथास्तुकहि अंतर ध्यान भई तापीछे मदन धृष्टबुद्धि सरजीवण होय सुध पाय चंद्र हा स्य सहित नगरमैं आये. जब धृष्टबुद्धि कुलिंदके बंधन कटाय कुंतलपुरमें बुलाय सर्व हर्षित होय बसत भये. तापीछे चंद्रहास्य प्रतिदिन पुरवासिन सहित हरि सेवा परायण तीनसैं वर्ष पर्यंत राज्य करत भयो ता चंद्रहास्य. के विषयास्त्रीसैं मकरध्वज नाम पुत्र भयो अरु राज पुत्री चंपक मालिनी कों पद्माक्ष नाम पुत्र भयो. यह प्रताप सब चंद्रहास्यको सालिग्राम सेवन तैं भयो. अरु सब संकटहू ताहितैं कट्यो अरुजो औरहू नर प्रतिदिन सालि ग्राम द्वारकासंख चक्र पूजनतैं सर्व सिद्धि पावै. तातैं कलि कालमैं सालिग्राम प्रत्यक्षही हरिहै ऐसै कहि नारद मुनिगये. ॥ इति॰ भा॰ अश्वपर्वणिचंद्र हास्योपाख्यान एकादशमोऽध्यायः ११ ॥ जन्मेजयउवाच ॥ ॥ हे मुनि नगरमैं गये जे दोऊ अश्व अर्जुनके तिनकों चंद्रहास्य ग्रहणकरेके न हीं जब वैशंपायनबोले. ॥ वैशंपायनउवाच ॥ हे जन्मेजय चंद्रहास्य अश्व ग्रहणकरे जब अर्जुन सहित श्रीकृष्णकों आये देषि चरणनिमें प्रणामक रि मिल्यो तापीछे चंद्रहास्य पुत्रकों राज्यदेय तीन दिवस सनमान पूर्वक श्रीकृष्णकों राषि तापीछे आपहू सेवा निमित्य संग भयो. जिनजिन देशन मैं अश्व गये तिनतिन देशनके राजा भय भीत होय धन अर्पणकरिकरि संग भये. ऐसै चलत चलत अश्व उत्तर समुद्र पहुंचि अगाधजलमैं प्रवेस करत भये. तब अर्जुन श्रीकृष्णसों बोल्यो हे श्रीकृष्ण येजलमैं गये अश्व. अब कैसे मिलैंगे. तब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन मेरे तेरे हंसध्वजके मयूर

ध्वजके बभ्रुवाहनके अश्वनकी सर्वत्र गतिहै तातें जलमें चलो. ऐसे सुणिपं. च महारथी जलमें प्रवेस करत भये. तहांद्वीप मध्य तीरपै बट पत्र धारें तपक रत जीर्ण सुस्क सरीर नेत्र मीचे ऐसे बैठे बकदालभ मुनिकूं देषि पाचूंही स्तुति करत भये. तब मुनि नेत्र षोलि श्रीकृष्ण आदि पांचोंकों देषि बोले हे श्रीकृष्ण तूं मेरी स्तुति मति करौ तुह्मारी स्तुतितें मोकों गर्व होयहै मैं. आगे गर्व कस्यो हो तब आश्चर्य देष्यो या अंड अंडमैं चतुर्मुख अष्टमु ष षोडशमुख द्वात्रिंशमुख चतुःषष्ठमुष ६४ आदिले ब्रह्मा देषे तापीछे सहस्त्र मुषकों ब्रह्मा आय मोकौं इहां बसायो अरु मेरे आगेवीसब्रह्माती चालिगये. तातें मैं आयुष्यकों अल्प जाणि शिरपें बटपत्रही राष्योहै अरु क्लेश जाणि स्त्री संग्रहही नहीं करी कुटुंब पोषणार्थ अंकार्यहू करे तातें धर्मनष्ट होय पापहोय तातें नर्क होय विचार होइ सकै नहीं विचार विना मोक्ष होयनहीं तृष्णावधे तातें मैं ऐसे जाणि पर्णसालाहू नही करीऐ से सुणि सकल आश्चर्य युक्त भये. तब अर्जुन मुनिसों प्रार्थना करि शिबकामें बैठाय अश्वनकों संगलिये. अनेक देसनके राजानकों जीति जीति संगलिये. हस्तना पुरमें आये जबश्रीकृष्ण सेनाको मुकाम बाहर कराय बोले हे अर्जुन मैं युधिष्ठिरकों सकल वृत्तांत कहिवेकों पहली जाऊ हूं. ऐसे कहि युधिष्ठिरपें जाय सर्व वृत्तांत कह्यो तब राजा युधिष्ठिर अति प्रसन्न होय आग्यार्थ आये मुनिनकों राजानकों संगलेय सेना साहित अ- र्जुनके मिलिवेकों आयो. तहां राजा प्रथम बक दालभ्य मुनिकों प्रणाम करि तापीछे सबनकों यथायोग्य मिलि सबनकों संगलिये अर्जुनसहित नगरमें प्रवेस कस्यो तापीछे राजा द्रौपदी सहित दिक्षत सुवर्ण मंडपब णायदेवता भूदेव नरदेव इन सबनकों पूज्य मंत्र पावन कराय ब्राह्मणन सों विधिवत होम करावत भयो. तहां देवमूर्ति ब्रह्मवेत्ता ऋषि व्यासवा मदेव वसिष्ठ गौतम अत्री पराशर भारद्वाज परशुराम कहोड भागुरि रेभ्य. सुमंत कौंडिण्य जातुकर्ण्य गालव इत्यादि ऋषि यथायोग्यकर्म करत भये. और देवरिषि गंधर्व सिद्ध किन्नर मंगल गान करत भये. तहां अपछरा नाचत भई अग्नि तृप्त भयो तापीछे युधिष्ठिर सबनसों विधिवत

पूजन करत भयो अरुयज्ञ समाप्तिमें चारों समुद्रनके मध्य कमल तु ल्य पृथ्वी राजा युधिष्ठिर वेदव्यासकों दक्षिणामें दीनी अरु वेदव्यासके वाक्यतें कोटि कोटि स्वर्णमुद्राब्राह्मणनकों दीनी. जबब्राह्मण धनतें तृप्तहोय अनेक आशिर्वाद देत भये. चतुःषष्ठि ६४ दंपति गंगाजल ले वेकों जावो तिनमें मुख्य इतनो अनुसूयासहित अत्रि, अरुंधतिसहि तवासिष्ठ, रुक्मीसहितश्रीकृष्ण, सुभद्रा सहित अर्जुन, मायावती सहित प्रद्युमन, उषासहित अनिरुद्ध, हिडिंबा सहित भीम, समुद्रा सहित वृषकेत, सत्यवती सहित हंसध्वज, मिल्या सहित अनुसाल्व, इन दसनकों आदिले चौसटि सपत्नी स्वर्णकुंभनमें गंगाजल ल्याय राजा युधिष्ठिरकों अभिषेक करावो. ऐसें वेदव्यासकी आग्यासुणिसु वर्णकुंभनमें गंगाजल ल्याय राजा युधिष्ठिरकों अभिषेक करावत भयो. तहां वेदव्यास मंगलध्वनि सकल राजा सेवामें ठाढे ऐसें देषि- श्रीकृष्ण विचार कियो राजा युधिष्ठिरकों गर्व नहोय तातें अभिषेक जलमें लोटत एक नकुलकों दिषायो तब ता नकुलकों देषि राजायु धिष्ठिर बोल्यो हे श्रीकृष्ण या नकुलकों देषो अरु याको एक पार्श्व स्वर्ण कैसें भयो जब यह सुणि श्रीकृष्ण नकुलसों पूछत भये.त ब नकुल बोल्यो हे श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रमें शिलोछवृत्ति सक्तु प्रस्थ नामा ब्राह्मण भयो सोकुटुंब सहित षाण्मासिक व्रतकरि पारणोक रिवे लग्यो तासमयमें एक अतिथि आयो ताकों देषिब्राह्मण प्र- सन्न होय आपकों भाग भोजनकों दियो. तासों तृप्त न भयो. तब स्त्रीनें आपकोहू भाग दीयो. जब स्त्रीके भागसेंहू वह तृप्त न भयो. तबपुत्रवधूहू आपको भाग समर्पण कियो. तब तिनसर्वनके अन्न कों अतिथि भोजन करि तृप्त होय बोल्यो हे ब्राह्मण तुह्मारो धर्म- सिद्ध भयो अबमें प्रसन्नहूं तुह्मारेकूं वांछित वस्तुकी सिधि होतो ऐसें कहि वह अतिथ रूपी धर्मराज आपको निजरूप दिषाय अं तर्ध्यान भयो तब वह सक्तुप्रस्थ ब्राह्मण सदेह सपरिवार विमा- नमें बैठि स्वर्ग गयो. तहां वा अतिथके हस्त प्रक्षालनके जल

मैं मैं मेरो अंग प्रक्षालन कस्यो. तब वा जलके प्रभावतें मेरो देह
अर्धस्वर्णको भयो. तापीछे यह यग्य स्राणि सर्व स्वर्णकोंहो
वेकों राजा युधिष्ठिरके पास आयोहूं सो इहां अनेक ब्राह्मणनके-
हस्त प्रक्षालनके जलमैंहू स्नानकियो अरु युधिष्ठिरके अभिषेकज
लहूमे स्नान कस्यो तोहू बी मेरो एक रोमहू स्वर्णको न भयो तातें
यह यग्य सक्तुप्रस्थ ब्राह्मणके पुण्य तुल्य नहीं ऐसे बोलि नकुलग
यो जब वेदव्यास बोले हे राजा युधिष्ठिर तेरो यज्ञ सर्व यज्ञनमें श्र
ष्ठहे सुर असुर नर सब याकी स्तुति करेहे अरु यह नकुल ऐसेबो
लि आपकी नीचताकूं जणाईहे अरु आगें यह क्रोध होसो जमद-
ग्नि मुनिके अक्रोध पणेकी परिक्षा करिवेकों उनके श्राद्धमें धसि पि
तरनके अर्थ पात्रमें धरे दुग्धकों श्वान होय जिव्हातें चाटत भयोता
कों देषि मुनि विचार कियो यह कृत्य श्वानको धर्महीहे यह दोष रक्ष
ककोहे वातें श्राप नादियो. तब मुनिके पितर कही हमारे दुग्धकोंश्वा
न बणि उच्छिष्ट कियो तासें यह नकुल होय पृथ्वीमें भ्रमें. ऐसे
श्राप देत भये. अरु यह जब युधिष्ठिरके यज्ञकी निंदा करेगे तब
मुक्त होयगो. ऐसे अनुग्रहहू कियो. यह क्रोध नकुल वणी तेरेय-
ज्ञकी निंदातें अब श्रापतें मुक्त भयोहे. ऐसे स्राणि सर्व सभा विस्मि
त भई. अरु राजा युधिष्ठिरहू यज्ञ समाप्तिमे नरदेव. भूदेवनकोंव
स्त्र अलंकार देय विदाकिये. ते मार्गमें यज्ञकी प्रसंसा करत भये.
तापीछे राजा युधिष्ठिर यज्ञ मंडपमें श्रीकृष्ण सहित रह्यो तापीछे त
हां विवाद करते दोय ब्राह्मण आये. तिनकों राजा पूछतो भयो तुम
कोण कारण विवाद करेहो तब एक ब्राह्मण बोल्यो हे महाराज, मैंया
के षेत्रमें कर्षण कस्यो तामें द्रव्य निकस्यो सोमे द्रव्य याकों देतहों.
सो लेत नहीं अरु याके षेत्रमें द्रव्य निकस्यो सो मोहूं कैसे राषों तातें
आप निर्धार करि कहो यह द्रव्य कोणकोहे ऐसे उन ब्राह्मणनको
विवाद स्राणि श्रीकृष्ण वा धनकों मेंगाय राजाके निज स्थानमें रा-
ष्यो जबवे दोउ ब्राह्मण निज निज स्थानमें गये तब राजा युधिष्ठिर

बोल्यो हे सर्वज्ञ श्रीकृष्ण इनके विवादको अबही निरधार क्यों न कियो. जब श्रीकृष्ण बोले हे राजा युधिष्ठिर सुणो दोय मास पीछे कलियुग आवैगे तब येही दोउ ब्राह्मण या धनके लेवेकों झगडत आवैगे. जब इन दोऊनकों अर्द्ध अर्द्ध करि बांटि दीज्यो. ऐसे कहि श्रीकृष्ण राजाकों संदेह मिटायो जब राजा कहि कलि युगमें कहा कहा होवेगो. तब श्रीकृष्ण बोले हे राजा युधिष्ठिर कलियुगमें धर्मनष्ट होयगो. तप सत्य नष्ट होयगो. पृथ्वी मंद फल. राजाकपटी. ब्राह्मणलोभी. पुरुष स्त्रीवस. स्त्री पुंश्चली. पुत्र पितासों द्रोह राषे. साधु दुषी. दुर्जुन सुषी होयगे ऐसै सुणि राजा चकित भयो. तब कितनेक दिन पीछे श्रीकृष्ण राजातें सीष मांगि द्वारिका गये. तापीछे युधिष्ठिर धृतराष्ट्र गांधारी विदुर इनकों पूजन करें अरु निष्कंटक राज्य पाय धर्मतें राजा प्रजाको पालन करत भयो. अरु श्रीकृष्णके प्रभावतें अश्वमेधह सर्वांगतें पूरण भयो. ॥ दोहा ॥ ॥ अश्वमेध यहपर्वहै भाषा भारत सार ॥ रावचंद्र सिंहके हुकुमवर्णो कवि सुधसार ॥ ॥ इति श्री भाषा भारतसार चंद्रिकायां अश्वमेध पर्वणी द्वादसोऽध्यायः ॥१२॥

इति भाषा भारत सार अश्वमेध पर्व

समाप्तम्

वेदव्यास
युधि
धृत
गांधारी
भीम
संजय
धृतरा
वनवासगमन
गांधा
विदुर
युधिष्ठिरादिपां
कुंति
धतराष्ट्र
संजय
गांधा

वेदव्यासाश्रम
विदुर
कुंति
स्त्रिया
पांडव
गां
वेदव्यास
ध
मुनि
राजा यु
पांडव
व्यास
वेदव्यासजी धृतराष्ट्रकू दृष्टि दी
गां
विदुर
कुं
ध
गंगाविषे स्व पति मिलाप

अथ भाषा भारत सार आश्रमवासी पर्व प्रारंभः

॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ तापीछे राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्रकौं प्रणाम करि अधिकारिनकौं राजयोग्य सर्व भोग देत रह्यौ ऐसे निष्कपट सर्व अधिकारिनकौं आग्या देय राज करत भयौ. अरु युधिष्ठिरके स्नेहतें धृतराष्ट्र भार्यासहित राज्यमैं रह्यौ. परंतु भूमिसयन. ब्रह्मचर्य फलाहार करत रहे. सो युधिष्ठिर जाणे नहीं. ऐसे रहत धृतराष्ट्रसौं पंद्रह वर्ष वितीत भये. तब भीमसेन कौरवनकी अनीति कहत भयौ ताकौं स्रुणि धृतराष्ट्र क्रोध रोकि बनवासकी वांछा करि युधिष्ठिरसौं बोल्यौ हे पुत्र कछु देतौ मांगौ. जब युधिष्ठिर हात जोडि देवो अंगिकार कर्यौ. तब धृतराष्ट्र कहि वृद्धनकौं योग्य वनवास है. यह मांग्यौ दे. ऐसे स्रुणि अश्रुयुक्त होय चरणनिमैं प्रणाम करि राजा बोल्यौ. हे तात एकाकी मोकौं त्याग करिवो तुह्मै योग्य नहीं. ऐसे कहि युधिष्ठिर दीन भयौ तब तासमयमैं वेदव्यास आय बोले. हे युधिष्ठिर तूं जाणतहू मूढ क्यों होतहै. सत्कृत्यमैं सीध्रताही करिवो जोग्यहै यह देह रूपी दीपक है ताकौ तेलरूपी आयुष्य क्षणक्षणमैं क्षीण करत है अरु मृत्युरूपी दावानलके निकट वर्त्ते देहरूपी वृक्षकौं धर्मरूपीफललेतैं धृतराष्ट्रकौं विघ्न क्यौं करतहै. ऐसे वेदव्यासके वाक्यतैं राजा युधिष्ठिरने धृतराष्ट्रकौं वनवास अंगिकार कर्यौ. जब धृतराष्ट्र भीष्मादिकनकौ श्राद्ध करि जलांजलि अत्यंतही दीनतासौं देत भयौ. अरु दुर्योधनादिकनको श्राद्धमैं बहुत धन देत देषि भीम कुपित भयौ तब ताकौं अर्जुननैं सांत कर्यौ. तापीछे धृतराष्ट्र राजा युधिष्ठिरसौं वा पुरवासिनसौं आग्या मांगि ताकौ कनिष्ट भ्राता सहित श्री रामचंद्रलौं बनकौं गयो. अरु युधिष्ठिरादिकुंमे बरज्यो सोहू कुंती उनके संग गई अरु संजयहू तिनके संग भयौ. ऐसे इन सहित धृतराष्ट्र व्यासाश्रमकौं प्रापत्य होय परवार सहित तप करत भयौ. तापीछे युधिष्ठिरहू स्त्रीजन सहित रथपैं सवार होय बनकौं गये. तहां धृतराष्ट्र आदि

गरुजनकौं नमस्कार करत भयो. अरु तिनकौ स्याम रूक्ष मुष देषि युधिष्ठिर अंश्रुपात करत भयो. जब वेहू राजाकौं आशीर्वाद देत भये. तब युधिष्ठिरने पूछ्यो हे तात विदुर कहांहै जब धृतराष्ट्र बोल्यो हे युधिष्ठिर स्वइच्छाचारी पवन आहार करत विदुर विचरतहै सोक बहू दीषैहै कबहू नहीं दीषैहै ऐसे बोलते अकस्मात विदुर आय बनमें मनुष्यनकौ समुदाय देषि मृगलौं भाजत भयो. जब राजा युधिष्ठिरहू अश्रुयुक्त ताके पीछे दौडत भयो. तब विदुर राजातें ऐसे दूरि दूरि भजो जैसे अभागितें भी भै दूरि भजातिहै तब भजतभजत कोई कसाल वृक्षके नीचे बैठे विदुरकौं देषि बोल्यो हे विदुर मैं युधिष्ठिरहु ऐसे कहि प्रणाम करत भयो. जब राजा जाणिजो विदुर मोकौं कछु कहैगो. यह इच्छा करत भयो. तब विदुर युधिष्ठिरके मुषकौं देषि योगाभ्यासतें देहको त्यागन करि निज रूपकौं प्रापत्यहोत भयो. जब राजा युधिष्ठिर याके देहकौ दाह करिवो विचार्यो तब आकाश वाणी भई सो रूणि तपोग्नि याके देहकौं दग्ध करेगी. ऐसे राजाके रूणतही देहतें अग्नि प्रगट होय देहकौं दग्धकरती भई. तापीछे युधिष्ठिर धृतराष्ट्रपै आय विदुरकौं सर्व वृत्तांत कहि-कुंती पास आयो. तहां राजा फलाहार भूमिसयन करत एक रात्रि कुंतीके निकट बासि प्रभात अनेक द्रव्यूका दान राजा करत भयो. तापीछे धृतराष्ट्रपै आय प्रणामकरि बैठत भयो तब तहां वेदव्यास आय विदुर गतिकी स्तुति करी धृतराष्ट्र सौं बोले हे पुत्र तोकौं कोई बाधातो नही है. ऐसे रूणि धृतराष्ट्र बोल्यो दान भोग करत चारयौं इंद्रियनके रूष भोगे अरु अब आपकी कृपातें वैराग्य पाय यह सिद्धिस्थान बन पायो कुटुंब देष्यो नहीं यह दुष्य रह्यो अरु पुत्रवधू प्रभातही. रुदनकरे यह महादुष्य है. जब ऐसे रूणि वेदव्यासनें धृतराष्ट्रकौं दिव्य दृष्टि दीनी. तब जन्मांध धृतराष्ट्रकौं ऐसे आनंद भयो जैसे दरिद्रिकौं चिंतामणि पाये आनंद होयहै. अरु युधिष्ठिरादिकनिकौ वैभव देषि रूषी भयो. तापीछे वेदव्यास धृतराष्ट्रकी पुत्र

वधूनसौं कही तुम गंगामैं स्नान करि पतिनकौं जलांजलि द्यौ जब ऐसैं स्रुणी तब गंगामैं जाय स्नान करतही वेदव्यासकी कृपातैं पतिनकौं पाय निज निज पतिके संग परलोक गई तब धृतराष्ट्रहू दिव्य गंगामें विहार करत अभिमन्यू दुर्योधनादिकनकौं स्त्रीन सहित देषि राग द्वेष रहित होत भयौ अरु दिव्य दृष्टिहूकौं ध्यान विघ्न कारणी जाणि वेदव्याससूं बिनंती करी फेर तैसेही दिव्यदृष्टि रहित होत भयौ तापीछें युधिष्ठिर एकमास तहां राहि धृतराष्ट्रकी आज्ञातें हस्तनापुरआयौ. तहां धर्म सेवन प्रजापालन करत जस विस्तार भयौ. तापीछें एक समें राजापास नारद मुनि आय तब राजा तिनकौं पूजन करि वनवासी कुंती आदि वृद्धनकौं वृत्तांत पूंछत भयौ. जब नारद बोले हे युधिष्ठिर धृतराष्ट्र एक वर्षलौं पवन अहार करत एकवर्षलौं भोजनकरत ऐसें तपतें राजरिषिहो योगाभ्यास करत योगाग्नितें देह दग्धकियौ. तब पर्णकुटिके जलत देषि कुंती गांधारीहू अग्नि प्रवेसकरत भई. तापाछि तिनकी दसा देषि संजय हिमालय गयौ ऐसें कहि नारद मुनि गये. जब युधिष्ठिर ऐसें स्रुणि सोचसूं व्याकुल होय. तिनकौं जलांजलि देतभयौ. अरु जिनकी दिव्य गतितें असित ब्राह्मणनकौं अनेकदानदेत भयौ और उत्पन्न भय शोककौं ग्यानतें शांत्यकारि शिवविष्णु पूजन करत कालक्षेपण करत भयौ. ॥ ॥ इतिश्रीभाषाभारतसार चंद्रिकायां आश्रमवासि पर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥

इति भाषाभारत सार आश्रमवासी .

पर्व समाप्तम्
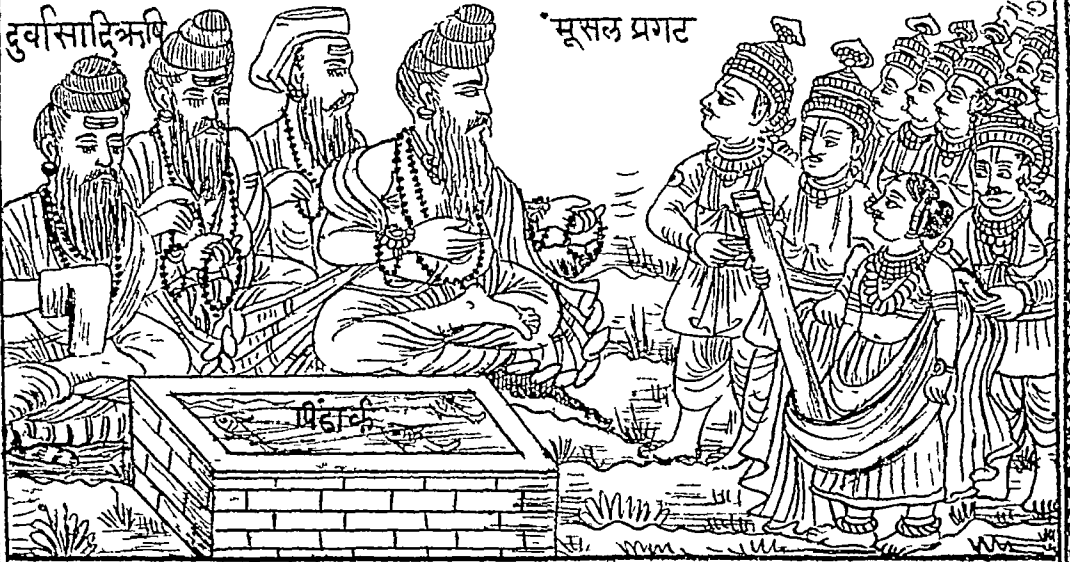
दुर्वासादिऋषि
मूसल प्रगट
पिंडारक
उग्रसेन राजा
मूसल सभामें ल्याया
मूसलचूर
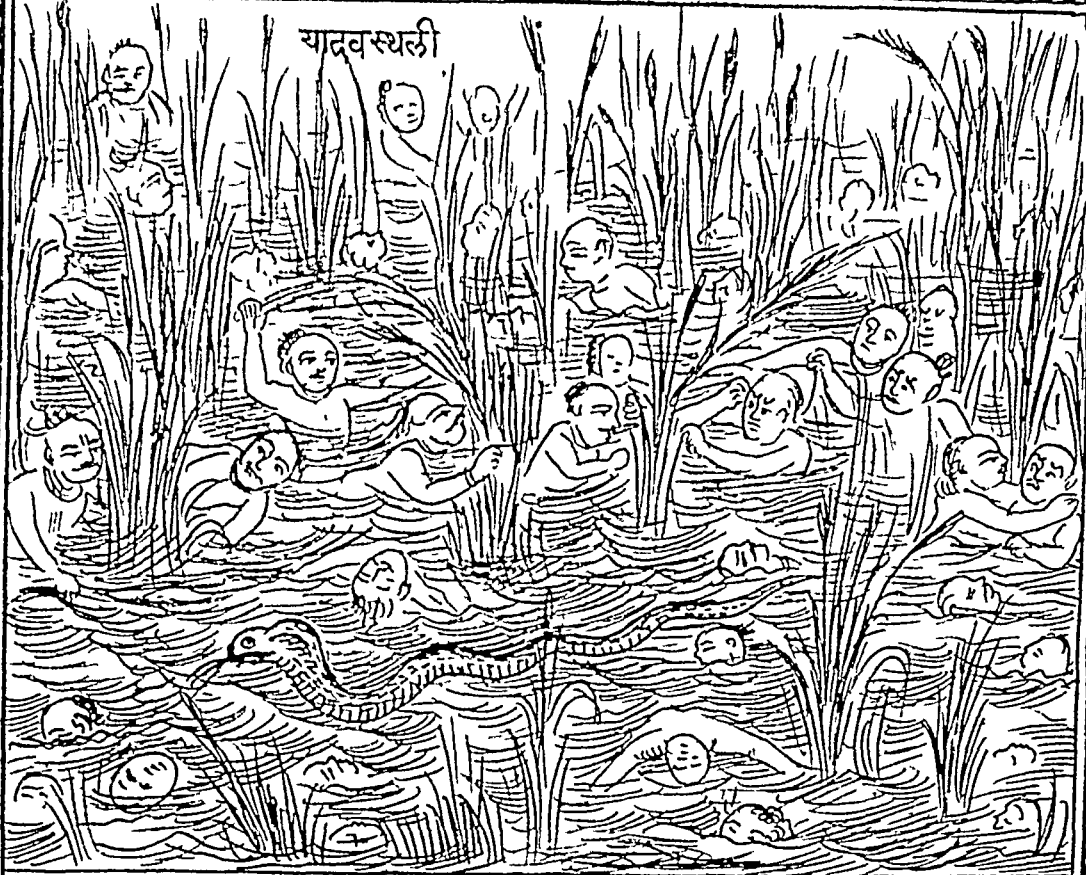
मूसलपर्वचित्र २

अथ भाषाभारतसार मौसलपर्व.

आरंभः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम् ॥ देवीं सरस्वतींव्यासं ततो जय मुदीरयेत् ॥ १ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ तापीछे राजायुधिष्ठिर संसारको सुख अनित्यजाण धर्मसेवन करत पृथ्वीको अजाचक करि ऐसे प्रजापालनकरि छत्तीस वर्ष वितीती भए. तासमेमें कालके प्रेरे दुर्वासा भृगु अंगिरादि मुनि ऋषि द्वारकाके निकट पिंडारक तीर्थ में स्नानकरि जपतप करत भए. तबही तहां यादवनके बालक जांबवती पुत्र सांबको गर्भवती स्त्री भेषकरि मुनिनकों प्रणाम करि वाय बालक पूछत भये. हे मुनिहो यह गर्भवती स्त्री पुत्रकी कामना करि हमारे मुष होइ पूंछैहै में कहा जणूंगी. सो तुम कहो. जब मुनि क्रोधतें बोले हे बालकहो तुमारे कुलको नासकर्ता ऐसो मूसल जणैगी. ऐसे सुणि भयभीत बालक सांबके बस्त्र दूरि करि. तई एक लोहमई मूसल देख्यो तब सभामें जाइ उग्रसेन राजाकों सकल वृत्तांत कह्यौ. जब वा मूसलकों देषि सर्व यादव विचार करि ताकों रिताय चूर्णकरि समुद्रमें नाष्यो अब सेस लोह रह्यो ताहूकों तहांही नाष्यो सोवह लोहचूर्ण तरंगनतें वहि वहि समुद्रके तीरमें आये. रानकों बन भयो अब सेस लोहहों ताकों मत्स्य निगल गयो तामत्स्यकों धीवर जालमें पकड उदर चीर्‍यो जब लोह निकर्‍यो ताको हकों जरानाम लुब्धक बाणमें आस करि जब श्रीकृष्णहू ताव त्तातकों सुणि विचार मात्रही कियो तादिनतेंही द्वारिकामें अनेक उत्पात मृत्यु सूचक देषि श्रीकृष्ण सभामें व्याकुल यादवनसें बोले हे यादवहो बालकनकी कुबुद्धिते मुनिश्राप भयो जादिनतें उत्पात अनेक होतहै यातें सर्व यादव प्रभास तीर्थ चलो वहा स्नान दान विप्र पूजन करेंगे. तातें अरिष्ट नासको उपाय यही है स्त्री बालक वृद्ध इहां रहो ऐसी श्रीकृष्णकी आज्ञातें स.

र्व यादवरथ अश्व गज सेनासहित प्रभास तीर्थकूं गए. जब उ
द्धव एकांतमें श्रीकृष्णसूं विनती करि हे नाथ मोकूं कहा आज्ञाहै
तब श्रीकृष्ण दिव्य ज्ञान उपदेस करि उद्धवकों बद्रिकाश्रम पठायो.
तापीछे बलदेव सहित श्रीकृष्णहू प्रभासतीर्थमें गए. तहां सर्व
यादव श्रीकृष्णकी आज्ञातें स्नानदान ब्राह्मण भोजनादि कर्मकरि
तापीछे हर्षतें उन्मत्त होइ मदरा पान करत भए. ता मद्यपानतें
बुद्धि नष्टहोई कितनेक भारतमें शस्त्र त्यागन करि जोगाभ्यासी
भूरिश्रवाकों शिरच्छेदन करिवेवाले सात्यकीकी निंदाकरत भए.
अरु कितनेक महा भारतमें सूतेनकूं मारवेवाले कृतवर्माकी निंदा
करत भए. तहां कितनेक सात्यकीके पक्षपाती भए कितनेक कृ-
तवर्मांके पाक्षिपाति होइ परस्पर जुद्ध करत भए. जहां प्रथमही
जुद्ध करत सस्त्रनकों क्षीण जाणि ऐरादि सस्त्र करि जुद्ध करत
भए जब ऐरा मूसलाकार होइ स्पर्स मात्रतें सबनके प्राण हरत
भए तब सकल भूमि मांस रुधिर मई भई अरु प्रद्युम्न, सांब,
सात्यकी, कृतवर्मादि बी जुद्धकरत क्षीण भए. तिनकों जुद्ध कर
तो देषि बलदेव श्रीकृष्ण निवारण करे. जब यादवन इनहूकोंमा
रवे आय तब श्रीकृष्ण बलदेवहू ऐरालेके तिनकूं मारत भए.
ऐसें सर्व यादवनकों संघार करि भूमिभार उत्तारत भए तापीछे
बलदेवहू समुद्रके तीर बैठ जोगाभ्यासतें देहत्याग करि सेस
रूप धारि समुद्रमें प्रवेस करत भए. तिन्हे वासुकीकों आदि
ले सर्व नाग आय पातालमें ले गए. ऐसें श्रीकृष्णहू बलदेवको
गमन देषि चतुर्भुज रूपधारि एकांतिमें पिप्पल वृक्षकों आश्रय
लेइ दक्षिण चरणपें वाम चरण धरि बैठे. तापीछे जरनाम लुब्धक
सिकारकों आयोहै सो श्रीकृष्णको चरणको मृगको मुष जाणि मु
सल आवसेस लोहकी भालिवारे बाणको प्रहार कर्यो तब निक
ट आय चतुर्भुज रूप श्रीकृष्णकों देषि चरणनमें प्रणाम करि बो-
ल्यो हे श्रीकृष्ण मैं बिनाजाणे अपराध कर्यो सो क्षमा करो अरु

मो पापी हूकू मारो जब श्रीकृष्ण बोले हे राजा लुब्धक तूं डरे मातित
नै यह बाण मार्यौ सो मेरी इच्छाहीतें है. अबतूं मेरी आज्ञातें वि
मानमें बैठ सदेह स्वर्ग जाओ. ऐसे श्रीकृष्णके कहत विमान
आयौ तामें राजा लुब्धक बैठि स्वर्ग गयौ. तापीछे दारुक सारथी श्री
कृष्णकौं हेरत हेरत श्रीकृष्णके पास आइ रथतें उतर प्रणाम क
रत भयो तब रथ तत्काल अश्व सहित आकासकौं गयो सो देषि
दारुक विस्मित भयो तासौं श्रीकृष्ण बोले हे दारुक द्वारिका जाय
यदुकुल संहार बलदेव गमन मेरी दसा वसुदेवादिकनसों कहो.
और ऐसै कहियो तुम द्वारिकामे मति रहियो. समुद्र द्वारिककों डु
बोवेगो. तातें स्त्री बालक वृद्ध अर्जुन सहित बज्रनाभकूं लेइ इंद्र
प्रस्थ जावो. ऐसे कहि दारुककों द्वारिका भेज्यौ तापीछे ब्रह्मादि
क देव विमाननपै बैठि श्रीकृष्णके दरसनकूं आए जब श्रीकृष्ण
निज विभूति देव सिद्धि ऋषि, गंधर्व अप्सरानकूं देषि नेत्र मीच-
योगाभ्यास करि निजरुप धारि वैकुंठमें प्रवेस कियौ. जैसे मेघ मंड
लसें निकसि जाति बिजलीकी गति नही जाणि जाइ तैसेही श्रीकृ
ष्णकी गति ब्रह्मादिकनहू नहीं जाणी. तापीछे ब्रह्मादिकहू निज नि
ज स्थान गए. तब दारुक सारथी द्वारिका आइ वसुदेवादिकनसों
सब वृत्तांत कह्यौ जब वसुदेवहू ऐसे स्रुणि अर्जुनके देषत विला
प करत पृथ्वीमें पर्यौ तब अर्जुनहु हाराम हाकृष्ण हा प्रद्युम्न
हा सात्यकी तुम मोकों छोडि कहां गए. ऐसौ विलाप करत अर्जुन
कों देषि योगीश्वरहू रुदन करत भए. तहां जहां गीत नृत्य वादि
त्र उत्सव अखंड होतहै तहां श्रीकृष्णके मंदीरनमें स्त्रीजनकों वि
लाप स्रुणि अर्जुन रात्रि वितीत करि अरु प्रभातही पुत्रके वियोग
तें मरे ऐसे वसुदेव देवकीकों आदिदे स्त्रीयागमन करत भई अरु
रुक्मिणी सत्यभामाकूं आदिलै स्त्रीजन दुःखित होइ श्रीकृष्णकौं
स्मरण करि अग्नि प्रवेस करत भई तापीछे अर्जुन मरेनकौं जलांज
लि दान करि बज्रनाभकौं स्त्रीजन सहित संगलेके द्वारिकातें चल्यौ

तबही समुद्रही द्वारिकाकौंडबोई तहातें इंद्रप्रस्थकौं चलत विकट बनमें आभए साहित स्त्रीजन अर्जुनके संगदेषीलोभतें बनचरननें रोक्यो लाठिनकेअहार करत बनचर गोपनकूं देषी अर्जुनहू कष्टतें धनुष सज्यकर्यो जब बाण तत्काल नष्ट भये. अरु प्रत्यंचाहू षैंचे नहींतव अर्जुन विचार यह स्वप्नहै अथवा में औरही भयो. ऐसे चिंताकर तही ताके प्रत्यक्ष बनचर चोर गोपस्त्रीनकों लूटित भए. ताहू दैदीप्यमान स्त्रीजनकों चोर नही हरिसके जैसे देव रक्षित सिद्ध औषधीकौं भाग्यहीन नहीहरिसकै तहां अर्जुन निज जन्मकूं तुछमान कहि हे पृथ्वी तूं विवरदे तो मैं प्रवेस करूं ऐसे वांछा करते अधोमुतहां स्त्रीनके वस्त्र आभरण हरि चोर बनकौं गए पीछे लोक बोले विश्वविजई वीरकौं चोर न जीत्यो ऐसी विधाताकी रचनाहूकौं धिक्कारहै ऐसे लोक वचन सुणत प्रधान यादव स्त्रीजन वज्रनाभदारुक इन साहित अर्जुन इंद्रप्रस्थ आई तहांको राज्याभिषेक वज्रनाभकौं देइ आप हस्तनापुर कूं चल्यो तब श्रीकृष्णकौं अंतर्ध्यान गोपनतें पराभव यह चिंतवन करत व्याकुल जात अर्जुन ताकौं हस्तनापुरके मार्गमें वेदव्यास मिलि बोले हे पुत्र काल कहा न करै अरु सर्व देव ज्याके अनुग्रहकूं चावे है सूर्यचंद्रमाकौ प्रकास छतेही सर्व कोहरत है तातें काल वस्यतो हरहै अरु संसारके सर्व पदार्थ परिणाममें विनासन होइ ते दुष दाइ तपकौं कौण करै ऐसे कहि वेदव्यास अंतर्ध्यान भए. तापीछे अर्जुन वेदव्यासके वचनामृततें यदुकुलसंहार चरनतें निजपराभव ताके आतपकौं छोडि हस्तानापुर पहुंच्यौ ॥ ॥ इतिश्री भाषाभारतसार चंद्रिकायां मूसल पर्वणि प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥

इतिभाषाभारतसार चंद्रिका मूसल.

पर्वसमाप्त.

महाप्रस्थानपर्वचित्र. १

जारो भएहैं अरु होईहैं और आगेहू होइगे. अरु तेसेही स्त्रीपुत्रसें कडों भएहैं होईहैं आगे होईगे. १ और दिनादिन प्रातेयाको हर्षके स्थानहू हजारोहैं. अरु भयके स्थानहू सेंकडोहैं सो मूढ जीवकूंतो व्यापेहैं और पंडितकों नहीं व्यापैहैं. २ अरु धर्मको साधनक्यों नहीं करैहै जो धर्मसूं अर्थ सिद्धि होइ अथवा काम सिद्धि होइहै. यहमें ऊंचे हाथकरि ऊंचे स्वरसूं पुकारके कहूंहूं सो कोई नहीं सुणतेहैं. ३ अरु कामसूं भय लोभसूं कदाचितहू धर्मको संत्याग नही करे. अरु धर्मको त्याग करे जीव जातो हूवचे. तोहू धर्म नहीं. सो यह धर्मतो नित्यहै और सुष दुष अनित्य है और यह जीवहै सोहू नित्यहै अरुया जीवको कारण मायाहै सो अनित्यहै. ४ [illegible] जोनर या भारतसार सावित्री [illegible] उठि पढे पूर्ण [illegible]
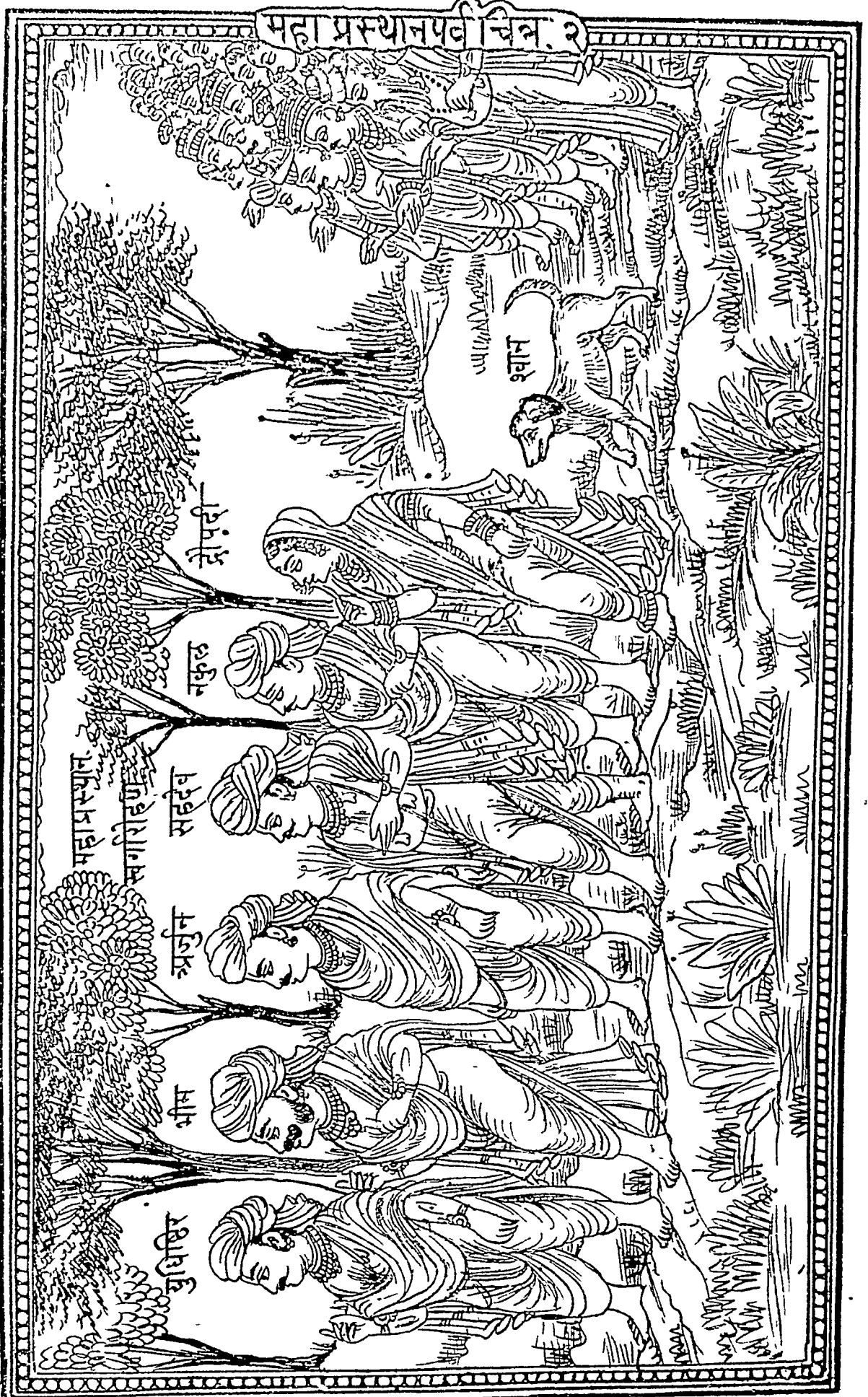
महाप्रस्थानपर्व चित्र. २

अथ भाषाभारतसारमहाप्रस्थानपर्व प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरंचै व नरोत्तमम् ॥ देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ॥ १ ॥ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ राजायुधिष्ठिर अर्जुनके मुषतें य दुकुलको संहार सुणि कालबसतें त्रास पाइ समस्त त्याग बुद्धि धारत भयो तापीछे धृतराष्ट्रके पुत्रनके भागकी भूमितो युयुत्सु कौं दीनी अरु आपको राज्य परिक्षतकौं देइ ताकी रक्षानिमित्त सुभद्राकूं राषि मंत्रीनकौ समाधान करि बांधवनको श्राद्ध करि नै- ष्ठिकी इष्टिकरि अरु अग्नि होत्रकौं अग्निकौं जलमें विसर्जन करत भयो. तापीछे दुषित पुरवासीनकौं समाधान करि भ्रातान सहित युधिष्ठिर सर्व सन्यासधारि वल्कल धारि द्रौपदी सहित चलत भयो तब तिनके संग एक स्वानहू चल्यौ ऐसे तहांतें चलत पूर्व दिसाकी यात्रासें लौहित्य नंदके निकट पर्वत तुल्य दै दीप्यमान अग्निज्वालानकरि व्यापत ऐसे रूपसूं पांडवनके नीकट आई अ र्जुनतें पूर्व दीए धनुष तूणीर लेत भयो. उहांतें दक्षिण यात्राक रि पश्चिम यात्रासें द्वारिका जलमें बुडी जाणि मूर्छित होत भए. तहांतें सनै सनै धीर्य धार पृथ्वी प्रदक्षिणा करत उत्तरकौं आए जहां हिमाचलकौ उल्लंघन करि वालुका समुद्रकौं उतरि मेरुपर्वतकौं देषि तहांतें निराधार मार्गमें चलत भए. जहां द्रौपदी अचेतहो- इ पडी. तब भीम युधिष्ठिरसौं बोल्यौ हे तात सर्व प्रकार निर्मल अ द्भुत जा कौन पयोगवती ऐसी द्रौपदी दीर्घस्वास कैसे सुणि वाकी तर्फ देषे विनाही युधिष्ठिर बोले हे भीम इंद्र पुत्रमें अधिक पक्षपात हो ताको यह फल भयो. आगें नकुलको पतन देषि फिरि भीमबो ल्यौ तब राजा तैसेही फेरि बोल्यौ. यह रूपदर्पतें कंदर्पतेंहू आत्मा

कौ अधिक मान्यौ ताको यह फल भयौ आगे चलत सहदेवके पत
नतै फेरि भीमने प्रश्नकियो. तातें राजा वैसेही सुख राख बोल्यौ य-
ह बुद्धिके अभिमानतें जगतकूं जडमानत हौ ताको यह फल भ
यौ तहांतें आगे चलत अर्जुन कौ पतन देषि भीम पूछ्यो तब राजा
कहि हे भीम यह शूर पणेके अभिमानतें रण भुमिमें गर्व सहितासि
थिल चलत भयौ ताको यह फलहे. फेरि आगे चलत भीम कहि हे
महाराज मेंहूं पर्यो ऐसें सुणि राजा बोल्यौ हे भीम बहु भोजी तो
कूं भुजबलको दर्प अधिक हो ऐसे बोलि परलोककों चलत धर्मवीर
राजा युधिष्ठिर पडते बांधवनकी तरफ देष्योहू नहीं. अरु वह स्वान
हू संगहो सो राजाके पीछे अषंड गति चलत भयौ तापीछे पुर
के द्वार रथपें चढि इंद्र राजाके सनमुष आय बोल्यौ हे महाराज यु
धिष्ठिर तुम सदेह स्वर्गकों चलो अरु तुह्मारे भ्राता येतो देह त्यागक
रि स्वर्ग गये. तिनकूं देषोगे. सो सुणि युधिष्ठिर बोल्यो हे इंद्र या स्वान
विना स्वर्गमें नही आऊं जो विपतिमें संगरहे. ऐसे सत्तसेवक कौं संप
त्तिकी मासिकी त्याग करे ताको धिक्कार हे. और बनमें पुष्पनके संग
मलिन भ्रमर रहेहे सो वे पुष्प देवनके सीस चढत तब कहा भ्रमरन
कौ त्यागकरत तातें याके त्यागतें मेरे धर्म कहा अरु धर्म विना स्वर्ग
कहा. तातें हे इंद्र ऐसी सीक्षातें तुह्मारोहू धर्म नष्ट होइहे. ऐसें राजा
को वचन सुणि इंद्र बोल्यौ हे राजन् यह पुण्यहीन स्वान तुह्मारे पुर-
कौं जावो. जब राजाबोल्यौ हे इंद्र जो यह स्वान पुन्यहीन हे तो मेरे पुन्य
तें सदेह स्वर्गमें वसो. ऐसें सुणि सर्व देव राजाकी सराह करत भए.
ताहीसमे धर्म वहां स्वान देह त्यागकरि निजरूप धारि धर्म पुत्रसूं आ
लिंगन करि बोल्यौ हे पुत्र मे स्वान देह धारि तेरे कृत्य देषिवेमें प्रसन्न हो
इ अबतूं रथमें चढ तोकों सनातन सर्ग हो. ऐसे पिताकी आज्ञासों रा
जा युधिष्ठिर रथपें चढि सदेह स्वर्गकों प्राप्त भयो तहां सर्व देवनसहित
नारद बोले और राजा अनेकही स्वर्ग गए. परंतु युधिष्ठिर सब राजान
की कीर्तिकों आच्छादित करि नक्षत्रनमें सूर्य तुल्य सोभित हे. तापीछे

राजा युधिष्ठिर इंद्रसौं बोल्यौ हे इंद्र मेरे भ्राता पातनी है तहांही मोकौं
ले चलौ तब इंद्र बोल्यौ हे युधिष्ठिर तुम म्हारे निज पुन्यतें प्राप्ति-
भयोजो दिव्य स्थान तामें वसो अरु मनुष्य देह कौं सनेह भ्राता भा
र्यानमें नकरो जब युधिष्ठिर बोल्यौ हे इंद्र में उन बिना ह्यां हां न बसौं ज
हां मेरी भ्राता पतनी हें तहांही जाऊंगा. ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥
ऐसें कहि तापीछे युधिष्ठिर स्वर्गमें दुर्योधनकौं पर्म ऐश्वर्य युक्त देषि इं
द्रसौं बोल्यौ हे इंद्र तेरे या स्वर्गकौं नमस्कार है जहा पापी जगतंकौं सं
ताप देवेवालौ ऐसौ दुर्योधन महा सिंघासनपे बैठि पूजा पावत है ऐसे-
कहि राजा चल्यौ. तब इंद्र देवदूतकूं आज्ञा दीनी जब वह दूत राजाके
बांधवनके दिषाईवेकूं लेचल्यौ तहां मार्गमें चलत युधिष्ठिर देवदूतस
हित दुर्गंध दुर्गति दुःख हिंसा बंधन आदि पीडाकूं देषी अरु कर्णकटु
क हाहाकार शब्द सुणात मार्गतें ऐसे पुकार सुणात भयो हे युधिष्ठिर
हम भीमकौं आदिदे तेरे भ्राता द्रौपदी सहित अति पीडित हे अरु तेरे
अंगकी वनतें अति सुषी भये हे. तातें तुम क्षणमात्र यांही रहो ऐसे
सुणि राजा देवदूतसौं बोल्यौ हे देवदूत में बांधवनके सुष निमित्त
यहांही रहौंगो. अरु यह नर्कही मेरे स्वर्ग समान है और वैतरणी न
दीहू गंगासमान है. यह दुःखहीसें सुष समान है तातें हे देवदूत तो
कौं कुसल हो. अब तूं जा अरु स्वर्गवासिनकौं वा स्वर्गकौ नमस्कार
है जा स्वर्गमे दुष्टजनतौ पूजा पावे अरु सुशील दुषपावे. तहां नहीं-
जाऊं ऐसे सुणि देवदूत गमन करत भयो. तापीछे राजा युधिष्ठिर
देवतान सहित इंद्रकौं सनसुष देष्यौ अरु नर्कादिक कछु नहीं दीषे-
अरु पवित्र पवनतें सुषी होई विचारने लग्यौ यह कहा भयो जब
राजाकौं चकित देषि इंद्र समाधानसें बोल्यौ हे युधिष्ठिर तूं गुरुके
मारिवे निमित्त लेस मात्रि असत्य बोल्यौ ताको यह फल है. मे तोकूं
दुर्गति दिषाई अब तूं आनंद समुद्रमें विहार करत बांधवनकी अरु
स्वर्गश्रीतुल्य द्रौपदीकूं मंदाकिनीमें स्नान करतहीं मनुष्य भाव छो
डि दिव्य भाव युक्त होइ अरु कर्णनकौं अमृत समान लगे ऐसे तुं

बरनकौं आदि देह गंधर्वको गान सुनत भयो. अरु अनेक वाद्यबजा
वत गंधर्व संगीत गानकरत अद्भुत नृत्यकौं देषित भयो. तहां असंख्या
त अप्सरा राजा युधिष्ठिरकौं सेवन करत भई अरु दिव्य सेवकनक
कौं देवे निमित्ति जो वांछा करी सो निज हस्तहीमें देषत भयो. ताकौंदा
न करत भयो. अरु राज सूयादि यज्ञनतैं जइ सिद्धि गंधर्वनकोगा
न सुनत इंद्रके दिषाए मार्गहोई देव सभाकूं प्राप्त भयो. तहां अप्सरा
नके दिव्य विनोद देषत अग्नि तेजकों मंद करत ऐसे सरीरकी कांति
सौं सोभित निज सहोदरनकौं देषत भयो. अरु इंद्रके वाक्यतें करुणा
कूं सूर्यरूप अभिमन्युकूं चंद्रमारूप श्रीकृष्णकौं चतुर्भुज रूप अरु
धृतराष्ट्रकौं गंधर्व राजरूप भीष्मकौं अष्टम वसु रूप भीमकौ पवन
रूप अर्जुनकौं इंद्ररूप नकुल सहदेवनकौं अश्विनीकुमार रूपदेषत
भयो. अरु और सब पृथ्वीमें भूमिभार हरिवेकूं आए तिन वीरनकौं
देवरूप देषत भयो. अरु आप राजा युधिष्ठिर दिलीप सगर भगीरथ
आदि सब राजान सेवित स्वतंत्र स्वर्ग भोग भोगी रुजा हरिश्चंद्र पद
वीकूं भोगत भयो. ऐसे वेदव्यास भारत सार जनमेजयकूं कहि भार
त भारतसारकी कहत भए. ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥

मातृपितृसहस्राणि भयस्थानशतानिच ॥ संसारेष्वनुभूतानियांति
यास्यंतिचापरे ॥१॥ हर्षस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानिच ॥ दि
वसे दिवसे मूढमाविशंतिनपंडितम् ॥२॥ ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्योषनचक
श्चिच्छृणोतिमे ॥ धर्मादर्थश्चकामश्चसकिमर्थं नसेव्यते ॥३॥ नजा
तुकामान्नभयान्नलोभाद्धर्मंजह्याज्जीवितस्यापिहेतोः ॥ नित्योधर्मः
सुःखदुःखेत्वनित्यं जीवोनित्योहेतुरप्यत्वनित्यः ॥४॥ इमां भारतसा
वित्रीं प्रातरुत्थाययः पठेत् ॥ सभारतफलं प्राप्य परंब्रह्माधिगच्छति ॥
५॥ यथासमुद्रो भगवान् यथाच हिमवान्गिरिः ॥ ख्यातांबुभौरत्ननि
धिस्तथा भारतमुच्यते ॥६॥ इमां भारतमाख्यानंयः पठेत् सुसमा-
हितः ॥ सगच्छेत्परमां सिद्धिमितिमे नास्ति संशयः ॥७॥ ॥
हे पुत्र या जीवके संसार काहिये सो जन्म मरण तामें मातपिता ह